'विदेह' ३०८ म अंक १५ अक्टूबर २०२० (वर्ष १३ मास १५४ अंक ३०८)

ऐ अंकमे अछि:-

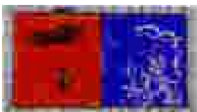
विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।



VIDEHA ARCHIVE **विदेह पेटार**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

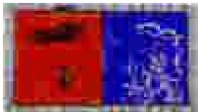


View Videha googlegroups (since July 2008)



view Videha Facebook Official Group (since January 2008)- for announcements

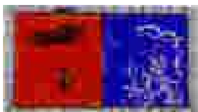
विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

१. *गजेन्द्र ठाकुर*

....

[संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री]

[एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)]

[FOR NTA-UGC-NET-MAITHILI ALSO]

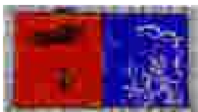
यू. पी. एस. सी. (मेन्स) २०२० ऑप्शनल: मैथिली साहित्य विषयक टेस्ट सीरीज

यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा २०२० सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य हेतन्हि तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर ह्वाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जेकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- **गजेन्द्र ठाकुर**

[एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल/ FOR NTA-UGC-NET-MAITHILI]

NTA_UGC_NET_MAITHILI_01

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

NTA_UGC_NET_MAITHILI_02

NTA_UGC_NET_MAITHILI_03 (श्री शम्भु कुमार सिंह द्वारा संकलित)

Videha e-Learning



MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL)

UPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

BPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (ऐच्छिक)

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (अनिवार्य)

मैथिली प्रश्नपत्र- बी.पी.एस.सी.(ऐच्छिक)

मैथिलीक वर्तनी

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

१

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क **मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि,** से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

....

MAITHILI (OPTIONAL)

TOPIC 1 [Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

TOPIC 2 (Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

TOPIC 3 (ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतय समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ

गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे धार आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)

TOPIC 4 (बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

TOPIC 5 (वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)

TOPIC 6 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

TOPIC 7 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

TOPIC 8 (वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

TOPIC 9 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

TOPIC 10 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)

TOPIC 11 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

TOPIC 12 (वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

TOPIC 13 (तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास)

TOPIC 14 (आधुनिक नाटकमे चित्रित निर्धनताक समस्या- शम्भु कुमार सिंह)

TOPIC 15 (स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता- अरुण कुमार सिंह)

TOPIC 16 (यू. पी.एस.सी. मैथिली प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन, मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता, मैथिली साहित्यक आदिकाल, मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण- शम्भु कुमार सिंह)

TOPIC 17 (मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-"ए", क्रम-५])

TOPIC 18 [मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

....

GENERAL STUDIES (PRELIMINARY & MAINS)

GS (Pre)

TOPIC 1

....

GS (Mains)

....
......

NCERT-ENVIRONMENT CLASS XI-XII

NCERT PDF I-XII

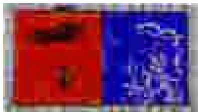
TN BOARD PDF I-XII

ALL INDIA RADIO ENGLISH NEWS

ALL INDIA RADIO NEWS ARCHIVE

ALL INDIA RADIO TALKS AND CURRENT AFFAIRS

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

RAJYA SABHA TV NEWS DISCUSSIONS

....

OTHER OPTIONALS

....

IGNOU eGYANKOSH

....

(अनुवर्तते)

-गजेन्द्र ठाकुर



२. गद्य

ISSN 2229-547X VIDEHA

**इरा मल्लिक**

दूटा बीहनि कथा

१

असमंजस

बाप रे!!!!!! एतेक भोकासी पारिके कथि ल ए कनैत छै ई छौंरी! अजगुत केने छै। नहिं जानि सासुर बसबो करतै कि नहिं।बेचारे बर के गृहस्थी ओ बसय देत कि नहिं। सोनकाकी चिन्ता में पड़ल छली।बड़बड़ाइत छली।हुनकर बेटी शोभा के काल्हि दूरागमन के दिन छैन।सासुर संओ दू टा दियौर आ पाहुन संगे एकटा खबास सेहो आएल अछि।

शोभा! पढ़ल लिखल सुशिक्षित एकटा आधुनिक सुख सुविधा आ माहौल में बढ़ल लड़की अछि।ब्याह भेल छैन सुनील संग।सुनील नीक पोस्ट पर कम्प्युटर इंजीनियर छैथ। एखन एक सप्ताह पहिने अमेरिका के कोनो बहुत नीक कंपनी से पोस्ट ओफर भेल छैन।ओ संगे शोभा के ल क जेता।बियाह के पहिने तय भैल छलैन जे शोभा अपन मास्टर्स के पढ़ाई जारी रखती।शोभा अहि निर्णय संओ अति प्रसन्न छलीह।मुदा ई बिच्चे में बिचमाईन भ गेल छल।सुनील कहलखिन्ह जे एखन कनी दिन पढ़ाई स्थगित क दिय फेर समय अनुकूल होयते परीक्षा द देब।शोभा ई सुनि के ते एकदम्मे संओ हकबका गेल छलैथ।एकाएक हुनकर अस्तित्व जेना सिमटि गेल छलैन ।एक ते माए बाप संओ दूर सेहो एतेक दूर कि जे देशक सीमा पार! दोसर पढ़नाइ स्थगित करब ! सबटा परिस्थिति एक्के बेर बजरि गेल शोभा के आगू।बेचारी छुटि -छुटि के अपन विवशता पर कानय मुदा की करौ नै करौ से उपाय नहिं सूझाइन।बहुत असमंजस में छलीह शोभा।हुनका किनको संओ कोनो शिकायत नहिं छलैन। मुदा मोनक कोनो कोन कचोटि रहल छलन्हि अपन अस्तित्व पर। नारीपन के अपेक्षा क बोझ सौं अंततः ओ दबि गेलि ।शायद भारतीय नारी सौं इएह अपेक्षित अछि।

?

२

पाहुन एलखिन

गै सोन बहिन! सोन बहिन! कतय छी तूँ! देखी! पाहुन आबि गेलखुन।चिकरते नैना बाहर भेली आ पाहुन के अटैची हाथ में लैत पाहुन के घर अनलखिन।अटैची राखि तखन अपन पाहुन के पएर छूबि प्रणाम केलक।आब ताधरि घर के सब लोग जुटि गेल छलखिन।सब नैना के देखि हंसय लागल जे देखू बहिनदाइ के बतहपन।गै पाहुन के पहिने प्रणाम करिथि कि ने।अटैची कतहु भागल जायत छलै?सब कियो पाहुन संओ हाल चाल पूछय लगलैथ। पाहुनो अपन यात्रा वृतांत सुनबय लगला जे कोना कतेक मोश्किल संओ दू दिन के छुट्टी मिलल।एतबे मेघर संओ ट्रे में पानि आ पांच छ कप चाय बनाक नैना एली।पाहुन आ घर के सबलोग के चाय पानी देलैथ आ चट्ट द अपन सोन बहिन लग दौड़ल गेली।गै सोनबहिन! तोरा बुझायत नहिं छौ जे पाहुन एलखिन अछि।देखय के मोन नहिं करय छौ तोरा। हमरा ते खुशी संओ मोन गदगद भेल अछि आ एकटा तूं छे कि नाम सुनिते पाहुन के घर में नुकायल बैसल छी।
सोनबहिन बाजलि; गै नैना! खुशी ते हमरो बहुत भेल ऐ।मुदा सामने कोना जाउ से लाज होइये। पएर उठिते नहिं अछि।बहुत हड़बड़ाहट भ रहल अछि भीतर।की करू! धूर जो! एहनो कहीं कनियां भेलैये।पढ़ल लिखल छें।कनी दिन में आब कालेज में लेक्चर देबें।तहियो ओहिना के ओहिना ! एकदम बुद्धू छैं तों। एतबा बाजिते बाजिते नैना फेर एक ले दू ले फुर्र भ गेली अपन पाहुन सब लग जाक फेर संओ ठाढ़।

-इरा मल्लिक, रिलायंस ग्रीन्स टाउनशिप जामनगर गुजरात।

**आशीष अनचिन्हार**

दू टा गीतक चर्चा उच्चारण केर आँगनमे

दरभंगा घरानाक युवा गायक समित मल्लिक अपन शास्त्रीय रूप संगे जन लोक लेल किछु गीत-संगीत सेहो प्रस्तुत केलाह। हम हुनक गाएल दू गीत सुनलहुँ आ ओहिपर हम अपन विचार दऽ रहल छी। आगू कोनो बात कहबासँ पहिने कहि दी जे हमर टिप्पणीमे कोनो राग-भास, सुर-ताल केर चर्चा नै रहत कारण ओकर ज्ञान हमरा अपने नै अछि। तँइ मात्र किछु साधारण बात सभ हम एहिठाम देब।

मैथिलीमे 'आबि' शब्द केर उच्चारण 'आइब' सेहो होइत छै मुदा एहन केखन हेतै से वाक्य आ ओकर उद्येश्यसँ संचालित होइत छै। आ एहने नियम माटि वा पानि लेल सेहो छै। हम पहिल गीत "जनम भूमि अछि मिथिला" सुनलहुँ जाहिमे "कनी आइब अपन नैहर निहारू हे माँ" गाएल गेल छै। मुदा एहि गीतक जे प्रकृति छै ताहिमे 'आबि' केर उच्चारण सही हेतै आ गीतक स्वरूपकेँ बेसी निखारतै। एहने दिक्कत एही गीतमे आएल शब्द 'भरि' संगे भेल छै जाहिमे गाएक एकरा 'भइर' रूपमे गाबि देलथि। गायक जँ कहिो भविष्यमे एकरा गाबथि तँ 'आइब' बदला 'आबि' 'भइर' बदला 'भरि' उच्चारण करथि। एकटा रोचक बात एहि गीतमे 'दुआर' शब्दक प्रयोग भेल छै जकर मूल स्वरूप 'दुआरि' छै। गायक जहिया फेर गाबथि एकरा एक बेर 'दुआइर' बना कऽ गाबथि बहुत बेसी मधुरता एतै एहि गीतमे से हमरा विश्वास अछि। ई नीक बात जे 'अछि' केर उच्चारण सही रूपें कएल गेल अछि। एही गीतक एकटा पाँतिमे 'खवनिहार' मुदा हमरा जनैत एकरा 'खेवनहार' रूपमे गाएल जेबाक चाही जाहिसँ गीत सुनबामे आरो मधुर होइतै। ओना हम आनो गोटासँ आग्रह करबनि जे ओ सूनथि कारण बहुत बेर कान सेहो धोखा दऽ दैत छै। एहि गीतकेँ पारंपरिक कहि कऽ प्रचारित कएल गेल अछि मुदा हमरा जनैत ई गीत पारंपरिक नै अछि आ अही कालखंडमे किनको द्वारा लिखल गेल हएत आ से हमरा 'दीप बुझल' सन प्रयोगसँ बुझाइए। ई 'बुझल' साफे-साफ हिंदी केर नकल अछि। ओना एहि बुझलमे गायक केर बेसी दोष नै कारण जे लिखल भेटलनि से गेलथि। बहुत संभव जे 'आइब' बला प्रसंग गीत लिखए बलासँ जुड़ल हो मुदा गायकसँ सेहो एहन अपेक्षा रहिते छै। समितजीसँ ई अपेक्षा तँ रहबे करत जे ओ गीतकारक नाम खोजि कऽ लीखथि। गीतक गुण-दोषपर चर्चा होइते रहतै मुदा

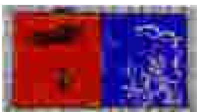
गीतकारक नामक हिस्सा जरूर भेटबाक चाही। एहि गीतक संगीत पक्ष नीक अछि। किछु अलग हटि कऽ अछि आ सुनबामे सेहो नीक लगैत अछि तैयो हमरा समितजीसँ ई अपेक्षा अछि जे ओ एहने संगीत दिस नै रहथि। मैथिली संगीतमे एखन धरि नवाचारी प्रयोग नै भेलैए। किछु गायक गिटार आ ड्रम बला अपन संगीतकेँ नवाचारी कहि दै छथि मुदा ई तेहने बात भेल जेना कियो ई दाबी करए जे हम जींस पहिरने छी तँ हम धोती बलासँ बेसी आधुनिक आ प्रगतिशील छी। मुदा सभ जानै छथि जे आधुनिक ओ प्रगतिशील विचार लेल कपड़ा नै मानक छै तेनाहिते नवाचारी संगीत लेल गिटार एवं ड्रम मानक नै छै। हमर कहबाक मतलब ई नै जे गिटार-ड्रम बला संगीत खराप छै मुदा गिटारे-ड्रमसँ संगीत आधुनिक बनतै से बात नवाचार कम संगीतक संग तिकड़मबाजी बेसी छै। समय एहन तिकड़मी संगीतकेँ अपने-आप खारिज कऽ दैत छै आ संगीते किए समय हरेक कलामे कएल गेल तिकड़मकेँ खारिज कऽ दैत छै। समितजीक गाएल ई पहिल गीत अहाँ सभ एहि लिंकपर जा कऽ सूनि सकै छी- https://youtu.be/eWP-fi0bBSM

दोसर गीत विद्यापति रचित 'जय जय भैरवि' अछि जकर संगीत पक्ष नीक अछि। पहिलो गीतसँ बेसी नीक मुदा एहि गीतक उच्चारण नीक नै अछि। एहि गीतमे गायक उच्चारणसँ हम निराश भेलहुँ। एहि गीतसँ ई बुझाइत अछि जे समितजीकेँ एखन मैथिली ध्वनि आ उच्चारणपर नियंत्रण करब बेसी आवश्यक छनि अन्यथा हिनक गीत साधारण लोकसँ कटि जाएत। हमरा जनैत शास्त्रीय आ लोक गीतमे बहुत रास अंतरक संग एकटा महत्वपूर्ण अंतर ईहो छै जे शास्त्रीय संगीतमे ध्वनि बदला राग-तालक शुद्धता ताकल जाइत छै जखन कि लोकगीतमे राग-तालक बदला शब्दक उच्चारण ओ ध्वनिक शुद्धता बेसी ताकल जाइत छै (जँ हम गलत होइ तँ टोकी हमरा)। एहि तत्वपर हमरा ई गीत कमजोर लागल आ भ्रमपूर्ण सेहो। भविष्यमे लोक एहने गलत उच्चारणकेँ मानक मानए लागत कारण ओ कहत जे दरभंगा घरानाकेँ सुनने छी आ ताहिमे एनाहिते गेने छथिन। एहि तरहक गीतमे जे गंभीरताक अपेक्षा छल से पूरा नै भेल। ई गीत एहि लिंकपर सूनि सकैत छी- https://youtu.be/Fx55V5n0l90

समग्र रूपसँ देखी तँ उपरक दूनू गीतक संगीत पक्ष बेसी नीक अछि आ उच्चारण पक्ष कमजोर। पहिल गीतक साउंड नीक अछि तँ दोसर गीतक साउंड ओतेक साफ नै भेल अछि। समितजीक जे अवाज छनि से प्रायः सभ तरहक मूडक गीत लेल उपयुक्त छनि मुदा हमर मानब अछि जे रोमांटिक, भजन ओ गजल लेल हिनक अवाज सर्वाधिक उपयुक्त रहत। व्यक्तिगत रूपसँ हम चाहब जे समितजी मैथिली गजलक गायनमे आबथि। मैथिलीमे गजल गायिकी शून्य अछि तकरा समितजी नीक जकाँ भरि सकै छथि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA


डॉ ललन कुमार झा

म. म. राजनाथ मिश्र ओ तिथि निर्णय : एक अध्ययन

म.म. राजनाथ मिश्र प्रणीत 'तिथि निर्णय:' धर्मशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्रक समीक्षात्मक उत्कृष्ट कृति अछि। एहिमे विद्वान ग्रन्थकार प्रतिपदासँ लऽ कऽ अमावस्या धरिक कृत्यक सप्रमाण प्रतिपादन कएलन्हि अछि। विशेष रूपसँ स्वरूप निरूपण, सामान्य परिभाषा कथन, काल विभाग प्रतिपादन कृष्णाष्टमी व्रत निरूपण, नवरात्र निर्णय, रामनवमी विश्लेषण, दीपावली, महाशिवरात्री, होलिकादहनादिक जे विवेचन कएल गेल अछि से निश्चित रूपेण सुधी पाठकक मानसकँ प्रमुदित कएनिहार अछि। आब प्रश्न उठैत अछि जे 'तिथि की थीक?' अत् (गमने) इथिन् विधानसँ पृषोदरादि सूत्रसँ वैकल्पिक ङीप् प्रत्यय लगलासँ दीर्घ भऽ कऽ तिथि शब्द बनैत अछि, जकर सामान्य अर्थ होइछ चन्द्रदिवस। अथवा तन् (विस्तारे) धातुसँ सेहो एकर निष्पत्ति मानल जाइत अछि। तदनुसारेँबढ़एवला अथवा क्षय होमएवला चन्द्रकलाकँ जे विस्तारित करएवला काल विशेष 'तिथि' कहबैत अछि-

"तंत्र तिथि शब्ददस्तनोतेद्यतोर्निष्पन्न:। तनोति विस्तार यति वर्धमानां क्षीयमाणं वा,चन्द्रकला मेकां च कालविशेष: सा तिथि। यद्वायथोक्त कलयातन्यत इति तिथि:। तदुक्तं सिद्धांत शिरोमणै तन्यते कलया यस्मान्तस्मात्तास्तिथय स्मृता:।"

-कालमाधव पृ.- 92

एहि धारणाकँ लक्ष्य कऽ स्कन्द पुराणमे कहल गेल अछि जे हे देवि! सोलह भागसँ विभक्त भऽ कऽ अमाक नासँ परिचित जे महाकला अछि, ओएह माया आओर परमा शरीर धारीक लेल शरीर धारण करैत अछि। हे सुन्दर मुखवाली! अमावस्यासँ लऽ कऽ पूर्णिमा धरि चन्द्रमाक जे कला अछि ओकरा तिथिकनामसँ अभिहित कएल जाइत अछि-

''अमाषोऽशभागेन देविप्रोक्ता महकला
संस्थितापरमा माया देहिनां देह धारिणी।
अमादि पौर्णमास्यन्त या एव शशिन: कला:
तिथियस्ता समाख्याता: षोडशैव वरानने।।''
- कालमाधव पृ.- 92

तिथि निर्णयकार पं. मिश्र ग्रन्थारम्भमे सर्वप्रथम गणेश, भगवती, सरस्वती, विष्णु, महादेव आओर गुरुकेँ प्रणाम कएलन्हि अछि-

''नव्वा ढुण्ढिं गिरं विष्णु निबन्धृन् गिरिशं गुरुन।
क्रियते राजनाथेन तिथिर्णय संग्रह:।।''

ग्रन्थकार तिथिकेँ अखण्ड विशेषकाल कहलन्हि अछि। विष्णुधर्मोत्तरक वचनकेँ उल्लेख कऽ कालक विशेषताक सेहो वर्णन कएलन्हि अछि। तदनुसार काल अनादि निधन अछि, रुद्र ओकर संकर्षण अछि, सभ प्राणीक कलना 'नाश' कऽ ओ काल नामसँ अभिहित अछि-

''अनादिनिधन: कालो रुद्र: संकर्षण: स्मृत:।
कलानात् सर्वभूतानां स काल: परिकीर्त्तित:।।''

सभ भूतक कर्षणसँ ई संकर्षण आओर शमन कएलासँ रुद्रनाम कीर्त्तित अछि। अनादि निधनक कारण ओ परमेश्वर अछि-

''कर्पणात् सर्वभूतानां स तु संकर्षण स्मृत।
सर्वभूतशमित्वाच्च सरुद्र परिकीर्त्तित:।।
अनादिनि धनत्वेन समहान् परमेश्वर:।।''
-कालमाधव पृ.- 16

पं. मिश्र सामान्य परिभाषात्मक तथा काल विभाग प्रकरणमे सभ तिथिक विशेषता तथा ओहि तिथिक कर्तव्यताक विषयमे सेहो वर्णन कएलन्हि अछि। तिथिक लक्षण सेहो कहल गेल अछि। तदनुसार ओकर तीन लक्षण खर्व, दर्प ओ हिंसा अछि-

''खर्बो दर्पस्तथा हिंसा त्रिविधन्तिथि लक्षणम्।
धर्मा धर्म व शादेव तिथिस्त्रेधा विवक्षिता।।''
-तिथि निर्णय पृ. 03

अर्थात् खर्ब-साम्य (सम तिथि) वर्धित होमएवला आओर हिंसा क्षय युक्त तथि कहबैत अछि। तिथिक संदर्भमे ई बुझब आवश्यक अछि जे प्रतिपदासँ लऽ कऽ पूर्णिमा अथवा अमावस्या पर्यन्त पन्द्रह तिथि होइत

अछि। नाड़ीसँ उत्तर तिथिकँ बाधित करैत अछि। सभ प्रकारक ई वेध व्रतोपवासक दूषक अछि तथा अरुणोदय कालिक वेध वैष्णवक लेल मानल गेल अछि।

एहि तथि निर्णय ग्रन्थक अध्ययनसँ ज्योतिषशास्त्रक तिथिक आन सांकेतिक नामक सेहो पता लगैत अछि। ई संभवत: शब्दलाधवक लेल प्रयोगमे मनीषी लोकनि द्वारा आनल गेल छल होएत। एकरा अनुसारँ भिन्न-भिन्न तिथिक ज्योतिष शास्त्रीय नाम एहि प्रकारँ अछि-

पंचमी-वाण आओर नाग, दशमी- दिग् चतुर्दशी भूत, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी आओर पंचमी-भुग्मातिनग्न,भुत-षष्ठी, सप्तमी-पण्मुनि,अष्टमी-नवमी-वसुरन्ध्र, एकादशी युक्त द्वादशी-रुद्रेण युक्ता द्वादशी, पंचमी युक्त षष्ठी नागविदा एकादशी विद्ध द्वादशी-रुद्रविद्ध दिवाकर, तृतीया चतुर्थी युता- गौरी विनायकोपेत, नवमी सहिता दशमी-सँ दुर्गा दशमी। पंचमी दशमी पूर्णिमा (अमावस्या) पूर्णा।

एहि तरहँ तिथि निर्णय ग्रन्थोपयोगी विषय ध्यान देबाक योग्य अछि। सर्वप्रथम नन्दा भ्रद्रोद शब्द ककर व्यापक अछि, ई सभ ग्रन्थ विषयवगमक लेल आवश्यक अछि। एहि शब्दकँ एहि प्रकारँ जानल जा सकैत अछि-

प्रतिपदा षष्ठी एकादशी- नन्दा

द्वितीया सप्तमी द्वादशी- भद्रा

तृतीया अष्टमी त्रयोदशी- जया

चतुर्थी नवमी चुर्दशी- रिक्ता

पंचमी दशमी पूर्णिमा (अमावस्या)- पूर्णा

सामान्य तिथि विषयक परिभाषाक बाद 'काल विभाग'क विवेचन प्रस्तु कएल गेल अछि। एहि क्रममे ओ ब्रह्मवैवर्त पुराणगत वचनक उल्लेख कएलन्हि अछि। तदनुसारँ प्रात: चारि दण्ड पर्यन्तक समय अरुणोदयक अछि। ई सन्यासीलोकनिक स्नानक समय अछि, जखन सरोवरक जल गंगाजलक समान पवित्र रहैत अछि-

''चतस्त्रो घटिका प्रातररुणोदय उच्चयते।

यतीनां स्नानकालोऽयं गंगाम्भ: सदृश: स्मृता।।''

-तिथि निर्णय पृ.- 06

प्रात: कालक बाद तीन दंड धरि संगव कहबैत अछि, तीन मुहूर्त्त आगू धरि मध्याह्न आओर ओकर बाद उपराह्न होइत अछि। ओकर बाद तीन मुहूर्त्त पर्यन्त सायंकाल होइत अछि जाहिमे श्राद्ध वर्जित अछि। ई राक्षसी वेला कहबैत अछि जे सभ कर्मक लेल गर्हित समय मानल गेल अछि। एकरा मिथिलामे व्यवहारिक भाषामे 'गदहबेर'सेहो कहल जाइत अछि। दिनक पन्द्रह मुहूर्त्त मानल जाइत अछि जाहिमे आठम् भाग कुतपकाल तथा नवम् रोहिणी कहबैत अछि। ई दुनू काल पितरक लेल अक्षय पुण्यप्रद मानल जाइत अछि-

''प्रात: कालो मुहूर्त्तांस्त्रीन् संगवस्तावदेव हि।
माध्याह्ननस्त्रिमुहूर्त्त: स्यादपराह्णस्तत: पर:।
सायाह्नस्त्रिमुहूर्त: स्याच्छाद्धं तत्र न कारयेत्।
राक्षसी नाम सा वेला गर्हिता सर्वकर्मसु।।
अठ्लोमुहूर्त्ता विख्याता दशपंच च सर्वदा।
तत्राष्टमो मुहूर्त्तो य: स काल: कुतुप: स्मृत:।।
रौहिणो नवम: प्रोक्त: पितृणामुभयं हितम्।।''
-तिथि निर्णय पृ.- 07

पितरक एकोदिष्ट हेतु धर्मशास्त्रमे कुतपक अत्यधिक महत्व अछि जे दिनक आठम मुहूर्त्त होइत अछि, जाहि समय सूर्य अपन छायामे प्रवेश कऽ खड्गक तरह दृश्य होइत अछि। दिनमे पन्द्रह मुहूर्त्त होइत अछि आओर आठम मुहूर्त्त कुतप अछि। पं. राजनाथ मिश्र सेहो कुतप कालक उपस्थापन एहि रूपैँ कएलन्हि अछि-

''द्वौ यामौ घटिकान्यूनौ द्वौ यामो घटिकाधिकौ।
स काल: कुतुपो ज्ञेय: पितृणां दत्तमक्षयम्।।''

एहिठाम यामक अर्थ तीन घन्टा अछि आओर घटिकाक अर्थ चौबीस मिनट अछि। ओहिना पं. मिश्र सेहो 'पूर्वाहणों वै देवानां मध्यन्दिनं मनुष्यानामपराहण: पितृणाम्'वचनक पदस्थापन कऽ दिनकेँ तीन भागमे बाँटि देने छथि। निबन्धकार एहि तरहेँ नक्षत्र (तारा) 'दर्शनात् नक्तं (राति) प्रदोषोऽस्तमनादूर्ध्व घटिकाद्वमिष्यते' कहि कऽ प्रदोषक परिभाषा सेहो कएलन्हि अछि। प्रदोश तथा रातिक सम्बन्धमे ग्रन्थकार मिथिलेश शुभंकर ठाकुर तथा वर्धमान उपाध्यायक वचनक उल्लेख कएलन्हि अछि। तदनुसार उदयसँ दू घड़ी पूर्व प्रात: संध्या तथा सूर्यास्तक बाद तीन घड़ी तक सायंकाल कहबैत अछि। एहि तरहेँ सूर्यास्तक तीन मुहूर्त्त धरि प्रदोष आओर तदनन्तर रातिक उल्लेख कएलन्हि अछि-

''उदयात्प्राक्तनी सन्ध्या घटकाद्वय मिष्यते।
सायं संध्या त्रिघटिका अस्तादुपरि भास्वत:।।
त्रिमुहूर्त्त: प्रदोष: स्याद् भानावस्तंगते सति।
तत्परा रजनी प्रोक्ता तत्र कर्म परिव्यजेत्।।''
-तिथि निर्णय पृ.- 08

'प्रदोषो रजनीमुख:'वचन सेहो प्रचलित अछि। रातिक बाद ग्रन्थकार निशाभागक उल्लेख सेहो कएलन्हि अछि। तदनुसार सूर्यास्तक तीन घन्टा बीत गेलापर निशा भाग आओर अड़तालीस मिनट आओर बीति गेलाक बाद राति निशा भाग अछि।

एहि तरहँ प्रात: संगव अधान अपराह्न प्रदोष राति निशा भाग, अति निशा भागक वर्णन कऽ पं. मिश्र पक्षीक पन्द्रह तिथिक वर्णन सेहो कएलन्हि अछि। प्रतिपदा
द्वितीय, तृतीया, चौठ, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी आओर पूर्णिमा ई पन्द्रह तिथि अछि मुदा कृष्णपक्षमे पन्द्रहम् तिथि अमावस्या कहबैत अछि।

प्रथम तिथिक रूपमे प्रतिपत् वा प्रतिपदाक नाम अबैत अछि जकरा सम्बन्धमे पूर्व तिथिसँ युक्तक ग्राह्यताक अनुशंसा कएल गेल अछि। 'सा पूर्वयुताग्राह्य'एहिठाम ग्रन्थकार पैठीनसिक वचनक उल्लेख कएलन्हि अछि-

''पंचमी सप्तमी चैव दशमी च त्रयोदशी।
प्रतिपन्नमी चैव कर्त्तव्या सम्मुखी तिथि:।।''
-तिथि निर्णय पृ.- 19

सम्मुखीक अर्थ सायाह्न व्यापिनी मानल गेल अछि। मुदा आश्विन शुक्ल प्रतिपदाकेँ पख्यापिनी किंवा द्वितीयासँ युक्त रहबाक अनुशंसा कएल गेल अछि। मुदा जँ अमावस्या युक्त प्रतिपदाकेँ नवरात्रमे केओ कलश स्थापना करैत अछि तँ ओहिमे देवी दुर्गा शाप दऽ कऽ भष्मशेष कऽ दैत अछि-

''यो मां पूजयते भक्तया द्वितीया यां गुणान्विताम्।
प्रतिपच्छारदीं ज्ञात्वा सोऽश्नुते सुखमक्षयम्।।
यदि कुर्भाद्मायुक्त- प्रतिपप्स्थापनं मम।
तस्मै शापायुतं दत्वा भस्मशेषं मम।।''
-तिथि निर्णय- पृ. 09

प्रथमा तिथिक बाद द्वितीया तिथिक निर्णय करैत म.म. रज्जे मिश्र स्मृतिकार पैठीनसि स्मृतिक वचनोल्लेख कएलन्हि अछि जे तृतीयायुक्त द्वितीयाक ग्रहणानुशंसा कएलन्हि अछि। पैठीनसि युग्म नियमक अवलम्बन कऽ परतिथियुत तिथिक अनुमोदन कएलन्हि अछि-

''एकादश्यष्टमी पष्ठी द्वितीया च चतुर्दशी।
त्रयोदश्यप्यमावास्या उपोष्या: स्यु: परान्विता।।''
-तिथि निर्णय पृ. 11

तृतीया निर्णयक प्रसंगमे पं. मिश्र सर्वप्रथम वैशाख शुक्ल तृतीया विवेचन कएलन्हि अछि। ई तृतीया उदयव्यापिनी अनुशंसित कएल गेल अछि। एहि प्रसंगमे देवी पुराणक वचनोल्लेख कएल गेल अछि। एहि वचनक अनुसार पार्वती प्रिया (तृतीया) सूर्योदयक अपेक्षा रखैत अछि, तिथि युग्मताक कोनो बात नहि-

'युगाद्यावर्षवृद्धिश्च सप्तमी पार्वतीप्रिया।

सूर्योदयमपेक्षन्ते न तत्र तिथियुग्मता।।'

चौठ (चतुर्थी) गणेश चौठ मातृ विद्धा अर्थात् तृतीय वृद्धा प्रशस्त अछि जँ मध्याह्न व्यापिनी होअए तँ दोसर दिन (पंचमी युक्त) मे कर्त्तव्य अछि-

''चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते।

मध्याह्नव्यापिनी चेत्स्यात्परतश्च परेऽहनि।।''

पंचमी तिथि पूर्वयुता ग्राह्य अछि। तँ पं. रज्जे मिश्र ब्रह्म पुराणक- 'पंचमी च प्रकर्तव्या चतुर्थी संहिता प्रभो'तथा हारीतक- 'चतुर्थी संयुता कार्या पंचमी परया न तु'वचनकँ उद्धृत कऽ अपन मन्तव्य व्यक्त कएलन्हि अछि। मुदा नागपंचमी षष्ठी युता अनुशंसित कएल गेल अछि- 'नागपंचमी तु परैव' ब्रह्मवैवर्त्त पुराण सेहो षष्ठी युता पंचमीक अनुशंसा कएलक अछि-

''पूर्वाहणे कृष्णपक्षे तु नागतोषकरी तिथि:।

पंचमी तु प्रकर्त्तव्या षष्ठ्या युक्ता तु नारद।।''

-तिथि निर्णय- 17

अन्यत्र चतुर्थीयुता कर्त्तव्य होइत अछि।

पं. रज्जे मिश्र स्कन्द षष्ठी व्रतकँ पूर्व युक्त तिथिसँ विहित मानलन्हि अछि। एहि लेल स्मृतिकार वशिष्ठक वचनकँ उद्धृत कएलन्हि अछि-

''कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रि चतुर्दशी।

एता: पूर्वयुता ग्राह्यास्तिथ्यन्ते पारणंचरेत्।।''

एकर अतिरिक्त सप्तमी युता ग्राह्य अछि। तँ स्मृति समुच्चयमे एहि सम्बन्धमे कहल गेल अछि-

'षष्ठ्यष्टमी अमावास्या कृष्णपक्षे चतुर्दशी।

एता: परयुता ग्राह्या: परा: पूर्वेण संयुता:।।

'ष. न्योरितियुग्मात्'इत्यादि वचनसँ सप्तमी षष्ठी युता ग्रहण करबाक योग्य अछि। सप्तमी नहि अष्टमी युक्त नहि सप्तमीसँ युक्त अष्टमी ग्राह्य अछि। षष्ठयष्टमी नागविद्धा इत्यादि पूर्वोक्त स्मृतिसँ एहन मन्तव्य देल गेल अछि। भविष्य पुराणक सेहो इएह वचन अछि जे सप्तमी षष्ठी युता सएह ग्राह्य अछि नहि कि अष्टमी युता।

अष्टमी नहि सप्तमी युता होएबाक चाही नहि सप्तमी सएह अष्टमी युता होअए। अष्टमी सर्वदा नवमी युता ग्राह्य अछि-

''तत्र नाष्टमी सप्तमीयुक्ता सप्तमी नाष्टमीयुता।

नवम्या सह् कार्या स्याद्ष्टमी सर्वदा बुधै:।।''

-तिथि निर्णय पृ.- 20

ब्रह्मवैवर्त्त पुराणक अनुसारेँ नवमी अष्टमी विद्वा करणीय अछि। जेँ व्रती फलक कामना करैत होअए, दशमी विद्धा कदापि नहि करए-

'अष्टम्या नवमीविद्धा कर्त्तव्या फलकाङि क्षभि:।

न कुर्यान्नवमी तात दशम्या तु कदाचन।।'

-तिथि निर्णय, पृ.- 26

दशमी पूर्व वा बाद दुनू दिनमे विहित काल व्यापिनी ग्राह्य अछि। एहि सम्बन्धमे ग्रन्थ्ज्ञकार पक्षधर मिश्रक वचनक उल्लेख कएलन्हि अछि, जाहिमे कहल गेल अछि जे फलक कामना करएवला व्यक्ति एकादशी विद्ध दशमी करए-

''दशम्येकादशीविद्धा कर्त्तवया फलकाङि क्षभि:।

दशमी चैव कर्त्तव्या सदुर्गा द्विजसत्तम।।''

-तिथि निर्णय पृ.- 28

एकादशी उपवासदिमे द्वादशी युताक ग्राह्यता अछि। दशमी युता एकादशी कहियो नहि कएल जाए। एहि लेल पं. रज्जे मिश्र प्राचीन शास्त्रीय वचनकेँ उद्धृत कएलन्हि अछि जे-

''एकादशी दशविद्धा गान्धार्या समुपोषिता।

तस्या: पुत्रशतं नष्ट तस्मातां परिवर्जयेत्।।''

-तिथि निर्णय पृ.- 29

द्वादशी उपवासादिकेँ संभव भेलापर एकादशी युता ग्राह्य अछि। 'रूद्रेण द्वाद्रशी'एहि युग्म वाक्यक अनरोधसँ तथा 'कामविद्धो भवद्विविष्णु'एहि त्रयोदशी वृद्धत्वक निषेधक वचनसँ सोहे त्रयोदशी विद्धा द्वादशी त्याज्य अछि।

शुक्लपक्षीय त्रयोदशी द्वादशी युता ग्राह्य अछि। एहि प्रसंग पं. मिश्र एक शास्त्रीय वचनक उद्धरण देलन्हि अछि-

''पंचमी सप्तमी चैव दशमी च त्रयोदशी।

प्रतिपन्नवमी चैव कर्त्तव्या सम्मुखी तिथि:।।''

तथा-

ISSN 2229-547X VIDEHA

"कृष्णाष्टमी वृहत्तल्पा सावित्री वटपैत्रकी।
कामत्रयोदशी रम्भा उपोष्या: पूर्वसंयुता:।।"
तथा-
"शुक्ला त्रयोदशी रम्भा नोपोष्या परसंयुता:।।"

शुक्ल पक्षक चतुर्दशी पूर्णिमा युता ग्राह्य अछि। एहि सम्बन्धमे चतुर्दश्याथ पूर्णिमा, एकादश्यष्टमी इत्यादि वचन समर्थक अछि। एहि तरहेँ उदयक बाद तीन मुहूर्त्त धरि सेहो चतुर्दशी रहलाक बाद पूर्णिमा रहए तँ ओ ग्राह्य अछि। ई मुख्य रूपसँ अनन्त पूजाक लेल प्रासंगिक अछि। भविष्य पुराणक वचनकँ उद्धृत करैत पं. मिश्र प्रकारान्तरसँ अपन विचार प्रस्तुत कएलन्हि अछि। स्कन्द पुराण सेहो एहि उक्तिक पुष्टि करैत अछि-

"कृष्णपक्षेऽष्टमी चैव कृष्णपक्षे चतुर्दशी।
पूर्वविद्धा तु कर्त्तव्या परविद्धा न कर्हिचित्।।"
-काल माधव पृ.- 360

अमावस्या प्रतिपदा युक्त ग्राह्य अछि। पैठीनसि प्रभृति स्मृतिकार लोकनि 'एकादश्यष्टमी षष्ठी अमावस्या चतुर्थिक। उपोष्या: पर संयुक्ता: परापूर्वेण संयुता:' एहि वचनसँ पुष्ट कएलन्हि अछि। मुदा कार्त्तिक अमावस्याक अवसरपर लक्ष्मीपूजा प्रदोष व्यापिनी ग्राह्य अछि। पं. रज्जे मिश्र एहि प्रसंगमे भविष्योत्तर पुराणक वचनकँ उद्धृत कएलन्हि अछि-

"प्रदोषे पूजयेद्देवी पद्महस्तां- हरिप्रियाम्।
तथा च प्रदोषसमये लक्ष्मी पूजयित्वा यथाविधि।
ब्राह्मान् भोजयित्वा तु भोजयेच्च बुभुक्षितान्।।"
-तिथि निर्णय पृ.- 37

स्नान दानादिक क्रिया 'उदयव्यापिनी पूर्णिमामे होइत अछि, आन काज चतुर्दशी युता ग्राह्य अछि-
"चतुर्दश्याथ पूर्णिमा'। फाल्गुनी पूर्णिमा" होलिका दाहक प्रसंग प्रदोषव्यपिनी ग्राह्य अछि-
"सायाह्ने होलिकां कुर्यात् पूर्वाहणे क्रीडनङ्गवाम्।
दीपं दद्यात्प्रदोषे तु एष धर्म: सनातन:।।"

श्रावणी पूर्णिमा उपाकर्मादिक प्रसंग उदय कालिकी ग्रहण योग्य अछि। भाद्री पूर्णिमा ऋषि तर्पण आदि कर्ममे उदयव्यापिनी ग्राह्य होइत अछि। ईहो कहल गेल अछि जे षष्ठी, एकादशी, अमावस्या, सप्तमी विद्धा अष्टमी तथा परविद्धा पूर्णिमा ग्राह्य नहि अछि-

"षष्ठयेकादश्यामावास्या पूर्वविद्धा तथाष्टमी।
पूर्णिमा परविद्धा तु नोपोष्य तिथि पंचकम्।"

-तिथि निर्णय 44

एवं प्रकारैँ म. म. राजनाथ मिश्र शुक्लपक्ष एवं कृष्णपक्ष दुनू तिथिक प्रतिपदासँ पूर्णिमा एवं अमावास्या तिथि धरिक समीचीन, संक्षिप्त एवं वांछनीय वर्णन कएलन्हि अछि।

ग्राम+पोस्ट- रहुआ
थाना- सौर बाजार
जिला सहरसा, 852127

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC:13 (संघ लोक सेवा आयोगक मैथिली ऐच्छिक- पत्र-१, भाग-१, ६अम क्रमक सिलेबसक लेल)

टॉपिक ०१ सँ १६ लेल जाउ एहि लिंकपर:

http://videha.co.in/aboutme.htm

तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास- गजेन्द्र ठाकुर

भाग-२

ब्राह्मी लिपिक पुबरिया प्रकारक मुख्य अभिलेख सभ अछि- समुद्रगुप्तक हरिषेन लिखित प्रयाग प्रशस्ति जे अशोकक स्तम्भपर लिखल गेल छल, चन्द्र गुप्त-२ क उदयगिरि खोह लेख, स्कन्दगुप्तक कौहम स्तम्भ अभिलेख, चन्द्रगुप्त-२ आ कुमारगुप्त-१ क गढ़वा अभिलेख।

तिरहुता लिपिक खोजमे हम सभ उत्तर आ दक्षिणमे सँ उत्तर भारतीय आ फेर उत्तर भारतीयसँ उत्तर-पूब दिस बढ़ब। उत्तर आ दक्षिण भारतक लिपिक जे अन्तर अछि से ‘‘म’’ मे देखाइत अछि। उत्तर भारतक दुनू प्रकार माने पूब आ पच्छिमक प्रकार श, ष, ल आ ह मे देखाइत अछि।

गुप्त कालक अभिलेखक पूब प्रकारमे ‘‘ल’’ केर वाम अंग सोझे नीचाँ दिस झुकैत अछि (उदाहरण जौगड़क फराक अभिलेख)। ‘‘ष’’ केर आधार चेन्ह गोल बनाओल गेल आ बिचुलका चेन्हक माला सन बनि गेल। ‘‘ह’’ केर आधार चेन्ह धकिया देल गेल आ एकर सुल्फी उर्ध्वाधरसँ जोड़ि देल गेल।

स्कन्दगुप्तक भिताड़ी स्तम्भ अभिलेखे, ओना तँ भारतक पूबमे अछि, मुदा ओहिमे उत्तर भारतक पच्छिम प्रकारक लिपिक प्रयोग भेल। कलाकार पच्छिमसँ आओल हेताह ताहि कारण सँ ई भेल होयत। फेर ईहो भेल जे उत्तर भारतक ब्राह्मीक पूब आ पच्छिम प्रकारक सीमा रेखा परिवर्तित होइत रहल। कन्नौजपर अधिकारक लेल राष्ट्रकूट, गुर्जर-प्रतिहार आ पाल राजवंशक बेच संघर्ष मोटामोटी ७५०-१२०० ई. क मध्य भेल। एहि तरा-उपरी युद्धमे गुर्जर-प्रतिहार जखन बीस पड़लथि तँ पछबरिया कलाकारक कलाकारी पूब दिस बढ़ल। तहिना पाल जखन बीस पड़लाह तखन पुबरिया कलाकार सभकेँ बेसी पच्छिम धरि रोजगार भेटलन्हि। पछबरिया ब्राह्मी नागरी बनल आ पुबरिया ब्राह्मी तिरहुता, असमी, बांग्ला आ ओड़िया। पुबरिया प्रकारक पच्छिम आरि पाल साम्राज्य, मगध आ विदेह+वज्जि निर्धारित भेल। दसम शताब्दी धरि नागरीक पुबरिया आरि बनारस निर्धारित भऽ गेल आ ओ पूर्ण रूपसँ पुबरिया ब्राह्मीसँ फराक भऽ गेल।

घियासुद्दीन तुगलकक बाद फिरोजशाह तुगलक आक्रमणसँ तिरहुत साहित्य आ कलाक क्षेत्रमे पछुआ गेल आ ओकर लिपिक बड्ड भारी नोकसान भेलै। तिरहुता लिपिक विकास ओतहि ठमकि गेलै।

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। १२९४ ई. मे जन्म आ १३०७ ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ १३२४-२५ ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन केलन्हि। मुदा एहि हारिसँ पहिने मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक स्थापनाक ओ प्रयास केने रहथि, ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य । आधिकारिक स्थापक नियुक्य भेलाह मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त। हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, मिथिलाक पण्डित लोकनि १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। ओना तँ ओहि समयमे हरसिंहदेव मिथिलासँ पलायन कऽ गेल रहथि तैयो हुनका सांकेतिक रूपमे एकर संस्थापक मानल गेल।

क्षत्रियक पञ्जी तँ आब उपलब्ध नहि अछि मुदा ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक जे पञ्जी उपलब्ध अछि तकर लिपि मात्र तिरहुता अछि आ २०म शताब्दीक पञ्जीक तिरहुता जे एहि पञ्जी सभमे अछि से १३२६ ई. (१४म शताब्दीक) क पञ्जीक तिरहुतासँ एक्को मिसिया भिन्न नहि अछि। फॉण्ट बनलाक एकर विकासक सीमा बिना रूप परिवर्त्तित भेने असीम भऽ गेल अछि आ एक्के खाँचामे कलाकार अपन कलाकारी देखा कऽ कएक डिजाइनबला अक्षर निर्मित कय सकैत छथि।

से ब्राह्मीक विकास भेल उत्तरी आ दक्खिनी प्रकारमे। उत्तरक प्रकार दू भागमे बँटि गेल, पुबरिया आ पछबड़िया। आ मोटा-मोटी १०म शताब्दीमे पुबरिया लिपि पछबरिया लिपिसँ पूर्ण रूपसँ भिन्न भय गेल। पुबरिया लिपिक सीमा मगध, अंग आ तिरहुत निर्धारित भेलै आ नागरी जे पछबरिया ब्राह्मीक रूपमे गुप्त साम्राज्यक पतन धरि प्रयागोसँ पच्छिम धरि सीमित छल ८म शताब्दीमे ई वाराणसी धरि पहुँचि गेल १२म शताब्दीमे गंगाक दक्षिणमे मगधमे पछबरिया आ पुबरिया दुनू प्रकारक प्रयोग होमय लागल। मुदा गंगाक दक्षिणमे मगधसँ पूब पुबरिया प्रकार मात्र रहलै, आ गंगाक उत्तरमे तिरहुतमे सेहो पुबरिये प्रकार मात्र रहलैक। मुस्लिम आक्रमणक बाद समस्त मगधमे पछबरिया प्रकार पसरि गेलैक मुदा १४म शताब्दी धरि (उदाहरण महाबोधि मन्दिर गया) पुबरिया लिपिक प्रयोग एतऽ पूर्णरूपसँ बन्न भय गेलैक।।

१३२६ ई. मे पञ्जी लिखबाक प्रारम्भ भेल आ तहियासँ २०म शताब्दी धरि ई तिरहुतामे बिना परिवर्तित भेने लिखाइत रहल आ ओकर ओही रूपमे फॉण्ट बनि गेलै (देखू गूगल बुक्सपर विदेह आर्काइवक पञ्जीक ११००० तालपत्र/ बसहा कागत अभिलेख, जे प्रारम्भसँ २०म शताब्दी धरिक अछि, २०म शताब्दीक अन्तमे पञ्जी सेहो देवनागरीमे लिखल जाय लागल)। तँ तिरहुताक उद्भव आ विकासक सीमा रेखा १३२६ ई. भेल

जखन तिरहुताक अन्तिम रूप निर्धारित भय गेल। पञ्जीकारक नीक-अधलाह हस्तलिपिकेँ तिरहुता फॉण्टक विभिन्न डिजाइन मात्र मानल जा सकैत अछि।

एकर ई परिणाम भेलै जे तिरहुतामे जे संस्कृत ग्रंथ लिखल जाइ छल, वा पाता चलै छल सेहो अपरिवर्तित रूपमे २०म शताब्दी धरि चलल। तुगलक आक्रमणसँ अभिलेख लिखनिहारक रोजगार खतम भऽ गेलन्हि आ जे कियो बचलाह से तालपत्र आ बसहा कागतपर लिखल अभिलेखसँ भिन्न लेखबाक क्षमतासँ रहित भय गेलाह।

छापाखानाक प्रयोगक बाद आ यूनीकोडक अंकनक बाद आब डिजाइनक आपसमे लिपि परिवर्तन सन प्रयोग सम्भव भय गेल।

मैथिलीक अष्टम सूचीमे गेलाक बाद संघ लोक सेवा आयोगक परीक्षा आ सरकारी कार्यमे मैथिलीक प्रयोग लेल केन्द्र सरकार मात्र देवनागरीक अनुमति देने अछि। पहिने देवनागरी, तिरहुता, बांग्ला, तमिल आदि लिपिमे संस्कृत लिखाइत छलै, मुदा आब सरकार मात्र देवनागरीमे संस्कृत लिखबाक आदेश देलक अछि। ओना बिहार-झारखण्ड आदिमे अखनो सांकेतिक रूपमे स्कूल, कॉलेजक परीक्षामे आ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षामे मैथिली अहाँ देवनागरी वा तिरहुतामे लिखि सकै छी। केन्द्र सरकार संघ लोक सेवा आयोगक परीक्षा आ अन्य कार्य लेल संस्कृत, हिन्दी, मैथिली, मराठी, कोंकणी, डोगरी, बोडो आ नेपाली केँ देवनागरीमे; संथालीकेँ ओल-चिकी वा देवनागरीमे; सिन्धीकेँ अरबी वा देवनागरीमे; उर्दू आ काश्मीरीकेँ फारसी लिपिमे; मणिपुरी आ बांग्लाकेँ बांग्ला लिपिमे लिखबाक आदेश देने अछि। असमी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया, तमिल, तेलुगु अपन-अपन अही नमक लिपिमे लिखल जायत आ पंजाबी भाषा गुरुमुखी लिपिमे लिखल जायत।

आब फेर तिरहुताक विकास दिस घुमैत छी। गुप्त साम्राज्यक पतन धरि पुबरिया लिपिक आरि-धूरि प्रयागक लग-पासक इलाका रहय जे आठम शताब्दीमे काशी पहुँचि गेलैक। १२म शताब्दीसँ-१४म शताब्दी धरि मगधमे पुबरियो प्रकारक प्रचलन रहलै, जकर बाद ओहि इलाकामे मात्र नागरीक प्रचलन रहल। १४म शताब्दीमे १३२६ मे पञ्जी लिखेनाइ शुरू भेल आ मुस्लिम आक्रमणक बाद तिरहुताक विकास पूर्ण रूपसँ ठमकि गेल आ ओ ओहि कालमे जाहि रूपमे रहय तही रूपमे २०म शताब्दी धरि रहल।

तिरहुता लिपिक १३२६ ई. धरि क्रमिक विकास आ अन्तिम स्वरूपक प्राप्ति

अशोकक प्रयाग आ रामपुरवा, मठिआ, पहेरिया, निग्लीव, राधिया, सारनाथ स्तम्भ लेख सभमे एकरूपता अछि, एकरा ब्राह्मीक उत्तरवर्ती उत्तर-पूर्वी प्रकार कहल जा सकैत अछि।

उत्तर-पूर्वी प्रकारमे किछु विशेषता अछि। ‘‘ख’’ केर नव रूप भेटबामे अबैत अछि। बोधगयाक एकटा अभिलेखमे ‘‘ख’’ केर आधार त्रिभुजक आकारक अछि। नव-मौर्य काल, जे अशोकक परवर्ती कालक अछि, मे ‘‘च’’ मे दू टा घुमघुमौआ आकृति लम्बवत रेखाक दुहू दिस बनैत अछि, मुदा दुनू घुमाव एक आकारक नहि अछि, छोट-पैघ अछि आ ताहि कारणसँ वृत्त नहि बनि पबैत अछि। महाबोधि मन्दिरक रेलिंग- बुद्ध परिक्रमा- मे अभिलेख सभाछि जाहि मे ‘‘य’’ आ ‘‘ज’’ उत्तर भारतीय प्रकारक अछि आ ‘‘ल’’ लटपटौआ अछि। जौगड़क फराक पाथर-अभिलेखमे मुदा बड्ड लटपटाकेँ लेखल गेल अछि जे बादमे पूर्व गुप्त अभिलेख (४म-५म शताब्दी) क पुबरिया प्रकारमे आर पुष्ट भेल। जौगड़मे ‘‘ह’’ केर लटपटौआ प्रकार बादमे पुबरिया प्रकारमे देखल जाइत अछि।

उत्तर-मौर्य कालक ब्राह्मीक परवर्ती अक्षर प्रकार

दशरथक नागार्जुनी खोह अभिलेख उत्तर-पूर्वी प्रकारक अछि आ तकर बाद महाबोधि मन्दिरक रेलिंग (परिक्रमा)क स्तम्भ सभपर अभिलेखमे ई सेहो देखाइत अछि।

नागार्जुनी खोह अभिलेखक लटपटौआ ‘‘ल’’ दर्शनीय अछि। ‘‘श’’ कलसी अभिलेखसँ मेल खाइए आ पुबरिया घुमौआ ‘‘श’’क ई पूर्व रूप अछि (४म-५म शताब्दी)। ‘‘स’’ सेहो परिवर्तित अछि, उपरक नोकशी नमहर भऽ कनेक झुकि कऽ दोसर पाँति सनबनैत अछि।

महाबोधि मन्दिरक रेलिंग दशरथक नागार्जुनी खोहक५० बर्ख बादक अछि। एहिमे ‘‘क’’ कटार सनाछि, ‘‘ग’’ दू प्रकारक अछि- लटपटौआ आ कोणाकार, ‘‘प’’ मे बेस परिवर्तन अछि आ दूटा समकोण स्पष्ट देखाइ दैत अछि। ‘‘म’’ सेहो दू तरहक अछि, पहिल प्रकारमे वृत्त नीचाँ आ अर्धवृत्त ओकर ऊपर अछि, दोसर प्रकारमे त्रिभुज नीचाँ आ समकोण ओकर ऊपर अछि। ‘‘र’’ वक्र पाँतिक रूपमे अछि। ‘‘व’’ मे नीचाँ दिस वृत्तक स्थान त्रिभुज लऽ लेने अछि। ‘‘स’’ दू प्रकारक अछि, पहिल वामदिस कने वक्र, निचुलका नोकशी नीचाँ दिस आ दोसर मौर्यकाल सन जतय निचुलका नोकशी कने नम्हर रहैत छल। ‘‘ह’’ बड्ड लटपटौआ अछि जे उत्तर भारतक पूर्वी भागक ब्राह्मीक स्वरूप छल।

सारानाथसँ प्राप्त अभिलेख (०१ ई.पू. सँ ०१ ई. धरि)

उत्तर-पच्छिमक (०१ ई.पू.-०२ ई.पू.) प्रकारसँ कोनो अन्तर नहि अछि। लम्ब रेखा कने छोट भेल अछि, वक्र रेखा सभ कलाकारीककारण कोणीय भेल अछि। जँ स्वर शब्दक बीचमे अबैत अछि तँ मौर्यकालक कोणीय प्रकार लटपटौआ स्वरूप लय लैत अछि।

कुषाण अभिलेख

ब्राह्मी लिपिक उत्तर भारतीय प्रकारक पूर्वी प्रकार बोधगयाक महाबोधि गाछक नीचाँमे राखल पाथरमे प्राप्त होइत अछि। ‘‘प’’ केर उर्ध्वाधर रेखा छोट भेल अछि, ‘‘म’’ मे निचुलका भागक त्रिभुज आकार पूर्व कुषाण स्वरूपसन अछि। ‘‘श’’ कोणीय अछि आ एहिमे क्षैतिज रेखा वाम लम्बवत पाँतिकेँ छू नहि सकल अछि। साहेत-माहेत क बोधिसत्त्वक आकृतिपर लटपटौआ ‘‘ह’’ अछि आ आनठाम कोणीय ‘‘ह’’। ‘‘स’’ मे पछुलका भाग चाकर अछि। ‘‘य’’ कखनो-काल अधोलिखित अछि आ एहिमे तीन फाँड़ अछि।

गुप्त युगक प्रारम्भ (४म- ५म शताब्दी)

पूर्व प्रकार ‘‘ल’’, ‘‘ह’’, ‘‘ष’’ आ ‘‘स’’ मे स्पष्ट अछि। एहि कालक मुख्य अभिलेख सभ अछि- समुद्रगुप्तक प्रयाग स्तम्भ प्रशस्ति, चन्द्रगुप्त-२ क उदयगिरि खोहाभिलेख, चन्द्रगुप्त-२ आ कुमारगुप्त-१ क गढ़वा भांगल अभिलेख, कुमारगुप्त-१ क धनैदाहा अनुदान-पत्र, कुमारगुप्त-१ क मानकुँवर अभिलेख, स्कन्दगुप्तक बिहार स्तम्भ अभिलेख, भीमवर्मनक कोसम आकृति अभिलेख आ स्कन्दगुप्तक कौहम स्तम्भ अभिलेख।

लिपिक प्रकारक अन्तर कोना पकड़ी?

उत्तर भारतक प्रकार आ दक्षिण भारतक प्रकार (नागरी सहितमे) अन्तर ‘‘म’’ अक्षरपर ध्यान देलासँ आ उत्तर भारतक पूर्वी आ पश्चिमी प्रकारमे ‘‘ष’’, ‘‘ल’’ आ ‘‘ह’’ पर ध्यान देलासँ लिपिक कलाकारीमे भिन्नता पकड़ाइत अछि।

तिरहुताक स्वरूप एहि तरहेँ पूर्वी प्रकारसँ बहार भेल। ‘‘ल’’-एकर वाम भाग सोझे-सोझ नीचाँ दिस खसैत अछि। ‘‘ष’’ केर आधार कलाकार गोल बनेने छथि आ कनछियाह बिचुलका रेखासँ घुमाकय मिलेने छथि। ‘‘ह’’ केर आधार थकुचि कऽ छोट कयल गेल अछि आ ओकर नोकशी लम्बवत रेखामे मिला कऽ वाम दिस घुमाओल गेल अछि। ‘‘स’’ मे हरदम एकर वाम लम्बवर रेखाक अन्तमे घुमाव रहैत अछि, जे पहिने वक्र वा नोकशी सन रहैत छल। ई कुषाण कालक मथुरामे सेहो भेटल अछि। समुद्रगुप्तक प्रयाग स्तम्भ प्रशस्ति पूर्वक प्रकारक मानक रूप अछि।

तिरहुता भारतीय लिपिक तंत्र सिद्धांत

बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त आ चतुष्कोणक प्रयोगसँ कलाकार तंत्र-मंत्र कय सकल होथि से सम्भव नहि मुदा तिरहुताक अक्षरकेँ सुन्दर बनेबामे ओ अवश्य सफल भेलाह।

ब्राह्मीक उत्तरवर्ती पूर्व प्रकार (५५० ई. सँ ११०० ई.)

बुहलर (बूलर) एहि कालक लिपिकेँ सिद्धमातृका कहैत छथि।

५५० ई.-६५० ई.

एहि कालक मुख्य अभिलेख सभ अछि- नन्दनक अमौना अनुदान अभिलेख, शिवराजक पटियाकेला अनुदान अभिलेख, अनन्तवर्मनक बराबर खोह अभिलेख, अनन्तवर्मनक नागार्जुनी खोह अभिलेख। मुख्य परिवर्तन जे तिरहुता दिस भेल ओ अछि:

-तीन फेँड़ बला ‘‘य’’;

-‘‘घ’’, ‘‘प’’, ‘‘फ’’, ‘‘ष’’, ‘‘स’’ केर नीचाँ दिस समकोणीय प्रवृत्ति संगे एहि सभ चेन्हमे दहिन दिस पुच्छी वा लम्ब जे पछबरिया प्रकारमे विकसितभेल तकर अभाव।

६५० ई. सँ ७०० ई.

-‘‘अ’’ केर वाम अंगक उपरका भागक कनेक नमगर भय गेल काँटीक नोक (v अक्षर) जकाँ, निचुलका भाग वक्र बनि गेल आ माथपर बट्टम सन चेन्ह अर्द्धविराम सन

‘‘आ’’- दोसर वक्रमे अन्तर अर्द्धविराम सन, दहिन अंगक निचुलका भागसँ जुड़ल

‘‘इ’’- गुप्त कालक लिपिक पश्चिम प्रकार जे बिन्दु वा निचुलका वृत्त सन छलै से पैघ वक्रमे विकसित भय गेल

‘‘उ’’- निचुलका भागक क्षैतिज रेखा वक्रमे परिवर्तित भय गेल आ नमगर भय गेल आ अही रूपमे १०म शताब्दी धरि रहल आ तखनजा कय अन्तिम रूपसँ विकसित भेल

‘‘ओ’’- नमगर अर्धविराम पाँछा दिस चौरस भय गेल

‘‘क’’- पहिल बेर वाम दिस सदैव घुमाव रहय लागल, ई घुमाव ११म शताब्दीमे अर्धवृत्त बनि गेल

‘‘ख’’- अक्षरक आधारमे त्रिभुज आकृति बनल फेर ई सोझ रेखा बनल आ फेर घुमि गेल, त्रिभुजक एक भुजा अर्धवृत्त बनि गेल आ दोसर नमगर भय गेल आ वृत्तक दुनू चापकेँ छूलक।

‘‘ग’’- आधार रेखाक वक्रता प्रारम्भिक गुप्त कालहिसँ पुबरिया प्रकारमे देखाइ पड़य लागल छल। ६अम शताब्दीक यशोधर्मन अभिलेखक आधार रेखा वामदिस घुमि गेल आ दहिन दिस टेढ़ भय गेल आ दहिन लम्बसँ न्यून कोण बनेलक।

‘‘ङ’’- निचुला दहिन दिसुका कोण न्यूनकोण बनि गेल आ लम्बवत सोझ रेखा गोलाइ लय लेलक

“च”- गुप्त कालक दुनू गोलाइ त्रिभुज बनि गेल जे “वी” आकार ऊपरमे लेलक, आधार रेखा वा निचुलका रेखा वाम दिस कने नमगर भय गेल।

“छ”- कोनो अन्तर नहि।

“ज”- पुबरिया प्रकारमे निचुलका प्रारम्भिक गुप्त कालहिसँ क्षैतिज आकार स्पष्ट छल आब लम्बवत रेखामे सेहो स्पष्ट रूपसँ गोलाइ देखाइ पड़य लागल। बिचुलका नव क्षैतिज ओतबी घुमि गेल जतेक निचुलका आधार रेखा छल। उपरका क्षैतिज रेखाक दहिन दिस “वी” आकार जुड़ि गेल।

“ञ”- कनेक लटपटौआ

“ट”- पछबरिया प्रकारसँ बेस अन्तर आबि गेल। खुजल गोलाइ आ “वी” आकृति ओहि गोलाइक उपरका भाग पर क्षैतिज रूपमे राखि देल गेल।

“घ”- आधार रेखाक गोलाइ प्रारम्भिक गुप्त कालक पुबरिया प्रकारमे देखाइ पड़य लागल छल, आब ई तीन फँड़बला “य” सन बनि गेल।

“ठ”- पूर्वकालक मौर्य प्रकार अखनो प्रयुक्त होइत रहल।

“ड”- दूटा छोट गोलाइ बनि गेल।

“ढ”- कोण गोलाइ लय लेलक।

“ण”- आधार रेखा टेढ़ भय गेल आ ओ निचुलका भागक दहिन दिस न्यून कोण बनेलक आ वाम नोकशी नमगर भय गेल।

“त”- गुप्त कालहिमे दहिन अंगक निचुलका भाग नमगर भय गेल रहय, ई कने गोलाइ लय लेलक आ एकटा “वी” आकार ऊपरमे बनि गेल।

“थ”- उपरका भाग चकराइ लय लेलक।

“ध”- छोट चाप अर्द्ध-वृत्त मे बदलि गेल।

‘‘न’’- प्रारम्भिक गुप कालक गोलाइ बला रूप बदलि कय आधुनिक नागरी रूप लय लेलक। गोलाइ मुख्य भागसँ फराक भय गेल आ मुख्य भागसँ एकटा छोट क्षैतिज रेखासँ मिलि गेल आ कने छोट सेहो भय गेल।

‘‘प’’- कनेक आर बेशी लटपटौआ आकार लेलक आ न्यून कोण आर स्पष्ट भय गेल।

‘‘ब’’- ‘‘ब’’ केर स्थान ‘‘व’’ लय लेलक।

‘‘भ’’- ‘‘भ’’ आ ‘‘ह’’ केर बीच अन्तर खतम भय गेल, पछबरिया प्रकार मे ई पहिनहिये भय गेल छल।

‘‘म’’- न्यून कोण आर तीक्ष्ण भय गेल आ तकर परिणाम भेल जे दहिना अंग नीचाँ दिस बढ़ि गेल।

‘‘य’’- ‘‘य’’ दू प्रकारक, पहिल दू फेँड़बला, एकर निचुलका हीसमे न्यूनकोण बनैत अछि आ दोसर प्रकारमे न्यूनकोण ओतेक स्पष्ट नहि अछि मुदा दहिन भागक अंग नीचाँ दिस नमगर भऽ गेल अछि।

‘‘र’’- निचुलका छोरपर ‘‘वी’’ वा तीरक आकृतिक जे पहिलुक्का अभिलेख सभक पछबरिया प्रकारमे सेहो छल। ई ‘‘ड’’ केर छोट रूपसँ मिलानी खाइत अछि।

‘‘ल’’ दू प्रकारक अछि। पहिल प्रकारमे वाम अंगक वक्र वा नोकशी नीचाँ दिस नमगर भेल अछि आ सभसँ नीचाँ जा कय कनिये बाहर दिस वक्र रूप लैत अछि । दोसर प्रकारमे वाम अंगक वक्रपर नोकशी अछि जे नमगर भऽ कऽ नीचाँ जेबाक बदला आन्तरिक आकार लैत अछि। ई मोटा-मोटी आजुक तिरहुता आ देवनागरी सन भऽ जाइत अछि।

‘‘व’’- एतय ओही तरहक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि जेना ‘‘ख’’ केर आधारमे त्रिभुज बनैत अछि। त्रिभुजक दुनू भुजा वक्र बनि जाइत अछि, तेसर नमगर भऽ जाइत अछि। अक्षर ऊपर ‘‘वी’’ आकार बनैत अछि।

‘‘श’’- अक्षरक उपरका भाग पूर्व गुप्त कालमे वक्र छल, आब जा कऽ उपरका भाग वक्रक रूप लैत अछि, निचुलका दहिन अंग ऊपर दिस नमगर भेल अछि।

''ष''- ई तीन प्रकारक अछि- पहिल प्रकारमे रूप वक्रित अछि, दोसर प्रकारमे वक्र फोंक ''वी'' आकृतिक रूप लैत अछि, तेसर प्रकारमे ''वी'' आकृतिक उपरका भाग फराक भऽ जाइत अछि आ ''वी'' आकृति नहि रहि जाइत अछि (ई प्रकार भेटैत अछि ६अम सँ ९अम शताब्दीक उत्तर-पूर्वी अभिलेख सभमे)।

''ह''- अक्षरक दहिन अंगमे वक्र आ नोकशीक नमगर होयब आ शीर्षपर ''वी'' आकृति (ढबकल सन) आ अखनि धरिक क्षैतिज आधार रेखा कने टेढ़ भऽ जाइत अछि।

आठम शताब्दी

एहि कालक मुख्य अभिलेख जाहिमे ब्राह्मीक उत्तरकालक पुबरिया रूप फराक होइत अछि-

जीवितगुप्त २ केर देव-बार्नार्क स्तम्भ लेख, धर्मपालक खलीलपुर अनुदान पत्र आ धर्मपालक समयक बोधगया आकृति अभिलेख।

मुख्य बिन्दु अछि।

स्वर- कोनो परिवर्तन नहि भेल।

क, ग, च, ज, ट, ठ, ड, द, ध, न, भ, म, य, ह- कोनो परिवर्तन नहि भेल।

ण- दहिन वक्र वा नोकशी नीचाँ दिस नमगर भेल।

त- नीचाँ दिस नमगर भऽ गेल, निचुलका छोरपर बड़ड छोट वक्र।

''थ''- ''वी'' आकृतिक छोरक नमगर भेलासँ उपरका भाग चकरगर भेल।

''प'' दू प्रकारक- पुरनका रूप जाहिमे न्यूनकोण अखनो स्पष्ट अछि। नवका रूपमे न्यूनकोण उपस्थित तँ अछि मुदा स्पष्ट नहि अछि आ एकर स्थान नीचाँ दिसुका दहिन लम्ब रेखा लऽ लेने अछि।

''ल''- न्यूनकोण बड़ड छोट भऽ गेल अछिआ दहिन लम्ब रेखा नीचाँ दिस चल गेल अछि।

''श''- ई दू प्रकारक अछि। पूर्व रूप वक्र संग अछि। बादक रूप ९अम शताब्दीक दिघवा-दुभौली अनुदान सन अछि।

''ष''- वाम अंगक निचुलका भाग लटपटौआ अछि आ वाम भागक लम्ब सँ आगाँ चलि जाइत अछि।

अफसड़ अभिलेखमे सभ ठाम दन्त ‘‘स’’ केर प्रयोग भेल अछि।

धर्मपालक बोधगया अभिलेख

‘‘श’’ तीन प्रकारक अछि- पहिल प्राचीन रूप जाहिमे उपरका भाग गोलाइ लेने अछि। बादक रूप बिन डण्टाक अछि। एकटा बिचुलका रूप अछि जाहिमे डण्टा सन आकृति छै, मुदा ओ न्यूनकोणकेँ दक्षिण उर्ध्वाधर रेखाक बदलामे नीचाँमे छुबैत अछि।

‘‘ज’’ मे उपरका क्षैतिज रेखा बिला जाइत अछि आ ‘‘वी’’आकृति ओकर बदलामे आबि जाइत अछि। बिचुलका क्षैतिज रेखा एकटा वक्र अछि।

‘‘न’’ दू प्रकारक- पुरनका प्रकार फानी सन छल। आब ई गुप्त आ तिरहुताक बीचबला आकार लऽ लैत अछि।

‘‘ण’’- आधार रेखा बिला जाइत अछि।

‘‘ह’’- निचुलका दिसुका न्यूणकोण बेसी स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

धर्मपालक बाद देवपालक अन्तर्गत तिरहुत प्रदेश रहल। मुदा तकर बाद गुर्जर-प्रतिहार सम्राट तिरहुत छीनि लेलनि, बिग्रहपाल -१ आ नारायणपाल क शासनकालमे।

ब्राह्मीक परवर्ती पुबरिया प्रकार (९अम शताब्दी सी.ई.)

एहि सभमे ई सभ मुख्य प्रकार अछि:

१.देवपालक मुंगेर अनुदान पत्र

२.देवपालक समयक घोसरवा अभिलेख

३.नारायणपालक बादल स्तम्भ अभिलेख

४.नारायणपालक विष्णुपाद मन्दिर अभिलेख

५.नारायणपालक भागलपुर अनुदानपत्र

६.महेन्द्रपालक दिघवा-दुभौली अनुदान-पत्र

७.महेन्द्रपालक रामाज्ञा अभिलेख

घोसरवा अभिलेख

अ/आ- उपरका भाग अखनो पूर्ण रूपसँ विकसित नहि भेल अछि।

इ- दूटा वृत्त वा बिन्दु ऊपरमे आ काटबला वक्र नीचाँमे।

ई-समकोण त्रिभुजक रूप लऽ लेने अछि।

ख- अखनो वाम अंगक नीचाँ दिस ‘‘वी’’ आकृति लेनहिये अछि।

च- चकराइ बढ़ि गेल।

ज- पुरातन रूप- बिचुलका क्षैतिज रेखा कने नीचाँ दिस टेढ़ भेल आ निचुलका क्षैतिज रेखा एकटा छोट वक्रमे खतम होइत अछि।

ट/ ठ केर दहिन अंग नहि देखाइ पड़ैत अछि।

ण- आधार रेखा पूरा-पूरी खतम भऽ गेल।

थ- उपरका भाग चाकर भऽ गेल।

द/ ध- निचुलका रेखा नीचाँ दिस वक्र भऽ गेल अछि।

न- फानी सन पूर गुप्त काल आ तिरहुताक बीचक रूप। फानी अक्षरक मुख्य अंगसँ विलग भऽ गेल।

प- पुरातनरूप नीचा दिस कोनो वक्रता नहि। एकटा अधिक कोण आ एकटा नूनकोण बदलामे निचुलका भागमे दूटा समकोण बनि जाइत अछि।

भ-नीचाँ दिस टेढ़

म- फानी अखनो नहि बनल अछि।

य- न्यूनकोण चपा गेल अछि आ तिरहुता स्वरूप प्राप्त कऽ लेने अछि।

ल- आधाररेखा पूरा-पूरी दबि गेल अछि।

व- न्यूनकोणक बदलामे दहिन उर्ध्वाधर सोझ रेखाक नमगर रूप आबि गेल।

ष- उपरका रेखा टेढ़ भऽ गेल।

स- आधार रेखा फेर क्षैतिज भऽ गेल आ उपरका रेखा नीचाँ दिस टेढ़ भऽ गेल।

ह- पुरातन रूप, न्यूनकोण अखनो दोसर निचुलका रेखा नहि बनल अछि।

विष्णुपद मन्दिर अभिलेख

“इ” दू प्रकारक- पहिल प्रकारमे दूटा वृत्त ऊपरमे आ एकटा कटाव नीचाँमे। दोसर प्रकारमे ऊपरमे एकटा छोट क्षैतिज रेखा आ दूटा वृत्त नीचाँमे।

“ख” तिरहुताक आकारक रूप लऽ लेने अछि।

“घ” अखनो नीचाँमे न्यूनकोण बनेने अछि।

“ट”- दहिन दिसुका उर्ध्वाधर सोझ रेखा पूरा-पूरी बिला गेल।

“ठ”- अखनो पुरने रूप अछि।

“प”- दू प्रकारक। पुरनका रूप जतऽ कोण अखनो अछिये। दोसर रूपमे तिरहुताक लटपटौआ रूप।

“म”- आधार रेखा विलुप्त भऽ गेल।

“श” आ “ष” क रूप फानीबला आ अखुनका रूपक बीचबला रूप लेने अछि।

नारायणपालक भागलपुर अनुदान

अ/ आ- पूरापूरी तिरहुता रूप, एतय धरि जे छोटका रेखा जे दहिना लम्ब रेखाक अर्द्धविराम रूपी कटावसँ मिलैत अछि, नीचाँ दिस टेढ़ भेल अछि।

‘‘उ’’- एहिमे एकटा उपरका रेखा बनैत अछि आ लम्बरूपी रेखावाम दिस वक्र भऽ जाइत अछि।

‘‘क’’ केर त्रिभुज चाकर भऽ गेल अछि।

‘‘ख’’ तिरहुता सन लटपटौआ भऽ गेल अछि।

‘‘घ’’ मे न्यूनकोण खतम भऽ गेल आ तिरहुता केर आकार लऽ लेलक अछि।

‘‘च’’- उपरका भाग पातर भऽ गेल अछि।

‘‘ज’’- बिचुलका क्षैतिज भाग दू टा सोझ रेखामे बदलि गेल अछि आ अधिककोण बनबैत अछि।

‘‘ट’’- उपरका रेखाक दहिन छोरसँ नीचाँ दिस छोटका रेखा जाइत अछि।

‘‘ण’’- तिरहुता प्राचीन रूप। दूटा छोट रेखा लम्ब सोझ रेखाक वाम दिस जा कऽ मिलैत अछि।

‘‘त’’- ई बदलि गेल अछि, एहिमे एकटा उपरका रेखा आ एकटा लम्ब रेखा समकोण पर अछि संगहि एकटा वक्र लम्ब रेखाक वाम दिस जुड़ि गेल अछि, जेना नागरीमे अछि।

‘‘थ’’- तिरहुता सन उपरका वक्र खुजि गेल अछि।

‘‘ध’’- उपरा भाग खुजि गेल अछि।

‘‘न’’- पुरातन फानीबला रूप, फानी नीचाँ दिस झुकल।

‘‘प’’- उपरका दिस पातर भेल।

‘‘फ’’- उपरका कम चाकर भेल।

‘‘म’’- सभरूप फाने सन।

‘‘ल’’- अन्तिम रूपसँ आधार रेखा थकुचा गेल अछि।

‘‘श’’- सभ प्रकार फानी सन।

''ष''- पुरातन रूप, उपरका आ निचुलका भाग बराबर, दोसर मे उपरका भाग कम चाकर।

प्रतिहार नरेश महेन्द्रपालक दिघवा-दुभौली अनुदान (गोपालगंज)

एहिमे पुबरिया प्रकारक विशेषता भेटैत अछि जेना च पतरा गेल, ज लटपटा गेल, थ- तिरहुताक पूर्व रूप बुझाइत अछि, फानीबला ''म'' अछि, ''श''मे फानी लम्ब रेखासँ मिज्झर होइत अछि, ''ष'' मे उपरका रेखा नीचाँ दिस टेढ़ होइत अछि। ई अनुदान पूब आ पच्छिमक मिश्रित रूप प्रस्तुत करैत अछि।

१०म शताब्दीमे पैघ साम्राज्य सभ खतम होइत गेल आ तैँ अभिलेखो नहियेक बराबर अछि। नालन्दा आकृति अभिलेख एहि कालक अछि जाहिमे ''भ'' केर पुरान रूप देखबामे अबैत अछि। ''श'' केर परवर्ती रूप देखाइत अछि। बोधगया केर आकृति पर अभिलेखमे सेहो भ केर पुरान रूप भेटैत अछि आ श केर परवर्ती रूप सेहो। ख केर रूप तिरहुता सन अछि।

तिरहुता लिपिक विकासक अन्तिम चरण

किछु लिपि जे अखन धरि नहि पढ़ जा सकल अछि

(१)- हड़प्पा लिपि

(२)- अलंकृत ब्राह्मी, भारतकसभ भागमे छोट-छोट अभिलेख एहि लिपिमे अछि, मोटा-मोटी नाम आ हस्ताक्षर लेल प्रयुक्त होइत छल।

(३)- शंख लिपि- एकर अक्षर सभ शंख सन अछि तैँ एकर ई नामकरण भेल। ई सेहो मोटा-मोटी नाम आ हस्ताक्षर लेल प्रयुक्त होइत छल। (**कोल्हुआ, मुजफ्फरपुरक अशोक स्तम्भ (बसाढ़ स्तम्भ) मे जे तीनटा अभिलेख भेटल अछि ओहि मे किछु अक्षर शंख लिपिक सेहो अछि**।)

(४)- ब्राह्मी सन एकटा लिपि जे माटिक मोहर सभपर पूर्व भारतक चन्द्रकेतुगढ़ आ तामलुकसँ भेटल्;अ अछि।

(५)- खरोष्ठी सन दहिनसँ वाम लिखल जायवला एकटा लिपि जे अफगानिस्तानसँ भेटल अछि।

तिरहुताक विकासक अन्तिम चरण

किछु अक्षर पहिने तिरहुताक रूप लऽ लेलक तँ किछु कने बाद। किछु अभिलेखमे किछु अक्षरक प्रयोगे नहि भेल। अनुलग्नक-५ मे तिरहुता रूपक क्रमिक स्थिति देखाओल गेल अछि। कैथी, तिब्बती आ देवनागरी लिपि अही तरहेँ अपन वर्तमान रूपमे आओल जे अनुलग्नकमे देखाओल गेल अछि। किछु विद्वान हर्षवर्द्धनक बादक समयमे ओकर तिरहुतक मंत्री अर्जुन द्वारा कन्नौजक राजा बनब आ तिब्बतक बौद्ध यात्री सभकेँ तंग करबाक चर्चा केने छथि आ प्रत्युत्तरमे तिरहुत पर तिब्बतक कब्जाक चर्चा करैत छथि। आधुनिक विद्वान ओहिपर शंका व्यक्त करैत छथि। तिब्बतक राजनैतिक प्रभुत्वपर तँ शंका अछि मुदा सांस्कृतिक रूपसँ निम्न तथ्य तिब्बतक वज्रयानक मिथिलामे उपस्थिति देखबैत अछि। बौद्ध देवी तारा, वारी, समस्तीपुर, उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा। मुसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊंच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्त्ति, पाइ, बर्त्तनक टुकड़ी आ पजेबाक अवशेष एतए अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली नाहर भगवतीपुर भुवनेश्वरी मन्दिर (मधुबनी) मे सेहो अछि, प्रायः बौद्ध भिक्षु लोकनिक ई तपस्या स्थली होयत। फेर बौद्ध सिद्ध सरहपाद जे लिखै छथि- सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ, मण्ड पिबन्तों बिसरउ एमइउ। ओ सिद्धिरस्तु आ एहि विचार कि माँड़ पीने बुद्धि मन्द होइत अछि दुनूक चर्च करैत छथि जाहिसँ हुनकर बौद्ध धर्मक मैथिल होयबाक प्रमाण भेटैत अछि, हुनकर जे फोटो तिब्बतसँ भेटैत अछि ओहिमे हुनकर फोटोक नीचाँमे तिब्बती लिपिमे वर्णन अछि।

७म शताब्दी आ बादक किछु तिरहुता अभिलेख

अन्धराठाढी अभिलेख (श्रीधरदासक आंध्रा-ठाढ़ी अभिलेख), मधुबनी, बुद्धमूर्ति अभिलेख (कोर्थु), विष्णुमूर्ति अभिलेख (लदहो), १२म शताब्दीक सिमरौनागढ़क तिरहुता पाथर-अभिलेख, १९म शतीक ब्रह्मपुरा शिलालेखमे तिरहुताक आदर्श रूप, मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीचक गौरीशंकर स्थान, गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ एहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेख, बिदेश्वर-मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह कएलन्हि, ताहि युगक तिरहुताक अभिलेख। मंदार पर्वत-बांका स्थित स्थलमे तिरहुताक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। पौराणिक कथामे समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे बौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्त्ति अछि, पैघ मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर सोझाँ दूटा पदचिन्ह अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एतहि भेल छलन्हि। बसैटी अभिलेख- पूणियाँमे श्रीनगर (जिला अररिया) लग तिरहुताक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इन्द्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि। एकर आधार पर मदनेश्वर मिश्र 'एक छलीह महारानी' उपन्यास सेहो लिखने छथि। बाइसी-बसैटी, अररिया तिरहुता ताम्रपत्र- रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे फूड-फॉर-वर्क आ अन्य

कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ कएलन्हि केर मिथिलाक्षर अभिलेख एतए एकटा मन्दिरक ऊपरमे ताम्र-पत्रपर कीलित अछि, जे कारी रंग सँ पेंट कऽ देल गेल अछि आ शिलालेख सन लगैत अछि।

जलज कुमार तिवारी आ एस. कृष्णामूर्ति २०१९ ई.मे प्रकाशित अपन आलेखमे निम्न तिरहुता अभिलेख सभक वर्णन दैत छथि जे अखन धरि कोनो पोथीमे नहि आयल छल। चेचर गाम (वैशाली) मे बुद्ध मूर्तिपर अभिलेख भेटल अछि जे तिरहुता लिपि आ संस्कृतमे अछि (९अम शताब्दी)। तारा मूर्ति, जगतपुर बरुआरी (सुपौल) जे सहरसा म्यूजियममे राखल अछि, तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषाक अभिलेख एततसँ भेटल अछि (१० म शताब्दीक)। तारा मूर्ति, दभैछा (वैशाली) मे तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषाक अभिलेख भेटल अछि (१० म शताब्दीक)। पिपरौलिया विष्णु आकृति (मूर्ति), दरभंगा, तिरहुता लिपि. संस्कृत भाषा (१०म शताब्दी)। गाम- भच्छी (बहेरी लगक जिला दरभंगा, मधुबनीक भच्छीसँ भिन्न), तिरहुता लिपि, संस्कृत भाषा (१०म-११म शताब्दी)। कण्दाहा (सहरसा) क पाथर अभिलेख, ओइनवार कालक राजा नरसिम्हदेवक आदेशसँ वंशधर ब्राह्मण द्वारा (तिरहुता १५मशताब्दी, भाषा संस्कृत)। मनसा आकृति (भैरवस्थान, मुजफ्फरपुर)- तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषामे लिखल अभिलेख (१५ म शताब्दी)। बुद्ध मूर्ति, कोर्थु दरभंगा, तिरहुता लिपि, संस्कृत भाषा (१०म शताब्दी)। एकर अतिरिक्त ओ पहिल शताब्दीक एकटा ब्राह्मी अभिलेखक चर्च सेहो करैत छथि [गाम पखौली जिला वैशाली (स्तम्भ अभिलेख) (ब्राह्मी लिपि, पहिल शताब्दी)]। तीनटा अशोक स्तम्भपर, जे कोल्हुआ (मुजफ्फरपुर)मे भेटल अछि, बादमे कियो अभिलेख खचित केने छथि। ओहिमे दूटा अभिलेख ७म शताब्दीक अछि जे नागरी लिपि आ संस्कृत भाषामे अछि आ तेसर ५म शताब्दीक अछि जे संस्कृत भाषामे आ ब्राह्मी लिपिमे अछि। कोल्हुआ, मुजफ्फरपुरक अशोक स्तम्भ (बसाढ़ स्तम्भ) मे जे तीनटा अभिलेख भेटल अछि ओहि मे किछु अक्षर शंख लिपिक सेहो अछि, जे अखन धरि नहि पढ़ल जा सकल अछि। (*जलज कुमार तिवारी, एस. कृष्णामूर्ति, मिथिला भारती, भाग-६, अंक १-४, २०१९ ई.*)

मान्दा अभिलेख, कमौली दानपत्र (विद्यादेव कमौली प्रशस्ति), गदाधर मन्दिर अभिलेख (गदाधर मठ गया), गंजम ताम्रपत्र, लोकनाथक दानपत्र, भागलपुर, मुंगेर आ नालन्दाक दानपत्र, बादल स्तम्भ अभिलेख, विश्वरूप सेनक मदनपाद दानपत्र, अशोकाचलक बोधगया अभिलेख, वल्लालसेनक नैहाटी अभिलेख, ढाका अभिलेख (ढाका मूर्ति अभिलेख), देवपारा प्रशस्ति, अनुलिया आ साहित्य परिषद दानपत्र, भुवनेश्वर, सुन्दरवन, वेलवा आ बोधगया अभिलेख क्रमसँ देवनागरी आ तिरहुताक बीचमे फाँक आनि देलक।

उपसंहार

तेसर शताब्दी ई.पू. मौर्य, दोसर आ पहिल शताब्दी ई. पू. शुंग, पहिल सँ तेसर शताब्दी शक/ कुषाण, चारिमसँ छअम शताब्दी- गुप्त, सातमसँ ९अम शताब्दी सिद्धमातृका आ तकर बाद तिरहुता, एहि क्रममे तिरहुताक विकास हम देखि सकैत छी। तंत्रक योगदानसँ आ तिब्बती लिपिक प्रभावसँ तिरहुता अलंकृत भेल। मिथिलाक्षरक उद्भव आ विकास मे राजेश्वर झा जी किछु पुरातन तथ्यसँ अपनाकेँ दूर नहि कऽ सकला, जेना ओ नहि फरिछा सकला जे ब्रह्मी पूर्व पाणिनी व्याकरणाचार्य लोकनि द्वारा प्रयुक्त होइत छल आ पाणिनीक व्याकरणमे ओ अशुद्ध भऽ गेल आ तखनसँ एकर नाम ब्राह्मी भऽ गेल। ओ ब्राह्मण लोकनि द्वारा प्रयुक्त हेबाक कारणे ब्रह्मी नाम भेलपर जिदियायल छथि। हुनकर अवधारणा जे वैदेही लिपिसँ ब्राह्मी (जकरा ओ ब्रह्मी लिखै छथि) बहरायल सेहो भ्रामक अछि। मिथिलामे शंख लिपिमे सेहो छोट-छीन अभिलेख भेटल अछि, जकर वर्णन ऊपर कयल गेल अछि, जे हड़प्पा लिपि जेकाँ पढ़ल नहि जा सकल अछि आ ब्राह्मीमे सेहो अभिलेख भेटल अछि, से हुनकर कथन जे सोझे हड़प्पासँ लोक विदेह आयल विदेघ माथवक संग (शतपथ ब्राह्मण) आ एतऽ वैदेही लिपि शुरू कऽ देलक, से मान्य नहि अछि। से सगर भारतमे जे परम्परा छल जे ब्राह्मीमे पैघ अभिलेख लिखल जाइत छल आ नाम आ हस्ताक्षर लेल शंख लिपिक प्रयोग कएल जाइत छल से मिथिलोमे भेटल अछि। राजेश्वर झा तंत्र-सिद्धांत आ एकर तिरहुता लिपिपर प्रभावक सेहो जरूरति सँ बेशी प्रभाव देखेने छथि, जखन कि ओकर प्रभाव किछु सोझे आ किछु तिब्बती लिपिक माध्यमसँ पड़ल मुदा ओ ओहिसँ अलंकृत मात्र भेल। हुनकर ई कथन जे शब्दकल्पद्रुममे देल लिखबाक पद्धतिसँ बांग्ला लिपि नहि वरन् मात्र मिथिलाक्षर (तिरहुता) लिखल जा सकैत अछि, सेहो भ्रामक अछि। बांग्ला वा मिथिलाक्षर वा तिब्बती वा देवनागरी सभ ब्राह्मीपर आधारित अछि आ ई एहि तरहेँ बूझल सा सकैत अछि जे रोमन लिपिमे एकसँ एक फॉण्ट छै जे कखनो अहाँकेँ अरबी सन बुझायत कखनो लटपटौआ, आ सभ एक दोसरामे परिवर्तनीय अछि। शब्दकल्पद्रुममे देल विधि तिरहुते नहि बांग्लो लेल उपयुक्त छल, छापाखाना एलाक बाद जेना रोमन पूर्ण रूपसँ संयुक्ताक्षर खतम कऽ लेलक तहिना बांग्ला बहुत रास संयुक्ताक्षरकेँ खतम कऽ लेलक। आ ओहि नवका रूपकेँ राजेश्वर झा जी शब्दकल्पद्रुमसँ जोड़बाक गलती केलन्हि। राजेश्वर झाकेँ खरोष्ठी लिपिक सम्बन्धमे सेहो भ्रम छन्हि। खरोष्ठी दहिनसँ वाम दिस लिखल जाइत अछि मुदा ई पूर्ण रूपसँ भारतीय लिपि छल, वएह स्वर व्यंजन (कचटतप)। ब्राह्मीसँ किछु चेन्ह कम भेलाक कारण, जखन अभिलेख प्राकृतसँ संस्कृतमे लिखल जाय लागल, खरोष्ठी संस्कृतक समासयुक्त अभिलेखक लेखन लेल अनुपयुक्त भऽ गेल आ खतम भऽ गेल आ कोनो भारतीय लिप एहिसँ बहार नहि भऽ सकल।

आधुनिक तिरहुताक रूपक विकास नारायणपालक भागलपुर दानपत्र, श्रीचन्द्र रामपालक दानपत्र, महिपाल प्रथमक वनगढ़ दानपत्र, भोजवर्मनक वेलवा दानपत्र, लक्ष्मणसेनक तर्पण निधि दानपत्र सँ विकसित होइत पक्षधर मिश्र कृत विष्णुपुराण आ १३२६ ई. सँ प्राप्त मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक पञ्जीमे आबि कऽ

ISSN 2229-547X VIDEHA

समाप्त भऽ जाइत अछि। जे किछु छोट-मोट परिवर्तन लेखकक व्यक्तिगत लेखनीक कारण छल से छापाखाना एलाक बाद खतम भेल। रामलोचन शरण (१८८९-१९७१) तिरहुतामे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ केलन्हि।तकरा बाद कम्प्यूटर फॉण्टमे एकरूपता आबि गेल आ से सम्भव भेल देवनागरी यूनीकोड (मंगल), बांग्ला यूनीकोड (वृन्दा) आ तखन तिरहुता यूनीकोडकेँ आधार बनेलासँ। छापाखानामे दिक्कति रहै, जे किछु रूपकेँ ओतय छोड़य पड़ैत छलै, आ घोंघाउज होइत छल जे एहि तिरहुताकेँ सीखि कऽ पाण्डुलिपि नहि पढ़ल जा सकैए। कम्प्यूटरमे एक्के आधारपर विभिन्न फॉण्टक निर्माण भेलासँ विभिन्न फॉण्ट विभिन्न तरहक लेखन रूपकेँ अंकित करैत अछि आ ओ सभ आपसमे परिवर्तनीय होइत अछि। से सभ १३२६ ई. क बादक सभ तरहक परिवर्तन (संयुक्ताक्षर सहित), जे परिवर्तन नहि वरन् लेखनक विभिन्न स्टाइल छल, क समावेश आब सम्भव भऽ गेल अछि।

अनुलग्नक १: कैथी लिपिमे मैथिलीक किछु उदाहरण (साभार जीनोम मैपिंग आ जीनियोलोजिकल मैपिंग, मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध भाग-१ आ २ , श्रुति प्रकाशन, २००८, २००९)

अनुलग्नक २: मिथिलाक कर्ण कायस्थक तिरहुता लिपिमे लिखल किछु पात (साभार मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण- मेजर विनोद बिहारी वर्मा, १९७३)

अनुलग्नक ३: लर्न मिथिलाक्षर- गजेन्द्र ठाकुर

अनुलग्नक ४: देवनागरी: तिब्बती: तिरहुता

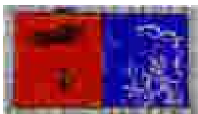
अनुलग्नक ५: ब्राह्मीसँ तिरहुता धरि लिपिक विकास

अनुलग्नक: १-२-३ लिंक** **अनुलग्नक ४-५ लिंक

(विद्यार्थी लोकनि लेल निर्देश: *अनुलग्नकमे देल ब्राह्मीसँ तिरहुता धरिक विकासक सभ अक्षरक प्रैक्टिस करबाक आवश्यकता नहि अछि। एक वा दू अक्षरक अभ्यास पर्याप्त अछि। अनुलग्नक-५ पर ध्यान देब बेशी जरूरी अछि। अभिलेख सभक विस्तृत विवरण आ तिरहुता दिस लिपिक झुकाव विस्तारमे देल गेल अछि। अहाँ जाहि लिपिक अनुलग्नक ५ सँ अभ्यास करी ओतबे अपन नोटमे ओहि अभिलेखसँ सामिग्री उठाबी। सम्पूर्ण मोन रखनाइ नहिये सम्भव छैक नहिये से जरूरी छैक। ई आलेख साढ़े आठ हजार शब्दक अछि, अहाँ अपन सुविधासँ एकर ६००- १००० शब्दक नोट बना सकैत छी।*)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-“ए”, क्रम-५]

TOPIC-17 (टॉपिक ०१ सँ १६ लेल जाउ http://www.videha.co.in/aboutme.htm पर)

१

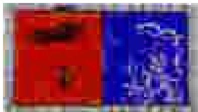
मैथिली आ बांग्ला

मैथिली	**बांग्ला**
अपने	आपनि
नै (नहि)	नय
छी	आछि/ छि
काज	काज
इनार	इनार
करै (करैत) छी	कोरेछि
गेल छलौं (छलहुँ)	गियेछिलाम
बाजू नै	बोलबेन ना
रान्हल	रान्ना
की	कि
संगे	शंगे

चाह	चा
दू टा	दुटो
ई सब	एशब
सिंघाड़ा	शिङाड़ा
कोन	कोन
हाथ	हात
अखन	ऐखोन
पाँचटा	पाँचटा
अच्छा	आच्छा
छथि	आछेन
छी	आछि
हुअय	आछो
करू	कोरून
चाही	चाइ
खोलै छी	खुलछि
कोनो	कोनो

बांग्ला ‘‘अ’’ ओड़िया सन ‘‘ओ’’ उच्चरित होइत अछि।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली सन इ/ ई आ उ/ऊ केर ह्रस्व-दीर्घ उच्चारणमे भेद नहि अछि आ ऐ मैथिलीमे अ+इ आ बांग्लामे ओ+ई उच्चरित होइत अछि। औ बांग्लामे ओ+उ उच्चरित होइत अछि।

''न'' आ ''ण'' केर उच्चारण बांग्लामे एके रङ होइत अछि। मैथिलीमे ''ण'' केर उच्चारण कखनो काल ''ड़'' होइत अछि (गणेश=गड़ेस)।

व/ ब एके रङ ''ब'' (मैथिली जकाँ) सन उच्चरित होइत अछि।

आश्विन मैथिलीमे लिखलो आ बाजलो ''आसिन'' जाइत अछि मुदा बांग्लामे लिखल आश्विन आ बाजल आश्शिन जाइत अछि।

तहिना :-

बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि	बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि
अन्वेषण	अन्नेशन
श्वास	शाश
उच्छ्वास	उच्छास
अक्षर	अक्खोर
पद्म	पद्दो
विस्मय	बिश्शय
उज्जवल	उज्जल

फेर बांग्लामे एना लिखल आ फराकबाजल सेहो जाइत अछि:-

बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि	बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि
संस्हा	शंस्था
स्हान	स्थान
सुस्ह्	शुस्थो
असुस्ह्	अशुस्थो

बांग्लामे कोनो शब्द पर विशेष बल देबाकलेल -तो जोड़ल जाइत अछि।

बांग्लामे पूर्व निर्दिष्ट वस्तु लेल प्रयुक्त वस्तुवाचक संज्ञा/ सर्वनामक एकवचनमे -टा -टि आ बहुवचनमे -गुलो, -गुलि जोड़ल जाइत अछि।

बांग्लामे संख्यावाचक शब्दक संग -टा, -टि, -टे, -टो जोड़ल जाइत अछि मुदा -गुलो, -गुलि केर प्रयोग नहि होइत अछि।

बांग्लामे ‘‘संग’’ आ ‘‘लेल’’ सन अव्यय लेल सम्बन्ध विभक्तिक प्रयोग होइत अछि जेना:-

चायेर शंगे- चाहक संग

आमार शंगे- हमरा संग

आमार जोन्ने- हमरा लेल

बांग्लामे सर्वनामक सम्बन्धवाचक रूपबनेबा लेल सर्वनामक तिर्यक रूपमे -देर जोड़ल जाइत अछि।

आमा-आमादेर-हमर

आपना-आपनादेर-अहाँक

तोमा-तोमादेर- तोहर

एना-एनादेर-हिनकर

वर्त्तमान काल आज्ञार्थकक बाद -ना प्रयोग जोर देबा लेल कयल जाइत अछि।

देखू ने- देखुन ना

कोनो शब्द पर बल देबा लेल मैथिलीमे द्वित्व+एकार केर प्रयोग होइत अछि जेना- कम्मे, एक्के। बांग्लामे ई प्रभाव -इ युक्त भेलासँ अबैत अछि जेना-कमइ।

मैथिलीमे ''अछि'' केर नकारात्मक ''नहि अछि'' प्रयुक्त होइत अछि मुदा बांग्लामे ''आछे'' केर नकारात्मक लेल मात्र ''नेइ'' प्रयुक्त होइत अछि।

अपूर्णकालिक क्रियारूप मे जँ धातु स्वरांत होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपक संग कालवाची प्रत्यय -च्छ जोड़ल जाइत अछि। जँ धातु व्यंजनान्त होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपमे -छ जोड़ल जाइत अछि। कालवाचक प्रत्यय लगेलाक बाद पुरुषवाचक प्रत्यय जोड़ल जाइत अछि।

मैथिली	**बांग्ला**
हम अबै छी	आमि फिरिछि
हम जाइ छी	आमि जाच्छि
ओ सब आबै छथि	उनि फिरछेन
अहाँ जाइ छी	आपनि जाच्छेन
तूँ आबै छैँ	तुमि फिरछो
तूँ जाइ छैँ	तुमि जाच्छो
ओ सब अबैत छथि	तिनि फिरछेन
ओ सब जाइ छथि	तिनि जाच्छेन
ओ आबै छथि	शे फिरछे

ओ जाइ छथि	शे जाच्छे
अहाँ अबैत छी	आपनि फिरछेन
अहाँ करैत छी	आपनि कोरछेन

बांग्लामे एक प्रकारक असमापिका क्रिया होइत अछि- क्रियाक तिर्यक रूपक। बादमे -ते जोड़लासँ ई बनाओल जाइत अछि।

करय मे- कोरते (कोर+ते)

जाइ मे- जेते (जा+ते)

आबय मे- आशते (आश+ते)

मैथिली सन बांग्लामे सेहो दू शब्द वा वाक्यकँ जोड़बा लेल ओ, आर, एबं (मैथिलीमे एवं/ एवम्) केर प्रयोग होइत अछि। बांग्लामे ‘‘ओ’’ केर प्रयोग ‘‘संग’’ केर अर्थमे सेहो होइत अछि।

हमहूँ- आमि ओ

धातुक पाछाँ पुरुषवाचक प्रत्यय लगा कय क्रियाक सामान्य वर्त्तमान कालक रूप बनि जाइत अछि।

कर+इ= कोरि

कर+एन= करेन

कर+ओ= करो

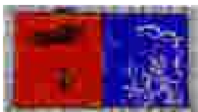
कर+इश= कोरिश

कर+ए= करे।

२

मैथिली आ असमिया

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

मैथिली जकाँ असमियामे सेहो ह्रस्व इ दीर्घ ई, आ ह्रस्व उ दीर्घ ऊ केर उच्चारणमे कोनो खास अन्तर नहि होइत अछि। मुदा असमिया ऐ केर उच्चारण ओइ आ औ केर उच्चारण ओउ होइत अछि। पहिल तँ मैथिलीसँ भिन्न मुदा दोसर मैथिलीक समान।

मैथिलीमे जेना ‘‘अ’’ बाजल जाइत अछि असमियामे तेना ‘‘आ’’ बाजल जाइत अछि। असमियाक ‘‘अ’’ केर उच्चारण मैथिलीमे नहि अछि।

असमिया ‘‘च’’ आ ‘‘छ’’ मैथिलीक ‘‘स’’ सन बाजल जाइत अछि। असमियाक ‘‘ज’’ ‘‘झ’’ आ ‘‘य’’ मैथिलीक ‘‘ज’’ सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे सेहो बहुत ठाम ‘‘य’’ केर उच्चारण ‘‘ज’’ सन होइत अछि।

असमियामे मूर्धन्य आ दन्त दुनू दन्तमूलीय सन उच्चरित होइत अछि।

ट. ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न एहि सभमे उच्चारणक दृष्टिसँ कोनो अन्तर नहि होइत अछि, सभटा दन्तमूलीय सन उच्चरित होइत अछि।

श, ष, स तीनू ‘‘स’’ सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे ‘‘ष’’ कखनो काल ‘‘ख’’ सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे सेहो ‘‘श’’ आ ‘‘स’’ ‘‘स’’ सन उच्चरित होइत अछि।

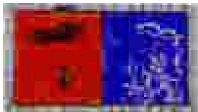
‘‘श’’ ‘‘ष’’ आ ‘‘स’’ ‘‘र’’ केर संग वा दू स्वरक बीचमे रहला पर एकटा तेसरे ढंगसँ उच्चरित होइत अछि, जकर समान मैथिलीमे कोनो उच्चारण नहि अछि।

असमियामे ‘‘जँ संयुक्ताक्षरसँ शब्दक अंत होइत अछि तँ ओ अकारान्त उच्चरित होइत अछि। माने ‘‘ञ’’ केर उच्चारण ‘‘न’’ सन होइत अछि।

मैथिली	**असमिया**
ऐ (अइ)	एइ
चाह	साह
हमर	मोर

कनियाँ	परिवार
परिवार	संसार
बहीन	मनी
जलखै/ जलपान	जलपान
दही	दोइ
नारिकेलक लड्डू (लड्डू)	नारिकलर लारू
सुआद (सोआद)	सोआद
नीक (भल)	भाल
बेस (बड्ड)	बेस
खाउ	खाओक
लिअ	लओक
जाउ	जाओक
करू	करक
अपने	आपुनि
करबाक/ करू (करक)	करक
जएबाक (जाउ)	जाओक
अहाँ	आहा
धानक	धानर

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

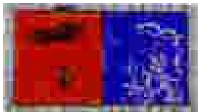
ISSN 2229-547X VIDEHA

दिअ	दियक
दे	दे
बाड़ीमे	बाड़ीत
औषध	औसध
नेबू (नेबो)	नेमु
कथा (गप)	कथा
एक बेर	एबार
दुइ	दुइ
चारि	सारि
मते (अनुसारे)	मते
लगाति	लगत
खेनाइ	खा
तूँ (पुरातन-तोइ)	तोइ
आइ-काल्हि	आजिकालि
करह	कर्अ
कतऽ	कोत
नहि (नइँ)	नाइ
चाहक पात	साह पात

ISSN 2229-547X VIDEHA

बाँस	बाँह
नोकसान	लोकसान
बौस्तु	बस्तु
आनौं (आनी)	आनौं
करौं (करी)	करौं
लिखौं (लिखू)	लिखौं
एक बेर	एबार
आबह	आह
टाका-पाइ (पइसा)	टका-पइसा
के	कोन
परिवार	परियाल
छौरा	लोरा
रखलौं	राखिसों
र्‍ाति	राति
बजे	बजात
प्रायः	प्राय
भाराक घर	भाराघर
डेढ़ हजार	डेर हेजार

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

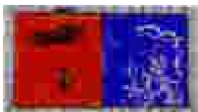
बेसी	बेसि
पचास	पसास
हाथी	हाँती
हरिण	हरिणा
पोखरि	पुखुरि

असमियामे कोनो शब्द पर जोर देबाले -हे जोड़ि कऽ बाजल जाइत अछि। असमियामे जनी स्त्रीलिंग वाचक प्रत्यय तँ -जन पुल्लिंग वाचक प्रत्यय अछि।

असमियामे बहुवचन बनबै लेल तीन प्रकारक विभक्ति लगैत अछि। ‘‘तुमि’’, ‘‘तेओँ’’, ‘‘आपुनि’’ क संग -लोक, तुच्छार्थबोधक विशेष्य पदक संग -बोर, ‘‘तइ’’, ‘‘सि’’, ‘‘एइ’’, ‘‘ताइ’’ सर्वनाम आ संबंधवाचक विशेष्य पदक संग ‘‘हैंत’’ क प्रयोग होइत अछि।

एकवचन	**बहुवचन**
तुमि	तोमालोक
आपुनि	आपोनालोक
तेओ	तेओंलोक
तइ	तहँत
सि	सिहँत
एइ	एइहँत

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ताइ	ताइहँत/ सिहँत
लोरा	लोराबोर
किताप	कितापबोर
घर	घरबोर

असमियामे ‘‘ई’’/‘‘एकरा’’ लेल ‘‘एइ’’ आ ‘‘ओ’’/’’ओकरा’’ लेल ‘‘सेइ’’ प्रयुक्त होइत अछि। लागत/ पड़त लेल असमियामे लागिब प्रयुक्त होइत अछि।

असमियामे प्रश्नवाचक वाक्यमे जाहि शब्द पर बलदेबाक रहैत छैक ओहिमे -नो जोड़ल जाइत छैक। धातुक संग -ओवा जोड़ि कऽ भूतकाल वाचक विशेषणक निर्माण होइत अछि।

मूल धातुक संग -आ जोड़ि कऽ क्रियावाची संज्ञा बनाओल जाइत अछि।

असमियामे कर्मवाच्यक ब्रिया बनेबा लेल धातुमे -आ जोड़ि कऽ आ फेर -हय वा -जाय केर प्रयोग कयल जाइत अछि।

मैथिली सन असमियामे सेहो क्रिया कालक अनुसार बदलैत अछि।

३

मैथिली आ ओड़िया

किछु विशेष टिप्पणी देल जा रहल अछि जाहिसँ मैथिली आ ओड़ियाक बीचमे सम्बन्ध स्पष्ट भऽ जायत।

मैथिलीमे ‘‘ई’’ केर बदला ओड़ियामे ‘‘इए’’ प्रयुक्त होइत अछि, मुदा उच्चारण दुनू ठाम एक्के छैक, मात्र वर्त्तनीमे अन्तर छैक। जेना रेघा कऽ हम सब ‘‘ई’’ बाजै छी सएह ‘‘इए’’ छिऐ।

‘‘तूँ जाह’’ हम सब कहै छी आ ओड़ियामे ‘‘तू जाऽ‘‘ कहल जाइत अछि। ‘‘तूँ जो’’ हम सब कहै छी आ ओड़ियामे ‘‘तुमे जाअ’’, हमसब ‘‘अहाँ जाऊ’’ आ ओड़ियामे ‘‘आपण जाआन्तु’’ कहल जाइत अछि।

मैथिलीमे ‘‘अछि’’ ओड़ियामे सेहो ‘‘अछि’’ अछि।

हमर केर प्राचीन मैथिली रूप ''मोर'' (पिआ मोर बालक- विद्यापति) अखनो ओड़ियामे गद्यमे ''मोर'' प्रयुक्त होइत अछि।

''नहि'' केर बदला ''नाहिँ'' (नाँई) (मैथिलीमे सेहो एहेन उच्चारण होइत अछि आ मैथिली पत्रिका अंतिकामे नइँ लिखलो जाइत अछि), ''अपने'' आ ''अहाँ'' केरबदला ''आपण'' प्रयुक्त होइत अछि जे मैथिलीक ''अपने'' सन अछि।

''छी'' केर बदला ''छि'' प्रयुक्त होइत अछि।

''कोन'' केर बदला ''केउँ'', ''काल्हि'' केर बदला ''कालि'' आ ''पीलक'' केर बदला ''पिइला'' प्रयुक्त होइत अछि।

''नै सुनलनि'' केर बदला ''शुणिलुनि'', एतय गहिंकी नजरिसँ देखब तँ पता लागि जायत जे नकारात्मक बनेबा लेल ओड़ियामे ''नि'' शब्दक अन्तमे जोड़ल जाइत अछि।

'केँ' केर बदला 'कु' जेना 'रामकेँ' केर बदला 'रामकु' प्रयुक्त होइत अछि।

''देल'' केर बदला ''देल'' यएह प्रयुक्त होइत अछि।

जेना अपने सभ भात ''सिझ'' गेल कहैत छिऐ, ओड़ियामे बरकल पानिक बदलामे ''सिझापाणि'' कहल जाइत अछि।
''हएत'' केर बदला ''हेब'', ''नै हएत'' केर बदला ''हेबनि'' (नि जोड़ि कऽ नकारात्मक बनल)।

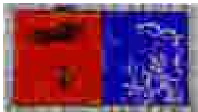
अग्रिम/ अगारी केर बदलामे ''आगरू'', कराबय केर बदला करिबाकु, पड़त केर बदला पड़िब, ''देखने छह'' केरबदला ''देखिछ'', कतेक/ कत्ते केरबदला केते, जतेक/ जत्ते केर बदला जेते प्रयुक्त होइत अछि।

मैथिली केर ''ओ'' केर बदला ओड़ियामे ''से'' प्रयुक्त होइत अछि। मैथिलीमे ''से'' (जेना- से कहलक) कनेक भिन्न अर्थमे मुदा मोटा-मोटी ''फराक'' केर अर्थमे प्रयुक्त होइत अछि।

मैथिली	ओड़िया
जाइ छै	जाउछि

एकटा (गोटे)	गोटे
बुलब/ बुलनाइ	बुलिबा
दूटा	दिटा
कोन ठाम(कोन ठाँ)	केउँठि
जाइ छी	जाउछि
देखै छी	देखिछि
आउर के	आउ किए
आबैले छथिन्ह	आसिछन्ति
मरि गेल	मरिगला
जाइ छै	जाइछि
जेबै	जिबे
जायब	जिबि
छलै (छलय)	थिला
जैठाम (जइठाम, जइठाँ)	जेउँठि
दरमाहा	दरमा
गेल	गले
बैसा कय	बसेइदइ
करायब	करेइबा

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

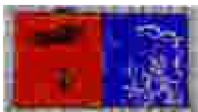
तोहर	तांकर
लागैछै	लागुछि
करबै	करिबेनि
से काज	से काम
करि लेता	करिनेब
किछु	किछि
दऽ देबै	देइदेबि
तऽ (तँ)	त
दिआयल जायत	दिआजिब
भौजी/ भाउज	भाउज
जलखै	जळखिआ
आउर (आओर)	आउ
चाह	चा

ओड़ियामे उच्चारण सेहो कनेक भिन्न छैक, जेना ''अ'' केर उच्चारण ''ओ'' सन होइत छैक। जेना ''समर'' कैँ हम सभ समर पढ़ब मुदा ओड़ियामे एकरा पढ़ल जायत ''सोमोरो''। ''अ'' लागि कय सभ व्यंजन हलन्त सँ पूर्ण होइत अछि से सभटा व्यंजनमे अ=ओ उच्चारण होयत। मैथिलीमे मनोज कैँ बाजल जाइत अछि मनोजऽ, मुदा ओड़ियामे बाजल जायत मोनोजो।

इ/ ई, उ/ ऊ- मैथिली आ ओड़ियामे एक्के रङ उच्चारण होइत अछि।

ऐ जेना मैथिलीमे अ+इ आ औ जेना अ+ऊ बाजल जाइत अछि तहिना ओड़ियामे सेहो उच्चरित होइत अछि।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ऋ मैथिलीमे ‘‘री’’ बाजल जाइत अछि मुदा ओड़ियामे ‘‘रु’’ उच्चरित होइत अछि। कृप मैथिलीमे ‘‘क्रीप’’ पढ़ल जाइत अछि आ ओड़ियामे ‘‘क्रुपो’’ उच्चरित होइत अछि।

व ब सन उच्चरित होइत अछि दुनू भाषामे से मैथिलीमे ओ उच्चरित होयत ‘‘ब’’ आ ओड़ियामे ‘‘बो’’।

मुदा विदेशज शब्दक उच्चारण ओड़ियामे सेहो हलन्त सन होइत अछि आ ‘‘ओ’’ सन ‘‘अ’’ केर उच्चारण नहि होइत अछि।

मैथिली सन ‘‘य’’ केँ ‘‘ज’’ किछु ठाम पढ़ल जाइत अछि, से ‘‘यम’’ मैथिलीमे ‘‘जम’’ आ ओड़ियामे ‘‘जोमो’’ पढ़ल जाइत अछि।

शब्दक प्रारम्भमे जँ ‘‘ड’’ वा ‘‘ढ’’ अबैत अछि तँ नीचाँक बिन्दु दुनु भाषामे विलुप्त रहैत अछि।

मैथिली आ ओड़िया दुनूमे कचटतप केर पाँचम अनुनासिक्य अक्षर (क्रमसँ ङ, ञ, ण, न, म) मे सँ मात्र न आ म सँ शब्दक प्रारम्भ सम्भव अछि।

‘‘क्ष’’ मैथिलीमे ‘‘क्छ’’ उच्चरित होइत अछि आ ओड़ियामे ‘‘ख’’ वा ‘‘ख्य’’।

मराठी सन ओड़ियामे संस्कृतक ‘‘ळ’’ अखनो अछि जे मैथिलीमे आब नहि अछि।

‘‘ज्ञ’’ मैथिली आ ओड़िया दुनूमे ‘‘ग्य’’ उच्चरित होइत अछि।

‘‘त्स’’ मैथिलीमे ‘‘तस’’ मुदा ओड़ियामे (स् +च) उच्चरित होइत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

**डॉ. ललन कुमार झा**

पं. तेजनाथ झा ओ संस्कार : एक समीक्षा

वास्तवमे विधिपूर्वक संस्कार साधनसँ दिव्य ज्ञान उत्पन्न कऽआत्माकेँ परमात्माक रूपमे प्रतिष्ठिते करब मुख्य संस्कार अछि आओर मानव जीवनक सार्थकता सेहो एहिमे सन्निहित अछि। संस्कार शब्द शब्दत: वैदिक साहित्यमे नहि भेटैत अछि। मुदा सम्क संग कृ धातु तथा संस्कृत शब्द बहुधा मिलि जाइत अछि। ऋग्वेद (5/76/2) मे संस्कृत शब्द धर्म (बरतन)क लेल प्रयुक्त भेल अछि। जेना दुनू अश्विन पवित्र मेल बरतनकेँ हानि नहि पहुँचबैत अछि। शतपथ ब्राह्मण (1/1/4/10)मे आयल अछि जे- 'स इदं देवेम्यो हवि: संस्कुरु साधु संस्कृत संस्कुर्वित्येवैत दाह।' पुन: अछि (3/2/1/22) मे आएल अछि जे- तस्मादु स्त्री पुमांसं संस्कृते तिण्डन्तभ्येति अर्थात् स्त्री कोनो संस्कृत (सुगठित) घरमे ठाढ़ पुरुषक लग पहुँचैत अछि। जैमिनिक (3/1/35) मे संस्कार शब्द 'उपनयन'क लेल प्रयुक्त भेल अछि।

संस्कारसँ आत्मा-अन्त:करण शुद्ध होइत अछि। संस्कार मनुष्यकेँ पाप आओर अज्ञानसँ दूर राखि कऽ आचार-विचार आओर ज्ञान-विज्ञानसँ संयुक्त करैत अछि आओर व्यक्ति कार्य विशेषक लेल अहर्ता प्राप्त करैत अछि। एही लेल मीमांसाकार शबर संस्कार शब्दक अर्थ बतबैत कहलन्हि अछि जे- 'संस्कारो नाम स भवति यस्मिन जाते पदार्था भवति योग्य: कस्य चिदर्थस्यं- अर्थात संस्कार ओएह अछि जाहिसँ कोनो पदार्थ वा व्यक्ति कोनो कार्यक लेल योग्य भऽ जाइत अछि। तन्त्रवार्तिकक अनुसारेँ 'योग्यतां चादधाना: क्रिया संस्कारा इत्युच्यन्ते' अर्थात् संस्कार एहन क्रिया तथा रीति अछि जे योग्यता प्रदान करैत अछि। ई संस्कार मुख्यत: दुइ प्रकारक होइत अछि- (1) मलापनयन आओर (2) अतिशयाधाना। कोनो दर्पणपर पड़ल गरदा आदि

ISSN 2229-547X VIDEHA

सामान्य मलकेँ वस्त्रादिसँ पोछब, हटाएब वा स्वच्छ करब मलापनयन अछि आओर फेर जँ कोनो रंग वा तेजमय पदार्थ द्वारा ओहि दर्पणकेँ विशेष चमत्कृत वा प्रकाशमय बनाएव 'अतिशयाधान' कहबैत अछि। दोसर शब्दमे ओकरा हीनभावना, प्रतिचरण वा गुणाधान संस्कार कहल जाइत अछि। एहि तरहेँ संस्कार मानव जीवनक एक आवश्यक अंग अछि जकरा बिनु ओ अपूर्ण रहि जाइत अछि। जेना जन्मसँ केओ शुद्रे रहैत अछि, मुदा जखन ओकर कर्ण वेधोपनयन संस्कार भऽ जाइत अछि तखन ओ द्विज भऽ जाइत अछि।

'जन्मना जायते शुद्र: संस्काराद्दिवज उच्यते।
मातुर्यदग्रे जायन्ते द्वितीय मौञ्जिबन्धनात्।
ब्राह्मणक्षत्रियविशस्तस्मादेते द्विजा: स्मृता:।।

'द्विर्जायत इति द्विज: निर्वचनमे इएह भाव गौण अछि। एही भावनासँ प्रेरित भऽ कऽ वीर मित्रोदय संस्कारक परिभाषा एहि प्रकारेँ देल गेल अछि- ई एक विलक्षण दुइ प्रकारक अछि- (1) जकरा द्वारा व्यक्ति आन कर्म (जेना उपनयन संस्कार, वेदाध्ययन आरम्भ होइत अछि) क अहर्ता प्राप्त करैत अछि तथा (2) दोष (जेना जातकर्म संस्कारसँ वीर्य एवं गर्भाशयक दोष मोचन होइत अछि) सँ मुक्त भऽ जाइत अछि। इएह कारण अछि जे हिन्दू धर्मशास्त्र संस्कारकेँ मानव जीवनक वांछनीय नहि अपितु अपरिहार्य अंग मानल अछि। ई ध्यातव्य अछि जे संस्कार सेहो पुरुषक जीवनमे अनिवार्य कहल गेल अछि जतए मन्त्रपूर्वक ओकर निष्पादन होइत अछि। स्त्री लोकनिक विवाह संस्कार मात्रक ओतेक महत्त्व जे मन्त्रपूर्वक होइत अछि। आन क्रिया तँ बिनु मन्त्रक सेहो भऽ सकैत अछि।

'तूष्णीमेता: क्रिया स्त्रीणां विवाहस्तु समन्त्रक:।
एता जातकर्मादिका: क्रिया: स्त्रीणां तूष्णी
विनैव मन्त्रैर्यथाकालं कार्या:।
विवाह: पुन: समन्त्रक: कार्य:।।- मिताक्षरा
नवैता: कर्णवेधान्तामन्यवर्ज क्रिया: स्त्रिया:
विवाहोमन्त्रतस्तस्या: शूद्रस्यामन्त्रतोदयश।।
-व्यास स्मृति- 1/15-16

स्मृतिकार हारीतक अनुसारेँ संस्कार दू कोटिमे विभाजित अछि- ब्राह्म आओर दैव। गर्भाधानादि संस्कार जे मात्र धर्मशास्त्रमे वर्णित अछि, ब्राह्म कहल जाइत अछि। पाक यज्ञ (पकाओल भोजनक आहुति) एवं सोमयज्ञ आदि जकरा संस्कार कहल जाइत अछि। एहि तरहेँ हिन्दू लोकनिक बीच संस्कार घूलि-मिलि गेल अछि। एकरा बिनु पूर्णता वा जीवनक सार्थकता नहि अछि।

ISSN 2229-547X VIDEHA

संस्कारक संख्याक विषयमे स्मृतिकार लोकनिमे मतभेद रहल अछि। गौतम (8/14-24) चालीस संस्कारक वर्णन कएलन्हि अछि। वैरवानस अठारह शरीरक संस्कार गनाओल अछि। व्यासक अनुसारेँ सोलह संस्कार अछि ओ आइ एकरे मान्यता अछि। मनु संख्याक परिगणना तँ नहि कएलन्हि अछि, मुदा कहलन्हि अछि जे निषेक (गर्भाधान)सँ श्मशान धरि संस्कारक तरफ संकेत कएलन्हि अछि-

निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधि:।

तस्य शास्त्रेऽधिकारोऽस्मिञ्ज्ञेयो नान्यस्य कस्यचित्।।

-मनुस्मृति- 2/16

एहि संस्कारक उल्लेख कऽ मनु इहो संकेत देलन्हि अछि जे द्विजेटा एहि धर्मशास्त्रक अधिकारी अछि। एहि तरहेँ जीवनक प्रधान तत्त्व संस्कारक संख्याक विषयमे मतभेद अछि। मुदा स्मृतिकार व्यासक संख्या परक विचार सर्वथा मान्य अछि। हिनका द्वारा परिगणित सोलह संस्कार ई अछि- (क) गर्भाधान, (2) पुंसवन, (3) सीमन्तोन्नयन, (4) जातकरण, (5) नामकरण, (6)निष्क्रमण, (7) अन्नप्राशन, (8) वपन क्रिया, (9) कर्णवेध, (10) प्रतोदेश (उपनयन), (11) वेदारम्भ, (12) केशान्त (गोदान), (13) समावर्तन (वेद स्नान), (14) विवाह, (15) विवाहाग्नि परिग्रह आओर (16) त्रेताग्नि संग्रह।

"गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तनो जातकर्म च।

नामक्रियानिष्क्रमणेऽन्नाशनं वपन क्रिया।

कर्णविधो व्रतादेशो वेदारम्भ क्रियाविधि:।

केशान्त: स्नानन्मुद्वाहो विवाहग्नि परिग्रह:।

त्रेताग्नि संग्रहश्चेति संस्कारा: षोडशस्मृता:।।"

व्यास स्मृति- 1/13-15

मानव जीवनमे एहि संस्कारक बड़ महत्त्व अछि। एहि लेल स्मृतिशास्त्रक बाद निबन्ध ग्रन्थमे सेहो एकर उपादेयताक वर्णन कएल गेल अछि। पं. तेजनाथ झा प्रणीत वाजसनेयिनां विवाहादि संस्कार पद्धतिमे सेहो एहि संस्कारक वर्णन कएल गेल अछि। पं. तेजनाथ जनकल्याणक भावनासँ उक्त निबंध ग्रन्थक प्रणयन कएलन्हि। वाजसनेयी शाखावला ब्राह्मण केवल मिथिले टा मे नहि छथि, एहि बुद्धिसँ ओ एहि ग्रन्थक टीका सेहो हिन्दीमे लिखलन्हि जाहिसँ ई अत्यन्त व्यापक भऽ गेल अछि।

संस्कारक प्रकारक सम्बन्धमे जे मतवैभिन्न होअए, मुदा ग्रन्थकार मात्र तेरह संस्कारक आलोच्य ग्रन्थमे वर्णन कएलन्हि अछि। ई परम्परा विरुद्ध सर्वप्रथम विवाहक वर्णन कएलन्हि अछि। उक्त ग्रन्थमे वर्णित संस्कारावली एहि तरहेँ अछि- (1) विवाह (2) गर्भाधान (3) पुंसवन (4) सीमन्त्रोन्नयन (5) जातकर्म (6)

नामकरण (7) निष्क्रमण (8) अन्नप्राशन (9) चूड़ाकरण (10) कर्णवेध (11) उपनयन (12) वेदारम्भ आओर (13) समावर्तन।

एहि ग्रन्थमे कुल उन्नैस विभाग कएल गेल अछि। सर्वप्रथम विवाहक पूर्व दिन रातिमे सीमन्त (सोंथ) आमन्त्रण आओर फेर विवाह दिन कन्यादानसँ पूर्व वरक आंगन अएलापर आदरभावसँ पूंगादि दानक वर्णन कएल गेल अछि। तदुत्तर अष्टमंगला विधिक वर्णन अछि, जे वर सहित आठ ब्राह्मण लोकनिक द्वारा सम्पादित होइत अछि। तेसर क्रममे मातृका पूजा- विधि आओर अनन्तर आभ्युदयिक श्राद्ध विधि वर्णित अछि। धर्मशास्त्रमे वर्णित आन संस्कार सभक क्रमबद्ध वर्णन किएक नहि कएल गेल अछि, एहि विषयमे ग्रन्थकार किछु नहि लिखलन्हि अछि। धर्मशास्त्रानुमोदित संस्कार क्रमक विचार कऽ प्रतिपादन कएल जाइत। एहि दृष्टिएँ सर्वप्रथम गर्भाधान संस्कारपर विमर्श प्रस्तुत कएल जाइत अछि।

गर्भाधान :-

गर्भाधान पहिल संस्कार कहल गेल अछि। विधिपूर्वक संस्कार युक्त गर्भाधानसँ उत्तम एवं योग्य सन्तान उत्पन्न होइत अछि। एहि संस्कारसँ वीर्य तथा गर्भ सम्बन्धी दोष, पाप दूर होइत अछि-

''निषेकादि बैजिकं चैनो गर्भिकं चापमृज्यते।
क्षेत्र संस्कार सिद्धिश्च गर्भाधान फलं स्मृतम्।।''
-स्मृति संग्रह

पुंसवन :-

पुत्रक प्राप्तिक लेल धर्मशास्त्रमे पुंसवन संस्कारक विधान कएल गेल अछि। 'गर्भाद् भवेच्च पुंसूते पुंस्त्व रूप प्रतिपादनम्' (स्मृति संग्रह) एहि वाक्यक अनुसारेँ पुत्रोत्पत्तिक लेल पुंसवन संस्कारक कर्त्तव्यता स्वत: ज्ञात होइत अछि। जखन गर्भ तीन मासक भऽ जाइत अछि तखन पुंसवन संस्कारक विधान कहल गेल अछि। पं. तेजनाथ झा कहलन्हि अछि जे पुंसवन संस्कार गर्भधारण माससँ दोसर अथवा तेसर मासमे करबाक चाही।

सीमन्तोन्नयन :-

गर्भक छठम वा आठम मासमे ई संस्कार कएल जाइत अछि। गर्भक शुद्धिए एहि संस्कारक आधार अछि। एहि संस्कारक वर्णन आश्वलायन, शांखायन, हिरण्यकेशीय, गोभिल, पारस्करादि विभिन्न गृह्य सूत्रमे कएल गेल अछि। पं. तेजनाथ झा पारस्करक मतक अनुसारेँ प्रथम गर्भमे एकर प्रासंगिकता कहलन्हि अछि। कर्कोपाध्याय दोसर गर्भमे सेहो एकर आवश्यकता पर जोर देलन्हि अछि, मुदा पं. झाक कहब छन्हि जे

पारस्करक विचार सर्वथा मान्य अछि आओर स्मृतिकार हारीतक वचनक उल्लेख कऽ पारस्करक मतक पुष्टि सेहो कएलन्हि अछि-

''सकृच्च कृतसंस्कारा सीमन्तेन द्विजस्त्रिय:।
यं यं गर्भ प्रसूयन्ते स सर्व: संस्कृतो भवेत्।।''
-वाजसनेयिनाम्- पृ. 47

जातकर्म :-

जातकर्म संस्कार अति प्राचीन अछि। तैत्तिरीय संहिता (21215/3-4) मे आएल अछि जे जखन ककरो पुत्र उत्पन्न होइत अछि तँ ओकरा बारह विभिन्न पात्रमे पाकल रोटी (पुरोडारा)क बलि वैश्वानरकेँ देबाक चाही। बालकक जन्महोइतहि ई संस्कार कर्त्तव्य अछि। नालच्छेदनसँ पूर्व बालककेँ सोनाक शलाकासँ अथवा अनामिका आंगुरसँ मधु तथा घृत चटाओल जाइत अछि। बालकक पिता अथवा आचार्यकेँ बालकक कान लग ओकर दीर्घायुक लेल मन्त्रक पाठ करबाक चाही। पं. झा एकर क्रम सेहो स्थिर कएलन्हि अछि-

''ऊँ सजतु दशयास्यो गर्भोजरायुणास यथाथं वायु रेजति
तथा समुद्र रजति एवायन्दशमास्योऽस्त्रजरायुणा सह।''

नामकरण :-

एहि संस्कारक फल आयु तथा तेजक बृद्धि एवं लौकिक व्यवहारक सिद्धि कहल गेल अछि-

''आयुर्वचोऽभिवृद्धिश्च सिद्धिव्यवह्तेस्तथा।
नाम कर्म फलंत्वेत त समुछिष्टं मनीषिभि:।।''
(स्मृति संग्रह)

आचार्य मनुक अनुसारेँ जन्मसँ दशम वा बारहम दिन ज्योतिष शास्त्रमे कहल गेल शुभ तिथि, मुहूर्त्त आओर गुणयुक्त नक्षत्रमे बालकक नामकरण संस्कार होइत अछि। पं. झाक मन छन्हिजे दशम दिन (अशौचान्त) सूतिकाकेँ उठा कऽ ग्यारहम अथवा आन विहित दिनमे पिता द्वारा शिशुक नामकरण कएल जाए। ओ कहलन्हि अछि जे सर्वप्रथम मातृका पूजा आओर आभ्युदयिक कऽ ब्राह्मण भोजन कराए कऽ बच्चाकेँ स्नान कराए नवीन वस्त्र पहिराए स्वस्त्ययन कऽ पूर्वाभिमुख शिशुक दहिना कानमे 'ऊँअमुक शर्मासि' एहन तीन बेरि कहथि।

निष्क्रमण :-

मनुक अनुसारेँ नवजात शिशुकेँ सूर्यक दर्शनक लेल चारिम मासमे घरसँ निकालबाक चाही- ''चतुर्थे मासि कर्त्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात्' (2/34)

पं. झा मनुक अनुरूपे चारिम मासमे चन्द्र तरानुकूल दिनमे बच्चा आनि कऽ सूर्यक दर्शन ''ऊँ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छक्रमुच्चरत्। पश्येम शरद: शतं, जीवेम शरद: शतं, शृणुयाम शरद: शतं, प्रव्रवाम शरद: शतामदीना: श्याम शरद: शतभ्यूयश्च शरद: शतात्'' मन्त्रसँ करए।

अन्नप्राशन :-

एहि संस्कार द्वारा माताक गर्भमे मलिन भक्षण जन्य दोष बालकमे आबि जाइत अछि, ओकर नाश भऽ जाइत अछि। जखन बालक छ: सात मासक होइत अछि आओर दाँत निकलए लगैत अछि, पाचन शक्ति प्रवल होवए लगैत अछि तखन ई संस्कार कयल जाइत अछि। पं. झाक अनुसारेँ बच्चाक बाजव स्पष्ट करवाक कामनासँ माछ, वायुक कामनासँ कृकलासक वृह्मवर्चसक नाटिकाक, मांस एवं सभ फलक कामनासँ उपर्युक्त सभ मांस खोएबाक चाही।

चूड़ाकरण :-

आचार्य मनुक अनुसारेँ सभ द्विजाति बालकक चूड़ाकरण संस्कार वेदक अनुसार पहिल वा तेसर वर्षमे करबाक चाही। पं. झा स्पष्ट रूपसँ एहि कर्मक समय निर्धारित कएलन्हि अछि जकरा अनुसारेँ वर्षाभ्यन्तर वा तेसर, पाँचम वा उपनयनक संगे शुद्ध समयमे सूर्यक उत्तरायण रहलापर शुक्ल पक्षमे गुरु शुक्रास्तादि दोष नहि रहलापर रिक्ता तिथि (चौंठ, नवमी, चतुर्दशी) छोड़ि कऽ सोम, बुध, गुरु, शुक्र मे सँ कोनो दिन विहित नक्षत्र युक्त विहित तिथिमे आचार्य द्वारा करवाक चाही।

कर्णवेध :-

पं. तेजनाथ झा धर्मशास्त्रानुमोदित जन्मसँ तेसर अथवा पाँचम वर्षमे विहित नक्षत्र तथा विहित तिथिमे पूर्वाह्न समयमे पिता अथवा आन श्रेष्ठ व्यक्ति पूर्वाभिमुख बैसि कऽ कुमारक दहिना कानमे यजुर्वेद (25/21) क मन्त्र पढ़ए। तहिना दोसर मन्त्रसँ वामा कानक अभिमन्त्रण करबाक चाही। तदनन्तर कानक मध्य भागकेँ देखि कऽ कानमे छेद कराबए।

उपनयन :-

पं. झा गृह्य सूत्रक वचनकेँ आधार बना कऽ लिखलन्हि अछि जे आठम वर्षमे अथवा गर्भाष्टम वर्षमे ब्राह्मणक उपनयन करबाक चाही। उचित अवधि धरि उपनयन नहि भेलापर द्विज व्रात्य भऽ जाइत अछि, जकर निराकरणक लेल विशेष यज्ञक व्यवस्था अछि।

वेदारम्भ :-

सूत्र ग्रन्थक चर्चा करैत ग्रन्थकार कहलन्हि अछि जे ओना तँ सूत्र ग्रन्थकार लोकनि वेदारम्भक समय विशेषक सम्बन्धमे किछु नहि लिखलन्हि अछि, मुदा याज्ञवल्क्यक कहब छनि जे गुरु शिष्यक उपनयन संस्कार कऽ ओकरा महाण्याहृतिक संग वेद पढ़ावए आओर शौचक नियमक शिक्षा देअए-

'उपनीय गुरु: शिष्यं महाव्याहृति पूर्वकम्।

वेदमध्यापयेदेनं शौचाचारांश्च शिक्षयेत्।।

-याज्ञ. 2/15

समावर्तन :-

वेदारम्भक पश्चात् समावर्तन कर्म कएल जाइत अछि। नियमानुसार विद्याध्ययनक उपरान्त स्नान कर्म तथा गुरु गृहसँ अबैत समयक संस्कार स्नान वा समावर्तन कहल जाइत अछि। याज्ञवल्क्य सेहो समावर्तनक एहि अर्थमे प्रयोग कएलन्हि अछि। ओ कहलन्हि अछि वेदाध्ययन वा वृतकेँ समाप्त कऽ अथवा दुनू समाप्त कऽ गुरुकेँ यथाशक्ति दक्षिणा दऽ कऽ हुनक आज्ञासँ समावर्तन करए-

''गुरुवे तुवरंदरवा स्नायाद्धा तदनुज्ञया।

वेदं वृतानि वा पारं नीत्वा हयुममेव वा।।''

-याज्ञ. 1/51

ग्राम+पो.- रहुआ

थाना- सौर बाजार

भाया- सिमरी वख्तियारपुर

जिला सहरसा

पिन- 852127

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विष्णु कान्त मिश्र

महादेवक कूटनीति

कालचक्र(कथा संग्रहसँ)

शंकर बाबूक सिरमामे यमदूत ठाढ़ छल ।ओ हिनका कहनि -- 'चल हमरा संग'।

--------- 'हम तोरासंगे किएक जाएब?हम एखन जयबाक मूडमे नहि छी ।तावत दोसरसभके देखहक ।के पठौलकह तोरा'?

------ 'देवाधिदेव महादेव।तोहर समय भ' रहल छह ।हमरा ल'ग आना -कानी नहि चलतहु।हमरा त' तोरा महादेवधरि पहुचयबाक अछि ।तत्पश्चात तोरा जे कोनो गलती बूझि पड़ौ त' हुनकेसँ गप क' लीह' ।'यमदूत बाजल।

शंकर बाबू प्रश्न कयलनि ----'फेर हमरा हुनका ल'गसँ घुमा क' पृथ्वी लोक तोँपहुचाए देबह ने '?

----- हमरा मात्र पहुचयबाक भार अछि ।फेर के संग आबि क' मृत्युलोक पहुचेतहु से महादेवसँ पूछि लियहुन ।विदा होएबामे आब एक मिनट मात्र बॉकी छहु ।'

किछु क्षणक पश्चात यमदूत शंकर बाबूके नेने जाय महादेवल'ग सुपुर्द क' देलक ।आब ई महादेवक दायित्व छलनि जे चित्रगुप्तसँ शंकर बाबूक जीवन भरिक क्रिया - कलापक गोपनीय रिपोर्ट मँगबाबथु ।

शंकर बाबू महादेवसँ कहलथिन ---'अहॉ एहन बेकहल सयदियाके हमरा ओतय किएक पठौलहुँ ?एकरा जोरगरीक दाबी छैक ।हम कहलियैक जे बादमे भेंट क' लेबनि , जबर्दस्ती अनलक अछि ।'

महादेव चित्रगुप्तके बजाय पुछलनि-----'अहॉ शंकरक क्रिया-कलापक एकाउन्ट दिअ ।'

---------'सरकार, ई जीवनमे पचहत्तरि परसेन्ट झूठेटा बजलाह ।क्रोध ,गारि,स्वार्थ,इर्ष्या,पराया स्त्रीक शील हरण,मोह आदिमे समय व्यतीत कयलनि ।अपनेक सोंझा सभटा लिखल रिपोर्ट राखि रहल छी ।'ई कहि चित्रगुप्त शंकर बाबूक रिपोर्ट कार्ड महादेवक समक्ष राखि देलनि ।

महादेव शंकर बाबूके कहलथिन ---- 'अएँ औ, अहॉक त' पूरा रेकर्डे खराब अछि।'

ई सुनितहि शंकर बाबूक देहमे आगि लेसि देलकनि ।ओ महादेवपर बमकि उठलाह ----' अहाॅ कहियाके न्यायकर्ता भेलहु ।नशामे सदिखन बुत्त रहैत छी ।बेकहल तेहने छी जे वस्त्रक बदला बाघक छाल ठेहुनधरि पहिरैत छी ।मुंडमाल देखि हमरासभके घृणा होइत अछि ,तकरा अहाॅ गरदनिमे लटकौने रहैत छी ।इन्द्रक आंखिमे मरछाउर छीटल रहनि जखन ओ अहाॅक नाम देवाधिदेव महादेव रखलनि ।अहाॅसन बूड़ि न भूतो न भविष्यति।एहन लोक हमर न्याय की क' सकैत अछि ?चलूं पालनकर्ता विष्णु ल'ग ।'

महादेव आ शंकर बाबू दूनू विष्णुक ओतय गेलाह ।महादेव शंकरक सभटा किरदानी विष्णुके सुनाय देलथिन।शंकर बाबू सेहो विष्णुक समक्ष महादेवक पूरा बखिया उधेड़ देलनि।कहलथिन ---'नशाबाज आ बताह कतहु पंचैतिया होअए !' विष्णु शंकरक गपसॅ सहमत भेलाह।मुदा हुनका क्रिया- कलाप के सही ठहरौलनि । -------' यौ विष्णु,हम अहाॅ ल' ग अयलहु जे महादेवक निर्णयके अहाॅ कैंसिल क' देबैक , मुदा अहाॅ त' युग जितलहु।एकटा घरवालीक खर्चा जोड़बामे त' पुनः: प्रात लोकके होइत छै।अहाॅ दू- दूटा विआह कयने छी ।छलसॅ कतेको हत्या केने छी ।एहन पापी हमर पंचैती की करताह ?अहाॅ दूनूगोटे हमरासंग ब्रह्मा ल' ग चलू ।सृष्टिकर्ता त' वैह छथि ने ।' शंकर बाबूक आग्रहपर विष्णु आ महादेव ब्रह्माक समक्ष उपस्थित भेलाह ।अपन- अपन पक्ष तीनूगोटेके रखबाक अवसर प्रदान कयलनि।

महादेव आ विष्णुके जखन अपन पक्ष राखल भ' गेलनि त ' शंकर बाबू सॅ ब्रह्मा आग्रह कयलनि ---- ' अहाॅके अपना प्रसंग की कहबाक अछि से कहू '।

शंकर बाबू ---' औ ब्रह्मा जी ,हम अपनेक ओहिठाम एहि दूनूके इएह सोचि अनलहु जे अपनेल'ग हमरा न्याय भेटत ।विष्णु आ महादेव दूनूगोटे एक पेट क' नेने छथि ।महादेव चित्रगुप्तके कनखी मारि क' हमर पृथ्वीलोकपरक की हिसाब - किताब अछि से मॅगलथिन ।हम ई दॉव नहि चलय देबनि ।चित्रगुप्त हमरा प्रसंग सभटा झूठक पुलिन्दा आनि क' राखि देलकनि ।महादेवसन कंगाल आ बताह कतहु चौरासी लाख योनिक जीवक मालिक होथि ।नाक उॅच आ कान बुच ।ई त' सतत उनटे - फेरीमे लागल रहैत छथि ।'

' अहाॅक सभ गप बुझलहु ।अहाॅ की कहय चाहैत छी?अहाॅक अभिप्राय हम नहि बूझि सकलहु ।' ब्रह्मा शंकर बाबूसॅ कहलथिन ।

------' नहि, नहि, अहाॅ हमर सभ बात बूझियो क' अनठा क ' पूछि रहल छी । अहूॅ विष्णु आ महादेवक पक्ष लेमय चाहैत छियनि । छिलका छोड़ा क' हम सभ किछु अहाॅके कहलहु अछि । तखन त ' चोर - चोर मसियौत भायबला गप अछि ।गलती हमर अछि जे अहाॅ ल'ग पंचैती कराबय अएलहु ।अहाॅक नाम पाॅच मुंह वला'पंचानन' सेहो अछि ।सरिपहु तें अहाॅक ई दशा अछि। पृथ्वी लोकमे त ' एकटा मुहके भरल पार लगिते नहि छैक आ स्वर्गलोकमे अहाॅक पाॅचटा मुंह के के भरत ?एतय अहाॅके सभ नीच बुझैत अछि ।ताहि दुआरे सहरजमीनहिपर लोक अहाॅक पूजा करैत अति ।ओहो विध - विधानसॅ नहि ।एकहिबेरि जल ,फूल,

चानन, अक्षत आदि अर्घामे ल' समर्पित क' दैत अति।अहॉ तीनूगोटे मिलि क' हमरा बापक विआह आ पितियाक सगाइ देखाबय चाहैत छी ।हम अहॉ तीनूगोटेक कहियो कोनो अधलाह नहि कयलहु तैयो भेंड़ा - महिसिक कानि हमरापर रखने छी।' शंकर बाबू अग्निश्च- वायुश्च होइत बमकि उठलाह।

ब्रह्माबजलाह----'यौ शंकर बाबू, चित्रगुप्तक गोपनीय रिपोर्ट झूठ नहि भ ' सकैत अछि।पृथ्वीलोकपर अहॉक समय पूरा भ' जयबाक कारणे अहॉके एतय यमदूतक माध्यमसॅ बजाय लेल गेल अति।एहिमे अधलाह की ?' ' यमदूत घर छोड़ि घुरमुरिया खेलबाय रहल छथि ।झूठक जालमे फॅसाय धोबिया पाट मारय चाहैत छथि।ई सोचिए शंकर बाबू गम्भीर होइत कहलनि --- 'हम अहॉ तीनूमेसॅ ककरो फैसला नहि मानैत छी।अहॉ लोकनि मुंह देखि मुंडवा परसैत छी ।सूनू, इन्द्र त' सभहक राजा छथि ।तीनूगोटे हुनकहि ल'ग चलूं।ओ त' सुप्रिम कोर्ट छियैक कि ने ।औ दूध आ पानि दूनूके बराक क ' देता ।'

अन्ततोगत्वा ब्रह्मा, विष्णुआ महादेव तीनूगोटे शंकर बाबूकसंग देवराज इन्द्र के सभामे पहुचलाह।इन्द्र एहि चारु गोटेकै अएबाक कारण पुछलनि।शंकर बाबू विनतीपूर्वक अपन पक्ष रखैत बाजि उठलाह ---' हुजूर!महादेवा आदेशपर यमदूत हमरा जबर्दस्ती पकड़िके ल' अनलक।हम कतबो कहैत रहि गेलियैक जे एखन हमरा अमाशय उखड़ि गेल अछि, निराल पानि पेटसॅ जाय रहल अछि ।कने मोन ठीक होमय दैह त' हम अबैत छी ,मुदा के मानैत अछि ।चण्ठ हमरा पकड़ने ल' गेल।फल भेल जे भरि बाट धोतिअहिमे ततेक पानि चुरुकि गेलहु जे यत्र- तत्र धोती पीयर भ' गेल अछि।कने पानिक बन्दोबस्त कतहुसॅ करय कहलियै सेहो नहि कयलक।यमदूत त ' साक्षात चंडाल थिक।'

इन्द्र समस्याक गंभीरता देखि कहलनि ----' सूनू,यमदूत अपराध अवश्य कयलक अछि ।ओकरा बाटमे पानिक जोगाड़ क' देबाक चाहैत छलैक ।अहॉके जाहि समयमे अनबाक आदेश भैटल छलैक ओहि समय पर अहॉके लाएब आवश्यक छलैक तें अनलक ।शौचकलेल जलक इन्तजाम यमदूत नहि कयलक तें सात बेरयमदूत कान पकड़ि क' उठा-बैसी करथु ।'

शंकर बाबू एहि पंचैतीसं खुश नहि भेलाह।ओ हाथ जोड़ि इन्द्रके कहलनि--' अपने राजा छी जॅ हमर जी-जान बकसि दी त' किछु बाजी ।' इन्द्र हुनका निर्भीक भ' बाजय कहलनि।

----' हजूर, अपनेक न्यायसं हम संतुष्ट नहि भेलहु ।अरे थे हरि भजन को औटन लगे कपास ।हमरा त' अपने मुहे भरे खसाय देलहु।अहॉ त 'तेहने डाही छी जे सत्यवादी हरिश्चन्द्रके विश्वामित्रक माध्यमसॅ तेहन ने पेंचमे फॅसा देलियनि जे हुनका जीवनभरि रन-बोनक पात तोड़य पड़लनि ।वृन्दावन आ मथुराक इलाकामे तेहन वर्षा क' देलियैक जे बाढ़िक प्रलयसॅ लोकके भगबाक बाट नहि भेटैक।' शंकर बाबू उकटि क' हाथ क' देलनि --' सभ केओ दक्षिणेश्वर काली ल'ग चलूं।ओ जे कहतीह से हम यानि लेब ।'

शंकर बाबू सबके नेने दक्षिणेश्वर कालीकट समक्ष उपस्थित भेलाह ।सभटा वृत्तान्त हुनका सुनाया देलनि।दक्षिणेश्वर काली ब्रह्माके एकान्तमे बजाय कहलथिन ---' अहाॅ घर छोड़िए एतेक घुड़मुड़िया किएक खेलाय रहल छी ।कने दिमागसॅ काज लिंक ।अहॉ के छी कने सोचूं ।जे किछु पृथ्वीलोकमे हिनकर कृत्य कैल छनि ताहि आधार पर शंकर बाबूक देहपर कुशसॅ जल छीँटि हिनका छोटकी चुट्टीमे पृथ्वीलोक पठाय दिअनु ।'

ब्रह्माके अपन प्रभुत्वक भान भेलनि। शंकर बाबू के झट कुशसॅ जल छीँटि पृथ्वीलोक विदा क' देलनि । 'ने ओ नगरी, ने ओ ठॉउ ।'

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**डॉ. चित्रलेखा**

मिथिलामे पावनि-तिहार

मिथिलाक सभ पावनि-तिहारक अपन-अपन विशिष्ट महत्त्व छैक। एकरा पाछू कोनो ने कोनो संस्कारक सृजन अथवा ओकर विकासक हेतु सांस्कृतिक आधार सेहो रहिते अछि। खास कऽ मिथिला तँ पावनि-तिहारक नैहरे अछि। वर्षक बारहो मास पावनि-तिहारक धम्मक लोकक दुआरिपर होइतहिं रहैत छैक। हँ, एकबा धरि सत्य अछि जे समयक क्रमानुसारेँ प्रत्येक पावनिक अपन-अपन विशेष महत्त्व छैक। एहिठामक मौसम, भौगोलिक परिस्थिति, सामाजिक संरचना ओ अवस्था अवश्य धार्मिक संस्कारक परिवेशक संग जुटि कऽ एकर महत्ताकेँ आओर बढ़ा दैत अछि। बानगीक रूपमे तीला-संक्रान्तियेकेँ लेल जा सकैत अछि। स्वाभाविक बात छैक जे जाहि समयमे ई पावनि होइछ ताहि समय धरि बाध-बोन आ खेत-खरिहानसॅम् सभटा धान कटा कऽ प्राय: घरमे आबि गेल रहैत अछि। एहि समयमे की धन्निक, की गरीब, सभक घरमे धान-चाउर प्राय: रहिते छैक। तँ सभक घरमे हरियरका नवका चूरा, नवका गूड़क भेली ओ लाइ-मुरहीक प्रचलन तँ नवान्नक रूपमे होइतहिं अछि; संगहि लाइ, चुल्लौर ओ तिलबामे नवान्ने जकॉं नवका गुड़क व्यवहार सेहो होइत अछथ्। इएह कारण थ्छिक जे तीला-संक्रान्ति सनक पावनिक महत्ता लोक-जीवनक एकटा महत्त्वपूर्ण संस्कार-कार्यक अंग बनि कऽ रहि गेल अछि।

तहिना जुड़शीतलक संस्कारकेँ सेहो मिथिलाक लोक जीवनक संग कम कऽ कऽ नहिं ऑंकल जा सकैत अछि। गाछमे नव पल्लव अएलापर ई पावनि होइछ। पोखरि-इनार जकर उपयोग पूर्व कालहिंसँ मिथिलामे होइत रहल अछि आ इनार पोखरि पतझड़क समयक झड़ल पातसँ अन्हर-बिहाड़ि वा दाहिक संयोगे भरि गेल रहैत अछि। पानिमे ओ सड़ि जाएत तँ लोक भोजन ओ पीबाक निमित्त व्यवहार कोनो करत?लोक

जुड़शीतलक माध्यमेँ ओकर सफाई, गामक गन्दगीसँ भरल गली-कुच्ची आ सड़कक सफाई, एक चुडुक पानिक निमित्त टुक्कुर-टुक्कुर तकैत गाछ वृक्षकेँ जुड़बैक निमित्त ओकर जड़िमे पानि दैत अछि। एहि दिन नव रब्बीसँ आएल जौ आ बदलामक सातु खएबाक परिपाटी अछि जाहिसँ धातु पुष्ट होइछ आ वर्ष भरिक लेल पेटक हेतु कल्याणकारी। तेँ जुड़शीतलक महत्ता मिथिलाक लोकजीवनमे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। मरूभूमि ओ पहाड़मे रहनिहार लोक जतए धान आ बदामक ने तँ दाउन होइछ आ ने पीटल जाइछ से जुड़शीतल आ तीला-संक्रान्तिक महत्ता की बूझत?

मिथिलाक लोककेँ छोड़ि दोसर ठामक लोक कोजागराक महत्ता की जानि सकत जतए मखाने नहिं होइछ। मखान मात्र मिथिलाक सम्पदा थिक। कोजागराक महत्त्वकेँ जतेक मिथिलावासी जानि सकैत अछि ततेक दोसर नहिं। कोजागरामे आएल मखान, केरा, दही आ मिठाईक भार ओ ओहि पूर्णिमा रातिक पचीसीक महत्त्व मिथिलेक धरतीक लोक जनैत अछि आन ठामक लोककेँ ई नसीबेमे नहि छैक।

अपन सासुरमे बहिन नीक जकाँ छथि वा नहिं, हुनका कोनो कष्ट तँ नहिं छन्हि तकर लेखा-जोखा करबाक हेतु भरदुतिया मिथिलेमे अछि। तेँ मिथिलाक परम्परानुसार भाइक ई कर्त्तव्य अछि जे कमसँ कम वर्षमे एको बेर ओ अपन बहीनक खोज-खबरि लेथि जे ओ कोन स्थितिमे छथि आ बहीनोक ई कर्त्तव्य अछि जे अपन हाल-चाल बुझबाक हेतु आएल भाइक स्वागत सत्कार करथि तकर जीवन्त रूप थिक- भरदुतिया पावनि। भरदुतियाक महत्ता आ तकर पाछूक अर्थ मिथिले जनैत अछि आन नहिं। तेँ मिथिलाक लोक जीवनमे भरदुतिया पावनिक अत्यधिक महत्तव अछि। तेँ एकरा धार्मिक महत्त्व दए लोक-जीवनसँ जोड़ि देल गेल जे समयानुक्रमे मिथिलाक लोक-जीवनक एकटा महत्त्वपूर्ण अंग बनि कए रहि गेल अछि।

मिथिलाक प्रसिद्ध पावनि मधुश्रावणीक महत्ता एहिठामक लोककेँ छोड़ि आनठामक लोक की बूझत। नव कनियाँ-वर प्रकृतिक महत्ताकेँ जानथि फूल लोढ़ि पूजन करथि आ टेमी दागि एहि बातकेँ स्वीकार करथि जे सभ दु:ख-सुखमे दुनू गोटे (पति-पत्नी) संगहि सहभागी रहब आ छोट-मोट कष्ट दुनू गोटेक सुखमय दाम्पत्य जीवनक बीच कोनो तरहक व्यवधान उपस्थित नहिं कऽ सकए।

मधुश्रावणी सनक एहन पसिद्ध पावनि आन कोनो समाजमे प्रचलिते नहि अछि तखन ओकर महत्त्व ओ की जानत?

तीज कहि कऽ मिथिलेत्तर समाज मिथिलाक चौठचन्द्रक अनुकरण भलेँ ही कऽ लिअए किन्तु चौठचन्द्र (चौरचन) क जे महत्ता से मिथिले जनैत अछथ्। बिनु फल देखौने खाली हाथेँ चन्द्रमाक दर्शन वर्ष भरिक हेतु रंग-बिरंगक कलंक अपना माथपर लेबाक द्योतक अछि। दलिपूरी, पिडुकिया ओ मड़ड़ भङबाक महत्त्व आन समाज की बूझत? मिथिलाक लोक-जीवन कतबहु आर्थिक तंगीमे रहओ किन्तु चौठ-चन्द्रक पावनिक

अवसरपर तँ नीक भोजन कर्जो लऽ कऽ करबे करत। तँ चौठ-चन्द्रक धार्मिक महत्ता मिथिलाक संग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

मिथिलामे पावनि-तिहारक संख्या अधिक अछि। एहि ठामक जनमानस बाढ़ि आ रौदी सँ डूबल आ सुखाएल रहैत अछि किन्तु मुँह जीहक बड़ पातर होइछ तँ ओकरा चहटगर चाही। तँ पावनि-तिहारक नामपर कर्जे सही, कर्ज लेबए पड़त तँ कि पावनि-तिहार नहिं मनाओल जाएत- से कोनो हएत। 'हौ बौआ! कतहुँसँ पैंचो उधारक व्यवस्था करह छठि आ चौड़चन पावनि छैक। अर्थात् कर्ज लिअ आ पावनि करू, नीक नीकुत खएबाक हेतु। एखन पछिला कर्ज सधबो नहि कएल कि दोसर पावनि उपस्थित भऽ गेल। अर्थात् कर्जमे सालो भरिक कहाँ जन्म भरिक आ कतेको ठाम पुस्त-दर-पुस्त डूबल रहू। तँ प्राय: मिथिलावासीक कहब अछि जे-

''स्नान कृत्वा हरि जपेत

भोजन कृत्वा जलं पिबेत

त्रणं कृत्वा घृतं पिबेत

यावत् जीबेत सुखं जीबेत्।।''

अर्थात् कर्जेमे जन्मूआ कर्जेमे मरि जाउ किन्तु पावनि ने तँ कमजोर हएत आ ने छुटबे करत। मिथिलाक आर्थिक दुर्दशाक किछु अंश धरि कारण एहि ठामक पावनि-तिहारक सेहो रहल होएत मुदा आब से बात नहिं। विकसित संस्कारक संगहि आर्थिक विकास सेहो पर्याप्त भऽ रहल अछि। लोक समाजमे पहिनेसँ 'बढ़ि-चढ़ि' कऽ पावनि-तिहार मनएबामे रूचि लऽ रहल अछि।

हम ई नहिं कहैत छी जे मिथिलाक परम्परागत संस्कार आ पावनि-तिहारक परम्परा बहुत सुन्दर अछि, मुदा समयक संग चलैत ओहि सभ परम्परा सभमे परिवर्तन होएबाक चाही से भइये रहल अछि। आब ने ओ वातावरण आ ने परिस्थिति अछि। ज्ञान-विज्ञान बहुत बढ़ि गेल अछि। विश्व दौड़ि रहल अछि आगू दिसि कऽ तँ कमसँ कम हम डेगो-डेगो तँ ओकर पादू विकास करब।

सन्दर्भ सूची-

1. मिथिलाक पावनि-तिहार- मोहिनी झा
2. मिथिलाक वार्षिक पावनि-तिहार- श्रीमती अंशु मिश्र
3. मिथिलाक पावनि-तिहार- बाबू गंगापति सिंह

सम्पर्क-

एसोसिएट प्रोफेसर

मैथिली विभाग

यू.भी.के. कॉलेज, कड़ामा- आलमनगर

बी.एन.मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**डॉ. चित्रलेखा**

मिथिलामे गीत नादक महत्व

मनुष्यक जन्मक पूर्वसँ मृत्यु पर्यन्त अनेकानेक अवसरपर पावनि ओ उत्सव मनाओल जाइत अछि आ से सभ गीतमय भेल रहैत अछि, जाहिमे व्यवहारजन्य भाव भेटैछ। गीतक संगहि संग अवसर विशेषपर व्यवहारजन्य, अराधना एवं वंशक अभिवृद्धिजन्य पौराणिक कथा ओ व्रतादिक विषय वर्णित अछि, जकर रक्षा मैथिलानी लोकनि करैत आबि रहल छथि। अवसर परक व्यवहारिक गीतक रसामाधुर्य, ताहि संगे जातीय गीतक रागात्क धार्मिक औद्रार्यक अतिरिक्त गीतक अनुपमेयतामे पौराणिक देवचरित्र स्पष्टत: दृष्टिगोचर होइछ।

गीतक द्वारा पितरक स्मरण, देवी-देवताक अराधना, लौकिक आचार-विचार ओ वैदिक परम्पराक विधि-व्यवहारक लिक्षणता, तन्त्र-मन्त्रक महत्ता, विधि सामग्री सभक वस्तुजन्य ओ अवसरजन्य गुणक विशेषता भेटैछ, जाहिमे व्यक्तिकेँ परिवारसँ, परिवारकेँ कुटुम्ब ओ आस-पड़ोसक समाजसँ वर्त्तमान आनन्दमे सौहार्द्र भाव परिलक्षित होइछ, ओ तेँ तदनुरूपेँ सांस्कृतिक रक्षा सतत स्वत: सिद्धे थिक।

'धर्मपराणता, आनन्दकारिता, लौकिकता, हृदयग्राहिता, सामयिकता, अवसरोपयोगिता व्यवहारपटुता कलानिपुणता आदि अनेकानेक जीवनोपयोगी ओ लोकोपयोगी मनोरम भावसामग्री मिथिलाक निर्मल पावन क्षेत्रक हरीतिमा मध्य ओ सामयिक गीत सभमे पाबि अनतत: ई बुझना जाइछ जेना संगीतक माध्यमे भाव साधनक संयोगसँ चित्रित कऽ वर्त्तमानक स्वरूपमे परम्परया अतीतकेँ समक्ष आनि भविष्यक संस्कारकेँ चमत्कृत ओ उज्जीवित करैछ, जे स्वभावत: श्लाधनीय, पठनीय, स्मरणीय ओ स्तुत्य अछि।

शास्त्रक हेतु तँ प्रत्यक्ष मंत्र प्रमाण होइछ अछि, किन्तु विधि तँ परम्परासँ चलैत आबि रहल अछि। 'गीत आ कथा'जीवनक संग उपर्युपरि अभिमिश्रित आ स्वरूपित अछि।

जतए मिथिला क्षेत्रक विभिन्न स्थानीय विशेषताक अन्त: स्वरूपसँ परिचित होएबाक अवसर भेटत, ओतए विभिन्न विधि व्यवहारसँ समानता ओ भिन्नताक बोध सेहो होएत। अनेक जातिक सम्पर्कमे अएबाक अवसर भेटल। कोनो गाँवमे कोनो जातिक प्रधानता ओ कोनोमे कोनो आन जातिक। मुदा सर्वत्र एक बात दर्शनीय अछि आओर ओ अछि एकर परस्पर सहय्य भाव। एहि विभिन्न जातिक फराक साहित्य, संस्कार, विचार, आदर्श आदिक अध्ययनमे सुविधा पाओल। कथावाचक ओ गायक रूपमे यद्यपि स्त्री पुरुष दुहू भेटल ओ सेहो सभ अवस्थाक लोक, मुदा बालगीत, चकचन्दा गीत आदिक गायक प्राय: बालक अछि, गाथा गीतक गायक प्राय: पौढ़, पुरुष, होली, चैती, कजरी आदि उल्लासक गीत युवक वर्गक बीच बेसी लोकप्रिय अछि। महिलामे अवस्थाक नियन्त्रणपर कककरो ध्यान नहि अछि। सभ अवस्थाक महिला सोल्लास लोकगीत गबैछ, कथा कहैछ ओ सुनैत अछि। तखन सामयिक लोकगीतमे विशेषत: नव वयसक महिला बेसी अभिरूचि रखैत अछि।

गीतगाइनि दू प्रकारक भेटलीह- (1) सभक संग स्व मिला कऽ गओनिहारि आ (2) स्वतंत्र रूपसँ गओनिहारि।

कोनो पावनिक अवसरपर सभक संग मिलिकऽ गएबाक व्यवहार अछि। किदु व्यावसायिक गायिका सेहो होइछ जे विविध मांगलिक अवसरपर गीत गाबि पारिश्रमिक लैत अछि- यथा, वक्खौ- बरवौनी, नट-नटी आ पमरिया आदि।

एहि ग्रामीण स्त्री-पुरुषमे अनेकानेक लोकक लग अपार साहित्य वैभव अछि। अधिकांश निरक्षर वा मात्र साधारण साक्षर रहितहुँ श्रुति परम्परासँ सम्पूर्ण साहित्यकेँ कंठाग्र कएलन्हि अछि। साहित्य कोशकेँ समृद्ध करबाक हेतु कोनो कार्य व्यापार छोड़ैत नहि छथि तथापि अपन कार्यक बीच क्रमश: ई साहित्य-भंडारी बनि जाइत छथि।

मिथिलामे परम्परासँ प्रचलित व्यवहारसँ सम्पृक्त बालक आ बालिका लोकनिक जन्मसँ द्विरागमन पर्यन्त सभ पावनिक पुनीत अवसर परक गीत पुरातन संस्कृतिक स्वरूपकेँ उत्जीवित रखैत भविष्यक संस्कृति रक्षामे सहाय्य बनैछ।

अवसर परक व्यवहारिक गीतक जीनोपयोगी स्वरूप, सौन्दर्य, समय विशेषक सामयिक गीतक रसमाधुर्य, ताहि संगे जातीय गीतक रागात्मक धर्मिक औदार्यक अतिरिक्त गीतक अनुपमेयतामे पौराणिक देव चरित्र स्पष्टत: दृष्टिगोचर होइछ।

गीतहि द्वारा पितरक स्मरण, देवी-देवताक आराधना, लौकिक आचार-विचार ओ वैदिक परम्पराक विधि-व्यवहारक विलक्षणता, तन्त्र-मन्त्रक महत्ता, विधि सामग्री सभक वस्तुजन्य ओ अवसरजन्य गुणक विशेषता भेटैछ, जाहिमे व्यक्तिकेँ परिवारसँ, परिवारकेँ कुटुम्ब ओ आस-पड़ोसक समाजसँ वर्त्तमानक आनन्दमे सौहार्द्र भाव परिलक्षित होइछ, स्वत: सिद्धे थिक।

सन्तानक हेतु स्त्री-पुरुषक आन्तरिक लालसा, साधना ओ दव-स्पप्न, गर्भवती जननीक आकुलपीड़ा पुत्रोत्पत्तिजन्य उल्लास, सम्बन्धी ओ परिजनक परस्पर बधाई आ शुभकामना संग आनन्द विभोर भए कतहु- सोहर गबैछ, तँ अक्षरम्भ काल भविष्यक आशामे रत, कखनहुँ मुण्डन कराए नव संस्कार ओ विशुद्धि करबएमे मग्न, तँ पुन: उपनयनक सविधि संस्कारसँ ब्रह्मतत्व ज्ञानक प्राप्ति प्रक्रियामे लागल ओ तहिना सृष्टिक रक्षार्थ स्त्री पुरुषक सामाजिक गेठबन्धक वैवाहिक कृतिकर्म द्वारा कराबए मे डेग-'डेगपर, घड़ी-घड़ीमे भावकेँ स्वर दए अभिव्यंजित करैत अछि।

एहि प्रकारेँ जन्मक पूर्वसँ लए मरण पर्यन्त अनेकानेक अवसरपर पावनि ओ उत्सव मनाओल जाइछ आ से सभ गीतमय भेल रहैछ, जाहिमे व्यवहारजन्य-भाव भेटैछ। गीतक संगहि संग अवसर विशेषपर व्यवहारजन्य, आराधनाजन्य, उपदेशजन्य, विस्मयजन्य सामाजिक स्वरूप रक्षा एवं वंशक अभिवृद्धिजन्य पौराणिक कथा ओ व्रतादिक विषय वर्णित अछि, जकर रक्षा महिला लोकनि करैत आबि रहल छथि।

सम्पर्क-

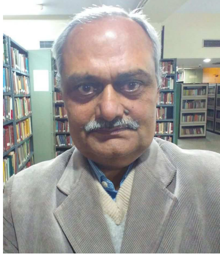
एसोसिएट प्रोफेसर

मैथिली विभाग

यू.भी.के. कॉलेज, कड़ामा- आलमनगर

बी.एन.मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**रबीन्द्र नारायण मिश्र- धारावाहिक उपन्यास-लजकोटर**

लजकोटर

(प्रवासीक जीवनपर आधारित)

(८म खेप)

-8-

दोसरदिन साँझमे गाम पहुँचलहुँ । मोनमे बहुत चिंता रहए जे पता नहि माएक की हाल होएत? बहुत दिनक बाद गाम आएल रही मुदा किछु बदलल नहि छल। सभकिछु ओहिनाक-ओहिना छल । हमरसभक घर गामक शुरुएमे अछि । टेम्पु सोझे हमर दनानपर ठाढ़ भेल । दनानपर किओ नहि छल । आगा बढ़लहुँ ।घरक ओसारापर सेहो किओ नहि छल । घरमे गेलहुँ तँ माए चौकीपर पड़ल छलि । हमरा देखितहि उठबाक प्रयास केलीह मुदा उठि नहि सकलीह। बहुत कमजोर लगैत छलीह । मुदा होशमे छलीह । हाल-चाल पुछैत-पुछैत कानए लगलीह । हम पुछलिऐक-"की होइत छौक?"

" की कहिअह? असगर रहैत-रहैत मोन औँट भए गेल । बोखार से लगैत अछि ।"

"दबाइ नहि खाइत छही?"

" दबाइ के आनि दैत? किओ नहि फटकै छैक । आब गाम ओ गाम नहि अछि ।सभ अपन घरे-घरे बंद रहैत अछि । ककरोसँ कोनो मतलब नहि । पाबनि तिहारोमे सभ अपनेधरि सीमित रहैत अछि ।"

हम चोट्टे बैदकेँ बजा अनलहुँ । गामक सभरोगीक इलाज ओएह करैत छलाह । माएक नारी देखिते कहलखिन ‘‘हिनका कोनो बिमारी नहि छनि । एसगर रहैत-रहैत ई हाल भए गेलनि। किछु दबाइसभ दैत छी । दूसँ तीन दिनमे ठीक भए जेतीह ।"

बैद जी जाइत-जाइत कहि गेलाह-" हिनका आब असगर नहि छोड़बनि ।"

माएकआधा बिमारी तँ हमरा अएलेसँ ठीक भए गेलैक ।बैदजीक दबाइ सेहोबहुत फएदा केलकैक । माएक हालत क्रमशः ठीक होइत गेल । हमरा संगे रहलासँ ओकरा बहुत उसास भेलैक। लगबे नहि करैक जे ओ एतेक दुखित छलि ।

हम कतेक दिन गाममे रहितहुँ । ओहिठाम किछु जोगार नहि रहैक । जथापात बिका गेल छल । जे कनीमनी बाँचल छल से दिआदबादसभ तेहन ओझरमे देने छलाह जे कहिओ तफसिआनहि भए सकैत छल । तँ दिल्ली तँ आपस जेबेक छल ,जहिआ जाइ । मुदा माएक की होएत? एहि चिंतासँ निन्न नहि होइत छल। गामक हालत आब ओहन नहि छल । फगुआक समय छल । कतहुँ फाग नहि,किओ ककरोसँ भेंटघाँट नहि करैत देखाइत । सभ अपन-अपन दरबाजा पर बैसल समय बितबैत छलाह ।

एकटा समय छल जे फगुआसँ पन्द्रह दिन पहिनहि गीतनाद शुरु भए जाइत छल । फगुआ दिनक तँ बाते छोड़ू । रंग-अबीरसँ सौंसे गामक लोक सराबोर रहैत छल । डाफपर नचैत -गबैत लोकसभ भेदभाव बिसरि घरे-घर घुमि जाइत छल । मुदा ई समय थिकैक। बदलैत रहब एकर स्वभावछैक । बहुत किछु बदलल तहिना इहोसभ बदलि गेल । गामोसभ शहरक नकलमे लागि गेल । परिणाम ने ई गाम रहल ने शहर बनि सकल ।

माएकेँ गाममे एसगर छोड़ब उचित नहि छल ।तखन तँ ओकरो संगे लेने चली सएहटा समाधान बुझाइत छल मुदा ताहि हेतु ओकरा मनाएब मोसकिल काज छल । तथापि प्रयास करए लगलहुँ । माएकेँ कहलिऐक-" गामक हालत देखिए रहल छिही । एहिठाम गुजर होएब संभव नहि अछि ।शहर जाए पड़त । एहन हालतमे तोरा एसगर कोना छोड़ि दिऔक? "

" से किएक, गाममे एतेक लोक अछि, तकर गुजर कोना होइत छैक? तोरो भए जेतह । गामे रहह ।"

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

हमरा जोरसँ हँसी लागि गेल । माएक लगमे ओकर बेटा रहैक एहिसँ नीकबात आओर की भए सकैत छैक? मुदा जीवन मात्र भावनासँ नहि चलि सकैत छैक । गाममे आबछैहे की? ककरा लए कए रहत ? मुदा दिल्ली जेबाक हेतु माए तैयार नहि होथि । ई समस्याक समाधान नहि भए रहल छल ।

हम अपन माए-बापक असगर संतान छलहुँ । जे करक छल से हमरे । ककरोपर टारि नहि सकैत छलहुँ। माए तँ माए होइत अछि । जखन बहुतबेर बहुत आग्रह केलिऐक तँ ओ मानि गेल । फेर बिचार केलहुँ जे गाममे जे किछु जमीन बाँचल अछि से जौँ बिका जाइत तँ दिल्लीमे छोटोछीन घर लए लितहुँ जाहिसँ मासिक किराया देबएसँ पिंड छुटिजाइत ।

ककरो-ककरोसँ एहि विषयमे गप्प केलिऐक । एकाधगोटे कनीमनी बातो केलाह । मुदा गाम तँ गामे होइत अछि। केना-ने-केना हमर कक्का कँ ई बात पता लगलनि । ओ दौड़ले हमरा दलानपर अएलाह आ चिकरि-चिकरि कहए लगलाह-"हमर बाप-पितामहक चीज दोसर कीनत। भए नहि सकैत अछि । हम आइए,एहीठाम मटिआतेल ढ़ारि कए मरि जाएब ।औ बाबू! आब की होएत ? हमर माए बाहर अएलीह -"अहाँकँ ई बातसभके कहलक अछि? एकर कोनो चर्चो नहि छैक। अपन कान देखब कि कौवाके खिहारब ।'

"से सभ हम नहि जानी । एक तँ आब अहाँक हिस्सा बाँचले कहाँ अछि?आ जौँ हेबो करत से पहिने हमर होएत कि गौँआक? अहीं कहू?''

एकटा दोसरे झंझट शुरु भए गेल । हम ओहि समय घरमे नहि रही । कनीकालक बाद अएलहुँ तँ माए सभटा बात कहलक। आब की कएल जाए? मोने-मोन ई सबाल घुमए लागल।

गामक बात बुझि गेलिऐक । एहिठामसँ किछु निकालब मोसकिल काज थिक । दोसरदिन भोरे बिना ककरो किछु कहने माएकँ संग केलहुँ आ अन्हरौके रिक्साँ दरभंगाबिदा भए गेलहुँ। दरभंगासँ बिहार संपर्क क्रांतिमे आरक्षण छल । दुनूगोटे समयसँ अपन जगहपर बैसि गेलहुँ ।माएक मोन बहुत उदास छलैक । ओ दिन मोन पड़ि रहल छल जहिआ हमरा माए पहिलबेर दिल्ली बिदा केने रहए ।आइ हम ओकरो लए कए दिल्ली जा रहल छी। तथापि ओ उदास अछि । अपन लोकवेद,गाम-घर छुटबाक कष्ट ओकरा बौक बना देने रहैक । किछु बाजि नहि रहल छलि । ताबे रेल सीटी मारलकैक । प्लेटफार्मपरसँ ट्रेन सड़कि रहल छल । माए चुपचाप अपन नोर पोछि रहल छलि ।

जहिना -जहिना ट्रेनक पहिआघुमिरहल छल तहिना-तहिना माएक मोन दुखी होइत गेल। ककरा की कहितिऐक ? गप्प-सप्पमे ओकराओझरेबाक प्रयास करैत रहलहुँ । मुदा ओ गप्पो गामे घरक करैक? बातो सही

छैक । भरि जिनगी गाममे रहलैक ,गप्प कथीक करतैक? ट्रेन सिमरिआसँ गुजरि रहल छल। माएकँ से कहलिऐक ।ओ मोनहि मोन गंगाकँ प्रणाम केलक आ एकटा सिक्का जोरसँ गंगामे फेकि देलक । ट्रेन आगा ससरि गेल ।ट्रेनक पहिआ गुड़कैत गेल । हमसभ आगा बढ़ैत रहलहुँ ।

पहिलबेर दिल्ली जाइतकाल ट्रेनमे बिना आरक्षणकँ पैसि गेल रही । तकर दुखद अनुभव अखनो मोन पड़ैत रहैत छल । ट्रेनमे यात्रीसँ बेसी हेम- छेमक फल सेहो भोगने रही । मालतीक प्रति व्यर्थ सहानुभूतिक कारण कतेको परेसानीमे पड़ि गेल रही । तँ एहिबेर अपनाभरि बहुतसतर्क रही । टिकट आरक्षण करओने रही। ककरोसँ गप्प-सप्प नहि करी । मुदा ताहिसँ की होएत? रेल तँ रेल थिक । कनीके कालमे एकटा नेताजी अपन सिपहसलारक संग आरक्षित डिब्बामे पैसि गेलाह । निरंतरपान चबा रहल छलाह तँ किछु बाजल नहि होनि । सभटा काज चेला-चपाटीसभ करथि। बेस मोट-सोट छलाह । हुनकालेल नीचका शायिका चाही। जेनातेनाक एकटा यात्रीकँ मनाओल गेल आ नेताजी निचुका शायिकापर बैसलाह । चेला-चपाटीसभ पानि अनलक,चाह अनलक ,तरह-तरहसँ हुनकर सेवा करए लागल । ककरो सीट नहि रहैक । तँ दोसर यात्रीसभक जगह धकिअओने जा रहल छल । के बाजत आ के सुनत? सभ किछुकबाद नेताजी सुतबाक दबाइ खेलथि आ शायिकापर पसरि गेलाह ।

नेताजीक मुँहमे थूकभरि गेल छल । ओ पच दए पीक फेकलाह । डिब्बामे त्रहिमाम मचि गेल ।सभटा थूक एकटा बूढ यात्रीक माथपर जा कए खसल । तकरबाद जे भेल से की कहू ?चारूकातसँ ओकर लोकबेद नेताजीकँ गरिआबएलागल । ओकर चेला-चपाटीसभ फोंफ काटि रहल छल । जाबे-जाबे किओ किछु बुझितए सभ नेताजीकँ धै मारलक। नेताजी बाप-बाप कए रहल छलाह । उपरका शायिकापर फोंफ काटि रहल हुनकर चेलासभक निन्न टुटलैक । मुदा ताबे तँ नेताजीक सभगति भए गेल छल । चलैत ट्रेनमे एहन घटना नहि देखने छलहुँ । बहुत मोसकिलसँ मामला सम्हरल । दोसर दिन दूपहरमे ट्रेन दिल्ली टीसन पर पहुँचल ।दिल्ली टीसन पर नेताजीक चेलाचपाटीसभ ओहि बुढ़बा आ ओकर लोकवेदसभकँ घेरि लेलक आ गारि-मारि करए लागल। हम माएकँ लेने कहुनाकए जान बचा कए ओतएसँ घसकि गेलहुँ ।

रबीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी, बएस : ६६ बर्ख, पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह, मातृक : सिन्घिआ ड़योढ़ी, वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवा निवृत्त)/ स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवा निवृत्त), शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक
प्रकाशित कृति : मैथिलीमे:-

१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध), ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग), ४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. 'नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास)१२.स्वप्नलोक(उपन्यास)१३.शंखनाद(उपन्यास)१४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

In English:-
1.The Lost House (Collection of short stories), 2.Life is an art
हिन्दी में ___
१.न्याय की गुहार(उपन्यास)
(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipkart.com पर सँ कीनल जा सकैत अछि)
इमेल : mishrarn@gmail.com ब्लोग : mishrarn.blogspot.com
एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

**डॉ. अर्पणा**

नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना

नारी- नारी शब्द नृ अथवा नरसँ बनल अछि। (नृ+अस+दीप= नारी। यास्क नारीकेँ 'नृतू'सँ मानलनि अछि। एहि विशेषणक आधारपर स्त्रीकेँ नारी कहल गेल अछि, मुदा ऋग्वेदमे 'नृ'क प्रयोग वीरताक काज करब दान देब तथा नेतृत्व करबाक अर्थमे भेल अछि आ नर शब्दक प्रयोग सेहो वीर दाता तथा नेताक अर्थमे प्रयुक्त भेल अछि। स्त्रीक नारी नाम सेहो एहि विशेषताक कारण पड़ल होएत। ब्राह्मण ग्रन्थमे कतहु कतहु 'नारी:'पाठ भेटैत अछि मुदा सायणृक मतसँ नारिक भाव नरक उपकारकसँ अछि।[1]

वामा- स्त्री सौन्दर्यताक कारणेँ वाम कहबैत अछि। 'वयति सौन्दर्यम'। प्रतिकूल बात कहलासँ सेहो 'वामा'कहबैत अछि। जेना- हक बदल। नहीं, वामाक दुर्गनाम सेहो अछि।[2]

अवला-'अवला शब्द नारीक शारीरिक संरचनाक ध्यानमे राखि प्रयोग कएल गेल अछि। कारण पुरुष जकाँ स्त्रीमे बल नहि होइत अछि। यद्यपति नारीक मानसिक उड़ानकेँ लोहा वैदिक ऋषि सेहो मानैत छलाह आ ओकरा वशमे करब असाध्य मानैत छलाह।[3]

सुन्दरी- सु+उन्द= गिल्लकरब+डीप= सौन्दर्यवती नारी एहि हेतु कहल जाइत अछि जे जकरा देखलासँ मात्र पुरुषक हृदय गिल्ल भऽजाइत अछि। चित्त द्रवित भऽ उठैत अछि अथवा 'सुष्ठानुन्दयति इति नैरुक्ता:।[4]

वस्तुत: 'सुन्दरी'शब्द ऋग्वेदक 'सुनरी'शब्दक विकसित रूप प्रतीत होइत अछि। ऋग्वेदमे उमाक लेल 'सूनरी'शब्दक प्रयोग भेल अछि।[5]'सुनरी'क तात्पर्य-शोभाशाली सुन्दी।

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रमदा- प्रमदक भाव होइत अछि हर्षा 'प्रमद समदौ हर्ष च।' अतवएब हर्षित, पुलकित स्वभाव होवाक कारणे सेहो स्त्रीकेँ 'प्रमदा' कहल गेल अछि। अपन हाव-भावसँ पुरुषकेँ उत्तेजित कऽ देब नैसिर्गक विशेषता होएवाक कारणेँ ओ प्रमदा कहवैत अछि।

ललना- ई शब्द सेहो स्त्रीक एक मनोवैज्ञानिक पक्षकेँ प्रकट करैत अछि। ओ मान करबाक प्रिय होइत छथि- रूसैत छथि। अतएव मानिनी छथि। मानिनीक एकगोट आरो पक्ष होइत अछि- ओ अछि स्वाभिमान आत्म-सम्मानक भावना। ओकर सौन्दर्य गुण, कार्य आदि कोनोक प्रतिकूल आलोचना ओकरा वाण जकाँ बेध दैत अछि तेँ ओ मानिनी भेल।

महिला- पूज्या होएवाक कारणेँ स्त्रीक नाम महिला पड़ल। मह्+इलत+आ= महिला।मह्क अर्थ होइत अछि पूजा। उपर्युक्त शब्दक व्युत्पत्ति नारीक सामान्य स्वरूपक अभिव्यंजना करैत अछि। नारी सम्बन्ध विशेषक द्योतक शब्दक परिचय अधोलिखित अछि-

दूहिता- यास्कक अनुसार दुहिता शब्दक व्युत्पत्ति- 'दुहिता दुर्हिती, दूरेहिता'।[6] दुर्गाचार्य एकरा स्पष्ट करैत लिखैत छथि दुहिता कारण ओ जतय कतहु देल जाइत छथि ओकर स्वागत नहि होइत अछि, ओ सर्वत्र दुत्कारल जाइत छथि।[7] अथवा बेटीकेँ दूर चलि गेलापर पिताकेँ चैन भेटैत अछि। यास्क दुहिता शब्दकेँ 'दूह' धातुसँ सेहो बनौलनि अछि आ पिताकेँ प्रसन्न कए सदिखन किछु ने किछु धन लैत रहैत छथि तेँ दुहिता भेला। वस्तुत: दुहितृ शब्द दुह्-दुहना धातुसँ बनल अछि, सम्भवत: प्राचीनकालमे कन्या अपन पिताक घर गाय दुहल करैत छलीह। फलत: हुनक नाम दुहिता पड़ल।

जाया- स्त्री 'पत्नी' रूपक लेल जाया शब्दक प्रयोग कएल गेल। ऐतरेय ब्रह्मणमे जायाक व्युत्पति एहि प्रकारेँ कयल गेल अछि 'तंज्जया जाया भवति यदस्यां जायते पुन:'। जाया एहि हेतु अछि जे पुरुष स्वयं ओहिमे पुत्रक रूपमे जन्म लैत अछि। ऋग्वेदमे जायाक प्रति अत्यन्त मधुर उद्‌गार व्यक्त कयल गेल अछि।

माता- वैयाकरण मातृ शब्दकेँ मान+तृणसँ बनवैत छथि। आ मातृ शब्दक अर्थ 'आदरणीय' अछि। यास्कक मतसँ मातृक भाव 'निर्मातृ' निर्माण करयवाला जननी सेहो अछि। मुदा 'आदि युगसँ लय आइ धरि मानव जकरा असीम श्रद्धा प्रकट करैत अछि आ जाहिसँ अजस्त्र अक्षय स्नेह पबैत रहैत अछि, ओ मात्र जन्मदात्री नहि, ओ एहिसँ बहुत पैघ अछि। ओकर स्थान स्वर्गसँ सेहो उच्च आ गुरुसँ अधिक पूज्य होइत अछि। माय सदैव माय होइत अछि।

वेदमे सेहो नारीक लेल कुलयानी, सम्राज्ञी कल्याणी पुरन्धि, कुलपा आदि शब्दक प्रचुर प्रयोग भेटैत अछि। इन्द्राणी, उषा, अदिति, इला, श्रद्धासिनी, वाली, भारती, पृश्नि, वरूणानि, आख्यानि वाक, दयावा पृथ्वी, राका आदि रूपमे वैदिक संहिताक नारीक दृष्टि पथमे अवतरित होइत छथि। स्त्रीक हेतु एक स्थानपर कहल गेल

अछि। 'शुद्धा:'पूसा योषितो यज्ञिया इमा:'तथा हुनका पुरुषक हेतु अश्व, गायक हेतु शिव होयवाक बात कहल गेल अछि। सहोत्तरंस्म पुरानारी, समनं चावगच्छति'अर्थात् पहिले स्त्री यज्ञ आयुद्धमे जाइत छलीह। हुनक पुत्र शत्रुहण छथि। एक गोट स्थानपर स्त्री कहैत छथि हमरासँ अधिक केओ सौभाग्यशालिनी नहि छथि वैदिक अक्ष सूक्तमे एकगोट जुआरीकेँ ओकर सासु डटैत अछि आ पत्नी रोकैत अछि। वेद कहैत अछि 'अनवया पतिजुष्टेवनारी'अर्थात् सच्चरित्रस्त्री पतिकेँ प्रिय होइत छथि। अर्थवेद कहैत छथि 'जायापत्नेमधुमतीवाचंवदति'।

वेदमे स्त्रीकेँ ब्रह्म सेहो कहल गेल अछि। तेँ वरदा वेदमाताकेँ वेदमे स्तुति कयल गेल अछि। आचार्य प्रियव्रत तेँ सरस्वतीकेँ शिक्षाविभागक मंत्री कहलनि अछि। संहितामे वर्णित नारीक एहि उत्कृष्ट रूपक छाया हमरा सहितेतर वैदिक साहित्य (ब्राह्मण एवं उपनिषद्) मे प्रचुरतासँ उपलब्ध अछि।

ब्राह्मण साहित्यमे पत्नी तथा स्त्री विषयक अनेक सन्दर्भ प्राप्त होइत अछि जाहिसँ नारीलोकनिक गरिमा परिलक्षित होइत अछि। नारीकेँ सावित्रीक संज्ञासँ समलिंगीकृत कयल गेल अछि। स्त्री सावित्री (जैठव्रा., 4/27/17)। गृहपरिवारमे ओकर प्रधानताकेँ स्वीकार कयल गेल अछि। ऐतरेय ब्राह्मण जायाकेँ गाईपत्य अग्निकरुपमे स्वीकार करैत अछि- 'जाया गार्हपत्योग्नि:'। (ए.ब्रा, 8/24) पत्नी पतिक अर्द्धांगिनी मानल गेल अछि।

संहिता एवं ब्राह्मण साहित्यक विपरीत उपनिषदकालीन नारीलोकनिक समुन्नत अवस्थाक परिचय भेटैत अछि।

केनोपनिषद् मे हेमवती उमाक आध्यात्मिक ज्ञान, ब्राह्मवादिनी, वाचकनवी गंर्गी आ मैत्रेयीक वर्णण ओकर आध्यात्मिक ज्ञानक पराकाष्ठाकेँ सन्दर्भशित करैत अछि। मैत्रेयीक ई कथन जे 'येनाहंनामृतास्याम किंकुर्याम्'हुनक ज्ञान पराकाष्ठाक दिग्दर्शन करैत अछि। एहि काल पिता सेहो पंडितापुत्रीक इच्छा करैत छलाह।

उपनिषद् साहित्यमे स्त्रीलोकनिक मातृत्व पक्षकेँ सेहो चित्रित कयल गेल अछि। ऐतरेय उपनिषद् मे गर्भ धारण करयवाली स्त्री व्यावयित्री एवं भावियितव्या कहल गेल अछि। एहिकालमे स्त्रीकेँ यद्यपि छायाधिकारक स्पष्ट रूपसँ वर्णन नहि कयल गेल अछि, मुदा वृहदारण्यक उपनिषद् मे सन्यास गमन करैत याज्ञवल्कय द्वारा अपन भार्याकेँ वित्त विवरण करब हुनक पतिक सम्पतिमे अधिकार होयवाक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। स्वैनिणी नारीक उदाहरण हमरा छन्दोग्यमे (4/42/2) देखल जाइत अछि।

सूत्र साहित्यकेँ अवलोकन कयला पर एहि युगमे स्त्री लोकनिक स्थान प्रत्येक दृष्टिसँ समुन्नत अवस्थाकेँ प्राप्त दृष्टिगत होइत अछि। आ विद्या सम्पन्न होइत छलीह तथा विद्यालयमे उपाध्याय। आ

आचार्यहुपर प्रतिष्ठित होइत छलीह। मैत्रेयी, बहवा, प्राचितेयी, गार्गी, वाचकनवी, सुलभा आदि ऋषिकाकेँ रूपमे उल्लिखित छथि। गोभिल गृहसूत्रमे स्त्रीलोकनिक उपनयन संस्कारक सेहो निर्देश अछि (2/1/19)

एतएव सूत्रकालमे स्त्री शिक्षा सुव्यवस्थित रूपमे छल।■

सम्पर्क-

बालूघाट, बॉँध रोड, मुजफ्फरपुर

---

[1]आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' कविनवतिका, मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरंभंगा, 1984

[2]कर्णामृत (जुलाई-सितम्बर, स्मृति विशेषांक), 2000, कोलकाता

[3]सम्पादक विजयनाथ ठाकुर, जयन्ती, पृ- 131, चेतना समिति, पटना, नवम्बर- 2004

[4]तत्रैव

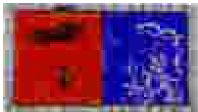
[5]लालदास- रमेश्वर चरित मिथिला रामायण (बालकाण्ड), पृ- 4, पंचायत प्रेस, लहेरियासराय, दरभंगा, सम्वत 2011

[6]लालदास, रमेश्वर चरित मिथिला रामायण (पुष्करकाण्ड), पृ- 437, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1999

[7]डॉ. मुरलीधर झा- चन्दा झा ओ लालदास रामायण तुलनात्मक अध्ययन, पृ- 174, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा, 2006

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

दीपा झा

मैथिली आर बाल साहित्य

आइ संसार मे बहुत क्षेत्र मे स्थानीय क्षेत्र मे स्थानीय भाषा क अस्तित्व संकट मे छै। मैथिली भाषा अक्खन ओ ई स्थिति सऽ दूर छै मुदा संकट त छै ये। अनियंत्रित प्रवास आर प्रवासी जन द्वारा अपन मातृभाषा के अनायास त्याग देनाइ सबसॅ प्रमुख कारण दर्शायल जाइछ। किन्तु ई एकटा मुख्या समस्या के सरलीकरण केनाइ छै। वस्तुतः एक्कर कार्रण छै सशक्त एवं मनोरम बाल साहित्य क आभाव। जं नेन्रा- भुटका सभ कें रंग -बिरंगक कहानी किताब उपलब्ध कराओल जाए आर भिन्न प्रान्त ,देस आर जाति किस्सा स पटल जन साहित्य सहजता सऽ भेटै त भाषा स्वतः ब्यबहार मे रहतइ। जौँ लोक गीत ,कबिता , प्रसिद्द फकरा सभ कहानी क रूप मे उपलब्ध रहतइ तऽ बड सरलता से मोन रहतइ आर दोसरो भाषा क बच्चा सभ संगे साझा कएल जेतइ आर एक टा धार जकाँ बहैत रहतै।

ऐ क्षेत्र मे बहुत शीघ्रता सऽ आर गंभीरता सऽ काज के आवश्यकता छै।

नीतू कुमारी- मैथिली चित्रकथा

प्रीति ठाकुर-विद्यापतिक पुरुष परीक्षा

प्रीति ठाकुर-मिथिलाक लोकदेवता

प्रीति ठाकुर-गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा
प्रीति ठाकुर-मैथिली चित्रकथा

देवांशु वत्स- नताशा

मैथिलीक ढेर रास बाल साहित्य आ आन साहित्य, संगे मिथिला आ मैथिलीपर मैथिली आ अंग्रेजीमे ढेर रास पोथी फ्री डाउनलोड लेल नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि।

http://videha.co.in/new_page_15.htm

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**योगेन्द्र पाठक वियोगी**

नरक विजय

(एहि नाटकक एक संस्करण हमर पोथी 'त्रिनाटकम्' मे छपि गेल अछि। ओहि मे दृश्यक संख्या बहुत बेसी रहला सँ किछु निर्देशक लोकनि एकर मंचन पर प्रश्न चिन्ह लगौलनि। ओहि आलोचना कें ध्यान मे रखैत एकरा परिवर्धित कएल गेल। एकर बंगला अनुवाद श्री नवीन चौधरी केलनि अछि।- नाटककार)

पात्र परिचय

मानव पात्र – रमेश, सुरेश, अनुपम अमित (वैज्ञानिक)

पौराणिक पात्र – ब्रह्मा, विष्णु, महेश, नारद, यमराज, चित्रगुप्त, दू यमदूत

अंक 1

दृश्य 1

पर्दा उठबा सँ पहिने नेपथ्य मे घोषणा होइत अछि --

आजुक टटका खबरि सुनू। दुर्दान्त बाहुबली रमेश आ सुरेश अपन शीर्ष राजनीतिक संरक्षक लोकनि कें जलसा मे बजाए बड़ी राति तक नाच गान भेलाक बाद बेहोसीक अवस्था मे पाँच गोटेक दनादन हत्या कऽ देलनि। तकर बाद कृत्रिम बुद्धि आ साइबोर्गक क्षेत्र मे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक अनुपम अमितक अपहरण सेहो केलनि।

पर्दा उठैत अछि। बीच मे उपर टाँगल अछि एकटा डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड, जे एखन स्विच-ऑफ अछि। मंच पर एक कोन मे टेबुल पर कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक यंत्र, किछु Do-It-Yourself

ISSN 2229-547X VIDEHA

(DIY) किट, किछु तार, सोल्जरिंग आयरन, अन्य उपकरण आदि अस्त व्यस्त दशा मे राखल। दोसर कोन मे टेबुल पर अनेको शास्त्र पुराणक मोट मोट पोथी सब सजाओल। मंचक बीच मे कने आगू दिश तीनटा कुर्सी राखल। कुर्सीक सामने छोट टेबुल पर जलक बोतल आ गिलास। बीच बीच मे नेपथ्य मे जंगली जानवर सबके शब्द सुनाइ पड़ैत अछि।

वैज्ञानिक अनुपम स्लीपिंग सूट पहिरने छथि। वयस साठिक धक। चेहरा पर औंघाएल आ थाकल हेबाक भाव। हुनका बन्हने रमेश आ सुरेशक प्रवेश। रमेश आ सुरेश दूनू प्रायः पचास-पचपनक वयस, बेस गठल शरीर, खाकी ड्रेस, मुह गमछा सँ झाँपल, दूनूक हाथ मे पिस्तौल छनि। प्रकाश वैज्ञानिकक चेहरा पर फोकस रहैत अछि आ जेना जेना ओ मंच पर आगू अबैत छथि, तेना तेना हुनका संग चलैत अछि। मंचक बीच पहुँचला पर पूरा मंच प्रकाशित होइत अछि। रमेश हुनकर बन्हन खोलैत छथि। सुरेश हुनका एक गिलास जल पीबै लेल दैत छनि। दूनू अपन मुहक गमछा खोलैत छथि)

वैज्ञानिक *(जल पीबि, घबराएल)* हमरा किएक अपहरण केलहुँ ?

सुरेश *(कुर्सी दिस इसारा करैत)* पहिने आसन ग्रहण कएल जाओ सर। *(एक एक कए तीनू गोटे बैसैत छथि, दूनू बाहुबली अपन पिस्तौल टेबुल पर रखैत छथि।)*

रमेश घबरेबाक कोनो बात नहि सर, अपने आराम सँ बैसियौ।
अहाँ सँ ने कोनो फिरौती लेब आ ने कोनो तरहक कष्ट देब। अहाँ तऽ हमरा सबहक पूज्य छी आ देशक गौरव। अहाँक सुरक्षा हमरो सब लेल बहुत जरूरी अछि। किछु गप सप केलाक बाद अहाँ कें एखनहि आपस पहुँचा देब।

नेपथ्य मे जंगली जानवर सबके शब्द सुनाइ पड़ैत अछि। वैज्ञानिक अकानैत छथि।

वैज्ञानिक हम सब जंगल मे छी की ?

सुरेश जी सर,
एतए एकान्त मे अहाँ कें लऽ अनलहुँ मात्र अपन प्रोजेक्ट बुझबै लेल। हमरा सबहक प्रसिद्धिए तेहन भऽ गेल अछि जे अहाँक ऑफिस मे जाकए विजिटिंग कार्ड देखा कए गप नहि ने कऽ सकैत छलहुँ। तें अपहरणक नाटक करए पड़ल।

वैज्ञानिक *(चेहरा पर शांत भाव अनैत)* एतए अहाँ सब कें पुलिसक डर नहि अछि ? एतेक पैघ कांड भेला पर पुलिस अहाँ सब कें चारू कात तकिते होएत ने।

रमेश चिन्ता नहि सर। पुलिसकें रस्ते देखल नहि छैक आ यदि रस्ता भेटियो जेतैक तऽ आएल नहिए पार लगतै।

सुरेश रस्ता पर पैघ गड्ढा बनाओल छैक जे हरदम पानि सँ भरल रहैत छैक। हम सब जखन आबऽ लगैत छी तऽ मोबाइल के रिमोट कन्ट्रोल द्वारा पानि उपछै लेल पम्प चला दैत छिऐक। आबि गेला पर फेर ओहि मे पानि भरि जाइत छैक। बहुत सुरक्षित छैक ई जगह सर।

रमेश एकटा बात आर छैक सर जे अपने कें हमरा सबहिक विषय मे आश्वस्त करत।

सुरेश पुलिस हमरा सब कें जीवित अवस्था मे कहियो नहि पकड़ि सकत। यदि कोनो असावधानी सँ कहियो घेराइयो जाएब तऽ पुलिस कें मृत शरीरे भेटतैक।

वैज्ञानिक ठीक छैक, जल्दी अपन योजना कहल जाओ।

रमेश देखियौ

सर, एतेक दिनक अपराध यात्रा मे हम सब बहुत पाप केलहुँ। एतेक तरहक पाप जकर वर्णन शास्त्र पुराण मे भेटबो नहि करत।

सुरेश हम सब एहि बीच शास्त्र पुराण सबके अध्ययन सेहो केलहुँ, मृत्यु उपरान्त स्वर्ग नरक भोगक जानकारी सेहो लेलहुँ। देखियौ ओ पोथी सब *(कोन दिस इंगित करैत छथि)*

वैज्ञानिक *(कने मुस्किआइत)* अच्छा !

रमेश आइ हमरा दूनूक आत्मा कें अपूर्व शान्ति भेटि रहल अछि जे ओहि पाँचो

पपियाहा दुष्टात्मा सब कें यमलोक पहुँचा देलियैक। एही दुष्ट राजनेता लोकनिक कारण हम सब अपराधक संसार मे घुसिया गेलहुँ। हमरा सबके आपराधिक जीवन एतहि शेष होइत अछि।

वैज्ञानिक किन्तु अहाँक अपन कएल पापक दंड तऽ अहीं सब भोगबै। राजनेता सबके हत्या सेहो एहि पापक कड़ी मे जोड़ा गेल ने।

सुरेश पापक प्रायश्चित्त करबाक लेल हम दूनू किछु अभिनव तरीका सोचने छी। एहि शरीरें तऽ अपराध छोड़ियो देला पर समाज हमरा दूनू कें स्वीकार नहिए करत। आ फेर कानूनी प्रक्रिया सेहो छैक।

रमेश ओही प्रोजेक्टक लेल अपने सँ विमर्श करबाक अछि।

सुरेश आब हम सब एक विशेष अभियान पर जाए चाहैत छी। एहि लेल हम सब अपना संग किछु चीज लऽ जाए चाहैत छी जे एतुका वैज्ञानिक आविष्कारक अभिनव नमूना होइक। ओही लेल अहाँक मदति चाही। हमर ई लिस्ट देखि लेल जाओ सर। ***(एकटा कागतक टुकड़ी हुनका दैत छथि)***

वैज्ञानिक ***(लिस्टक अध्ययन करैत)*** समय आ खर्च दूनू बेस लागत।

रमेश ओकर चिन्ता नहि। एकटा आर अनुरोध अछि, एकरा देखियौ सर ***(दोसर कागत बढ़बैत छथि।)***

वैज्ञानिक मुदा अहाँ सब बुतें कोना पार लागत ?

सुरेश हम फीजिक्स मे एम.एस-सी. छी आ हमर सहयोगी इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर छथि। ई तऽ नियतिक दुश्चक्र जे हम दूनू अपराध जगत मे आबि गेलहुँ। नहि तऽ कोन ठेकान आइ अहींक प्रयोगशाला मे सहायक भेल काज करैत रहितहुँ।

रमेश समय निकालि हम सब अहाँक टीम द्वारा कएल जा रहल वैज्ञानिक अनुसंधान आ आविष्कारक जानकारी सेहो लैत रहलहुँ। इलेक्ट्रॉनिक्स आ कम्प्यूटर सम्बन्धी लूरि बिसरी नहि ताहि लेल किछु किछु करैत रहलियैक ***(टेबुल दिस इंगित करैत छथि)***

वैज्ञानिक ठीक छैक, हम अहाँ सबहक अभियान मे मदति करबाक सक्क भरि कोशिश करब। आर किछु ?

सुरेश नहि, खाली अहाँ सँ फेर कोना सम्पर्क करी से बता दिअऽ।

वैज्ञानिक बेस, ई लिअऽ हमर विशेष कोड। ***(एकटा कागत पर किछु लीखि कए दैत छथि)*** एहि द्वारा ब्रह्मांडक कोनो जगह सँ स्मार्टफोन सँ एकरा डायल कऽ सकैत छिऐक मुदा ध्यान राखब ई अनका हाथ नहि पड़ैक कारण ई गुप्त कोड छिऐक, एहि पर फोन टैपिंग लागू नहि छैक। अहाँ दूनू हमरा फोटो लेबऽ दिअऽ, जे हम परिचय लेल अपना सिस्टम मे देबैक। परिचय नहि भेटला पर सिस्टम कॉल स्वीकारे नहि करत।

रमेश एहि वेशभूषा मे फोटो जुनि लेल जाओ सर। हम दूनू अपन परिचय आ फोटो कालि अपनेक प्रयोगशाला मे पठबा देब।

वैज्ञानिक ठीक छैक। फोटो एलाक बादे हम किछु काज आगू बढ़ा सकब। एतेक ध्यान राखू जे हमरा प्रयोगशाला मे एके बेर प्रवेश कऽ सकब आ तकर बाद बाहरी संसार सँ कोनो सम्पर्क नहि रहत। मोबाइल आदि हम रखबा लेब। काज शेष भेलाक बादे बहरा सकब। मंजूर अछि ?

दूनू समवेत एकदम मंजूर।

वैज्ञानिक दू सप्ताहक समय दिअऽ।

सुरेश बेस, आब चलू, अहाँ कें आपस पहुँचा दैत छी। ***(जाइत काल दूनू गोटे वैज्ञानिक कें पएर छूबि प्रणाम करैत अछि)।***

(वैज्ञानिक आगू आगू आ रमेश, सुरेश हुनकर पाछू पाछू मंच सँ प्रस्थान, प्रकाश बंद। नेपथ्य मे दू गोटेक स्वर मे घोषणा)

एक एखने खबरि आएल अछि जे वैज्ञानिक अनुपम आपस आबि गेलाह। ओ प्रेस वार्ता मे घोषित केलनि जे हुनकर अपहरणक घटना पुलिसक कल्पना छलैक। नेता सबहक हत्या सँ घबराएल पुलिस बिना किछु बुझने एहि तरहक प्रचार केलक। राति मे हुनका किछु अभिनव आइडिया आएल छलनि तकरे मंथन करबाक लेल ओ कने सबेरे टहलए चल गेल छलाह।

दू वैज्ञानिक अनुपमक अभिनव आइडिया पर कार्य करबा लेल दू सप्ताह बाद दूटा अंतरिक्ष वैज्ञानिक औथिन। ओ तीनू प्रायः दू तीन मास प्रयोगशालाक एकान्त मे रहि काज करताह। एहि अवधि मे हुनका संग कोनो तरहक सम्पर्क संभव नहि होएत।

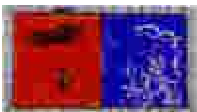
एक प्रयोगशालाक सुरक्षा बढ़ा देल गेलैक आ प्रशासनक सर्वोच्च स्तर पर एकर सूचना सेहो पठा देल गेलैक।

दू उड़ती खबरि इहो अछि जे दूनू बाहुबली आपराधिक जीवन छोड़ि देलनि। आब शहर मे शांति रहत, से आशा करू।

(अगिला अंकमे जारी)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

नन्द विलास राय

स्वाभिमान- बीहनि कथा

डॉ. पंकजक बेटाक बिआहक काल्हि बहुभोज छल। आइ भोरेसँ सर-कुटुम आ धी-स्वासीन सभ अपन-अपन गामक बाट पकड़लैन। कनियाँक संगे जे लोकनियाँ सभ आएल रहैथ ओहो सभ अपन-अपन फटफटियापर चढ़ि गाम जाइ गेला।

दिनक चारि बजे-बेरुका पहर। डॉ. पंकज अपन पत्नी- अलकासँ कहलखिन-

“कनी नीक कॉफी पिआउ। बड़ थकान बुझाइत अछि।”

कनियेँ कालक बाद अलका दू कप कॉफी नेने पति लग एली। एकटा कप पतिक हाथमे देली आ दोसर कप अपने हाथमे लेली। दुनू पति-पत्नी बैस कऽ कॉफी पीबए लगली। कॉफी पीबैत डॉ. पंकज बजला-

“सभ सर-कुटुम तँ एला मुदा वीणा दैया आ ओकर दुल्हा नै एला। कहू तँ हमरा बेटाक बिआह फेरसँ हएत..!”

तैपर पत्नी अलका कहलकैन-

“वीणा दैयाक बेटीक बिआहमे अहाँ आकि हमहीं गेल रहिऐ जे ओ सभ अबितए।”

डॉ. पंकज बजला-

“हमरा समय नै भेटल तँए नै गेलौं मुदा नौत पुराइ एगारह साए टका तँ पठाइये देने रहिऐ।”

तैपर पत्नी अलका कहलकैन-

“ओहो सभ अहाँक बेटाक बिआहमे बाइस साए टका पठा देलखुन हेन। की बुझै छिऐ ओ सभ गरीब अछि तँ दौड़ले औत। यौ सभकेँ अपन स्वाभिमान छइ।”

तैपर डॉ. पंकज किछु ने बजला, मुदा हुनका मनमे भेलैन जे भगिनीक बिआहमे नै गेलौं से हमरा सन नीक नै भेल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**जगदीश प्रसाद मण्डल**

दहिबरी (लघुकथा)

तीन-चारि घन्टासँ गाममे हरविर्ड़ो उठल छल मुदा अपने कोनो भनक नहि बुझि पेलौं। हरविर्ड़ो ई उठल छल जे ‘जसमन्त बाबा अब-तबमे छैथ!’तँए अन्तिम दर्शनक लेल सौंसे गाम गलो-गुल आ दौड़ो-बरहा लगि गेल छल। घटना तीन बजे बेरुका समैयक छी। भेल ई जे जसमन्त बाबाक पेटमे वायुक बढ़वाड़ि भऽ गेलैन जइसँ मन तेना औल-बौल करए लगलैन जे लोकक बीच मरैक डर सबहक मनमे पैस गेल। जसमन्त बाबाक देहक शक्ति सेहो जेना कमि गेलैन तहिना ठाढ़ भेलमे खसि पड़ला। एक तँ पेटक जनमारा गैस्टिकक प्रकोप,तैपर बेधड़क खसने देहमे तेना चोट लगि गेलैन जे चेतन शक्तिमे क्षीणता सेहो आबि गेलैन जइसँ एकाएकआँखि-मुँह दुनू बन्न भऽ गेलैन।

तीन रंगक अवाज गाममे उठि रहल छल। किछु गोरे जसमन्त बाबाकेँ मृत्यु घोषित करैत बजै छला जे ‘बाबा धोपचटेमे मरि गेला!’एकर पूरक विचार सेहो जोड़ा रहल छल जे ‘बाबा सन धर्मात्माकेँ अहिना मृत्यु होइए। मरैबेर सेवा-ले केकरो मुँहतक्की नहि केलैन!’आकिछु गोरे जसमन्त बाबाकेँ अब-तबमे रखि बजै छला जे ‘बाबा अब-तबमे छैथ, माने कखन छैथ आ कखन नहि छैथ तेकर कोनो ठेकान नहि!’ मुदा किछु गोरे अड़ि-अड़ि बजै छला जे ‘बाबा जीवित छैथ आ जीबे करता!’

अही तरहक विचारक बीच रखवारीवाली आ दीपवालीक बीच अपन-अपन विचारक चलैत कहा-कही सेहो शुरू भेल। रखवारीवाली बाजल- ''बाबाकअखन मरैबला उमेर थोड़े भेलैन अछि जे मरता। देहमे रोग भेने मनमे बेचैनी आबि गेल छैन।''

रखवारीवालीक बात सुनि दीपवाली बाजल- ''बाबाकेँ आब लोकक कोन बात जे भगवानो नहि बँचा सकतैन!''

ओना, मरै-जीबैक बात जेते रखवारीवाली बुझै छैथ तेते दीपवाली नहि बुझै छैथ। जइसँ अपन-अपन धरणा मरै-जीबैक मनमे बनियेँ गेल छैन। ने रखवारीवाली अपना आँखिये बाबाकेँ लगसँ देखने छेली आ ने दीपेवाली, मुदा लोकक मुँहक सुनल बातसँ दुनूक कान तँ भरियेगेल छेलैन जइसँ दुनूक मनमे अपन-अपन बिसवास सेहो बनि गेल छैन। जीवन-मृत्युक किरदानी देख रखवारीवालीक मनमे एहेन धारणा बनले छैन जे कुम्हारक बरतन जकाँ लोककाँच माटिक बनल अछि जे कनियोँ धक्का-धुक्की लगने फुटि जाइए! तैपर केतेको गोरेक मुहसँ सेहो सुनि चुकल छैली जे बाबा अब-तबमे छैथ। तहिना दीपवालीकेँ सेहो अपन विचारक धारणा मनमे बनल छैन। विचारक धारणा ई जे जहिना बच्चा जन्म लइए, धीरे-धीरे समैयक संग बढ़ैत-बढ़ैत बुढ़ होइए आ बुढ़सँ जखन झुनकुट बुढ़ होइए तखन पाकल कोनो अन्ने वा फले जकाँ झुना कऽ अपने खसि पड़ैए; से तँ अखन जसमन्त बाबा नहि भेल छैथ। जेकरा-जेकरा मुहेँ जसमन्त बाबाक समाचार दीपवाली सुनने छेली, ओ वएह सुनने छेली जे हवा-बसात लगने अहिना समैया रोग पकड़ैए आ समय पुरला पछाइत अपने छुटियो जाइए। ओना,जसमन्त बाबाक मरैक सम्भावना दीपवालीक मनसँ सोल्होअना मेटाएलो नहियेँ छेलैन, तखनमेटाएले जकाँ घँसा जरूर गेल छेलैन जइसँ रखवारीए-वाली जकाँदीपोवालीक मनमेअपन जीवित वाण छेलैन्हे।

ओना, रखवारियोवाली आ दीपोवालीकेँगामक लोकबुझिते छैन जेबिनु जड़ि-सिरक झगड़ाऊ मनुख छैथ। तँए हिनका दुनूक बीचकझगड़ाक फरिछौटमे तेसर अपन काज बरदा नहियेँ पड़ए चाहैए। मुदा आजुक माहौल दोसर रंग भेने, दुनू गोरेकबीच कहा-कही भेने अनेको लोक दुनूक बात सुनि जमो भेल आ फरिछबैले तैयार सेहो भेल। ओना, बिनु बजौले सभ छल, किए तँ सभ जसमन्त बाबाक दर्शन करए जा रहल अछि। तइ बीचमे दुनू गोरेक कहा-कहा, बीच सड़केपर भेने, फरिछौटक परिस्थिति बनि गेल। दीपवालीक बात सुनि रखवारीवाली बजली-

''भगवानोक ठीकेदारी अहींकेँ अछि..!''

बिना लगामक घोड़ा जकाँ दीपवाली हीनहीनाइत जवाब देलकैन-

''भगवान भगवान छैथ, लोकक कहाकहीमे ओ किए औता, लोक बड़ बेसी हएत तँ भक्त बनि सकैए, उपासक बनि सकैए, तैठाम जे ई भगवानक दोख लगबै छथिन से हिनका अपना-सन भेलैन?''

रखवारियोवाली बेलगामक घोड़ा जकाँ हीहीयाइत बाजल-

''अपना सन नइ भेल तँ की अहाँ सन भेल?''

अपना सन भेल कि अहाँ सन भेल, तेकर अर्थ दीपवालीकेँ दोसरे लगि गेलैन। किए तँ दीपवालीकेँ बुझल जे अण्डी तेलक दीपक इजोत आँखिकेँ कड़ुअबैए मुदा गोटक तेल वा मटिया तेलक इजोत ओहन प्रकाश दइए जइसँ अन्हार दुनियाँकेँ लोक प्रकाशित देखैए।

रखवारीवाली आ दीपवालीक बीचक जे गप-सप्पक क्रम छल ओ अपने अगरबत्ती जकाँ मसल्ला सठने मिझा गेल।

सात बजे साँझक समय। काल्हिये चैत सम्पन्न भेल आ आइ बैशाख चढ़ल, तँए सात बजे साँझ रहितोमाघक तेसर साँझ सन अन्हार नहि छल, छल पहिल ओहन साँझ जकाँ जे सूर्य तँ पाट लऽ लेने छला मुदा अकासमे लाली दिने जकाँ पसरल छल। बेरुका समैयक काजक बिसरजन करबाक समय देख अपनो खेतसँ दरबज्जापर एबे कएल छेलौं कि कानमे भनक लागल। मुदा तैयो अपन ऐगला प्रक्रियाक भाँजक तैयारीमे जुटले रहलौं। माने एक उखड़ाहा काजक बिसरजन आ दोसर काजक बीचक जे समय होइए तइसँ प्रवेश करैले जे लोक अपन तैयारी करैए, आ तैसंग दिनक बिसरजन आ रातिक आगमन बीच जे अपन नित्य क्रिया अछि, तइमे लागि गेलौं। कलपर (चापाकल) मुँह-हाथ धोइते रही कि पत्नी लगमे आबि बजली-

''जसमन्त बाबानहि बँचता।''

पत्नीक बात सुनि मन एकाएक हहरए लगल। हहरए ई लगल जे एकाएक जसमन्त बाबाकेँ की भऽ गेलैन जे पत्नी एहेन बात बजली। मुदा लगले फेर अपने मन कहलक जे पहिने जान तखन ने जहान। काजसँ आएले रही तँए देहोक थकान आ मनोक थकान भइये गेल छल। जइसँ ऐगला काज देख, सँझुका उखड़ाहाक काज देख मन असकताइते छल। तैबीच पत्नीक मुँहक समाचार-'जसमन्त बाबा आब नहि बँचता', आरोमनकेँ मथएलगल। ओना, ऐगला काज पकड़ैक जिज्ञासा मनमे ओहिना उत्सुका रहल छल जे जीवन तँ कर्मे काजे ले मनुखकेँ प्राप्त भेल अछि। जे (कर्म) जिनगीक संग चलैत-चलैत जीवन मुक्त करैए, तँए कर्म जखने जीवनसँ छुटल कि मृत्यु भेल। माने मुक्तिक अवरोध भेल। जीवन मुक्त तँ तखने ने भेटैए जखन जीवन भरिक काजक अन्तिम सीमाक काज समाप्त होइए...। मनमे नव-नव विचार जगने मनक थकान तँ लगले मेटा गेल, मुदा देहक थकान कनी-मनी कमि जरूर रहल छल मुदा सोल्होअना मेटाएल नहि छल। जेकरा मेटाएब जरूरी छेलए-हे। किए तँ जखने पैछला काजक थकान देहकेँ पकड़ने रहत तखने

ऐगला काज करैक ओ उत्साह नहियेँ औत, जइ उत्साहक जरूरत आगूक काज लेल होइत अछि। काजोक अपन-अपन उत्साह होइछै किने। जे कियो उत्साहित भऽ अपन काज करै छैथ हुनका काजक सफलताक जेते आशा रहै छैन तेते अनउत्साहित लोकक काजक नहियेँ होइ छैन। थोड़-थाड़ जे देहक थकान मनसँ छुटि देहकेँ पकड़ने छल, ओकरा मेटबैक खियालसँ पत्नीकेँ कहलयैन- ''जसमन्त बाबा ऐठाम जाएब, तइ बीचमे अहाँ जलखै-चाहक ओरियान करू।''

पत्नी आँगन दिस बढ़ली आ अपने हाँइ-हाँइ मुहोँ-कान धोइत रही आ मने-मन विचारितो रही जे जसमन्त बाबाक समाचार तँ अपना परिवारमे ने सुनलौं, जे सतो भऽ सकैए आ फुसियो भइये सकैए। ओना, कोनो उड़न्ती समाचार ने सोल्होअना सत होइए आ ने सोल्होअना असत्ते होइए। ओइमे किछु-ने-किछु कमी-बेसी होइते अछि। मुदा ई तँ भेल शतप्रतिशत् विचार। मुदा बीचमे, माने एक प्रतिशतसँ लऽ कऽ निनानबे प्रतिशत तकक विचार दुनूक जोडुआ चलिते अछि। माने ई जे कोनो विचार बात वा समाचार निनानबे प्रतिशत सत् रहल आ एक प्रतिशत फुसि रहल। तहिना कोनो निनानबे प्रतिशत फुसि रहल आ एक प्रतिशत सत् रहल। ओना, तहूमे बुझब कठिन नहि अछि। किए तँ जेकर मात्रा बेसी रहल ओइ अनुकूल लोक अपन विचार बना लइ छैथ। मुदा असल झमेल ओइठाम शुरू होइए जैठाम कम मात्राक दूरी रहैए, माने कोनो एकावन प्रतिशत रहल आ कोनो उनचास प्रतिशत। कहलो जाइए जे लंकामे जे बड़ छोट ओ उनचास हाथ..! भाय, गिनतीमे एक-सँ-उनचास सीढ़ी ऊपर भेल आ भेल सभसँ छोट, से केना भेल? जिनगीक कियो निनानबे सीढ़ी चढ़ि गेला, एक सीढ़ी चढ़ैमे माने शत-प्रतिशत जीवन धारण करैमे जँ कोनो कारणे नहि चढ़ि सकला, तँ हुनका संग की न्याय हेबा चाही..? मुदा लगले मन फुटि बाजल-

''परीछाक परिणाम सेहो दू-दिसिया होइते अछि, कियो निच्चासँ प्रथम होइए तँ कियो ऊपरसँ। एहनो तँ सम्भव होइते अछि।''

मनक थकान हेट भेने आ देहक थकान मेटेने मन सोल्होअना फरहर भऽ गेल। तैबीच पत्नी जलखै नेने दरबज्जापर पहुँच चुकल छेली। अपनौं लोटामे पानि लेलौं आ दरबज्जा दिस बढ़लौं। लग पहुँचते पत्नी जलखै चौकीपर रखि आँगन दिस बढ़ैत बजली-

''चाहो लगिचाएले अछि।''

पत्नीक सूत्रवद्ध काज देख अपनो मन सुतिया लगल। सुतिया ई लगल जे एक तँ गामक श्रेष्ठजन जसमन्त बाबा छैथ, हुनकर समाचार छिऐन, तैठाम अपन की दायित्व बनैए? झलफलाएलमे ने विचार झलफलाइत अबैए, मुदा अकलवेरा समयमे से तँ नहि होइए। आँखिक सोझमे जसमन्त बाबा छैथ, तखन अपने किए विचारैमे देरी लगैत। सएह भेल। जलखै नीक जकाँ सठलो नइ छल, पत्नी चाह अननौं ने छेलीकितइ बिच्चेमे मन मानि गेल जे अपन पत्नीक मुहेँ अपना घरमे जसमन्त बाबाक सम्बन्धमे सुनलौं, हुनको तँ परिवार

छैन्हे, तँए उचित बनैए जे गामक लोकक बातक फेड़मे नहि पड़ि हुनके ऐठाम जा बात बुझिऐ। देरीए सही मुदा ठौरपर तँ पहुँचब।

पहिल साँझक प्रकाश समाप्त भऽदोसर साँझक अन्हार पसैर चुकल छल। घर-घर दीप-बाती जरियो रहल छल आ जरौलो जा रहल छल। चाह पीब पान खा जसमन्त बाबा ऐठाम विदा भेलौं। रास्तामे केते गोरे टोकबो केलैन जे अन्हारमे केतए जाइ छी, मुदा सभकेँ एक्के उत्तर दैत- लगले अबै छी, कहैत रास्तामे केतौ ने रूकलौं। जसमन्त बाबाक दरबज्जापर जाइसँ पहिने जसमन्त बाबाक ममियौत भातीज पहुँच चुकल छलैन। भाय, समृद्ध परिवारमे समृद्धताक जे-जे कारण अछिओइमे अति आवश्यक जे अछि, पहिने ओकर भरपाइक बेवस्था हेबा चाही किने...।

जसमन्त बाबाक ममियौत भातीज किसानी जिनगीसँ सभ दिन जुड़ल रहला तँए कृषि सम्बन्धित जे आवश्यक काज अछि तेकरा सम्हारैत ममियौत भातीज अपन परिवारक भार पत्नीकेँ सुमझा अपने जसमन्त बाबा-ऐठाम आएल छला।परिवारक अधिकांश, खासकऽ पुरुख वर्गबाबाक संग लहेरियासराय गेल रहथिन। हमरा देखतेसुबुधनाथ बजला-“आउ-आउ, भाय!”

ओना, सुबुधनाथसँ एक-दू बेर भेँट भेल छल मुदा गप-सप्प नहि भेल छल, तँए चेहरासँ चिन्है छेलिऐन मुदा गप-सप्प नहि भेने अनभुआर तँ रहबे करैथ। सुबुधनाथक बात सुनि मन परिवारक बेवहारपर पहुँच गेल। यएह ने परिवारक जीवित संस्कृति भेल जे दोस्त होथि कि दुश्मन, शुभचिन्तक होथि कि अशुभचिन्तक, जँ दरबज्जापर पहुँच गेला तँ हुनका उम्रानुकूल अभिवादन करैत ऐगला गप-सप्पक मुँह आदरपूर्वक बना दिऐन। विचारभेद, काजभेद अपन विचार-बीच वा काजक बीच अछि,तइलेअनोन-बिसनोन हएब नीक थोड़े हएत। ओना, सुबुधनाथक अभिवादन सुनि मनमे दू रंगक विचार उठल। पहिल उठल जे सुबुधनाथक परिचय नीक जकाँ बुझि ली, आ दोसर उठल जे जइ काजे आएल छीपहिने से बुझि ली। असमंजसमे पड़ल मने बजलौं-

“जसमन्त बाबाक की समाचार छैन?”

सुबुधनाथ बजला-

“एक डेढ़ घन्टा हमरो एना भेल अछि, तइसँ पहिनहि चरिचकिया गाड़ीसँ समांग सभ लहेरियासराय लऽ गेलैन, तँए आँखिक देखल तँ कोनो समाचार नहि अछि मुदा अबिते जे सुनलौं से कहि सकै छी।”

सुबुधनाथक बात सुनि मनकेँ मनबए लगलौं जे अखन तँ दूटा मुख्य आधार भेटिये रहल अछि। पहिल, अपन परिवारिक सम्बन्धसँ सुबुधनाथ भातीज छथिन, दोसर, जखन हुनका दरबज्जापर बैस गप-सप्प कऽ रहलौं अछितखन सत् छोड़ि झूठ केना हएत। बजलौं-

''हँहँ, अहूँ तँ आने गामसँ आएल छी, तँए जँ घन्टा-दू-घन्टा देरियोसँ एलौं तँ ओ समैयेपर आएब भेल। तइ संग परिवारक लोक भेने परिवारेजन सभसँ ने जे सुनलौं सएह कहब।''

सुबुधनाथ बजला-

''दुनू भाँइयो आ काकियो संगे गेल छैथ, मुदा दुनू पुतोहुओ आ धियो-पुता सभ अछिए। हुनके सभसँ जे सुनलौं से कहै छी।''

परिवारक बात सुनि मन मानि गेल जे परिवारक बात छी, तँए जे हएत से साँचे हएत। भाय, ऐठाम ई नइ बुझब जे परिवारक माने पत्नी आ पत्नियेँक आदेश भेल परिवारक आदेश आ वृद्धजन वा श्रेष्ठजनक कान तक भलेँ ओ विचार पहुँचए वा नहि पहुँचए। ऐठाम परिवारक माने बुझब जे जे परिवारक जे धड़गत धारपकैड़ चलैएओकरा समयानुकूल बनबैत सम्मिलत धार बना चलब...। बजलौं-

''हँ, हँ, अहूँ सएह ने कहि सकै छी। जसमन्त बाबाक शरीरमे की भेलैन से आन थोड़े सोल्होअना बुझि सकैए। ओ तँ अपनेटा बुझि सकै छैथ।''

सुबुधनाथ बजला-

''अखन करीब आठ बजैत हएत। अढ़ाइ-तीन बजे बेरुपहर पेटमे दर्दक प्रकोप भेलैन से तेते उग्र भऽ गेलैन जे वेहोश भऽ खसि पड़ला।''

वायुक प्रकोपसँ जसमन्त बाबा अचेत भेला, ई कोनो बड़ भारी रोग नहि भेल। रोगक थाह पेबिते मन थेहगर भेल। बजलौं-

''जखनसँ सभकियो लहेरियासराय गेला तइ बीचक तँ कोनो समाचार नइ ने अछि।''

सुबुधनाथ बजला- ''नहि।''

'नहि'सुनिते बजलौं-

''अखन जाए दिअ। जँ गर भेटत तँ अखने हमहूँ जा कऽ भेँट करबैन।''

उठि कऽ विदा भेलौं। चैतक रान्हल लोक बाइस-तेबाइस बना बैशाखमे खेबे करै छैथ, भरिसक सहए ने असैर केलकैन..? मुदा लगले दोसर विचार उठि गेल जे खाइ-पीबैमे जसमन्त बाबा एकजुत्ती लोक,अपन मनोनुकूलचलैबला लोक छैथ, तखन खाइ-पीबैमे कोनो गड़बड़ भेल हेतैन से सम्भव नहि अछि, तखन की भेलैन? मुदा रोगक तँ सोल्होअना जानकार रोगिये भऽ सकै छैथ। जेना-जेना डेग घरमुहाँ बढ़ि रहल छल तेना-तेना मनमे अन्हार सेहो पसरल जा रहल छल। अपनो उमर आब ओहन नइ रहल जे अमावसिया सनक अन्हार रातिमे भरि-भरि राति ओहन सड़कपर पैडिलबला साइकिलबिना इजोतमे चलबै छेलौं, से आब थोड़े रहल। आब कि ट्रेण्ड ड्राइवरक ओ महत् रहल, आब तँ अनट्रेण्ड पाछूसँ धक्का मारि ट्रेडक दोख लगा

ISSN 2229-547X VIDEHA

अपनाकेँ ट्रेण्ड बनबैक ट्रेण्ड बनियेँ गेल अछि। मुदा डरे जँ रास्ता चलबे छोड़ि देब तखन तँ घरेमे दिन-राति घुरियाएल रहब..! किछु फुरिये ने रहल छल जे की करी वा की नहि करी। रातिक दस बाजि गेल। रंग-बिरंगक विचार मनमे उठिये रहल छल। कखनो-कखनो ईहो उठि जाइ छल जे जँ जसमन्त बाबा मरि गेला तँ अन्तिम जीवित दर्शन नहियेँ भऽ पौत। कखनो ईहो हुअए जे एते रातिमे लहेरियासराय विदा हएब आ रास्तामे किछु अपने भऽ गेल तखन की हएत? असमंजसमे पड़ल मने विचार केलौं जे घन्टा-डेढ़-घन्टाक रास्ता लहेरियासराय अछि, तैबीच जे जेबो करब आ ईहो भाँज नहि बुझल अछि जे प्राइवेटमे केतौ छैथ आकि सरकारी अस्पतालमे छैथ। से नहि तँ साढ़े तीन बजे जे पहिल बस पटना-ले गामसँ खुजैए, तेकरा पकैड़ चलि जाएब। साढ़े चारि-पाँच बजे दरभंगा पहुँचब। दिनक समय रहत कोनो-ने-कोनो भाँज लगिये जाएत।

पाँच बजे भोरमे दरभंगा बस स्टेण्डसँ टेम्पू पकैड़ लहेरियासराय विदा भेलौं। संजोग बनल, जसमन्त बाबाक छोट बेटा- देवकान्त चौकेपर भेँट भऽ गेला। पुछलयैन-

‘‘बाबाक की समाचार छैन?’’

देवकान्त बजला-

‘‘पेटमे गैसक प्रकोप छेलैन। अबिते डॉक्टर साहैब प्रतिकार केलैन। थोड़बे कालक पछाइत मन हल्लुक भऽ गेलैन। अखन नीक छैथ। आइये घुमियो जाएब।’’

देवकान्तक बात सुनि मन मानि गेल जे एलहा साफल भेल। देवकान्तक संगे गेलौं। जसमन्त बाबाकेँ देखते गोड़ लगलयैन। बैसलौं। तइ बीच देवकान्तचाहो दोकानसँ अनलैन। दुनू गोरे चाहो पीबए लगलौं आ गपो-सप्प करए लगलौं। कहलयैन-

‘‘बाबा!अहाँ तँ संयमित लोक छी, तखन एना..?’’

जसमन्त बाबाक मन सोल्होअना शान्त रहैन। बजला-

‘‘बौआसुरेश, अपने मन धोखा देलक।’’

‘अपने मन धोखा देलक’ सुनि अचम्भित भऽ गेलौं जे ई की बाबा कहलैन..! शंका उठल। शंका ई उठल जे भरिसक जसमन्त बाबाक रोग अखनो ओहिना जीवित छैन। मुदा खनहन मन देख ईहो शंका हुअए जे जँ मन नीक नइ रहितैन तँ एते असथिर केना भेल रहितैथ।कछमछ-कछमछ करबे करितैथ। नीक हएत जे गप-सप्पकेँ आगू बढ़ाबी, अपने सभ भाँज लगि जाएत। पुछलयैन- ‘‘से की बाबा?’’

जसमन्त बाबा बजला-

‘‘बुझले छह जे परसुका रान्हल, माने चैतक रान्हलकाल्हियो लोक खेलक आ केते गोरे आइयो बैशाखमे खाएत।’’

ISSN 2229-547X VIDEHA

बजलौं-

"हँ, से तँ खेबे करत!"

जसमन्त बाबा बजला-

"अही बीचमे ने मन धोखा देलक।"

'मन धोखा देलक'जसमन्त बाबाक मुहसँ बेर-बेर निकलै छेलैन, मुदा मन की धोखा देलकैन से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। तँए मन औना रहल छलजे जसमन्त बाबा बुझि गेला। बुझिते मुस्कुराइत बजला-

"बौआ सुरेश!अरबा चाउरक भात, रोड़गरसँ उलौल राहरिक दालि आ दही दऽ कऽ पुतोहु बरी बनौने छेली। खाइले जखन बैसलौं तँ दहिवरी देख मन अतीतमे वौआ गेल।"

बजलौं-

"की अतीतमे मन वौआ गेल?"

जसमन्त बाबा बजला-

"दहिवरी खेबामे तेतेक स्वादिष्ट छल जे अपन जीवनक बीतल सुआद सभ मोन पड़ि गेल।"

पुछलयैन-

"की जीवनक बीतल सुआद सभ मोन पड़ि गेल?"

जसमन्त बाबा बजला-

"पहिल बेर सासुरमे दुरागमन दिन एहेन खेने रही, दोसर बेर समधियौरमे खेने रही आ तेसर बेर संगीक संग संगी ऐठाम खेने रही।तही सभमे मन वौआ लगल। हाथकेँ मुँह देखले रहै, रसे-रसे तेते खुआ गेल जे बेसम्हार भऽ गेल।"

किछु भाँजपर विचार चढ़िये रहल छल। बजलौं-

"खेबे एहेन छी जे लोक सभ दिन खाइए, तखन केना..?"

अपन विचार खोलैत जसमन्त बाबा बजला-

"खेबेकाल मन वौआ अपन सासुरो, समधियौरो आ दोसोक ऐठाम पहुँच गेल तँए बेठेकान भोजन भऽ गेल। घन्टा एके-डेढ़ेक पछाइत पेट तनए लगल। चीत गरे सुति पेटकेँ केतबो अराम देलिऐ, मुदा ज्वालामुखी जकाँतरसँ गैसक बुमकला पेटमे छुटए लगल। उठि कऽ ठाढ़ भेलौं कि खसि पड़लौं।"

बजलौं-

ISSN 2229-547X VIDEHA

''अखन मन केहेन अछि?''

जसमन्त बाबा बजला-

''आब सोल्होअना बुलन्द छी। डॉक्टर सहाएबक हिसाब-बारी देवकान्त कऽ लइए, पछाइत सभ संगे चलब।''

बजलौं-

''बड़बढ़ियाँ।''

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**जगदीशप्रसाद मण्डल**

आमक गाछी (धारावाहिक उपन्यास- पहिल खेप)

1.

बीस जून। माइक संग दुनू बहिन जगमोही प्रेमनगर पहुँचल। ओना, बीस जून गोटे साल शुरू जेठमे पड़ैए तँ गोटे साल उतार जेठमे, तैसंग कोनो-कोनो साल अखाढ़क शुरूमे सेहो पड़िते अछिमुदा से नहि, ऐ साल 'बीस जून' उतार जेठमे पड़ल। सप्ताहसँ बेसी बैरसाइत[i]केँ सेहो भइये गेल छल...।

दस कट्ठाक जीबेन्द्रक गाछी-कलममे तीनटा आमक गाछ भरखैर पकैत, बॉॅकी सात-गाछमे गोटि-पङ्गरा आ शेषमे कोनो-कोनोमे बोनाइत तँ कोनो-कोनोमे अखन खिच्चे सुआदक रंग पकड़ने। ओना, प्रेमनगरक किसान आन गामक किसानसँ कनी बुधिगरो आ श्रमगरो[ii] नइ छैथ सेहो केना नइ कहल जाए। प्रेमनगरक चारूकातक जे गाम सभ अछि, जेना- रामपुर, कृष्णपुर, महमदपुर आ रूद्रपुरइत्यादिगामक किसान सभ जे कलम-गाछी लगबै छैथ, तइमे कलमी आम हुअ कि सरही, जामुन हुअ कि बैर, बेल हुअ कि बरहर, शीशो हुअ कि गमहाइर, सभ कियो सहरगंजा रोपै छैथ, मुदा प्रेमनगरक किसान सभ जे गाछी-कलम लगौने छैथ आकि लगबै छैथ ओ एकदम कतारबन्दी रूपमे। कतारबन्दीकमाने ई जे कलमी आमक कलममे जहिना कलमी आम छोड़िदोसर ने कोनो आमे गाछ आ ने बेखे-बुनियादिक। बेख-बुनायादि भेल लकड़ी उपयोगी वृक्ष। ओना, कलमियो आम सइयो रंगक अपन गुण-धर्मबला अछिए, तँए एक गुणक मिलान आ एक धर्मक मिलान ओहूमे बेसी नीक होइत अछि। किएक तँ ओकर सभ किछु एक रूपे चलैए आ से नइ रहने जहिना बहुधर्मीकेँ एकठाम भेने होइएजेकेतौ नहाइकाल झगड़ा तँ केतौ खाइकाल झगड़ा, केतौ चाहकझगड़ा तँ केतौ अनचाहक झगड़ा होइतो अछि आ अरबेधलो रहिते अछि। अरबेधब भेल- आगियो आ खढ़-पातसँ लऽ कऽ ठहुरी-चेरा धरिक सुखाएल जरनोकेँ

एकठाम राखि देब, भलेँ किए ने कनी-कनी हटाइये कऽ रखलौं आ पूरबा-पछबा हवामे ऊड़ि-पुरि एकठाम भऽ सुनैगकऽ पजैर जाइते अछि। खाएर.., प्रेमनगरक किसान श्रेष्ठ किसान छथियो आ मानलो जाइते छैथ। इलाकामे जखन कखनो आमक गाछी-कलम वा बेख-बुनियादिक चर्च केतौहोइए तँ प्रेमनगरक चर्च जहिना होइए तहिना रामपुरोक चर्च होइतेअछि मुदा से प्रेमनगरक विपरीत दिशामे। विपरीत दिशा भेल-जहिना भगवान रामक नाम शुभ रहितो गन्दा-सँ-गन्दा वस्तु देख 'राम-राम' कहि गबाही रखि दइ छिऐन, जहिना मृत्युक बरियातीमे 'राम-नाम सत् छी' कहैत असमसानक पार लगबै छी तहिना ने जुआन-जहानक बरियातीमे रसगुल्ला खाइत-खाइत राम-धाम सेहो पार लगबैबते छी। खाएर जे छी से छी, सभ नीके छी आ सभ अधले छीमुदा सभ कियोतँ छीहे किने।

पनरह जूनकेँ कौलेजमे गरमी छुट्टी भेल, ओना किछु गोरे एकरा 'अमैया छुट्टी' आ किछु गोरे 'ग्रीष्मावकाश' सेहो कहिते छैथ मुदा जाए दियौ ऐ बातकेँ, बात तँ बाते छी, अपना मनक मौजी बहुकेँ कहलौं भौजीआ लोको लग अपन निर्लजताक नाच नचैत रहलौं। भाय, पत्नी पत्नी छैथ किने, ओ तँ जहिना जीवन संगिनीभेली, अर्द्धांगिनी भेलीतहिनाप्रेमिका सेहो भेबे केली, मुदा तैठाम जँ कियो दिन-राति टी.भी.मे खेले वा सिनेमे देखती तँ देखौथ आ अपन कर्मक समय विधाताक हाथमे दऽ दौथ..!

गरमी छुट्टी होइते धीरेन्द्र सोझे गाम आबि गेल। बीस जूनकेँ जगमोही सेहो आम खाइक बहन्ने अपन मातृक पहुँचल।

धीरेन्द्र आ जगमोही पटनेमे रहि पटने कौलेजमे बी.ए. फाइनल इयरमे पढ़ितो अछि आ एक्के विषय दुनूक रहने संग-संग किलासोमे आ ट्यूटोरियलमे सेहो एक-दोसरकेँ देखतो अछिए। मुदा जहिना जेनरल क्लासमे तहिना ट्यूटोरियल क्लासमे सेहो दुनूक बैइसैक ब्रेंच अलग-अगल अछिए। जइसँ लगक गपो-सप्प कहियो किए हएत। ओना, अखन तक ने धीरेन्द्र अपन अंगीत जगमोहीकेँ बुझैत आ ने जगमोहीएधीरेन्द्रकेँ बुझैए। तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे ने कियो नामक टाइटिलसँ केकरो परेख सकैए आ ने जाति-पाँजिसँ, केकरा एते छुट्टी छै जे अनेरेक रमझौआमे लागल रहत। नव पीढ़ीक लोक खेलाड़ी आ सिनेमा-कलाकार सबहक नामधुन करत आकि अपन बाप-पुरुखाक..! कोन मतलब ओकरा छै जे अपन बाप-पुरुखाक वंश आ जीवनकेँबिटिया अपन वंशक इतिहासक संग देश-दुनियाँक इतिहासकेँ बुझत। मुदा ईहो तँ बात सबहक सोझेमे अछि जे जे जेते जिनगीक रस पीबए चाहैए ओ ओते बेचैन सेहो भेले जाइए।

ओना, समाजशास्त्र विषयक जेनरल क्लासमे पचाससँ ऊपर विद्यार्थी अछि, मुदा शनियेँ-शनि जे ट्यूटोरियल क्लास चलैए ओ उनटा पाठक, तँए ओ क्लास मात्र पान-सातटा विद्यार्थी करैए बाँकी अधिकांश मैटिनी शो सिनेमा देखैए वा किछु गोरे घुमि-फिर शहरे-बजार देखैए। मैटिनी शो सिनेमा देखैक कारण टिकटक कन्शेसन सेहो अछिए। उनटा पाठ जे ट्यूटोरियल क्लासमे होइए ओ ई होइए जे आन दिन माने

सोमसँ शुक्र धरि शिक्षक जे पढ़बै छैथ ओकर उत्तर ओइ क्लासमे विद्यार्थीसँ लेल जाइए। आइक परिवेशमे माने शिक्षण संस्थानक परिवेशमे,ट्यूटोरियल क्लासक नामो भरिसक छात्र सभ नइ बुझैत हएत जखन कौलेजमे पढ़ाइये नहि भऽ रहल अछि तखन ओकर उत्तर की भेटत।

ट्यूटोरियल क्लासक पान-सातटा विद्यार्थीमे जहिना धीरेन्द्रक तहिना जगमोहीक उपस्थिति अनिवार्य रूपसँ रहैए। बाँकी पान-सातक बीच नव-पुरान होइत रहैए। सभ शिक्षकक अलग-अलग सप्ताहमे ट्यूटोरियल क्लास होइ छैन, तँए ऐ बातकेँ शिक्षक सभ नहि बुझिपबै छैथ। ओना, छात्रो सभमे किछु गोरेक सम्बन्ध शिक्षको सभ संग छैन्हे, तँए अपन-अपन ट्यूटोरियलमे अपन-अपन परिचित छात्र रहिते छैन जइसँ नव-पुरान हएब सोभाविके अछि। जहिना धीरेन्द्र अपनाकेँ ओते सक्कत बना क्लास पहुँचै छल जे जे किछु शिक्षक पुछतातइमे जे पढ़ौने छैथ ओकर अतिरिक्त अपनो विचार राखब, तहिना जगमोही सेहो अपन तैयारीक संग क्लास पहुँचै छल। ओना, ट्यूटोरियल क्लासमे कम विद्यार्थी रहने आगूक जे दुनू ब्रेंच बैसैक अछि, तहीपर दहिना भागक ब्रेंचपर धीरेन्द्र बैसैत आ बामा भागक ब्रेंचपर जगमोही। समैयक मिलानी दुनूकेँ रस्तोक मिलानी करबैत आ ट्यूटोरियल क्लासक सेहो। माने भेल एक गाड़ी पकड़ैले जहिना दूटा यात्री अपन निर्धारित समयपर घरसँविदाहोइ छैथ जइसँ रस्तामे गप-सप्प भलेँ नहियोँ होइत हौनु मुदा मुँह-मिलानी तँ होइते छैन। कहैकालमे भलेँ सभ कहि दइ छिऐ जे शरीरक पाँच इन्द्रीमे जहिना मुँह भेल, आँखि भेल तहिना कानो भेल। मुदा की तीनूक जीवन क्रिया एक्केरंग अछि? मुँहमे मुंगबाक सुआदसँ लऽ कऽ तेतैरक खट-मीठ आ नीमक तीतपन तकक रस भेटते अछि, जखन कि आँखि सोझे देखैबला भेल। नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला देख-देख आँखि कखनो कानि-कानि नोरो चुबबैए तँ कखनो मिरचाइक कड़ुपनसँ पानियोँ तँ बहैबते अछि। मुदा कान तँ काने छी, खा-पीब कऽ रस चुसैक कोन बात जे आँखि जकाँ ने देखिये सकैए आ ने मुँह जकाँ सुआदे पाबि सकैए,लऽ दऽ कऽ हवामे उड़ल नीक-बेजाएकेँ खालीसुनिटा सकैए। जइसँ, जहिना बहिरा अपने ताले नचैए तहिना नाच करत। मुदा ऐ सभसँ कोन मतलब धीरेन्द्रेकेँ आकि जगमोहीए-केँ छइ। दुनू गोरे कौलेजमे पढ़ैए, कौलेजिया संगी कहियौ आकि क्लासक संगी, एक-दोसरक छी। अट्ठारह बर्खक उमेर सेहो दुनू टपिये गेल अछि, किए ने खुलि कऽ खेलाएत। मुदा से नहि, दुनू अपन-अपन सीमाक बीच अनुबन्ध अछि। ओना, दुनूक प्रश्नोत्तर दुनू तँ सुनिते अछि,तैसंग शिक्षक सेहो ट्यूटोरियल क्लासमे सुनै छथिन जइसँ एक-दोसरक अध्ययनक गहराइ सेहो एक-दोसर बुझिये रहल अछि। ओना, क्लासमे शिक्षक निर्धारित पाठ्यक्रममे जे पोथी निर्धारित अछि ओकरे आधार बना पढ़बै छैथ मुदा शिक्षको तँ शिक्षके ने भेला। कियो जेतबो सिलेबशमे अछि तेतबो ने पढ़बै छैथ आ कियो कियो एहनो तँ छथिए जे ओरिकासँ घी परसै छैथ। 'ओरिकासँ घी परसब'क माने भेल सिलेबशसँ अतिरिक्तो पढ़ाएब, हुनका कोन मतलब छैन जे दालिक सुआद रहल कि मेटाएल। ओ तँ सिलेबशक कोन बात जे दुनियाँक सिलेबश आगूमे रखिये दइ छैथ। शिक्षकेक अनुकरण ने

शिक्षार्थी करत। ओहो ने वएह बुझत। भलेँ किए ने ओ शिक्षककपठनकेँ निर्णित करए जे जहिना शिक्षक जुग-स्रष्टा छैथ तहिना जुग-द्रष्टो तँ होइते छैथ। तँएशिक्षार्थियोकेँ तहिना ने जिनगीक बाट भेटत।

ओना, शिक्षको अपन सिखपनसँ सीखिये नेने छैथ जे ट्यूटोरियल क्लासमे अनेरे जे माथक बोझ बढ़ाएब (माथक बोझ बढ़ाएब भेल- एक-एक छात्रसँ प्रश्न पुछब)तइसँ नीक जे पैंतालीस मिनटक घन्टीमे दस मिनट रीब-रीबेमे गेलबँचल पैंतीस मिनट, से नहि तँ एक-एक छात्र-छात्रासँ प्रश्न पुछि समय ससारि लेब। जे लाभ धीरेन्द्रोकेँ आ जगमोहीकेँ सेहो भेटिये जाए। जहिना कहल जाइए जे करत-करत अभ्याससँ जड़-मति सेहो सुजान भइये जाइए। मनुख तँ सहजे मनुख छी, अन्न-खाइबला आ पानि पीबैबला। घोड़ा घास खाइए तखन तँ एते हिहिआइए, मनुख तँ सहजे मनुख छी जेकर सभ जीव-जन्तुसँ अतिरिक्त गुण भेल हँसब।

ट्यूटोरियल क्लासक शिक्षक भेला प्रश्नकर्त्ता, धीरेन्द्र आ जगमोही भेल उत्तर देनिहार। बाँकी सभ शिक्षकोक भाषण आ विद्यार्थियोक 'उत्तर-भाषण' सुननिहार भेल। तँए खुलल वा झाँपल भेल निर्णयकर्त्ता। किए अनेरे कोनो पक्षमे ठाढ़ हएत। किए ओ प्रश्नकर्त्ताक प्रश्न अङ्गेजत आ किए ओकर जवाबदेह बनत। सभ ने सुविधानुसार जीबए चाहैए। जखन अवसर भेटल तखन वएह सभ किए छोड़ि देत। अपन उत्तरमे जहिना शिक्षकक भाषण सिलेबशकेँ अतिक्रमण करै छेलैन तहिना धीरेन्द्रो आ जगमोहीओ उत्तर दइते छल। तेकरा शिक्षक लोकैन, ट्यूटोरियल क्लासक विषय कहि परीक्षामे लिखैसँ परहेज करैक सलाह दुनूकेँ दैत क्लास अन्त करै छला।

दुनियाँमे प्रेमोक अपन रंग-रूप छइ। सात अरब लोकमे जगमोहीक जेहेन रूप धीरेन्द्र देख रहल छल ओहन रूप धीरेन्द्रक जगमोही नहि देख पेब रहल छल। दुनूक अपन-अपन नजरियो आ दृष्टिकोणो छेलैहे। मुदा ट्यूटोरियल क्लासक जे सिख (अध्ययन)छल ओ दुनूकेँ जरूर नव सिखपन (अध्ययनशीलता) दिस बढ़ौलक, जइसँ एक-दोसरक बीच, भिन्न दृष्टि रहितो आकर्षितकरबे करै छल।

ओना, आकर्षणोक अपन गुण-धर्म अछि। कोनो आकर्षण ओहन होइए जइमे विकर्षणोसमान रूपमे संगे चलैए आ कोनो एहनो आकर्षण अछिए जइमे विकर्षणक मात्रा कम रहने हेराएल-हेराएल सन रहैए। जइसँ आकर्षणे-आकर्षण बुझि पड़ैए। तहिना विकर्षणोक तँ छइहे जे बेसी मात्रामे भेने आकर्षणकेँ दाबि दइए। जखन लोहा सन निर्जीव धातुक चुम्बकीय आकर्षण ओहन होइए जे अपना सन-सन भतलोहोकेँ अपना संगमेरंगि अपन गुण-धर्मसँ भरिये दइए। भलेँ ओ ओतबेकालक किए ने होउजेतेकाल चुमकलोहमे सटि अपनो चुम्बकत्वमे किए ने बदैल गेल हुअए। खाएर जेतए जे होइ से तेतए हुअए। अजगर सन साँपो जखन अपन नजैरककनखी आ मुँहक सूसकारीसँ आन साँपकेँ लगमे आनि भक्षे किए ने कऽ लैत हुअए मुदा तइसँ कोन मतलब धीरेन्द्रकेँ आकि जगमोहीएकेँ अछि। अखन तँ जिनगीक एको टपान दुनूमे सँ एको ने टपि सकल अछि, तखन जिनगीक टपानक बाते केना बुझत।

ISSN 2229-547X VIDEHA

जहिना धीरेन्द्रक मनमे जगमोहीक प्रति जिज्ञासा जागल तहिना जगमोहीकेँ सेहो धीरेन्द्रक प्रति जागल। एक रस्ताक राही माने एक विषयक विद्यार्थी भेने दुनूक मनमे एते तँ जिज्ञासा जगिये चुकल अछि जे जखन दुनू गोरे एक कौलेजक एक क्लासमे पढ़ै छी तखन बुधियो-ज्ञान ने एकरंग हुअए। एकर माने ईहो नहि जे आनसँ बेसी नइ हुअए,आ ने यएह माने हएत जे आनसँ कम्मो नइ हुअए। एक स्थानक यात्रीक बीच एहेन कोनो सीमा थोड़े अछि जे सभकेँ एक्केरंग चलए पड़त। कौलेजोमे तँ तहिना होइते छै जे कियो प्रथम श्रेणीमे उतीर्ण होइए, कियो दोसर श्रेणीमे आ कियो तेसर श्रेणीमे। मुदा जिनगीक अध्येता अपन जिनगीक अध्याय ओहीठामसँ शुरू करैक चेष्टा करै छैथ जैठाम मजगूत नीवक जरूरत अछि। औझुके नीवपर ने काल्हि ठाढ़ हएत। तँए, भविसवेत्ता भलेँ जे हुअए मुदा भविसक निर्माता नइ छी सेहो केना नइ कहल जाएत। औझुके रोपल गाछ ने काल्हि फल देत।

धीरेन्द्रो आ जगमोहीयो एक-दोसरक जीवन परिचय गुप्त रूपसँ भाँज लगबए लगल। मुदा दुनूक प्रतिबन्धित बाट, प्रतिबन्धित ऐ मानेमे जे जानकारी पबैमे कहीं सीमोलंघन ने भऽ जाए,नइ तँ जगहँसी हएत। एक तँ पटनामे ने धीरेन्द्रकेँ बेसी चिन्ह-पहचीनक लोक आ ने जगमोहीएकेँ। ओना, कौलेजो आ हाइयो स्कूल, सइयो-हजारो अपरिचित चेहराक परिचित करबैक गर छीहे, मुदा परिचय-पात करैक जगह तँ छी नहि, छी तँ पढ़ै-लिखैक जगह। जेकर अपन निर्धारित सीमा-सरहद अछि।तँए, एक सिमानक बीच रहि कियो अपनाकेँ पार-घाट लगैबतो अछि आ लगबौ चाहैए।

धीरेन्द्रकेँ पिता-पुत्रक बीच जे सीमा अछि तइमे जहिना पिता जीबेन्द्रछथिन तहिना पुत्र धीरेन्द्रो अछि। माने ई जे अनेको क्रिया-कलापक बीच पिता-पुत्रक जीवन अछिए। मुदा अखन से नहि। अखन एतबे जे जेतेक उचित खर्च विद्यार्थीक छल ओ धीरेन्द्र जहिना निमाहि रहल अछि तहिना जीबेन्द्रसेहो अपन पुत्रक हिसाबसँअपन माहवारी खर्चो आ स्वतंत्रतो देब निमाहि रहल छैथ। मुदा ऐ सीमाक बीच धीरेन्द्र अपन कोर्सक किताब सिलेबशक अनुसार पिताक पाइसँ कीनि नेने छल मुदा शिक्षकक मुहसँ अनेको अन्य किताबक नाओं सुनि मन तँ उछटबे कएल। जइसँ धीरेन्द्र प्रतिदिन एक घन्टा कौलेजक रीडिंग रूममे बैस नव-नव पोथी पढ़ैतरहल अछि। कौलेजक रीडिंग रूम, पुस्तकालय आ कार्यालय तीनू कोठरी एक्के मकानमे जुड़ल अछि। तीनूक बीचक देवालमे शीशा लागल अछि जइसँ एक दोसर कोठरीकेँ नीक जकाँ देखल जाइए।

धीरेन्द्र रीडिंग रूममे कुर्सीपर बैस टेबुलपर तीन-चारिटा किताब रखि एकटाकेँ उनटा रहल छल, तहीकाल जगमोही पुस्तकालयक पैछलाकिताब जमा करैत ऐगला लइले आलमारी देखए लगल। ओना, पुस्तकालयक सभ पोथी रजिष्टरमे अंकितऐछे मुदा ओदोसर विद्यार्थी देख रहल छल।

नमगर-चौड़गर रीडिंग रूमक कोठरी, दर्जनो आलमारी किताबसँ सजल अछिए। एकसँ दू आलमारी प्रति विषयक किताबसँ सजौल फुटा-फुटा लगौल अछि। बीचमे बइसैले कुरसीक संग टेबुल सेहो लगले अछि।

जइसँ बिनु बँटवारा केनहुँ बैइसैक जगह बँटाइये गेल अछि। माने ई जे आलमारीक लगेमे कियो बैस कऽ पढ़बकेँ नीक बुझबे करैए। धीरेन्द्र अपन समयानुसार रीडिंग रूममे किताब सभ टेबुलपर रखि कलमसँ कॉपीमे लिख पुन: किताब उनटबैतरहए। पुस्तकालयक आलमारीमे जगमोही किताब खोजि रहल छल। पुस्तकालयो आ रीडिंगो रूमक आलमारी हाथ-हाथ भरिक दूरीमे सजल अछि। पुस्तकालयक दुनू आलमारी खोलि जगमोही किताब खोजि रहल छल आ दोसर दिस धीरेन्द्र दुनू आलमारी खोलि किताब निकालि टेबुल सजौने छल।

दू आलमारीक बीचक जे जगह अछि ओइ बीच होइत जगमोही धीरेन्द्रकेँ देख रहल छल। तही बीच पुस्तकालयक किछु किताब गड़बड़ भऽ गेल रहै तेकर कहाकही ऑफिसमे उठल। मुदा किताब तँ किताब छी, आगियोमे जरैबला, पानियोमे गलैबला आ दिबारो-दिम्मककेँ खाइबला, तैठाम अनेरेक ने कहा-कही भेल। खाएर..,जेकरा माए-बाप जन्म दइए से तँ माए-बापकेँ बिसैर जाइए,ई तँकौलेजक पुस्तकालयक किताब छी,एकरके माए-बाप छै!अनेरे के एते आलमारीकेँ उधेसत। ओना, देवालक बीच शीशा लगल रहने जहिना जगमोही पुस्तकालयमे बन्न अछि तहिना रीडिंग रूपमे धीरेन्द्रोबन्ने अछि मुदा देख रहल छल दुनू एक-दोसरकेँ।

ओना, अखन तकक तरपेसकी जानकारीमे जहिना जगमोही अपन मामा गामक धीरेन्द्रकेँ बुझैततहिना धीरेन्द्रो अपना गामक भगिनी जगमोहीकेँ बुझैत। मुदा अखन धरि एको दिन बात-चीत नहि भेल।..पुस्तकालयक कार्यालयमे कहा-कही भेने सबहक धियान ओइ दिस भेल आ जगमोहीक धियान धीरेन्द्र दिस भेल। शुरूमे जगमोही मोट-मोट किताब धीरेन्द्रक टेबुलपर राखल देख थोड़ेक सहमल जरूर मुदा एते तँ आत्म-शक्ति जगिये गेल छेलै जे धीरेन्द्र मामा गामक छी। चाहे तँ नाना दाखिलमे हुअए वा मामा दाखिलमे वा भाइक दाखिलमे, मुदा अंगीत तँ छीहे। जँ सेहो नइ छी तैयो एक कौलेजक एक क्लासक आ एक विषयक संगी तँ भेबे कएल। जखन एक्के विषयक संगी छी तखन जीवनक क्रियो-कलाप तँ एक्केरंग ने हएत। केना कोयलाखानक श्रमिक अपनाकेँ लेबर क्लास कहि एकठाम बैसार-उसार करैए। केना खेतक धान रोपनिहार धनरोपनिया कहबैए। कहाँ केतौ मर्द-औरतक भेद छइ। एक दिस मातृकक सम्बन्ध, दोसर दिस कौलेजक सम्बन्ध अछिए, तैसंग एक उमेरक सियान सेहो दुनू गोरेछीहे। तखन गप-सप्प करैमे बाधा की? चोरनुकबा प्रेममे कोनो दम होइए, ओ तँ चोर सबहक क्रियाभेल। प्रेम तँ सार्वभौम अछि।विचारक प्रेम, बेवहारक प्रेम, जिनगी जीबैक प्रेमइत्यादि, जे लोकचोरा-नुका कऽ किए करत।

दू आलमारीक बीचक रस्ता देने शीशाक देवाल पार करैत जगमोही धीरेन्द्रक अनुकरण करए लगल। धीरेन्द्र जहिना किताबमे आँखि गाड़ि, समुद्री हीरा जकाँ पाँति खोजि कॉपीमे नोट कए रहल छल, तेकर हू-ब-हू फोटोग्राफी जगमोही अपन बुधिक डायरीमे उतारए लगल। दस मिनटक फोटोग्राफीक रील जगमोही मनमे गढ़ि नेने छल।

संजोग भेल, पाँच बाजि गेल। आब सभ किछु बन्द हएत। जगमोहीकेँ दूटा किताब लेबाक छेलै जे इसू करा चुकल छल।धीरेन्द्र आलमारीमे किताब रखि कॉपी नेने बाहर निकलल। ओना, लोको पतराएले छलइ। मात्र दू गोरे कौलेजक स्टाफ आ चारि-पाँचटा विद्यार्थी अछि। पुस्तकालयक सीढ़ीसँ निच्चाँ उतैरते जहिना धीरेन्द्रक नजैर खिर जगमोहीपर छिछलल तहिना जगमोहीक नजैर सेहो धीरेन्द्रपर छिछलए लगल। ओना, दुनूकेँ अपन-अपन नैतिक अनुशासनक विचार मनमे दौड़िये रहल छल। अही गुन-धुनमे दुनू बिना किछु बजने-भुकने कौलेजक अन्तिम गेट लग पहुँच गेल। चौबट्टी जगह, तँए के किमहर जाएत तेकर जानकारी दुनूकेँ अपन-अपन।ओना, एहेन कोनो प्रतिकूल मौसम नहियेँ अछि जे दुनूक बीच गप-सप्प नइ भऽ सकैए।मुदा ग्रामीण परिवेशक उपज दुनू, माने दुनूक जन्म गामदेहातमेभेनेदुनूक मनमे गामक गमैया सम्बन्ध सेहो बनियेँ गेल अछि।तँए दुनूक बीच किछु ओझरौठअछिए। जे ने जगमोही बुझि सकल अछि जे धीरेन्द्रक संग कोन तरहक सम्बन्ध मानि बाजल जाए, आ ने धीरेन्द्रे से बुझि रहल अछि।तैसंग दुनूक मनमे ईहो बेवधानछैहे जे अपनासँ उमेरमे जेठ मानल जाए वा छोट। तेकर कारण दुनूक अपन-अपन अछि।

धीरेन्द्रक मनमे नचै छै- जखन दुनू गोरे कौलेजक एक क्लासमे पढ़ै छीतखन ई मानि लेब जे जगमोहीक उम्र हमरासँ कम हेतैई तँ बालबोधक विचार भेल!किएक तँ जेतेक समय हमरा 'अ-आ' सँ अबैमे अखन धरि लागल तेते तँ जगमोहीकेँ सेहो लगल हेबे करत, तखन छोट मानल जाए वा पैघ? आइ जँ कौलेजमे एको क्लास आगू-पाछू रहितौं तखन तँ एकटा देखौआ सीमा भेटैत, जहिना कोनो गामक जमीनक नापी लेल पैछला सर्वेक कोनो पहचान भेटला बाद अमीनकेँ कोनो खेतक आड़ि-मेड़ बनबैमे असान होइए तहिना।

मुदा धीरेन्द्रक मनमे एकटा विचार उठल। उठल ई जे जइ गाममे बाढ़िक कारणे वा भुमकमक कारणे सिमानक पहचान मेटा गेल रहैए तँ ओइ सीमाकेँ पकड़ै तँदोसर गामकसिमानकसहारा लेले जाइए।

जगहमोही जखन अपन पैछला इतिहास दिस नजैर खिरौलक तँसाफ-साफ देखए लगल जे जहिया पाँच बर्खक रही तहिये बाबा लोअर प्राइमरी स्कूलमे नाओं लिखा देलैन, तहियासँ ने कहियो फेल केलौं आ ने कोनो क्लासे फानि कऽ टपलौं।मनमे उठलै- तहिना ने धीरेन्द्रोकेँ भेल हएत। बीचमेमातृकक सम्बन्ध सेहो अछि, जँ नानाक सम्बन्धमे हएत आ तखन जँ भैयारीक सम्बन्धे बाजबईहो तँ नीक नहियेँ हएत। आ तहूमे जँमाए बुझती तखन तँ ओहो गनजन करबे करती..!

ओना, धीरेन्द्रोक मन सकताइये रहल छल जे अनजान-सुनजान महाकल्याण। गप-सप्पक पछाइत जखन सम्बन्धक असल परिचय हएत तखन अपन विचारकेँ सुधारि लेब। तहिना जगमोहीक मन सेहो रसे-रसे ओहन सीमापर पहुँच गेल।तँए दुनूकेँ मुँह खोलैक अनुकूल मौसम बनि गेल। एक तँ ओहुना जखन संगे-संग पढ़ै छी तखन बजा-भुकी करैमे कोन एहेन पहाड़े आकि समुद्रे बीचमे बाधक अछि।

गेटपर पहुँच धीरेन्द्र जगमोही दिस तकलक। ओना, जगमोही सेहो धीरेन्द्रे दिस ताकि रहल छल। दुनूक आँखि मीलि गेल। आँखि मिलिते दुनूक मुँह टुस्कियाएल। जहिना पत्ता-कलश वा फूल-फलक टुसी चलिते अपन सुगन्ध निकालए लगैए तहिना दुनूक मनसँ निकलए लगल...। जगमोही बाजल- ‘‘डेरा केतए रखने छी?’’

जहिना जगमोही बाजल तहिना धीरेन्द्र उत्तर देलक- ‘‘ऐठामसँ साए मीटर हएत।’’

धीरेन्द्रक बात सुनि जगमोही घड़ी देखलक। पाँच बाजि कऽ पाँच मिनट भेल छेलइ। मने-मन अपन समैयक अँटकार लगौलक तँ बुझि पड़लै आधा घन्टा समय बीचमे खाली अछि। जगमोहीक ऐगला समैयकसीमा निर्धारित छेलै, किएक तँ सचिवालयमेजगमोहीक पिता-रामलखन कार्यरत छथिन जे नित्य छअ-पौने छअ बजे तक डेरा अबै छथिन। पिताजीकेँ अबैसँ पहिनहि जगमोही अपन कौलेजक काज निवटा डेरा पहुँच जाइए। तैबीच जगमोहीक माइयो बजारक काज कऽ आबि जाइ छथिन।

जगमोही बाजल-

‘‘रस्ते-रस्ते चलि कऽ अपन डेरा देखा दिअ। दोसर दिन समय पेलापर आगूक किछु गप-सप्प करब।’’

सोल्होअना जगमोहीक बात नहि सुनि धीरेन्द्र बिच्चेमे बाजल-

‘‘चलू, संगे-संग चलबो करू आ अहाँ अपनो डेराक जानकारी दिअ।’’

साइए मीटरपर धीरेन्द्रक डेरा, गपे-सप्पमे दुनू गोरे पहुँच गेल। डेरा लग ठाढ़ होइत धीरेन्द्र असमंजसमे पड़ि गेल। असमंजस ई जे शहर-बजार छी। ऐठाम सभ तरहक प्रतियोगिता अछि! मुदा लगले मनमे उठि गेलै जे अखन विद्यार्थी जीवनमे छी, तँए अखन वर्त्तमानक विचार करब अछि नहि कि भविसक। धीरेन्द्र बाजल-

‘‘डेरामे चाह-ताह तँ नइ बनबै छी मुदा जलखैक ओरियान तँ रहिते अछि, चलू पहिने जलखै कऽ लेबतखन जाएब।’’

ओना, दुनूक मन गवाही दइतेरहै जे कौलेजसँ लऽ कऽ गाम धरिक सम्बन्ध अछिए, तखन खेबे-पीबेमे कोन हर्ज...। जगमोही बाजल-

‘‘डेरा तँ भीतर जा कऽ देख लेब मुदा जलखै नइ करब। बेसीसँ बेसी एक गिलास पानि पीब लेब।’’

दुनू गोरे कोठरीमे पहुँचल। कोठरीमे कुरसी नहि, छोट-क्षीणकोठरीमे धीरेन्द्रक पूर्ण जिनगी समटल अछि। एक्के चौकीपर बैस धीरेन्द्र बाजल-

‘‘गाममे ऐबेर आम खूब फड़ल अछि, अमैया छुट्टी हेबे करत...।’’

ISSN 2229-547X VIDEHA

जगमोही बाजल-

“अहाँक घर प्रेमनगर छी आ हमरो...।”

‘हमरो’ सँ आगाँ नहि बढ़ि जगमोही चुप भऽ गेल।

अपन गामक नाओं सुनि धीरेन्द्र बाजल-

“अहूँक मातृक तँ प्रेमनगरे ने छी?”

जगमोही-

“आइ एतबेपर रहए दियौ। पनरह जूनसँ अमैया छुट्टी भऽ रहल अछि, माइयो नैहर जेती, हुनके संग बीस जूनकँ अहाँक गाम पहुँच जाएब।”

मुस्की दैत धीरेन्द्र बाजल-

“हमरा गाम पहुँचब आकि अपन मातृक?”

जगमोही-

“अहाँ जे बुझिऐ...।”

---

[i]बटसावित्री

[ii]मेहनत करैबला

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

ISSN 2229-547X VIDEHA

गढ़-नारिकेल **उपन्यास-त्रयी**क पहिल उपन्यास **"सहस्त्रशीर्षा"** क बाद दोसर उपन्यास

**गजेन्द्र ठाकुर**

सहमर्दा

१

हमर नाम छी… … …..

आ गाम ‘‘गढ़ नारिकेल’’

गढ़-नारिकेल **उपन्यास-त्रयी**क पहिल उपन्यास **"सहस्त्रशीर्षा"** क बाद दोसर उपन्यास

गजेन्द्र ठाकुर

सहमर्दा

१

हमर नाम छी… … …..

आ गाम ‘‘गढ़ नारिकेल’’

शुक्र दिन ऑफिससँ दस बजे रातिमे घुरलहुँ तँ डेरा पहुँचिते बेटी स्वागत केलक। बुझा गेल जे रूसल अछि। पुछलिऐ की भेल तँ ओ मोन पाड़लक जे अझुका सिनेमा देखबाक प्रोग्राम छलै। हमर एहि जवाबपर कि देरी भऽ गेल अछि, थाकल छी ओ सोफापर मुँह घुमा कऽ बैसि गेल आ कथुक उत्तरे नै दिअए। कनियाँकेँ कहलियन्हि जे काल्हि सिनेमा चलै चलब से नै हेतै, ८-११ बला शो तँ खतम भऽ गेलै। ओ बेटीसँ पुछि कऽ ओतहियेसँ चिकरि कऽ कहलन्हि जे अहाँ अझुका प्रोमिस केने रहिऐ। हँ प्रॉमिस तँ केने

ISSN 2229-547X VIDEHA

रहिऐ, तकरा पूरा तँ करैये पड़त। फेर मोन पड़ल जे सरकार नाइट शो देखेबाक अनुमति थियेटर सभकेँ देने छै, से आइ काल्हि ११ सँ २ बजेक शो देखि सकै छी। बूक माइ शो साइटपर ऑनलाइन टिकट कटेलौं आ से देखि बेटीक रुसब खतम भेलै। बेटा, कनियाँ आ माँ तीनू गोटे तैयार भऽ गेला आ सिनेमो जे पड़ि लागल से सनगर। सालमे एक्के दू टा तँ नीक सिनेमा बनै छै बॉलीवुडमे।

दू बजे रातिमे सिनेमा देखि कऽ घुरि रहल छी आकि गाड़ीक लाइट एकटा बड़का होर्डिंगपर पड़लै, आ ओहने बहुत रास होर्डिंग अबैत गेल।

ओइ होर्डिंग सभपर राज्यक महिला मुख्यमंत्रीक कनी अगरायल सन अभयमुद्राबला फोटो छलै। ओना तँ बेटीसँ बेशी रनिंग कमेण्ट्री हमहीं करै छै, रस्ताक सभटा चीजक विस्तृत विवरण दैत गाड़ी चलबै छी, कखनो काल जखन दुनू हाथ छोड़ि खिस्सा आगू बढ़बै छिऐ तँ ओ टोकितो अछि आ सड़कक सभटा कानून, रेड-लाइट, ग्रीन लाइट, जेब्रा क्रॉसिंग, सभटा ओ बुझबऽ लगैए। मुदा ऐ होर्डिंग सभकेँ हम अनठा देलिऐ जे कहबै तँ उनटे सुना देत जे ई सभ हमरा बुझले अछि। मुदा ऐबेर से नै भेल। शीसा खोलि कऽ ओ अचरजसँ हमरासँ पुछलक-

“ई ककर फोटो छिऐ डैडी?”

“ईहो नै बूझल अछि, फलना दीदी मुख्यमंत्रीक फोटो छियन्हि ई”।

“मरि गेलखिन्ह? कहिया?”

कनी काल तँ हमरा बुझबामे नै आएल आ जखन आयल तँ ततेक हँसी लागल जे गाड़ी चलेनाइ मुश्किल। माँ कनियाँ आ बेटाकेँ कहलियन्हि जे ई किताबमे पढ़ैए जे मुइलाक बाद बड़का फोटो आ मूर्ति बनै छै से एकरा भेलै जे मरि गेलीह मुख्यमंत्री आ स्कूलमे एक्को दिनक छुट्टी नै भेटल, आ हमरा संगे ओहो सभ पेट पकड़ि कऽ हँसऽ लगला। बेटी हतप्रभ सभकेँ देखैत रहल। ओ हमरा दिस इशारा कऽ कय स्टीयरिंगपर ध्यानदेबा लऽ कहलक तँ हम गाड़ीकेँ सड़कक कात लगा कऽ गाड़ी ठाढ़ कऽ लेलौं।

“सूतल छलौं की, उठा देलौं।”- फोन घनघनाइए आ ओइमेसँ अबाज बहराइए।

“नै, एते जल्दी कहाँ सूतै छी, कि कोनो जरूरी गप अछि की?”, दू बजे राति कऽ ऑफिसक हाकिम बिना काजेक फोन किए करत, से जकरा इंस्टिंक्ट कहै छै तहिना पुछा गेल छल।

“एम्सक ट्रॉमा सेन्टर आबि सकै छी, आउ तँ फेर आगाँ गप हेतै”।

ISSN 2229-547X VIDEHA

डेरा पहुँचि, कपड़ा पहीरि कऽ ऊबरकँ बजबै छी, अपन गाड़ी लऽ जायब तँ पार्किंग भेटत आकि नै से सोचि कऽ। गेटपर उतरि कऽ जखने ट्रॉमा सेन्टरक भीतर जाइ छी तँ अबाज अबैए-

“सर, एम्हर छी हम”। हमर इंस्पेक्टर सहैब गालकँ हाथसँ साटने हमरा शोर करै छथि।

“अहूँ एतै छी, हाकिम बजेने अछि, तँ हम आयल छी”।

“हमरे दुआरे बजेने छथि, अटैक कऽ देलक गुण्डा सभ”।

“कतऽ, कोना?”

ओ अपन गालपरसँ हाथ हटबै छथि तँ गाल दू टुकड़ी दुनू दिस भेल देखाइत अछि।

“हाँ, हाँ”।

ओ धड़फड़ा कऽ हाथसँ गालकँ साटि लै छथि।

हम कहै छिएन्हि- “अहिना केने रहू, अहाँकँ अपन गाल देखा नै पड़ि रहल अछि तँ अहाँकँ पता नै अछि जे ….”। चुप भऽ जाइ छी।

कते कालसँ एतऽ छी।

एक घण्टासँ छी। जखन आइ.जी., डी.आइ.जी. सहैब सभ कनी काल पहिने एला तखनसँ कनी ध्यान देलकहें। ईहो सभ की करतै, देखै नै छिऐ भीड़।

एकटा डॉक्टर हुनका बजाकँ लऽ जाइ छन्हि एकटा कोठलीमे। ओइ कोठलीक बाहर सभ हाकिम जमा छथि, सभ गम्भीर मुद्रा बनेने छथि। लोकल थाना बला सभ सेहो आबि गेल अछि। थाना बला सभ सहटि कऽ हमरा लग आबि गेल।

दरोगाजी हमरा अपन मोबाइल निकालि एकटा वी.डी.ओ. देखबैत छथि।

“देखू ऐ गुण्डा सभकँ, हमरेपर पाथर फेकि रहल अछि”।

हवलदार सहैब टिपलखिन्ह जे ओइ सारकेँ हुजूर जेल पठा देलखिन मुदा गजेरी-चरसी सभ छै। कोनो डरे-भर नै होइ छै। हुजूरे कऽ मोटरसाइकिल थानेपरसँ चोरा लेलकन्हि, ओकर अखनि धरि पते नै चलल छै।

हम दरोगाजीसँ पुछलियन्हि- ‘‘अहाँकेँ की लगैए, की ई लॉ एण्ड ऑर्डरक गप छै आकि ऑफिसक काजसँ एकर कोनो सम्बन्ध छै’’?

ओ कहै छथि जे मामिलामे पेंच छै। तहकीकात तँ जबरदस्त ढंगसँ हेतै। मुदा ओ सेहो कहै छथि जे मोटा-मोटी ई लॉ-ऑर्डरेक समस्या छिऐ। मुदा देखू...

गाल सीबि देल गेल छन्हि। इन्सपेक्टर साहेब हमरा कहै छथि जे गाल तँ दू टुकड़ी भऽ गेल छलै। सीलाक बाद डॉक्टर एना देखेने छलन्हि।

सभ हाकिम अपना-अपना घर दिस बिदा भेला। सरकारी गाड़ी इंस्पेक्टर साहैब कऽ लऽ गेलन्हि आ हम ऊबरकेँ फोन लगेलौं।

… ….

अगिला दिन भोरे-भोर ऑफिस गेलौं तँ अर्दली इशारामे कहलक जे एकटा इनफॉर्मर आयल अछि। हम कहलिऐ जे ककरोसँ भेँट किए नै करा देलिऐ, एतेक गोटे ऑफिसमे अछि तँ कहलक जे कहैए जे अहींसँ भेँट करत, कहैए जे हमर इलाकाक हाकिम छथि, अनकापर ओकरा भरोस नै छै।

‘‘हमर इलाकाक छी, कतुक्का छी, नामो-गाम बता देलक की?’’

‘‘नाम तँ नै बतेलक मुदा कहलक जे गामक नाम कहि दियौन्ह हाकिमकेँ, अपने बजा लेता। गामक नाम कहलक विचित्रे.... किदन तँ ‘‘गढ़ नारिकेल’’!’’

(अनुवर्तते)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्



डॉ. ललन कुमार झा

म.म. उमापति ओ शुद्धि निर्णय

म. म. उमापति विरचित'शुद्धि निर्णय' मैथिल धर्मशास्त्र निवन्ध ग्रन्थमे महत्वपूर्ण स्थान रहैत अछि। विद्वान् लोकनिक द्वारा आदृत एहि ग्रन्थमे वर्णाश्रम धर्मानुसार जनन, मरणाशौच आओर ओकर शुद्धि सार रूपमे निरुपित कएल गेल अछि। शास्त्रमे व्यापक दृष्टिसँ सकल देशाचारक अनुसारेँ व्यवस्था देल जाइत अछि जाहिमे अपन देशक व्यवस्थाक अनुसारेँ आचरण करए इएह मर्यादा अछि। आन देशीय व्यवस्था शास्त्रानुकूल भेलोपर त्याज्य अछि। एहि ग्रन्थमे शास्त्रानुकूल सेहो कनेको व्यवस्था मिथिलाक व्यवहारक विरुद्ध अछि जकर टिप्पणी करणक चर्चा सेहो कएलन्हि अछि आओर समाधान सेहो निकालल गेल अछि। एहिसँ प्रकृत ग्रन्थक उपयोगिता बढ़ि गेल अछि। कतए अशौच होइत अछि कतए नहि होइत अछि, कतेक समयमे आओर कोन विधिसँ ओकर शुद्धि होअए, एहि सम्बन्धमे ई पुस्तक निश्चयत: प्रामाणिक अछि। एहिठाम अनेक धर्मशास्त्रक बचनक जालकेँ छोड़ि कऽ सार रूपसँ एक निर्णयक उपस्थापना कएल गेल अछि आओर ओकरा विषयमे अनेक विषय सेहो संक्षेपमे कहल गेल अछि।

प्रकृत ग्रन्थमे निम्नलिखित विषयक प्रतिपादन भेल अछि-

चातुर्वर्ण्याशौचम्, सपिण्डादिलक्षणम्, अशौचसंस्कार, विदेशस्याशौचम्, बालापशौचम्, यशौचम्, गर्भस्त्रावाशौचम्, मृत्युविशेषाशौचम्, सपिण्डाद्यशौचम्, निर्हाणाद्यशौचम्, अथाधिकारिण:, अनधिकारिण:, उदाकानर्हा/, सन्यासिनाम् एकोदिष्ट विचार:।

चातुर्वर्ण्याशौचम् :-

सपिण्ड ब्रह्मणक मृत्यु भेलापर ब्राह्मण दशशन्तिमे शुद्धि प्राप्त करैत अछि। एहि तरहेँ क्षत्रिय बारह, वैश्य पन्द्रह तथा शुद्र एक मासमे शुद्ध होइत अछि। चारू वर्णमे सकुल्यक मरलापर तीन राति, कुलजक मरलापर पक्षिणी तथा गोत्रजक मरलापर स्नान मात्रसँ शुद्धि होइत अछि।

सपिण्डादिलक्षणम् :-

'सपिण्डा: सप्तपुरुषावध्य: - एकर भाव स्पष्ट करैत टिप्पणीकार श्री कृष्ण ठाकुर कहैत छथि जे बीजी पुरुषसँ आरम्भ कऽ सप्तम पुरुष पर्यन्त सभ संततिवला तथा सन्ततिक सपिण्ड्य होइत अछि। अपन वंशक सप्तम पीढ़ीसँ बादवला दश पुरुष धरि सकुल्य कहबैत अछि। ओकर पश्चात् जन्म आओर नामक ज्ञान भेला धरि कुलज कहबैत अछि। दश- पुरुषान्तर गोत्रज मात्र कहबैत अछि। कुमारि कन्याक सापिण्ड्य पिताक संग तथा विवाहिताक पतिक संग होइत अछि।

अशौचसंस्कार :-

दस दिन पर्यन्त अशौचक अवधिमे पाँचम दिन पर्यन्त सजातीय दस दिवसीय अशौच आबि जाए तँ पूर्व अशौचक संग ओकर शुद्धि होइत अछि। ओकर पश्चात् नवम दिन धरि जँ इएह स्थिति आबए तँ द्वितीय अशौचान्तक संग ओ युक्त भऽ जाइत अछि। दसम दिन जँ पुन: सजातीय अशौच भऽ जाए तँ ओहि दिनक बाद दुइये दिनमे शुद्धि भऽ जाइत अछि। दशम दिन राति शेष रहलापर अरुणोदय बेला धरि जँ अशौच प्राप्त होअए तँ सूर्योदयक पश्चात् तीन रातिक शुद्धि होइत अछि। एहि तरहेँ क्षत्रियादिक अशौचापगमन होइत अछि। जननाशौचक अन्तसँ जननाशौच समाप्त होइत अछि, भनहि अल्पेदिनमे मरणाशौचान्त किएक नहि होअए।

विदेशस्याशौचम् :-

बिनु बीतल अशौच कालावधिमे विदेशस्थ व्यक्तिक मृत्युक सूचना प्राप्त भऽ जाए तँ जतेक दिन बँचल अछि ओहिमे अशौचान्त भऽ जाएत। सम्पूर्णाशौच कालक व्यतीत भऽ गेलापर छ: मासक भीतर सपिण्डण मरणक सूचना भेटए तँ तीन रातिमे शुद्धि होअए। नवम मास पर्यन्त एक राति, ओकर बाद एक वर्ष यावत् एक दिन-राति तथा वर्षानन्तर स्नानोदक दान मात्रसँ अशौच समाप्त भऽ जाइत अछि। एक दिनमे जाहि स्थानक समाचार प्राप्त नहि होअए ओ विदेश कहबैत अछि। साठि योजन (240 कोस)क दूरीवला देशान्तर कहबैत अछि। साठि योजनक अभ्यन्तर: सेहो भाषा, भेद-पहाड़, महानदी प्रभृति व्यवधान भेलापर देशान्तर कहाबए लगैत अछि। ओहिठाम मृत्यु भेलापर सद्य: शौच होइत अछि।

बालाद्यशौचम् :-

ISSN 2229-547X VIDEHA

छ: मासक भीतर बालकक मृत्यु भेलापर सद्य: शौच होइत अछि। सप्तम मासक आरम्भ भऽ गेलापर तथा दुइ वर्ष धरि ब्राह्मणमे अहोरात्र अशौच लगैत अछि। उपनयनसँ पूर्व मृत्यु भेलापर तीन राति अशौचक लेल मानल जाइत अछि। क्षत्रियमे सात माससँ दुइ वर्ष धरि मृत्यु भेलापर तीन दिन, तीनसँ छ: वर्ष धरि छ: दिन आओर एकर बाद बारह दिन पर्यन्त अशौच होइत अछि। वैश्यमे सात माससँ दुइ वर्ष पर्यन्त मरलापर तीन दिन ओकर वाद पाँच वर्ष धरि मृत्यु भेलापर नौ दिन आओर ओकर वाद पन्द्रह दिन अशौच रहैत अछि। शुद्रमे सात माससँ दुइ वर्ष धरि पाँच दिन ओकर बाद सोलह वर्ष धरि अविवाहितक मृत्यु भेलापर बारह दिन, विवाह भऽ गेलापर आठमे वर्षसँ मासावधि अशौच मान्य अछि। एहि तरहेँ कन्याशौचक व्यवस्था देल गेल अछि।

यशौचम् :-

सम वर्णमे दुइ वर्षक कन्याक मृत्यु भेलापर सद्य: शौच होइत अछि। ओकर बाद विवाह पर्यन्त एक अहोरात्र तथा पतिक कुलमे सम्पूर्ण अशौच लगैत अछि। वागदत्ता कन्याक मृत्यु भऽ गेलापर पति आओर पिता दुनू कुलमे त्रिरात्र अशौच होइत अछि। म. म. उमापति विवाहिताक पितृ कुलमे मरब अथवा प्रसव कएलापर माता-पिताक लेल त्रिरात्र अशौच मानलन्हि अछि जँ साम्प्रतिक मैथिल व्यवहारानुसार मातामह पितामह कुलमे पड़एवला सभक लेल त्रिरात्राशौच मान्य अछि। एक परिवारमे रहएवला सहोदर, वैमात्रेय अथवा चाचाक पुत्रक लेल एक रात्राशौचक नाम अछि। पिताक आश्रमसँ भिन्न रहएवला पुत्रक लेल अशौच नहि मानलन्हि अछि :-

'पितृर्भिन्ना श्रमवासिनां पुत्रादीनाम् अशौचं न भवति।' कन्याक गोत्र पाणिग्रहक गोत्रे होइत अछि। मुदा पाणिग्रहण भऽ गेलापर जँ सप्तपदी, अश्मारोहण समाप्त भेलासँ पूर्वे कन्या वलात् दोसर द्वारा उपहरण कऽ लेल जाइत अछि तँ स्वामीक गोत्र पाणिग्रहणक गोत्र मानल जाएत। पाणिग्रहण आदि वैवाहिक कर्म समाप्त भेलासँ पूर्वे बलात्कारक द्वारा अपृत जाधरि ओकर प्रसव नहि भऽ जाइत अछि ताधरि पितृ गोत्रे मान्य रहैत अछि। प्रसबक पश्चात् पूर्व कृत स्वामीक प्रसव मरणजन्य त्रिरात्राशौच होइत अछि।

गर्भस्त्रावाशौचम् :-

गर्भ स्त्राव भऽ गेलापर सेहो ब्राह्मणादि वर्णक लेल अशौच कहल गेल अछि। मुदा प्रतिकूल साम्प्रतिक समयमे परम्पराक क्रमश: लोप भेल जा रहल अछि।

मृत्युविशेषाशौचम् :-

साम्प्रतिक समयमे असमय मृत्युक घटना घटि रहल अछि, जकर अशौचान्त दशमे दिन होइत अछि। मुदा उमापति एकरा विषयमे विशेष व्यवस्था देलन्हि अछि जकरा अनुसारेँ शौच आचमनादि काजमेवृद्ध जे

असाध्य रोगसँ ग्रस्त अछि; मरणक इच्छासँ अग्नि-जलादिमे प्रवेश कऽ मृत्यु प्राप्त कऽ जाइत अछि, एहन सपिण्डक मृत्यु भेलापर त्रिरात्र अशौच कहलन्हि अछि। तत्काल अग्नि आदिमे प्रवेश कएलोपर मृत्यु नहि भऽ कऽ बादमे मृत्यु भऽ जाइत अछि तँ त्रिरात्र मात्रक अशौच कहल गेल अछि। रोगादिक कारणेँ अथवा पुत्रादि शोकामिभूत भऽ जँ केओ जलमे प्रवेश कऽ मरि जाए तँ ओकर अग्निदाह तथा तन्जन्य अशौच सेहो निषिद्ध कहलनि अछि। मुदा असावधानी अग्नि, वृजादिसँ मृत्यु भऽ जाए तँ सम्पूर्ण अशौच मानल जाएत। मुक्का-मुक्की, शस्त्र शून्य झगड़ामे मृत्यु भऽ गेलापर सद्य: शौच कहलन्हि अछि। एहि तरहेँ निवन्धकार अनेक प्रकारक मृत्युमे अशौच नहि मानलन्हि अछि। मुदा आजुक समयमे दशदिनमा शौचक व्यवस्था देखाए पड़ैत अछि।

सपिण्डाअशौचम् :-

शुद्धि निर्णयमे 'सपिण्डमरणे दशाहमशौचं' ई धर्मशास्त्रीय तत्त्व सर्वत्र आदृत अछि, मुदा सिद्धान्त मात्रसँ।सकुल्यमरणे त्रिरात्रम्। ज्ञातिमरणे पक्षिणी। गोत्रजे मृते स्नानमात्रम्- तँ वृद्ध मुखसँ सुनल दन्तकथा जेना लगैत अछि। उमापति आचार्य मरणे तत्संस्कारकर्त्तु: शिष्यस्य दशरात्रम्। यदि संस्कारं न करोति तदा त्रिरात्रम्। आचार्य पत्नीमरणे तत्पुत्रमरणे गुरुकुलस्यितस्य शिष्यस्य त्रिरात्रम्- सेहो धर्मशास्त्र ग्रन्थोक्त मात्र लगैत अछि। वस्तुत: आइ आचार्य होएब आओर केश वपन कठिन विषय अछि। एहि लेल एहन स्थितिमे विचार करब प्रासंगिक नहि रहि गेल अछि। मुदा उमापति आन जाहि बिन्दुपर विचार कएलन्हि अछि ओहिपर ध्यान देब सामाजिक रूपसँ आवश्यक अछि। उदाहरणक लेल ग्रन्थकार मातामहक मृत्यु भेलापर दौहित्रक लेल त्रिरात्र मातामहीक मरलापर पक्षिणी, मामा, मौसी, ममियौत, दौहित्र, भागिन इत्यादिक मृत्यु भेलापर पक्षिणी अशौचक विधान कएलन्हि अछि। मुदा मातामहकेँ छोड़ि आनक विषयमे जे पक्ष राखल गेल अछि से आइ प्रचलित नहि अछि।

निर्हाणाद्यशौचम् :-

धर्मवृद्धिसँ अनाथ मृत ब्राह्मणक शवकेँ उघब आ अन्त्येष्टिमे भाग लेलापर स्नान मात्रसँ शुद्धि कहल गेल अछि, मुदा सम्प्रति ईहो व्यावहारिक नहि अछि। एतए ब्राह्मणादि कोनो वर्णकेँ त्रिरात्र अशौच लगैत अछि। ओना राजनीतिक व्यक्तिक मरलापर, शव उघव एवं संस्कारमे भाग लेलापर केश कर्तनक व्यवस्था शिथिल देखाए पड़ैत अछि। दहादिक पश्चात् मृत सम्बन्धीक घरपर रहब तथा सिद्धान्त्र खएला पर त्रिरात्र अथवा दश दिनमे शुद्ध होइत अछि।

अथाधिकारिण :-

मृत व्यक्तिक तीन क्रिया होइत अछि- पूर्वा, मध्या आओर उत्तर। दाह संस्कारसँ आरम्भ कऽअशौचान्त धरि पिण्डदानादि क्रिया पूर्वा अछि। अशौचान्तक पश्चात् सपिण्डीकरणक पर्यन्त मध्यमा क्रिया अछि तथा ओकर पश्चात् एक्रोदिष्टादि क्रिया उत्तरा कहबैत अछि। एहिठाम प्राचीन व्यवहारानुसार तेरहो पुत्रक अधिकार कहल गेल अछि। मुदा टीकाकार श्री कृष्ण ठाकुर कहलन्हि अछि एहि कलियुगमे औरस, पुत्रिकापुत्र, देत्तक आओर कृत्रिमे पुत्रकँ श्राद्ध करबाक अधिकार अछि। एहि चारूक अतिरिक्त पुत्रक श्राद्धाधिकार सम्मत नहि अछि। शूद्रमे पौनर्भव (अन्यसँ विवाहिताक पुत्र) पुत्रक सेहो अधिकार देखाओल गेल अछि-

''कलौ औरस- पुत्रिकापुत्र- दत्तक- कृत्रिमाणामेव- श्राद्धेऽधिकार:।''

एतच्चतुष्टयभिन्ना: पुत्रा ब्राह्मणैर्न कर्त्तव्या: निषेधात्।

अत्र शूद्रस्य पौनर्भवपुत्रोऽव्यधिकारीति विशेष:।।

-शुद्धि निर्णय पृ.- 45

जे स्त्री परित्यक्त अछि अथवा जकर पतिक मृत्यु भऽ गेल अछि अथवा स्वेच्छासँ जे पति छोड़ि दोसर पुरुषक भार्या बनि कऽ पुत्रोत्पन्न कएलक अछि से पौनर्भव नामक पुत्र अछि।

अनधिकारिण :-

पतित, वेदक प्रामाणिकताकँ स्वीकार नहि करएवला, अपन जातिसँ भिन्न, सम्पत्ति चोरी करएवला, समयातीत उपनयन करएवला, आलस्य वा अश्रद्धासँ स्वकर्मच्युत, मद्य पीबएवला, अपन गर्भ तथा स्वामीसँ द्रोह कएनिहारि स्त्री श्राद्धधिकारी नहि होइछ।

उदाकानर्हा :-

अकृत संस्कार, वेद निषिद्ध सन्यासी, मद्यपायी सन्यासी पुत्रादि मृतक क्रियाक हेतु अयोग्य होइत अछि।

संन्यासिनाम् एकोछिष्ट विचार :-

सन्यासीक पुत्रक द्वारा सांवत्सरिक एकोदिष्ट पार्वण आभ्युदयिक तीर्थ श्राद्ध कर्त्तव्य अछि। एहि मतक अनेक विरोधी वचन प्राप्त होइत अछि। जेना-

''एकोछिष्टं न कुर्वीतं संन्यासिनां चैव सर्वदा।

अहन्येकादशे प्राप्ते पार्वणंतु विधीयते।।

एकोछिष्टं यतेर्नास्ति त्रिदण्ड ग्रहणादिति।

सपिण्डीकरणाभावत् पार्वणश्राद्धमिण्यते।।

संसास ग्रहणादेव प्रेतत्वं नैव जायते।।''

- शुद्धि निर्णय पृ.- 49

एहि वचनसँ सन्यासी लोकनिक श्राद्ध सेहो होइत अछि। स्मृतिकार शातातप सन्यासी श्राद्ध सेहो निषिद्ध मानलन्हि अछि। अत: हिनक एकोदिष्ट सेहो समीचीन नहि अछि। दत्तात्रेयक सेहो इएह मत अछि। एहिठाम किछु गोटे एकोदिष्ट करैत छथि आ किछु गोटे नहियोँ करैत अछि। शास्त्रकार लोकनि ओकर एकोदिष्ट सेहो सामान्य रूपमे करवाक लेल कहलन्हि अछि। मैथिल निबन्धकार सपिण्डीकरणादि कर्त्तव्यक दिस संकेत कएलन्हि अछि, मुदाआन पार्वणक निशेध तँ करितहि छथि।

एहि तरहेँ करमहावंशीय म. म. उमापति धर्मशास्त्रानुमोदित सामयिक व्यवहारक वर्णन कऽ मिथिलाक संस्कृतिक उच्चता ओ प्रवणताक तरफ ध्यानाकृष्ट कएलन्हि अछि।

ग्राम+पोस्ट- रहुआ
थाना- सौर बाजार
जिला सहरसा, 852127

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**अनुपम रैना**

यात्रीक व्यक्तित्व ओ कृतित्व

यात्रीक सामान्य परिचय :-

कविशेखर ज्योतिरीश्वर आ महाकवि विद्यापति युगसँ अविच्छिन्न रूपेँ प्रवाहित मैथिली काव्यधारामे मोड़ देनिहारमे मनबोध, चन्दा झा, सीताराम झा प्रभृति अनेक महाकविलोकनिक नाम लेल जाइछ, मुदा ओकर गतिकेँ तीव्रतम कऽ ओकरा आधुनिक युगक कोनो अन्य समृद्ध भाषाक काव्य प्रवाहक समानान्तर लऽ अनबाक श्रेय जाहि एक मात्र कविकेँ देल जाइछ, ओ थिकाह 'यात्री'क उपनामसँ सुविध्यात श्री वैद्यनाथ मिश्र। हिनक लेखनीसँ नि:स(त मैथिली कविता अपन ओहेन सुच्चा सुवाससँ सम्पूर्ण वातावरणकेँ महमहा देलक जकर सुगन्ध लेबाक लेल दूर-दूरक लोक स्वत: आकृष्ट भऽ गेल। वस्तुत: आकृष्ट करऽवला हिनक व्यक्तित्वो अछि। अपन गाम-घरक भारसँ अपनाकेँ सतत फराक रखबाक चेष्टामे रत रहऽवला फक्कड़ व्यक्तित्व; सतत भ्रमणशील, समाज-संसारक रग-रगकेँ परखऽवला पारखी व्यक्तित्व; रूढ़िभंजक, श्रम-शक्तिक पूजक, व्यवस्थाक

विद्रोही, नवीन पीढ़ीक प्रति आवेशी व्यक्तित्त्वक लोक छथि यात्रीजी। अपन जीवने जकाँ मैथिली कविताकेँ ई संकीर्ण छन्दक बन्धनसँ मुक्त कऽ सर्वहाराक प्रशस्त बाटपर उन्मुक्त विचरण करबाक हेतु छोड़ि देलनि।

यात्रीजी आधुनिक मैथिली साहित्य मध्य एकटा एहन देदिव्यमान नक्षक रूपमे अवतीर्ण भेलाह जे सम्पूर्ण मैथिली साहित्येक धाराकेँ मोड़ि देलनि। मैथिली साहित्यक आधुनिक जनक कवीश्वर चन्दा झा जँ नव प्रयोग कऽ पूर्वक रूढ़िक परम्पराकेँ तोड़लनि तँ भुवनेश्वर सिंह भुवन ओहिमे प्रगतिवादक वीजारोपण कएलन्हि। मुदा यात्रीजी ने केवल भुवनजी द्वारा स्थापित प्रगतिवादकेँ एकटा वटवृक्ष सदृश विशालकाय वनस्पति ठाए कएलन्हि अपितु ओहिमे पानिढारि-ढारि ओकरा यथार्थवादक सघन सुन्दर, आकर्षक आ मनोरम वाटिका बना देलनि।

आधुनिक मैथिली साहित्यमे वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक विशिष्ट स्थान छनि। ई मैथिली काव्यगगनमे अपन असाधारण प्रतिभा तथा काव्यक सर्वांगपूर्ण प्रसाद-माधुर्ययुक्त कवितासँ अक्षुण्ण आभाक आभास नहि दैत छथि, अपितु साहित्य-मर्मज्ञकेँ रसास्वादन करयबामे सुक्ष्मगतिक प्रदर्शक छथि। जाहि भावक वर्णन आन-आन कविगण पैघ-पैघ छन्दमे कएने छथि आ ओकर अभिव्यक्तिक लेल ध्वनि तथा अलंकारक बोझसँ दबि गेल छथि, तकरा यात्रीजी ग्रामीण भाषाक माध्यमसँ छोटसँ छोट छन्दमे अभिव्यक्त करबामे पूर्ण सफल भेल छथि। यात्रीजी अपन रचनासभमे मैथिली बोलीक ठेंठक ढाठ बन्हैत छथि। मैथिलीक ठेंठ शब्द सभपर हिनक पूर्ण अधिकार छनि। हिनका प्रसंग डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाक कहब छनि :-

‘‘यात्रीजीक कवितामे एक विचित्र विविधताक दर्शन होयत। रूढ़ि-जर्जर एवं आत्मविश्वाससँ ग्रसित जीवन, शोषण उत्पीड़नक दारूण ज्वालामे दग्ध होइत जनताक दुख-दर्द, समाजमे अन्तर्निहित वर्गसंघर्षक भावना, जीवनक सरल सात्विक वर्णन, प्रकृतिक एकसँ एक रमनगर रूपक अतिरिक्त ‘प्राचीन’, मध्यकालीन आ आधुनिक मिथिलाक माटि-पानिकेँ-हर-जनकेँ- कोसी लखिमाकेँ नहि विसरि सकलाह अछि।’’[1]

बहुमुखी प्रतिभासँ सम्पन्न, सामाजिक परिवेशक निपुण तथा अपन भाषा व्यवस्थाक कारणेँ वैद्यनाथ मिश्र ‘यात्री’आधुनिक मैथिली साहित्यमे अपन उपलब्धिमे बहुचर्चित रचनाकार थिकाह। कवीश्वर चन्दा झाक लोकवादी भावना ओ भाषा व्यवस्था, महाकवि सीताराम झाक व्यंग शैली ओ ठेंठ भाषाक ठाठ तथा भुवनजीक प्रगतिशीलताक नवोन्मेष यात्रीजीक काव्य व्यक्तित्वमे एकाकार भऽ गेल अछि।

हिनक रचना सभमे विशेष कए कवितामे देश प्रेमसँ उत्पन्न आत्मवेदना, साम्राज्यवादक भयंकर स्वरूपक विरूद्ध कान्ति, जनवादी परम्पराकेँ संगठित रूपसँ प्रकट करब समाजमे प्रचलित कला रूपकेँ अपनायब आ जनभाषाक सरस, सरल स्वरूप दिस झुकान देखैत छी। एतबे नहि हिनक रचनामे मार्क्सवादी प्रभाव देखबामे अबैत अछि, जाहिमे आर्थिक विषमता, समिष्टिक भावना, भावक गहराइ, पलायनवादी प्रवृत्तिक अभाव, समिष्टिक चेतनापर बल आ निम्न स्तरक जीवनपर प्रकाश भेटैत अछि।

ISSN 2229-547X VIDEHA

मिथिला मध्य यात्रीक परिचय एकटा फक्कर, घुमक्कर बाबाक रूपमे छनि मुदा इतिहासकारलोकनि मैथिली साहित्यक हिनक रचना आ ओकर भाषाकेँ परेखि करैत छथि। आधुनिक मैथिली साहित्य मध्य दूटा महामानव एहन छथि जनिक भाषा हुनक परिचय दऽ दैत अछि। ओहिमे एकटा छथि प्रो. हरिमोहन झा जनिका आँगुरपर भाषा नचैत छल तँ दोसर महामानव छथि वैद्यनाथ मिश्र यात्री जनिक प्रत्येक साहित्यक रचनाक भाषा हुनक परिचय स्वत: करा दैत अछि। एहि प्रसंग दुर्गानाथ झा श्रीशक अभिमत छनि :-

‘‘अभिव्यक्ति शैलीमे तँ ई कान्ति उपस्थित कऽ देल। मैथिली साहित्यमे हिनकहिटा भाषा यथार्थ रूपमे लोकभाषा थिक। मुदा अपन प्रतिभावक स्पर्शसँ ओ ग्राम्य भाषाकेँ साहित्यकता प्रदान कएल। हिनक रचनाकेँ जे सर्वाधिक मार्मिकता प्रदान करैत अछि से थिक यैह स्वाभाविक भाषाक प्रयोग ओ वक्रतापूर्ण कहबाक रीति जाहिमे व्यंगार्थ बेस चमकऽकारक होइत अछि।’’[2]

मैथिली साहित्यक प्रत्येक विद्वान यात्रीजीकेँ अपना-अपना ढंगसँ परिचय करबैत छथि। कियो हुनक भाषा-शैलीसँ तँ कियो सुच्चा ठेंठ बोलीक ठाठसँ। किछु विद्वान हुनका प्रगतिवादसँ चिन्हैत छथि तँ किछु यथार्थवादसँ। कियो घुम्कर-फक्कर झोड़ा ढंगने साहित्यकार बुझैत छथि तँ कियो मार्क्सवादी विचारधारक समर्थक। कतहुँ ई वौद्ध धर्मावलम्वीक रूपमे प्रख्यात छथि तँ कतहु सर्वहाराक हिमायती। एक ‘वैद्यनाथ मिश्र’कतोक उपनामसँ चर्चित परिचित छथि। कियो ‘यात्री’कहैत छनि तँ कियो ‘नागार्जुन’कियो ‘विद्याश्र्झी’कहैत छनि तँ कियो ‘वैदेह’, जखन कि मैथिली साहित्यक ख्यातिनामा विद्वान डॉ. जयकान्त मिश्र हिनक भाषा-शैलीकेँ पकड़ि हिनकासँ परिचित करबैत छथि :-

‘‘Trhe change in the cdoms of these poems is remarkable. The poet does not use Sanskriticed words and rise a colloquial style to the poetec level. Ingenions thought, epigrammatic and terse slyle, colloquial diction, utiparalleled speed and tempo and obserration Characterise these poems.’’[3]

यात्रीजीक जन्म स्थान :-

यात्रीजीक जन्म तिथि संदेहास्पद अछि। ओ स्वयं अपन जन्म तिथि 1911 ई.क ज्येष्ठ पुर्णिमाकेँ मानैत छथि तथा हुनक पुत्र सेहो हुनक जन्मक विष्ज्ञयमे उपर्युक्त तिथिएकेँ स्वीकार्य करैत छथि, मुदा किछु अन्य श्रोतसँ विद्वान लोकनि हिनक जन्म 30 जून 1911 ई. शुक्रदिन मानैत छथि। दुनू तिथि भिन्न-भिन्न भऽ जाइत अछि कारण जँ जज्येष्ठ पुर्णिमा 1911 ई.कें हुनक जन्म तिथि मानी तँ ई 11 जून रविदिन पड़ैत अछि। मुदा दुनू तर्कमे मात्र दिनक अन्तर होइत अछि वर्ष 1911 ई. तँ निश्चित अछि।

सन 1998 ई.मे राजकमल प्रकाशन नयी दिल्लीसँ प्रकाशित यात्री समग्रक अनुसार हिनक जन्म सन् 1911 ई.मे जेष्ठ पूणिमाक दिन दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे भेलनि। मुदा अन्य श्रोतक अनुसार उक्त तिथिकेँ यात्रीजीक जन्म हुनक मातृक मधुबनी जिलाक सतलखा गाममे भेल छलनि तथा तरौनी हुनक पैतृक गाम छलनि। हिनक पिताक नाम गोकुल मिश्र तथा माताक नाम उमा देवी छलनि। यात्रीजीक वचपनक नाम 'ठक्कनमिसर' छलनि।[4] गोकुल मिश्र आ उमा देवीकेँ चारि गोट सन्तान भेलन्हि आ चारू लगातार असमय कालकवलित भऽ गेलनि। एहिसँ गोकुल मिश्र अति निराशापूर्ण जीवन जीबैत छलाह। अशिक्षित व्राह्मण गोकुल मिश्र ईश्वरक प्रति आस्थावान तँ छलाहे तथापि दुखक एहि समयमे अपन आराध्य देव भगवान शंकरक पूजा किछु बेसीए करय लागल छलाह। ओ पुत्र लालसाक हेतु वैद्यनाथ धाम (देवघर) जा कए बाबा वैद्यनाथक ओ यथाशक्ति उपासना कएलन्हि आ बादमे अपन गाममे आबि सेहो पूजा पाठमे समय बितबय लगलाह।

बाबा वैद्यनाथक आशीर्वादसँ पाँचम सन्तान भेलन्हि।

व्यक्तित्वक परिचय :-

व्यक्तित्वकेँ अंग्रेजीमे 'Personality'कहल जाइत अछि जे लैटिन भाषक 'Persona'शब्दसँ बनैत अछि। 'Persona'शब्दक अर्थ लैटिन भाषामे होइत अछि 'मुखौटा'। ग्रीक कलाकार लोकनि रंगमंचपर अपन पहचान छुपेबाक हेतु 'मुखौटा'केर प्रयोग करैत छलाह। बादमे Persona शब्दक अर्थ बदलि गेल। मनुष्य दोसरकेँ केहन देखाइत अछि, एहि अर्थमे बादमे'Persona'शब्दक रूपान्तर 'Personality' अर्थात् व्यक्तित्वक रूपमे कएल जाए लागल।[5]व्यक्तित्व शब्द भाववाचक संज्ञा थिक। व्यक्तिक क्षेत्रमे जाहि गुण अथवा विशेषताक समावेश होइत अछि, ओ सभ व्यक्तित्वक अन्तर्गत अबैत अछि। कहबाक तात्पर्य जे कोनो व्यक्तिक महत्वपूर्ण विशेषता ओहि व्यक्तिक व्यक्तित्व कहबैत अछि। व्यक्तिक एहि प्रकारक विशेषता ओकरा सामान्यसँ पृथक करैत अछि। अर्थात् कोनो व्यक्तिक विशेषताक समुदाय ओकर व्यक्तित्व कहबैत अछि।[6]

मानक हिन्दी शब्दकोशक अनुसार व्यक्तित्व शब्द शब्दक युग्मसँ बनैत अछि, जकर अर्थ होइत अछि- व्यक्त हेबाक अवस्था वा भाव।[7] कोनो लोकक निज विशिष्ट क्षमता, गुण, प्रवृत्ति आदि जे ओकर उद्देश्य, कार्य, व्यवहार, आदिमे प्रकट होइत अछि आओर ओहिसँ ओहि लोकक सामाजिक रूवरूप स्थिर होइत अछि।

लोकक मनोभाव एवं विचार ओकर कार्य तथा वाचिक, आंगिक क्रियासभमे, हाव-भावमे प्रकट होइत अछि, लोकक मन सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेशसँ संस्कारित होइत अछि। ई संस्कार सेहो ओकर क्रियकलाप, हाव-भावमे अनायास व्यक्त होइत अछि। व्यक्तित्व लोकक अन्तर्निहित गुणमे प्रकाशित होइत अछि तथा ओकरा अभिव्यक्त करबाक क्षमतेकेँ व्यक्तित्व कहल जाइत अछि।

हिन्दी विश्वकोशमे व्यक्तित्वक अवधारणा एहि प्रकारे देल गेल अछि- ‘‘व्यक्तित्व शब्द कोनो व्यक्तिक उद्दीपक मूल्यक रूपमे प्रयोग कएल जाइत अछि।’’[8]एकर तात्पर्य ओहि सम्पूर्ण प्रभावसँ अछि जे एक व्यक्तिक दोसरपर पड़ैत अछि उद्दीपकक रूपमे क्रियाक प्रभाव सेहो सतत् पड़ैत अछि, जकर ओ अन्य व्यक्तिक बीच उपक्रम करैत अछि। ई परिणामात्मक शक्ति एकटा एहन परिवर्तन उत्पन्न करैत अछि जे ओकर अपन दोसर लोक आ परिस्थितिकेँ प्रभावित करैत अछि। दोसर अर्थमे ई कहल जा सकैछ जे लोक आत्म परीक्षण करैत अछि तथा वाह)य जीवन, संगठन, एकता आओर स्थिरता उत्पन्न कए कऽ अपन अन्तर्वैयक्तिक स्वभावमे अपन आत्म धारणाक विकास करैत अछि।

प्रत्येक रचनात्क व्यक्तिमे प्रतिभा महत्वपूर्ण होइत अछि। साहित्यिक कृतिसभमे साहित्यकार लोकनिक व्यक्तित्व प्रसंगत: किछु अंशमे अनायास प्रतिविम्बित होइत अछि। रचनाकारक अहमक संस्कार ओकर आत्माभिव्यक्तिक रूपमे व्यक्त होइत अछि। रचनाकारक ‘अहम्’समाजक सामूहिक अहमक संग तादात्म्य बना ओकर आनन्दक कारण कारण बनैत अछि। रचनाकारक व्यक्तित्व युग परिवेशसँ प्रभावित होइत अछि। उपर्युक्त सभ विवरणपर विमर्श कएलाक बाद ई कहल जा सकैछ जे दिव्य प्रतिभासँ उभरि कए कोनो साहित्यकारक व्यक्तित्व विकसित होइत अछि।

कोनो लोकक किछु वाह्य एवं आन्तरिक तत्वसँ व्यक्तित्वक निर्माण होइत अछि। एहि तत्व सभक विवेचन व्यक्तित्व निरूपणमे अन्तर्भूत होइछ। साहित्यकारक परिवार, परिवेश, स्वभाव प्रवत्तियुगीन वातारण जीवनमे भेटयबला अवसर, किछु लगती, किछु कमजोरी, चुकल अवसर किछु क्षमता, किछु सबलता, जीवनक मूल्य दृष्टि, आदर्शक प्रभाव आदि अनुभवसँ बनल दृष्टिकोणसँ साहित्यकारक मानवीय व्यक्तित्वक निर्माण होइत अछि। ई व्यक्तित्व समाज आओर साहित्यकारक दायित्वमे, प्रतिवद्ध ओ सजग भऽ एकटा साहित्यकारकेँ सर्जक व्यक्तित्वक निर्माण सेहो करैत अछि। संक्षे9मे साहित्यकारक निजी व्यक्तित्व हुनक व्यक्तित्वक सामंजस्यसँ बनल एकटा विलक्षण व्यक्तित्व होइत अछि। यात्रीक साहित्यपर विवेचन करबासँ पूर्व हुनक जीवन परिवचय करब आवश्यक अछि।

मनमे ई आशंका रहनि जे पूर्वक चारि सन्तानक भाँति इहो ने ठकि कए चलि जाए तँ पाँचम संतानकेँ सभ ‘ठक्कन’नामसँ पुकारय लागल। कतोक दिनक बाद एहि ठक्कन नामक बालकक नामकरण भेल आओर बाबा वैद्यनाथक कृपा प्रसाद मानि एहि बालकक नाम ‘बैद्यनाथ मिश्र’राखल गेल। यात्रीक नामे प्रसिद्ध भेलाह।

आगू चलि कए इएह बालक मैथिली साहित्य जगतमे यात्री, हिन्दीमे ‘नागार्जुन’, लेखकगण, मित्रमण्डली एवं राजनीतिमे ‘नागाबाबा’, संस्कृतमे ‘चाण्क्य’नामसँ प्रख्यात भेलाह। संगहि हिन्दी साहित्य जगतमे ‘आधुनिक कबीर’क नामे विभूषित कएल गेलाह।

ISSN 2229-547X VIDEHA

यात्रीक जन्म प्रसंग अद्यावधि निश्चित निर्धारण नहि भऽ सकल अछि। डॉ. जयकान्त मिश्र अपन पोथी The History of Maithili literature मे हिनक जन्म सन् 1908 ई. मानैत छथि। हिन्दी साहिय कोषमे हिनक जन्मक विषयमे 1910 ई. निर्धारित कएल गेल अछि। डॉ. प्रकाशचन्द्र भट्ट हिनक जन्म 1911 ई. मानैत छथि। डॉ. ज्ञानेश्वरदत्त हरित अपन शोध प्रबंध 'नागार्जुन व्यक्तित्व और कृतित्वमे सन् 1911 ई. जेठ (जून) मासक कोनो तिथि मानैत छथि।[9] डॉ. प्रभाकर माचवें जेठ पूर्णिमा सन् 1911 ई.[10]बाबू राम गुप्त नागार्जुनक नानीक अनुसार जेठ मासक कोनो दिन 1911 ई. हिनक जन्म मानैत छथि।[11] मिथिलाक विद्वान लोकनिमे बहुसंख्यक सेहो जेठ (जून) पूर्णिमा सन् 1911 ई. सहए हिनक जन्म तिथि निर्धारित कएलन्हि अछि।

यात्रीक जन्म निम्न मैथिल व्राह्मण परिवारमे भेल छलनि। हिनक जन्म स्थान मातृक 'सतलखा'हेबापर कतोक विद्वान मत भिन्नता रखैत छथि मुदा अधिकांश विद्वान व्राह्मण मधुबनी जिलाक 'सतलखा'कें स्थापित करैत छथि जे मिथिलाक एकटा भू खण्डक अंग अछि। हिनक पैतृक गाम तरौनी दरभंगा नगरसँ लगभग 13 कि.मी. दूरीपर स्थित अछि।

यात्रीक माता-पिता एवं वंश :-

वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क जन्म एकटा गरीब निर्धन परिवारमे भेल छलनि। हिनक पिताक नाम गोकुल मिश्र एवं माताक नाम उमा देवी छलनि। जखन यात्रीजी मात्र छह वर्षक छलाह तखनहि हिनक माताक देहान्त भऽ गेल छलनि। हिनक माता एकटा सुशील महिला आ अपन नैहरसँ सभ्रान्त परिवारसँ छलीह। कूल-मूलक दृष्टिऍं यात्रीक पैतृक पक्ष उच्च छल। मातृ विहीन छोट सन बालकक सम्पूर्ण पालन-पोषण एकटा एहन पिताक द्वारा भेल जे घुमक्कर, भंगेरी, लापरवाह, रूढ़िवादी गरीब अशिक्षित तथा कठोर स्वभावक व्यक्ति छलाह। हिनक पिताक मृत्यु सितम्बर 1943 मे काशीक मणि कर्णिका घाटपर भेल छलनि। माता-पिताक वात्सल्यसँ वचित बालक वैद्यनाथक शिशु मनपर पहिल छाप भरि जन्म अपन पिताकसँ अपमानित माए आ विधवा पतिअनिक दु:खक जीवनसँ पड़ल। जकर प्रभाव हिनक हिन्दीमे रचित उपन्यास- 'रति नाथ की चाची' तथा मैथिलीक दीर्घ कविता 'विधवा विलाव' मे देखल जाइत अछि।

यात्रीक माताक देहावसानक बाद पिता गोकुल नाथ यात्रीकेँ अपन कान्हपर बैसा कए गामे-गामे घुमबथिन। कारण हुनक वृत्त 'पुरहित-पाटी' (पुरोहित कर्म) छलनि। गोकुल मिश्र एकटा कठोर आ घुमक्कर स्वभावक व्यक्ति छलाह। एहि प्रकारेँ यात्रीजीकेँ वाल्यकालहिसँ विरासतमे 'यायावर'प्रवृति भेटल छलनि। उपर्युक्त वातावरण आ परिस्थितिसँ निकलल एकटा अबोध बालक माँ सरस्वतीक एहन बड़दपुत्र हैता से कियो

नहि जनैत छल। मुदा यथार्थ इएह थिक। ईहो बात सत्य जे यात्रीक बाल मन पर जे उचाट बैसल तकर दंश ओ भरि जीवन झेलैत रहलाह, तकर प्रतिबिम्ब हुनक प्राय: सभ रचनामे देखल जा सकैत अछि।

यात्रीजी अपन वचपनकेँ कहियो नहि जी सकलाह। एकटा मातृहीन बालकक सहारा पिता होइत अछि आ जखन ओ पिता आशिक्षित, अज्ञानी, मूर्ख, नशेरी हो तँ ओ कोमल नश्वछल बाल मनमकेँ कोना पढ़ि सकैछ। तँ यात्रीजीक व्यवहार बादोमे सामान्य लोकसँ भिन्न होयब स्वाभाविक छल। किम्वदन्ती आ जनश्रुतिक अनुसार 'गोकुल मिश्र'क विधवा भाभी आ कुलानन्द मिश्रक पत्नीसँ वैद्यनाथ मिश्रक अबैध संबंध छलनि।[12] मुदा उपर्युक्त तथ्य जे 'नागार्जुन मेरे बाबूजी'मे वर्णित अछि एकर अतिरिक्त हमरा अन्यत्र कतहु नहि भेटल अछि तँ एहि तथ्यकेँ हम पूर्णत: निराधार मानैत छी।

यात्रीकेँ वाल्यकालहिमे अपन भाए द्वारा ईमान्दारी, परिश्रम, साहस, समृद्धि दृढ़ चरित्र हेबाक शिक्षा सहजहि भेटि गेल छल। हुनक माएक व्यक्तित्वक ई गुण हुनक कतोक रचनाक नारी पात्र सभमे परिलक्षित होइत अछि। यथार्थमे यात्री एकटा कर्मशील चरित्रवान व्यक्तित्वक लोक छलाह ई कहबामे हमरा कनियोँ संकोच नहि होइत अछि।

यात्रीजीक वंश परिचय :-

यात्रीजीक पूर्वजलोकनि बिहारक दरभंगा जिलाक तरौनी गाम स्थित वत्स गोत्रीय मैथिली व्राह्मण छलाह। हिनक कुलक पलिवाड़ मसौल शाखासँ ई परिलक्षित होइत अछि जे करीब दू सौ वर्ष पूर्व हिनक पितामह छत्रमणि मिश्र 'मसौल'गामक निवासी छलाह। हिनक पिता गोकुल मिश्र तथा एहिसँ पूर्व तीन चारि पीढ़ीक पूर्वज लोकनि कम पढ़ल-लिखल छलाह। ओ लोकनि खेती-बारी करैत छला आ व्रितान पदाधिकारी लोकनिक देखभाल करैत छलाह। ओना हिनक पुर्वजमे वाचस्पति (अभिनव) आ रूचिपति आदि कतोक महामहोपाध्याय लोकनिक विवरण सेहो उपलब्ध अछि मुदा से साक्षात नहि भऽ गोत्रक शाखाक आधारपर अनुमानित अछि।

''महामहोपाध्याय परमेश्वर झा मिथिलांचलक रत्न छथि। गामक मध्यमे हुनक मकानक भग्नावेश अद्यावधि अवस्थित अछि। एहि गाममे करीब 250 घर आ आबादी लगभग 3500 अछि। उपजाऊ भूमिक रकबा गाममे बेसी नहि अछि। गामक आवादीमे उच्च वर्गक आवादीमे मात्र व्राह्मण लोकनि निवास करैत छथि। गैर व्राह्मणमे यदुवंशी यादव लोकनि रहैत छथि। तरौनी गाम विद्या द्वारा अर्जित बाहरी कमाइ पर अपन अस्तित्व बचा कए रखने अछि। तरौनीक गैर व्राह्मण सेहो आब महानगर दिस आकर्षित भेलाह अछि। व्राह्मण आ गैर व्राह्मण मिलाकए मात्र पाँच-सात गोट परिवार अन्वेषणक क्रममे हमरा दृष्टिगत भेल जे गरीब छथि। शेष लोक अपन गुजर-वसर नीक जकाँ करैत छथि। गामक निम्न वर्गक लोक तँ अपन श्रमशक्तिक बदौलत स्त्री-पुरुष ठीक-ठाक कमा लैत छथि मुदा उच्चवर्गक लोक उच्च ख्शिक्षा पएबाक कारणेँ श्रम कार्य करबासँ परहेज करैत

छथि। एकरा अपन प्रतिष्ठासँ जोड़ैत छथि। मैथिलीक एकटा कहाबत तरौनी गामक लेल सटीक वैसैत अछि- ''छूछ गौरव छूटाइन ढेकार''अर्थात् प्रतिष्ठाक कारण अपन विपन्नताकेँ नहि उजागर करबाक मजबूरी।[13]

यात्रीजीक पुत्र श्री शोभाकान्त अपन पोथी 'नागार्जुन मेरे बाबूजी'मे लिखैत छथि-

''हमर बाबा अर्थात् बाबूजी केर पिताजीकेँ अपन पूर्वजसँ पैतृत सम्पत्ति बेसी तँ नहि मुदा कामचलाऊ जरूर प्राप्त भेल छलनि।'' गोकुल मिश्रक पिताक नाम छत्रमणि मिश्र छलनि। छत्रमणि मिश्रकेँ तीन गोट पुत्र- परमानन्द मिश्र, कुलानन्द मिश्र आओर गोकुलानन्द मिश्र। हिनकालोकनिक मातृक सहरसा जिलाक महिसी गाममे छल। मातृकक संपति सेहो हिनका तीनू गोटाकेँ प्राप्त भेल छलनि। आँगनमे तीन भाग एक-एकटा घर एक-एक माईक हिस्सामे पड़ल छलनि। पूवरिया घर कुलानन्द मिश्रक हिस्सामे, उत्तरवला परमानन्द मिश्रक हिस्सामे आ दक्षिणवला गोकुलानन्दक जिम्मामे छलनि। घरक बनावट भीतक देवाल, वाँस-काठक ठाठ तथा खढ़ (फूस)सँ छारल छल। पछवरिया वासडीह खाली पड़ल छल। आँगनसँ पूब पोखरि पड़ैत छल जे अद्यावधि अवस्थित अछि। आँगनसँ दक्षिण एकटा बसविट्टी छल जकर क्षीण अवशेष अखनहुँ स्थित अछि। गोकुल मिश्रक समयेमे परमानन्द बाबूक परिवार मातृक 'महिसी'जा कए स्थायी रूपसँ बसि गेलाह आ हुनक उत्तराधिकारी लोकनि तरौनीक अपन हिस्सा बेचि कए एहि गामसँ सदाक लेल नाता तोड़ि गेलाह। शेष दुनू भाई मातृकक सम्पत्तिकेँ सेहो नहि राखि सकलाह।[14]

चौदहवी शताब्दी अर्थात् 1310 ई.मे मिथिलाक महाराज हरसिंह देव द्वारा जे पंजी प्रथा चलाओल गेल छल ओकर मूल पंजीक वंश वृक्षक आधारपर यात्रीजी 'वत्सगोत्रीय'पलिवार समौल मूलक निर्विवादित मैथिल वृह्मण छलाह। यात्रीजीक पुत्र शोभाकान्तक अनुसार यात्रीक प्रपितामहक नाम पारसमणि मिश्र छलनि तथा उक्त पोथीक आधारपर यात्रीजीकेँ छओ गोट संतान छलनि जाहिमे चारि गोट पुत्र- शोभाकान्त, सुकान्त, श्रीकान्त तथा श्यामाकान्त तथा दू पुत्री छलीह- उर्मिल आओर मंजू, मुदा उमेक्षा वृत्ति एवं निर्धनताक कारणेँ कोनो पुत्र अथवा पुत्री उच्च विद्याभूषित नहि भऽ सकलाह। ओना हिनक दोसर पुत्र सुकान्त 'सोम' मैथिली साहित्यक स्थापित कवि, कथाकार एवं पत्रकार छथि। हिनक एकटा प्रसिद्ध कविता संग्रह निज सम्वादाता द्वारा प्रकाशित अछि। वर्तमानमे सुकान्त सोम हिन्दीक प्रसिद्ध दैनिक अखबार हिन्दुस्तानमे स्थानीय सम्पादकक रूपमे कार्यरत छथि। उपलब्ध श्रोतक आधारपर यात्रीजीक वंशावली निम्न सारिणीमे द्रष्टव्य अछि-

पारसमणि मिश्र

(प्रपितामह)

छत्रमणि मिश्र

(पितामह)

परमानन्द मिश्र कुलानन्द मिश्र गोकुलानन्द मिश्र

(चाचा) (चाचा) (पिता)

शोभाकान्त सुकान्त श्रीकान्त श्यामाकान्त उर्मिल मंजू

(पुत्र) (पुत्र) (पुत्र) (पुत्र) (पुत्री) (पुत्री)

यात्रीक शिक्षा-दीक्षा :-

बालक बैद्यनाथक पिता श्री गोकुलानन्द मिश्र रूढ़िगत अनपढ़ व्राह्मण छलाह। ओ वैद्यनाथकेँ अंग्रेजी शिक्षासँ अलग राखय चाहैत छलाह। कारण ओ बुझैत छलाह जे अंग्रेजी पढ़निहार लोक 'क्रिश्चयन'बनि जाइत अछि।

वैद्यनाथ मिश्रक प्रारंभिक शिक्षा अपन मातृक सतलखासँ प्रारंभ होइत अछि। एकरा किछु दिन बाद हुनका तरौनी गामक पाठशालामे नामांकन कराओल गेल। एहिठाम हिनक संस्कृत शिक्षा भेटलनि। गनौलीसँ ई 'काव्यतीर्थ'क उपाधि ग्रहण कएने छथि। आगूक शिक्षाक लेल ई काशी तथा कलकत्ता गेलाह। हिनका समयमे संस्कृत शिक्षाक प्रचलन व्राह्मण परिवारमे छल। एकर प्रभाव यात्रीजीपर सेहो पड़लनि।

अपठित दीन-हीन रहलाक बादो यात्रीजी अपन प्रतिभा दृढ़ विश्वास आ संघर्षक उच्च शिक्षा अर्जित कएलनि। यात्रीजी घुमक्कर लोक छलाह तेँ मिथिलाक बाहर अन्य प्रान्त सभमे सेहो जाइत छलाह। जिज्ञासु प्रवृतिक स्वभाव रहबाक कारणेँ यात्रीजी जाहि-जाहि प्रान्तमे अपन भ्रमणक क्रममे जाइत छलाह ओहि प्रान्त सभक भाषापर अपन अधिकार जमा लैत छलाह। यात्रीजी वहुभाषाविद् छलाह।
संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, बंगला, पाली, मराठी, तिब्बती, सिन्धी, गुजराती, पंजाबी, तमिल, रूसी, चानी आदि भाषाक ज्ञाता छलाह।

यात्रीजीकेँ प्रारम्भमे तँ अंग्रेजी भाषाक ज्ञान नहि छलनि मुदा भ्रमणक क्रममे ओ काम चलाऊ अंग्रेजी सीखि लेलनि। यात्रीजी काशीमे रहि संस्कृत भाषाक गहन अध्ययन कएलनि। एहि प्रकारेँ यात्रीजी किछु दिन गाम किछु दिन मातृक सतलखा,किछु दिन कलकत्ता तथा किछु दिन काशीमे संस्कृत साहित्यक अध्ययन कएलनि। एकर बाद बौद्ध भिक्षु भऽगेलाह आ श्रीलंका चलि गेलाह।

यात्रीजी अपन 14 वर्षक उमेरमे संस्कृतसँ प्रथमा पास कएलनि। ओहि वरख तरौनीक प्रतिष्ठित विद्वान पण्डित अनिरूद्ध मिश्रक ध्यान हिनकापर पड़लनि। अनिरूद्ध बावू चारि-पाँच दिन धरि हिनक शिक्षा, बुद्धि आ प्रखरतापर ध्यान दैत रहलाह आ तकरा बाद हिनक पिंगल शिक्षाक गुढ़ता बुझवय लगलाह। किदु छन्दक

प्रारम्भिक ज्ञान, पुन: वाल्मीकि आ कालीदासक किछु-किछु प्रसिद्ध पोथी सभकेँ लऽ कए छन्दक सामान्य ज्ञान देलनि। पहिल ‘समस्या’ जे वैद्यनाथ मिश्र पूर्ति कएने छलाह से छल- बलानां दरोदनम् बलम्...।

संस्कृतसँ प्रथमाक बाद आगू पढ़बाक लेल बैद्यनाथ मिश्र जे अपन गाम-घर छोड़लनि आ आगू मुहेँ चलैत रहलाह तकर परिणति ‘यात्री’नामे देखार भेल। बैद्यनाथ मिश्रकेँ विद्यार्थी- वैदेह- यात्री वा नागार्जुन धरिक विशेषण लगबैमे 1925 ई.सँ 1937 ई. धरि पूरा एक युग यानी बारह वर्ष लागल रहन्हि। प्रथमाक बाद गणौली- पंचगछिया रहि तीन वर्षमे ‘मध्यमा’फेर पढ़ाइ अथवा आन किछु करी तकर इतह-तितहमे किछु मास आ अन्तत: पढ़बाक लेल काशी गेलाह। काशीमे प्रख्यात मैथिलीक कवि पण्डित सीताराम झा संस्कृत काव्य दिस झुकैत बैद्यनाथकेँ मैथिली आ हिन्छी कवि कर्म दिस घुमा देलथिन। कविवर सीताराम झा अपन प्रेरणा आ प्रशिक्षण दऽ संस्कृत आ हिन्दी-मैथिली काव्य शास्त्रक अन्तर आ अन्तरसंबंध नीक जकाँ परिछा देने रहथिन। जाहि समय भाषा-शिल्प-बिम्ब आदिक प्रयोगसँ वाक्य विन्यासमे चमत्कार अनबाक रहस्य सीखैत रहथि ओहि कालमे पण्डित बलदेब मिश्र बैद्यनाथकेँ सांस्कृतिक परम्पराक संग वर्तमानकेँ बुझबाक हेतु प्रेरित कैलथिन। दैनिक अखबार आ जनजीवनकेँ निकट जा कए देखबाक जिज्ञास ओहि समयसँ हिनका अन्दर जागृत होमय लागल। पण्डित अनिरूद्ध मिर, कविवर सीताराम झा आ पण्डित बलदेव मिश्र वैद्यनाथक जीवन निर्माणमे तीनटा सबल ईंटा जकाँ छथि जाहिपर पं. बैद्यनाथ मिश्र सन बहुभाषी विद्वान आ काव्य शास्त्र मर्मज्ञ, जनकवि नागार्जुन एवं युग पुरुष यात्रीक विशाल, विलक्षण तथा अविस्मरणीय व्यक्तित्त्व ठाए़ भेल आगू आबि कए।[15]

यात्रीजी संस्कृत भाषामे रूचि रहबाक कारणेँ प्रथमा, मध्यमा ओ ‘काव्यतीर्थ’क उपाधि प्राप्त कएने रहथि। काशीमे हिनका ज्योतिषाचार्य बलदेव मिश्र, त्रिलोचन झा, रायबहादुर श्रीनाथ मिर सन कतिपय विद्वानकसानिध्यमे रहि कऽ संस्कृत भाषाक गहन अध्ययन कएलनि।

एहि प्रकारेँ मनक अन्त: संघर्ष कतेको तनाव, पारिवारिक बोझ, आर्थिक तंगी आदिकेँ रहैत वैद्यनाथ मिश्र जे शिक्षा ग्रहण कएने छथि ओ अति दु:साहसु कार्य छल।

यात्रीक जीवन वृत एवं आजीविका :-

आधुनिक कालमे विशेष रूपेँ स्वातंप्योत्तर कालमे हिन्दी एवं मैथिली कथा-साहित्यमे यात्रीजीक विशिष्ट स्थान छनि। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्दक बाद हिन्दी साहित्य मध्य समाजक पीड़ित, शोषित, किसान, मजदूर वर्गक जीवनक चित्रण करयबला कथाकारमे नागार्जुन (यात्री)क नाम उल्लेखनीय अछि। हिनक कथा साहित्यमे सामाजिक अत्याचार आ प्रखर शोषणक चित्र प्रस्तुत कएल गेल अछि। प्रेमचन्दक समान यात्री सेहो उमेक्षितक पक्षधर छलाह। ई हिन्दी एवं मैथिलीक प्रखर कथाकार एवं जनवादी

चेतनाक कार्यवाहक छथि। हिनका कथाक केन्द्र-बिन्दुमे किसान-मजदूर, दबल-कुचलल गाम घरक लोक रहैत अछि तेँ ई अपन जनवादी चेतनाक अभिव्यक्तिमे मुख्य रूपेँ 'किसान, मजदूरद्व नारी समाज, दलित एवं निम्न वर्गक लोकक लेल आस्था रखैत छथि। यात्रीजीक समस्त साहित्य हिनक जीवनसँ अभिनन रूपेँ जुड़ल अछि। हिनक जीवनक कथा स्वयं केर अनुभव, विचार, समस्त मानवतासँ जुड़ि हुनक मने हुनक साहित्य थिक। यात्रीजी अपन युग आ समस्त भारतीय समाज राजनीति, धर्म, लोकतंत्र आ जनवाद आदिसँ सतत् जुड़ल रहलाह।

ओना तँ यात्रीजी कथाकारक रूपमे ख्याति पाओने छथि मुदा देखल जाए तँ ई मूलत: कवि छथि। हिनकामे कथाकार, उपन्यासकार, आलोचनक तथा एकटा सुधि चिन्तकक जकाँ अनेक विशेषता विद्यमान छलनि। अपन विशिष्ट शैली, जनवादी विचार, शोषित एवं पीड़ितक दु:ख-दर्दकेँ बुझयबला तथा शोषकक षडयंत्रकेँ उघारयबला निडर, निर्भीक साहित्यकार छथि। पीड़ित लोकसँ आत्मीयतारखबाक कारणेँ हिन्दी एवं मैथिली साहित्य मध्य हिनक एकटा विशिष्ट स्थान छनि। आधुनिक साहित्यकारलोकनि अपन युगीन विशेषता-घात-प्रतिघात, विकृति, विरोधाभाष, समस्या, जिज्ञासा विषमता आदिकेँ विभिन्न विधा सभमे अभिव्यक्त कएलन्हि अछि। यात्रीजी सेहो उपर्युक्त तथ्यसभकेँ अपन साहित्यमे उठेलन्हि अछि।

यात्रीजी बाल्यकालहिसँ एक स्थानसँ दोसर स्थानक यात्रा करैत छलाह। एहन लोकक जीवन यापन कोना होइत छैक ईहो एकटा बिडम्बने अछि। गुजर करबाक लेल कठिन परिश्रमक आवश्यकता होइत छैक, मुदा जे व्यक्ति उपनयन संस्कारक बाद अपन गाम-घर त्यागि पड़ा जाए, साधु बनि जाए, बौद्ध भिक्षु बनि जीवन-यापन करैत हो ओहेन व्यक्ति अपन जीवन-यापनक हेतु रोजगार कतए खोजत? जखन जीवनक बहुमूल्य समय नव-यौवनमे धन कमयबाक छल ताहि समय ओ कोलम्बो, तिब्बत आ वर्मामे घुमि-घुमि बितौलनि तखन रोजगार कतए भेटत।

हिनक जन्म मिथिलाक एकटा साधारण परिवारमे भेल छल। खेत-पथार ओहेन नहि रहनि जाहिसँ जीविका चलि सकए। पिता कोनो तरहेँ पोसि कए युवक बनौलकनि। मुदा हिनक तँ जन्म भेल छल साहित्य साधना करबाक लेल। तेँ ई अपन जीविकोपार्जनक साधन एकमात्र साहित्य साधना बुझलनि। आ एहि क्षेत्रमे एकसँ एक नवीन अध्याय जोड़ैत गेलाह।

ई बात सत्य जे भाग्यहीन होयबाक बादो जँ मनुष्य प्रतिभा सम्पन्न होइछ तँ ओकर विकास होयब निश्चित अछि। कोनो प्रकारक संकट किएक नहि हो, जँ लक्ष्य प्राप्त करबाक मनोभाव रहैछ तँ बेरा पार अवश्य लागि जाइत अछि।

सन 1932 ई.मे यात्रीजीक विवाह मिथिलांचलक सुदूर देहात मधुबनी जिलाक हरिपुर ढंगा गाममे अपराजिता देवीक संग भेलनि। दुई वर्षक बाद दुरागमन सेहो भऽ गेलनि मुदा एहन सन्यासीकेँ एहि समयमे

एकर आवश्कता नहि छल आ ओ पुन: अपन गाम घरकेँ छोड़ि पड़ा गेलाह। यात्रीकेँ कहियो धनक लालसा नहि छल। एकटा प्रश्न सभक मनमे उठैत अछि जे ओतेक प्रतिभा सम्पन्न यात्री छलाह तखन नोकरी किएक नहि भेलन्हि? मुदा एक सटीक उत्तर हुनक धर्म पत्नी अपराजिता देवी अपन एकटा साक्षात्कारमे एहि प्रकारेँ देने छथि-

‘‘हुनकर अपन खुशी जे नौकरी नहि कएल अंग्रेजक विरोध करैत छलाह। गाँधीक संग रहैत छलाह। चारि बेर जेल गेल छथि। सन्यासी भऽ गेलाह। सन्याससँ लौटलाक बादो गृहस्थी बसेबाक लेल ओ तैरूार नहि भेलाह। हमरा अन्न-पानि नैहरसँ आबि जाइत छल। किछु पाइ हुनक लिखल अखबारक रचनासँ आ किछु जेलक भत्तासँ अबैत छल। जाहिसँ हमर पारिवारिक गुजर-बसर कोनो तरहेँ चलैत छल।’’[16]

एहिसँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे यात्रीजी अपन आजीविकाक कोनो स्थायी नहि कऽ सकल छलाह। समय-समयपर अपन रचनाकेँ प्रकाशित भेलाक उपरान्त जे कठोर परिश्रमक कमाई होइत छल ओहिसँ पारिवारिक भरण-पोषण होइत छलनि।

मूलत: आजन्म यात्रीजीक जीविकाक एक मात्र साधन इएह रहलनि ओना शोभाकान्त एवं सुकान्त दुनू बेटा स्वयं कमासुत भऽ गेलाक बाद ओते कष्ट नहि रहलन्हि।

बादमे बिहार सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, बंगाल सरकार ओ अनेक संगठन पुरस्कार स्वरूप यात्रीजीकेँ अनेको बेर सहायता भेटलनि। जाहिसँ हिनक गुजर-वसर चलैत रहलन्हि। परिवारक बोझ हिनकापर नहि रहलन्हि संगहि कोनो तरहक लालसा सेहो नहि रहलनि। मुदा एकटा महान कथाकारक आर्थिक व्यथाक कथा हृदय अवश्यक विदीर्ण कऽ दैत अछि।

यात्रीक विभिन्न नाम एवं भिक्षु जीवन-

यात्रीजी तीन नामसँ साहित्य जगतमे सुविख्यात छथि। हिनक जन्म समय नाम पड़ल ‘ठक्कन’। एकरा बाद हिनक नामकरण कएल गेल वैद्यनाथ जे कौलिक उपनामक कारणेँ ‘वैद्यनाथ मिश्र’नामसँ प्रसिद्ध भेलाह। हिन्दी साहित्यमे नागार्जुन तथा मैथिली आ संस्कृत साहित्यमे ‘यात्री’क नामे परिचित छथि। अपन प्रतिभा एवं पढ़ाकू प्रवृत्तिक कारणेँ गामक लोक हिनका ‘विद्यार्थी’कहि सेहो सम्बोधित करैत छलाह। यात्रीक एकटा उपनाम ‘वैदेह’सेहो छनि।

पिता गोकुल मिश्र आ माता उमा देवीकेँ ‘यात्री’क जन्मसँ पूर्व चारिगोट संतान जन्म लैतहि काल कवलित भऽ गेल छलनि। दुनू मिश्र दम्पत्ति पुत्रक लेल अति चिन्तित रहैत छलाह। पुत्रक इच्छासँ दुनू

प्राणी 'बाबा वैद्यनाथ' (देवघर) मे जा हुनक पूजा-अर्चना अति भक्ति-भावसँ कएलनि। वैद्यनाथ बाबाक कृपासँ पुत्र जन्म लेलकनि।

मुदा मनमे आशंका छनि जे अन्ये पुत्र जकाँ ईहो ने ठकि कए चलि जाए। तेँ बालक यात्रीक जन्म होइतहि सभकियो हिनका 'ठक्कन'कहए लगलनि। चूमि वैद्यनाथ बाबाक आशीर्वाद स्वरूप हिनक जन्म भेल छलनि तेँ हुनकहि नामपर बादमे हिनक नाम 'वैद्यनाथ मिश्र'राखल गेल।

वैद्यनाथ मिश्र जखन मैथिली आ संस्कृतिमे साहित्य लेखन करैत छलाह तखन ओ 'यात्री'नामसँ लिखैत छलाह। चूमि हिनक जन्महिसँ हिनक कुल-परिवारक लोक प्रयाण कऽ जएबाक आशंकासँ चिन्तित छल, तेँ बादमे 'यात्री'क नामसँ कविता आ उपन्यास लिखय लगलाह। यात्रीजी एहि नामक प्रसंग स्वयं लिखैत छथि :- "ओना पहिल साहित्यिक नाम यात्री छल। संस्कृत आ मैथिलीमे 'यात्री'क नामसँ लिखि रहल छी। बहुत लोककेँ तेँ पतो नहि छनि जे यात्री आ नागार्जुन एके व्यक्ति अछि।"[17]यात्रीजी विभिन्न पत्र-पत्रिका सभमे लिखैत छलाह आ यात्री नामसँ लेखन करबासँ पूर्व वैद्यनाथ मिश्र 'वैदेह'नामे लिखैत छलाह।

हिनक नाम नागार्जुन कोना पड़ल ताहि प्रसंगयात्रीजी स्वयं लिखैत छथि :- "मैं राहुल जी के साथ यात्रा पर निकल गया... फिर हम लंका गये। वहाँ मैं बौद्ध भिक्षु हो गया। उसी स्थान पर मुझे नागार्जुन नाम दिया गया, जो चल रहा है।"[18]एहि प्रसंग बाबूराम गुप्तक कहब छनि जे- भारतक विभिन्न खेत्रक भ्रमण करैत नागार्जुन सन् 1936 ई.क अन्तमे सिंहल द्विप (श्रीलंका) चल गेल। ओतहि ओ गृहस्थ रूप छोड़ि 'चीवर' धारण कएलनि। ओहिठा ओ बौद्ध जगतक प्रख्यात, लंकाक प्रचीन विद्यापीठ- विद्यालंकार- परिवेणमे पहुँचि कए बौद्ध धर्ममे दीक्षा प्राप्त कए बौद्ध भिक्षु बनि गेलाह। ओ प्रख्यात बौद्ध तत्ववेताक दर्शनिक ग्रन्थ सभक अनुवाद करय चाहैत छलाह आ ओ वैद्यनाथ मिश्रक स्थानपर अपन नाम 'भिक्षुनागार्जुन' कऽ लेलनि।[19]

यात्रीजी जखन लंकासँ भारत अएलाह तँ रामवृक्ष बेनीपुरीजीसँ मिललनि। बेनीपुरीजी हुनका 'नागार्जुन'नामसँ लिखबाक सलाह देलखिन। यात्रीजी हुनक सलाह मानि हिन्दी साहित्यक लेखन नागार्जुनक नामसँ करय लगलाह। एही नामसँ हिन्दी जगत मे अपन पृथक स्थ्ज्ञान बना लेलनि। जखन वैद्यनाथ मिश्र संस्कृतमे लिखैत छलाह तँ ओहि समय 'चाणक्य'आ मैथिलीमे 'यात्री'नामसँ सुविध्यात भेलाह। एहि प्रकारेँ यात्रीक पृथक-पृथक नाम आ पृथक-पृथक नामसँ कएल गेल लेखन अद्यावधि उपलब्ध अछि।

विवाह एवं पारिवारिक जीवन :-

19 सम वर्षक आयुमे सन 1930 ई.मे यात्रीजीक विवाह अठारह वर्षीय अपराजिता देवीसँ भेलनि। यात्रीजीक मनमे सदैव अपन पत्नीक प्रति सहानुभूतिक भावना रहलनि, मुदा ययावरी जीवनक कारणेँ उचित स्नेह नहि दऽ सकलाह। सन् 1938 ई.सँ 1941 ई. धरि घर छोड़ि भ्रमण करैत रहलाह। एकरा बाद पुन:

गृहस्थीमे निमग्न रहलाह मुदा हिनक संबंधी एवं मित्रलोकनिक कहब छनि जे एहन गृहस्थीसँ संयासीए रहब उचित छल।

यात्रीजी घुमक्कर प्रवृत्तिक लोक छलाह। अपन पिताक प्रति तिरस्कारक भावना जे हिनका पिताक दुर्व्यवहार सन प्रवृतिक कारण उत्पन्न भेल छल, ज्ञान प्राप्तिक जिज्ञासा एवं पिताकेँ दण्डित करबाक उद्देश्यैँ ई घर त्यागि देने छलाह। मुदा पत्नीक प्रति हिनका सदैव स्नेह आ सहानुभूति रहैत छलनि।

यात्रीजीक सम्पूर्ण जीवन आर्थिक संघर्षक रहल ई हिनका विषयमे उपलब्ध जे कोनो ग्रन्थ अछि ओहिसँ स्पष्टत: प्रमाणित भऽ जाइत अछि। प्रारम्भमे जीवन निर्वाहक लेल 'बुढ़वर' 'विलाप' नामसँ आठ-आठ पेजक दू गोट पोथी छपबा कऽ स्वयं रेलगाड़ीक डिब्बामे घुमि-घुमि बेचैत छलाह आ एहिसँ उत्पन्न आयसँ अपन गृहस्थी चलबैत छलाह। यात्रीजी पिताक आग्रहपर किछु दिन लुधियानामे जैनमुनि उपाध्याय आत्मारामजीक साहित्य निर्मित काज हेतु नौकरी सेहो कएलनि मुदा वेतनभोगी बनब हिनका स्वीकार्य नहि छलनि तेँ नौकरी छोड़ि देलनि। ई भरि जीवन अपन साहित्य सृजनक प्रकाशनसँ प्राप्त रायल्टी एवं मिथिलाक देहातमे अल्पमात्रामे खेती-बारीक आयपर निर्भर रहलाह।

पिताक मृत्युक बाद यात्रीजी अनाथ भऽ गेलाह। पैतृक गामक घर-गृहस्थीक सभ भार पत्नी अपराजिताक ऊपर आबि गेलनि। अपराजिता देवी भू-स्वामी किसानक बेटी छलीह। भूमिक महत्व ओ बुझैत छलीह। हुनका शहरक वातावरण कथमपि रास नहि अबैत छलनि ओना यात्रीजीकेँ सेहो शहरक ताम-झाम पसिन्न नहि छलनि मुदा साहित्यिक कार्यक हेतु हुनका शहरसँ संबंध राखब आवश्यक बुझाइत छलनि। तेँ अपराजिता देवी ई निर्णय लेलनि जे ओ गामे धी कए रहतीह आ पतिकेँ (यात्रीकेँ) जतए जेबाक होनि ओ जाथु।

यात्रीजी अपन परिवारक भरण-पोषणक चिन्ता कहियो नहि केलनि। ओ सतत् भ्रमणशील रहलाह। एहि अभ्यंतर पत्नी अपराजिता देवी थोड़-बहुत खेत-पथार आ नैहरक बलेँ अपन बाल-बच्चाक उदर पोषण करैत रहलीह। मुदा एहि बातकेँ कथमपि नहि नकारल जा सकैछ जे हुनका घरक चिन्ता नहि रहैत छलनि। ओ अपन पत्नी आ धिया-पुताक उदरपोषणक हेतु सेहो सदिखन चिन्तित रहैत छलाह। एहि कारणेँ ओ अपन भ्रमणक क्रममे- पंजाब, हिमाचल, राजस्थान, कठियावाड़ सिंहल द्विप, जतए-जतए गेलाह ओहिठामक प्राकृतिक रूप, लोकजीवन साहित्य, भाषा, संस्कृति, धर्म आदि संबंधी ज्ञान प्राप्त कएलनि। सन् 1951 ई.मे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धामे ओ नौकरी कएलनि मुदा सेहो उपजिविका चलेबाक हेतु। कखनहुँ कविता गाबि कऽ बेचैत छलाह, कखनहुँ अनुवादकक रूपमे चाकरी कए कऽ साहित्य लेखन करैत छलाह। कखनहुँ अध्यापकक रूपमे। एहि विविध अस्थायी कार्य सभसँ जे किछु उपार्जन होइत छलनि ताहिसँ अपन खर्चक अतिरिक्त जे बँचैत छलनि ओ पत्नीकेँ पठा दैत छलथिन। यात्रीजीकेँ अपन पत्नी आ घरक चिन्ता सतत रहैत छलनि, मुख्य

रूपसँ आर्थिक संकटक। जकर प्रमाण 7 अगस्त 1976 ई.क लिखल हुनक निम्न पत्रमे दृष्टिगत होइछ जे ओ अपन पत्नीक नामे लिखने छथि-

c/o राजकमल प्रकाशन

8 फैज बजार दिल्ली- 6

7-8-76

सोस्ति सिरी अपराजिताजी,

निकेँ रहू। हम आइ भोरखन दिल्ली पहुँचल छी। एक मासक प्रोग्राम अछि। कृष्णाष्टमीसँ पूर्वें टाका अहाँकेँ पहुँचि जायत। बउआ झाकेँ कहबइक- पाँच टाका जमा कऽ कऽ नेहरावला बंक मे अपन खाता खुजबा लेत। हम ओकरे नामे ड्राफ पठा देबइक।

-ना.

बी- 3/113 जनकपुरी

नई दिल्ली- 58

स्वस्ति!

आइ टुनाइक चिट्ठी आयल अछि। ओ एहिठाम आबि रहल अछि। अही ठाम रहत- काज ओकरा भेटिए जेतइ।

बउआ झा कत'अछि? दयानाथ एको बेर आयल छथि की नहि? मंजुलियाक ननकिरबी निकेँ रहइ छइ की नहि? बेसी की लिखू? हमरा दम्मा परेशान कऽ देने छल। आब निकेँ भेल छी।

-ना.

उपर्युक्त दुनू पत्र हमरा बुझने प्रयाप्त अछि यात्रीजीक पारिवारिक पृष्ठभूमिक चित्रांकन करबाक हेतु। यथार्थमेमैथिली साहित्यक महामानव नागार्जुन आ मैथिली साहित्यक काव्य मनीषी यात्रीक एहि पत्रक कथामे जे व्यथाकेँ उकेड़ैत अछि ओ हृदयकेँ द्रवित कऽ दैत अछि। एतेक आर्थिक संकटसँ विपन्न लोक साहित्य सृजय कऽ सकैछ ई वर्त्तमान समयमे कोनो कल्पनासँ कम नहि। मुदा सत्य तँ इएह थिक। यात्री जे ने आर्थिक रूपेँ भरि जन्म संघर्ष करैत रहलाह वल्कि दर्दसँ सेहो जुझैत रहलाह जे दर्द हुनक उपर्युक्त पत्रमे दृष्टिगत होइत अछि।

यात्रीजी पंजाबमे 'दीपक' नामक मासिक पत्रिकाक सम्पादनक कार्य सेहो कएलनि। अपन पोथीक प्रकाशनक हेतु 'यात्री' नामक प्रकाशन सेहो खोललनि मुदा से अर्थाभावक कारणेँ बन्द भऽ गेल। गुजरातमे जैन

मुनि 'रामचन्द्र' सँ हिनका भेँट भेलनि जे आगू पढ़बाक आदेश देलकनि। हुनक आज्ञा मानि यात्रीजी 'प्राचीन भारतीय भाषा प्राकृत, पाली, अपभ्रंशआदि भाषाक अध्ययन कएलनि। ओ पाली भाषाक अध्ययन कएलन्हि जाहि क्रममे हुनका बुद्धक क्रान्तिकारी विचार अति प्रभावित कएलकनि। यात्रीजी श्रीलंकामे बौद्ध दर्शनक अध्ययन कएलनि आओर ओतहि 1936 ई.मे बौद्ध धर्मकँ स्वीकार कएलन्हि।

यात्रीजी अपन जीवन निर्वाह करबाक लेल किछु दिन अध्यापन कार्य सेहो कएलनि। सिंघल प्रान्तमे प्राचीन भाषाक अध्ययन सेहो कएलनि। श्री लंकामे हिनका वामपंथी पार्टी दिस झुकान भेलनि।

यात्रीजीकँ कुल छ: गोट संतान छनि जाहिमे चारि गोट पुत्र- शोभाकन्त, सुकान्त, श्रीकान्त, श्यामाकान्त तथा दू गोट पुत्री जनिक नाम छनि- उर्मिल आ मंजू। वर्त्तमानमे पुत्र 'सुकान्त''सुकान्त सोम'क माने मैथिली साहित्यमे प्रसिद्ध कथाकारक रूपमे ख्याति छथि मुदा अन्य सन्तान आर्थिक विपन्नताक कारणेँ ओतेक पढ़ि-लिखि नहि सकलाह।

यात्री प्रतिभा ओ व्यक्ति:-

जखन कोनो व्यक्तिक मरण भऽ जाइत छैक तखन ओकर व्यक्तित्वकँ संस्करणात्मक रूपमे संजोगि कऽ रखबाक प्रयोजन पड़ैत अछि। तेँ लोक अपन आत्मीय जनक संस्करण लिपिबद्ध कऽ लैत अछि। मैथिली साहित्य मध्य यात्रीजी अपन अप्रतिम प्रतिभा लऽ अवतीर्ण भेल छलाह। हुनक ई प्रतिभा अर्जित नहि नैसर्गिक छलनि। एकर उपयोग ओ अपन जीवनक विषम परिस्थितिमे करबामे पूर्णत: सफल रहलाह। एहि तथ्यक परिज्ञान समाजकँ हुनक मृत्युक पश्चात भेलैक।

ई बात एहिसँ स्पष्ट होइछ जखन यात्रीजी गीताक- ''स्वधर्मे निधनं श्रंय: परधर्मो भयावह:''क वचनक उल्लंघन कए-

''अहिवातक पालितल फोड़ि-फोड़ि

हम जाय रहल छी आन ठाम।''

लिखि नव विवाहिता पत्नीकँ त्रागि बौद्ध भिक्षु भए गेल रहथि। ओहि समय कर्मकाण्डक प्रतिष्ठा रखनिहार तरौनी गामक ब्राह्मण समाज हिनका मात्र कुल नहि, समाजोक हेतु कलंकित पुत्र मानने छलनि। मुदा अठासीम वर्ष पूर्ण कएलाक बाद हुनक मृत शरीरकँ पूर्ण तामझामक संग, पुष्पमाल्यसँ आच्छादित कएने बिहार सरकारक प्रशासन विभाग अन्त्येष्ठि हेतु तरौनी गाम पहुँचल तँ सम्पूर्ण मिथिलावासी अश्रुजलसँ तिलांजलि दैत श्मशान भूमिकँ दलमलित कए देलक, तखन ई कुल-कमल तरौनी गामक गौरव ओ मिथिलाक विभूतिक रूपमे वन्दित-

अभिनन्दित भेलाह। एहन सम्मान साहित्यकारक कोन कथा, राजपुरुषो लोकनिकेँ भेटब दुर्लभ अछि। ई सभ हुनक प्रकृति प्रदत्त प्रतिभेक प्रतिफल थिक।

यात्रीजी कोनो शास्त्रीय गम्भीर अध्ययन नहि कएलनि। कतहु अपन पांडित्यक प्रखर चमत्कार नहि देखौलनि। कोनो सिद्धान्त ग्रन्थ नहि लिखलनि। शोध कार्य कऽ कोनो नव तथ्यक उद्घाटन सेहो नहि कएलनि। मुदा जाहि नव-नव बाटपर अपन डेग उठौलनि तकर अन्तिम छोड़ धरि पहुँचि गेलाह। ई हुनक असीम प्रतिभाकेँ प्रदर्शित करैत अछि, कारण कोनो व्यक्तिक प्रतिभा व्यक्तिमे निहित रहितो व्यक्तित्वसँ पृथक अपन अस्तित्व रखैत अछि।

यात्रीजी विचारसँ यद्यपति घोर नास्तिक रहथि। जनउ-तनउकेँ ओ पाखण्ड मानैत छलाह। तथापि बौद्ध धर्मसँ पुन: सनातन धर्ममे अएबाक हेतु पुन: अपन उपनयन कएने रहथि। स्वाभावोक्ति हिनक रचनाक अलंकार थिक आ दैनन्दिन जीवनक प्रयोगमे अबैत ठेंठ शब्दावली शृंगार। पण्डिताम भाषासँ ई अपनाकेँ दूरे राखब श्रेयस्कर मानैत छलाह जाहि कारणेँ सामान्यो लोककेँ हिनक रचनाक आस्वादनसँ आनन्द भेटैत छलैक।

हिनक जनउ-तनउ प्रसंगकेँ पाखण्ड कहब उक्ति जे ऊपर वर्णित अछि तकर मूल प्रमाण पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क निम्नलिखित संस्मरणसँ भेटि जाइत अछि। एहि संस्मरणमे अमरजी लिखैत छथि-

''श्री सुमनजीक बालक श्री वृजेन्द्रजीक उपनयन छलनि। पं. सहदेव झा, कविवर सीताराम झा, मधुपजी, काशीनाथ ठाकुर 'कलेश'क संग हम पहिने वल्लीपुर पहुँचि गेल रही। स्नान जलपानादिसँ निवृत होइत करीब एक बाजल, देखैत छी घामे-पसीने तरबतर यात्रीजी धुरिअयले पैरेँ धम्म दए आबि बैसि गेलाह। कियो पंखा हौंकय लगलनि, क्यो पैर धोयबाले पानि अनलक। श्री सुमनजीक अनुज भूपेन्द्र बाबू कककरो शर्बत आनय कहि, हिनका पैर धोयबाक आग्रह करय लगलथिन। मुदा ने कुर्ता बाहर कएलनि ने पैर धोलनि। कहलथिन- हम राति समस्तीपुर मुसाफिर खानामे सूतल छलहुँ, भोरे उठि कए विदा भेलहुँ से एखन पहुँचलहु अछि, बड़ड भूख लागल अछि। भूपेन्द्र बाबू कहलथिन- पैर धो लेब तँ ठंढ़ा जायब। जलखै चूड़ा-दही, सोहारी-तरकारी, दुनूमक व्यवस्था छैक, जे इच्छा हो।यात्रीजी कहि उठलथिन- ने दही-चूड़ा, ने सोहारी-तरकारी, हम गूड़क संग चूड़ा फाँकब। घरबैया असमंजसमे, पाहुन पड़क चकित, ग्रामीण विस्मित, मुदा यात्रीजी जिद्दपर अड़ल रहलाह। जे बाजल छलाह सैह कएलनि। चूड़ा फाँकि शर्बत पीबि दीर्घ निसास लए हमरा कानमे कहलनि-

मामाजी, हम उपनयमे अयलहुँ अछि, मुदा जनउ नहि अछि, तकर जोगार धराउ। तँ कुर्ता नहि बाहर करैत छी, एहि घटनामे एक नाटकीयता सेहो छल।''[20]

यात्रीजी कविता, कथा, उपन्यास, रिपोर्ताज आदि सभ किछु लिखलनि, मुदा नाटक दिस दृष्टि नहि उठौलनि, परन्तु अपन क्रिया-कलापसँ सर्वग नाटकीयता बनौने रहैत छलाह। अलबटाह बगय-बानी, बाणी सेहो पूर्णत: स्फुट नहिए छलनि तथापि भाव-भंगिमा ओ कलममे तेहन चुम्बकत्व छलनि जे व्यक्तिकेँ आकृष्ट कए लेबाक अद्भुत क्षमता रखैत छलनि।

यात्रीजी गम्भीर व्यक्तित्वक लोक कखनहुँ नहि बुझाइत छलाह। जेहने भेष-भूषा तेहने स्वभाव। हँसी-चौल हिनक व्यक्तित्वक पर्याय बनल छल। तेँ लोक हिनका हल्लुक व्यक्ति मानैत छलाह। जकर प्रमाण अमरजीक एहि संस्मरणमे देखबामे अबैछ-

सुमनजीक बालकक उपनयमे जखन यात्रीजी बल्लीपुर गेल रहथि तँ ओहिठाम एकसँ एक महारथी लोकनि पहुँचल रहथि। बल्लीपुर ओहनहुँ जमीन्दारी ठाठ-बाठक लेल प्रसिद्ध छल। ओहि उपनयनमे कतोक प्रसिद्ध गायक सभ अपन गायन कऽ रहल छल। ओहिठाम राजदरभंगाक अनेक अधिकारी लोकनि जेना- पं. गिरीन्द्र मोहन मिश्र, दुर्गानन्द झा, प्रो. रमानाथ झा, आदिक काफिलसँ महफिल सजल छल। समावर्त्तन संस्कार चलि रहल छलैक। सम्पूर्ण आँगन गदमद भरल छल। एकटा गवैया शास्त्रीय, कोनो रागमे मूर्च्छानाक संग आलाप लेलनि। ओहि गम्भीर वातावरणक गम्भीरताकेँ भंग करैत यात्रीजी चिचिआइत उठि कए ठाढ़ भए गेलाह। सुमनजीक अनन्य सखा श्री नूनू बाबू दौड़ल लग जा पुछलथिन- 'की भेल?' यात्रीजी जोरसँ बाजि उठलाह- 'हमरा गाममे एकटा बकरी एहिना मेमिआइत-मेमिआइत मरि गेलैक।' से कहैत दलान दिस चल गेलाह।[21] उपस्थित जन समुदायमे व्याप्त विस्मय हास्यमे परिवर्तित भए गेल, किछु गोटेमे क्रोध तँ किछु गोटेमे खोभ सेहो परिलक्षित भेल। गायक लोकनि सेहो क्षुब्ध भऽ गेलाह। यात्रीजीक व्यक्तित्व एहने सदावहार छलनि।

यात्रीजीक नाम पिता रखलथिन 'ठक्कन' तँ हुनको हेतु अपन नामकेँ सार्थक कएलनि। अपने उपनाम रखलनि यात्री तँ तकरो सार्थक कएलनि। मात्र जे कियो नाम रखलथिन 'नागार्जुन' से नाम भने सभसँ बेसी प्रसिद्ध पौने होनि, मुदा ओकरा सार्थक नहि राखि सकलाह। तकर श्रेय हिनक धर्मपत्नी अपराजिता देवीकेँ छनि जे तरौनीक घराड़ीकेँ आजीवन सेवि कए धयने रहलीह। जाहि प्रसादेँ जाहि मिथिलाकेँ अन्तिम प्रणाम कए चल गेलाह, ताही मिथिलाक माटिमे हिनक शरीर पंचत्वमे विलीन भए सकलनि।

यात्रीक जीवनक संक्षिप्त यात्रा-

हिनक मूलनाम बैद्यनाथ मिश्र यात्री छलनि। जन्मक बाद पीसी द्वारा हिनक नाम 'ठक्कन' राखल गेल। साहित्यिक नामक रूपमे ई वैदेही, यात्री, नागार्जुन नामे ख्याति पाओलनि। पिताक नाम गोकुल मिश्र तथा माताक नाम उमा देवी छलनि। हिनक जेष्ट पूर्णिया 11 जून 1911 ई.केँ तरौनी, जिला दरभंगामे भेल छलनि

तथा मातृक मधुबनी जिलाक सतलखा गाममे भेल छलनि। यात्रीजीक विवाह अषाढ़ 1931 ई.मे श्री कृष्णकान्त झा उर्फ कंटीर बाबूक कन्या अपराजिता देवीक संग भेल छलनि तथा तकरा तीन वर्षक बाद सन 1934 ई.मे दुरागमन भेल छलनि। यात्रीजी जखन तिब्बतक यात्रापर छलाह तखन सन 1943 ई.मे हिनक पिताक देहान्त भेल छलनि। पत्नी अपराजिता देवीक अवसान 19 फरवरी 1997 ई.कें तथा हिनक देहावसान 5 नवम्बर, 1998 ई.कें भेलन्हि।

मातृहीन ठक्कन पाटी आ गबिसक संग गामक लोअर प्राइमरी स्कूलमे प्रवेश कएलनि। पिताक द्वारा अंग्रेजी माध्यमक विद्यालयमे प्रवेशसँ वर्जित राखल गेल। हिनका पुरोहित कर्म हेतु जीविकोपार्जनक योग्यता प्राप्त करबा लेल गामक टोल पाठशालामे प्रवेश कराओल गेल, जाहि ठामसँ ई प्रथमाक परीक्षा उत्तीर्ण कएलन्हि। संस्कृत विद्यालय गोनोलीसँ मध्यमा प्रथम वर्ष, पंचगछिया संस्कृत विद्यालयसँ शास्त्री प्रथ्ज्ञम खण्ड (1931), कलकत्ता गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज कलकत्तासँ शास्त्री (द्वितीय खण्ड, 1922) आ काव्य तीर्थक शिक्षा ग्रहण कएलन्हि।

यात्रीजीकें छओसँ बेसी भाषाक ज्ञान छलनि जाहिमे मैथिली, संस्कृत, हिन्दी, बंगला, प्राकृत, सिंहली आदि-आदि। यात्रीजी श्री लंकाक विद्यालंकार परिवेण मठसँ सन् 1937 ई.मे नायकपद आनन्दसँ दीक्षा लए 'नागार्जुन'बनलाह।

स्वामी के शवानन्दक अनुरोधपर साहित्य सदन, अवोहरक पत्रिका 'दीपक'क दू वर्ष सम्पादन कएलनि तथा लुधियानाक जैन मन्दिर (1941-42) धरि एवं हैदराबाद वर्त्तमानक पाकिस्तानक सिन्ध प्रान्तक सारस्वत ब्राह्मण पाठशालामे अध्यायन कएलनि। सिंध राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हैदराबादक मुखपत्र 'कौमी बोली'क संपादन सेहो किछु दिन कएलन्हि। भारतीय ज्ञानपीठ काशीमे 1945 ई.मे नौकरी सेहो पकड़लनि। एकर अतिरिक्त राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धामे किछु मास सन 1951 ई.मे नौकरी कएलनि।

यात्रीजी निरंतर पाठावस्थामे एक विद्यालयसँ दोसर विद्यालयमे यात्रा, एक स्थ्ज्ञानसँ दोसर स्थानक यात्रा, एक श्खहरसँ दोसर शहरक यात्रा करैत रहलाह। सन 1037 ईमे केलेनिया (श्रीलंका) विद्यालंकार परिवेण मठ, श्री लंकाक यात्रा, राहुल सांस्कृत्यायनक संग जून 1938 ई.मे अस्वस्थताक कारणेँ तिब्बतक अपूर्ण यात्रा, 1942-43 मे एकसरे थोलिंग महाविहार तिब्बतक यात्रा कएलनि। महाकवि यात्री मैथिली कविक रूपमे रूसक यात्रा अर्थात् जा धरि काया संग देलकनि ता धरि भरि जन्म निरंतर भ्रमणशील रहलाह।

सहजानन्द सरस्वतीक किसान आन्दोलनमे सक्रिय भेलाक कारणेँ 20 फरवरी 1930 ई.मे छपराक अमवारी जेलमे बन्दी बनाओल गेलाह। एहि क्रममे हजारीबाग आ भागलपुर जेलक यात्रा स्थानान्तरणक कारणेँ सेहो भेलनि। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीक हत्याक उपरान्त प्रकाशित कविता 'शोषिण तर्पण'क कारणेँ सन 1948

ई.मे सेहो जहल कटलनि। जे.पी. आन्दोलनमे 26 मार्च 1976 ई. के पटना हाइ कोर्टक आदेशपर आराक जेलसँ मुक्त भेलाह।

तरौनीक पण्डित अनिरूद्ध मिश्रक प्रेरणासँ वाल्यावस्थामे संस्कृतमे समस्या पूर्तिसँ काव्य यात्राक श्री गणेश कएलनि। काशी अएलापर कविवर सीताराम झाक सम्पर्क आ प्रेरणासँ मैथिलीमे रचना प्रारंभ कएलनि। हिनक पहिल रचना मैथिलीक पत्रिका 'मिथिला'मे सन् 1929 ई.मे प्रकाशित भेल। संस्कृत, मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, बंगला आदि भाषामे काव्यारंभ कएलनि। दरभंगाक महारानी लक्ष्मीवती द्वारा उदियमान बालकक हेतु स्थापित संस्था बालवर्धनी सभ तथा काशी द्वारा काव्य रचना हेतु यात्रीजी पुरस्कृत कएल गेलाह। एहि सभाक कर्त्ताधरता पण्डित बलदेव मिश्र छलाह। सन 1968 ई.मे पत्रहीन नग्न गाछ पर साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारती उत्तर प्रदेश, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान मध्यप्रदेश, राजेन्दशिखर सम्मान बिहार, राहुल सांकृत्यायन सम्मान, पश्चिम बंगाल, साहित्य अकादमीक महत्तर सदस्य 1994 ई.मे तथा चेतना समिति पटना द्वारा सन् 1977 ई.मे सम्मानित कएल गेलाह।

चेतना समितिक स्थापना, 18 जुलाई 1954 ई. कँ महाकवि यात्रीजीक प्रेरणा आ मार्गदर्शनक कारणेँ संभव भऽ सकल।

यात्रीक रचना संसार (कृतित्व)

कविशेखर ज्योतिरीश्वर- विद्यापतिसँ अविच्छिन्न रूपेँ प्रवाहित मैथिली काव्यधारामे महत्वपूर्ण मोड़ अननिहार कविलोकनिमे मनबोध, चन्दा झा, कविवर सीताराम झा प्रभृत कतोक महाकविलोकनिक नाम लेल जा सकैछ। मुदा ओकर गतिकेँ तीव्रतम कऽ ओकरा आधुनिक युगक कोनो अन्य समृद्ध भाषाक काव्य-प्रवाहक समानान्तर लऽ अनबाक श्रेय जाहि एक मात्र कविकेँ देल जाइछ, ओ छथि 'यात्री'क उपनासँ सुविध्यात 'श्री बैद्यनाथ मिश्र। यात्रीक प्रसंग डॉ. भीमनाथ झाक कथन छनि-

''हिन लेखनीसँ नि:सृत मैथिली कविता अपन ओहेन सुच्चा सुवाससँ वातावरणकेँ महमहा देलक जकर सुगन्ध लेबाक लेल दूर-दूरक लोक स्वत: आकृष्ट भऽ गेल। वस्तुत: आकृष्ट करऽवला हिनक विलक्षण व्यक्तित्वो अछि- अपन गाम-घरक भारसँ अपनाकेँ कात रखबाक चेष्टामे रत रहऽ बला फक्कड़ व्यक्तित्व; सतत भ्रमनशील, समाज संसरक रग-रंगकेँ परखऽबला पारखी व्यक्तित्व; रूढ़ि भंजक, श्रम-शक्तिक पूजक, व्यवस्थाक विद्रोही, नवीन पीढ़ीक प्रति आवेशी व्यक्तित्व। अपन जीवने जकाँ मैथिली कविताकेँ संकीर्ण छन्दक बन्धनसँ मुक्त कऽ सर्वहाराक प्रस्त बाटपर उन्मुक्त विचरण करबाक हेतु छोड़ि देलनि।''[22]

आधुनिक मैथिली साहित्यमे यात्रीजीक नाम अविस्मरणीय बनि गेल अछि। गद्य (उपन्यास) एवं पद्य (काव्य) दुनू क्षेत्रमे अपन रचनाक गुण-धर्म, ओजस्विता, जनगणमनक भावनाक सहज साधारणीकरण, भाषाक

भूगंध एवं जनसंदेदनाक मनोगंधक बलेँ मैथिली ओ हिन्दी दुनू साहित्य जगतमे यात्री ओ नागार्जुनक रूपमे चिरस्मरणीय बनल रहलाह।

बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'आ नागार्जुनक रूपमे अनेक विधामे रचना कएने छथि, मुदा उपन्यास ओ कविता हुनक प्रमुख ओ विशिष्ट क्षेत्र रहल अछि। बङला ओ संस्कृतमे तँ मात्र काव्ये रचना कएने छथि। एहू दुनूमे कविक रूपमे हिनक देखब विशेष रूपेँ उपयुक्त लगैत अछि। उपन्यास हो अथवा कविता दुनूमे ई जन सामान्यक पक्षधरताकेँ उजागर कएने छथि, विशेष शैलीमे विशेष प्रभावी ओ लोक प्रचलित भाषमे।

यात्रीक रचना :-

यात्रीजीक रचनाकाल करीब सत्तरि वर्ष रहल। एहि अवधिमे हिन्दीमे तँ हिनक कतोक पोथी प्रकाशित भेल मुदा मैथिलीमे गानि-गुथिकऽ मात्र पाँच गोट पोथी भेटैत अछि जाहिमे दू गोट कविता संग्रह आ तीन गोट उपन्यास छनि। मुदा मैथिली पत्र पत्रिकामे घनेरो आलेखादि हिनक छपल अछि।

यात्रीक अधिकांश रचना पूर्वेक लिखल छनि। जखन यात्रीजी हिन्दीमे लिखय लगलाह तँ मैथिलीक रचना कमि गेलनि। बादमे तँ प्राय: मैथिलीक रचना बन्दे भऽ गेलनि। तँ हिनक रचना पहिलुके पत्र-पत्रिकामे संचित अछि। पुरान पत्र-पत्रिका हमरा एहि शोध-क्रममे उपलब्ध नहि भऽ सकल तथापि जतबा धरि उपलब्ध भेल ताहिमेसँ बिछि-बिनि एहिठाम प्रस्तुत कऽ रहल छी। इहो सम्भव जे जाहि पत्र-पत्रिका सभक नाम एहिठाम हम उल्लेख कएल अछि ताहूमे सँ कतोक छुटि गेल हो। तँ एहि सूचीमे परिष्कार करबाक संभावना आ अपेक्षा मैथिलीक गम्भीर विद्वान लोकनिसँ सतत रहत।

यात्रीक मैथिली रचना :-

क्र.सं. पोथीक नाम विधा प्रकाशन वर्ष लेखकक नाम प्रकाशक

1. पारो उपन्यास 1946/1965 यात्री - ग्रन्थालय प्र. दरभंगा

2. नवतुरिया उपन्यास- 1954/1965 यात्री- विद्यापति प्रकाशन दरभंगा

3. बलचनमा- उपन्यास 1966/1965 यात्री मिथिला सांस्कृतिक परिषद कलकत्ता

4. चित्रा- कविता- 1949 यात्री तीरभुक्ति पब्लिकेशन प्रयाग

5. पत्रहीन नग्न गाछ- कविता 1967 यात्री मैथिली एकेडमी, इलाहाबाद

मैथिली पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित रचना-

1. कविता मिथिले! 1936 यात्री- मिथिला मिहिर, दरभंगा, मिथिलांक

2. एते दिनुका बाद- 25.09.1960- यात्री- मिथिला मिहिर साप्ताहिक, पटना

3. आधुनिक राधिका- 27.11.1960-यात्री- मिथिला मिहिर साप्ताहिक, पटना

4. देखल समपनामे- 11.08.1963-यात्री- मिथिला मिहिर साप्ताहिक, पटना

5. अन्तिम दर्शन (अमरनाथ झाक प्रति कविता)- 16.02.1964-यात्री- मिथिला मिहिर साप्ताहिक, पटना

6. दू टा रचना (नेहरुक महाप्रयाणक पश्चात)-28.06.1964, मिथिला मिहिर (सप्ताहिक) पटना

ठाम-ठाम, कनैत अछि गुलाब-28.06.1964, मिथिला मिहिर (सप्ताहिक) पटना

7. दू टा कविता- विहुँसै छी, सभागाछी-28.06.1964, मिथिला मिहिर (सप्ताहिक) पटना

8. ओम शान्ति: शान्ति: शान्ति: -08.11.1964, मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

9.दोहाइ हे लिबर्टी मैया- 19.12.1965, मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

10.आउ हे ऋतुराज- 13.03.1966,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

11.अहँ, अहँ- 03.04.1966,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

12.भेटल छल वरदान- 22.05.1966,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

13.युगक चमत्कार- 22.05.1966,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

14.कालिदास कविकुल गुरु- 17.12.1966,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

15.राज्य मंत्री भेला उत्तर- 01.04.1973,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

16.एम्हर जुनि अबै- 06.05.1973,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

17.हऽ आब भेल वर्षा- 15.07.1973,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

18.सुनल शब्द विमान परिचारिकाक- 12.08.1973,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

19.मामा आँखि मुनि लेलथि- 23.09.1973,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

20.वाह रे हमर नाति!- 28,10,1973,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

21.एहि घर पर बैसल रहय गिद्ध- 20.10.1974,मिथिला मिहिर (सप्ताहिक)

22.गाँधी- जनवरी, 1950, वैदेही (मासिक) दरभंगा

23.कोरिया- फरवरी 1951,वैदेही (मासिक) दरभंगा

24.गोठिबिछनी- विशेषांक साल 1358, वैदेही (मासिक) दरभंगा

25.मुक्तक- नवम्बर 1952, वैदेही (मासिक) दरभंगा

26.गाँधी- जनवरी 1852,वैदेही (मासिक) दरभंगा

27.अरूणोदय- फरवरी 1953, वैदेही (मासिक) दरभंगा

28.अन्हार जिनगी- मई 1953, वैदेही (मासिक) दरभंगा

29.या निशा सर्वभूतानाम्- जुलाई 1953,वैदेही (मासिक) दरभंगा

30.हम क्षुब्ध छी- मार्च 1954,वैदेही (मासिक) दरभंगा

31.दूटा गीत- (I)जय जय भारत! जय हिन्द भूमि- जनवरी 1955, वैदेही (मासिक) दरभंगा

(II) निखिल विश्व प्रिय निखिल भूमि प्रिय- जनवरी 1955,वैदेही (मासिक) दरभंगा

32.ओ तँ थिका दधीचिक हार- सितम्बर 1962,वैदेही (मासिक) दरभंगा

33.कोचिंग इन्स्टीच्यूट- सितम्बर 1958,वैदेही (मासिक) दरभंगा

34.जन्म भूमि- अंक 10, 1973,विभूति (मासिक) मुजफ्फरपुर

35. मिथिला-15.12.1952, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

36. युद्धगीत- 12.01.1953, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

37. नेहरु- 09.02.1953, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

38. नचारी (पुरान आ नवीन)-02.03.1952, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

39. चीन- 09.03.1953, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

40. हे अभागल देश- 16.03.1953, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

41. किसान- 30.03.1953, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

42. कोरिया- 13.04.1953, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

43. कांग्रेसी कनवासर- 18.05.1953, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

44. नेहरुक लंदन यात्रा- 01.06.1953, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

45.सिनुरिया आम- 18.06.1953, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

46.छठू बाबू- 15.06.1953, मिथिला (साप्ताहिक) दरभंगा

47.बाबाक विभूति-उदय- 1, किरण- 3, 1930, मिथिला मित्र

48.भगवान! हमर ई मिथिला सुख

शान्ति केर घर हो- 1932 मिथिला संदेश

ISSN 2229-547X VIDEHA

49.वन्दना- वर्ष- 1, अंक- 2, 1948- स्वदेश (मासिक) दरभंगा

50.गाँधी- वर्ष- 1, अंक- 2, 1948- स्वदेश (मासिक) दरभंगा

51.दीन बालिका- वर्ष- 1, अंक- 2, 1948- स्वदेश (मासिक) दरभंगा

52.सुग्गा मैना इन्स्टीच्यूट- 1954- चौपाड़ि

53.तीव्र विषाक्त विलक्षण गन्धी- 1954- चौपाड़ि

54.पुनि-पुनि पसरओ- जून 1956- पल्लव (मासिक) नेहरा

55.उपहार- जून 1956- पल्लव (मासिक) नेहरा

56.आहि रे कर्म!-अप्रैल 1968- मैथिली कविता (त्रैमासिक), कलकत्ता

57. स्वागत हे विलम्बित- वर्ष- 1, अंक- 6, 1969- सोना माटि (मासिक) पटना

58.हमहूँ संध्या तर्पण करितहुँ भोरमे- वर्ष- 7, अंक- 1, 1979- मिथिला भारती (द्विमासिक) पटना- अंक- 4, अप्रैल-मई 1981- मैथिली अकादमी पत्रिका (द्विमासिक) पटना

59.चारि कविता

1. तोहर तानी हमर भरनी-

2. हुनका लकबा मारलकइनि-

3. खूब चटइ जो...

4. मिनि मिथिला-

60.कविता तीन- 1. शनि महराज- अगस्त 1983- माटि-पानि (मासिक) पटना

2. बप्प रे बप्प-

3. हुजूर, हँ हजूर-

61.लिप्सा- दिसम्बर 1983, माटि-पानि (मासिक) पटना

62.जन्म भूमि- अगस्त-सितम्बर 1986, चिनगी (यात्री जयंती अंक) द्विमासिक, दरभंगा

63.बाबाक विभूति-अगस्त-सितम्बर 1986, चिनगी (यात्री जयन्ती अंक)

64.मुक्तक- अगस्त-सितम्बर 1986, चिनगी (यात्री जयन्ती अंक)

65.सुग्गा मैना इन्स्टीच्युट- अगस्त-सितम्बर 1986, चिनगी (यात्री जयन्ती अंक)

66.हुनका लकबा मारलकइन-अगस्त-सितम्बर 1986, चिनगी (यात्री जयन्ती अंक)

67.बाजलि सुखमा- अंक- 1, 1986- सन्निपात (अनियमितकालिक), पटना

68.यात्रीक किछु कविता-

1. अबितहिं, अही हमर स्वागत- अंक- 4, 1986- सन्निपात (अनियमितकालिक), पटना

2. नहि, नहि नहि किन्नहु नहि- अंक- 4, 1986- सन्निपात (अनियमितकालिक), पटना

3. मणिजी हमर झोरा नुका राखत-अंक- 4, 1986- सन्निपात (अनियमितकालिक), पटना

4. अन्तत: ओ अपनहि मूहेँ अरुणोदय-अंक- 4, 1986- सन्निपात (अनियमितकालिक), पटना

69.सिनुरिआ आम- अंक- 4, 1986- सन्निपात (अनियमितकालिक), पटना

70.कारी-कारी- जनवरी-अप्रैल 1987, कोसी कुसुम (द्विमासिक) सहरसा

71.रचू-रचू मधुरगीतम्- जनवरी-अप्रैल 1987- कोसी कुसुम (द्विमासिक) सहरसा

72.मैथिल के? वर्ष- 2, अंक- 1, 1987, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदपत्रिका, दरभंगा

73.दूटा कविता- शारदीय 1994, कर्णामृत (त्रैमासिक), कलकत्ता

1. पूर्वाभ्यास-

2. कुसियारक छाहरिमे-

74.हे हमर आद्य- नवम्बर 1982, आरंभ, पटना

75.चारिटा एम्हरुका कविता- जून, 1997, 1982, आरंभ, पटना

1. मोशहरिक भीतर/पौने नओ बजे राति-

2. शुरू वैशाखमे गामसँ

3. भकड़ार मोछवला पैंतालिस बर्खक-

4. तुलसी बाबा साथ रहइ तों-

76.अहाँ बड़ड फूसि बजइ छी- अंक- 4, अप्रैल 1994, संकल्प, सुपौल

77.जरदगब- 15.09.1953, मिथिला मिहिर

78.गप्पक फोड़न- दिसम्बर 1954, वैदेही, दरभंगा

रिपोजार्ज एवं शब्दचित्र :

79.बूढ़ बोको- जून 1950, वैदेही दरभंगा

ISSN 2229-547X VIDEHA

80.चारि अहोरात्रि आ एक दिन- जुलाई 1954, वैदेही दरभंगा

81.वैदेहीक नव रूप- जून 1871, वैदेही दरभंगा

निबंध-

82.मैथिल महासभा मैथिलत्वक- वर्ष- 1, अंक- 12, 1937, विभूति, मुजफ्फरपुर

83.पृथ्वे ते पात्रम्- सितम्बर 1954, वैदेही दरभंगा

84.प्रवासक संस्मरण- अप्रैल 1957, वैदेही दरभंगा

85.लेनिन आ भारतीय साहित्य- अंक- 2, 1986, सन्निपात

(मूल हिन्दी)

स्तम्भ-

86.यत्र-तत्र सर्वत्र- मई, 1957, वैदेही, दरभंगा

87.यत्र-तत्र सर्वत्र- जुलाई, 1957, वैदेही, दरभंगा

88.यत्र-तत्र सर्वत्र- अगस्त, 1957, वैदेही, दरभंगा

89.यत्र-तत्र सर्वत्र- अक्टूबर, 1957, वैदेही, दरभंगा

90.यत्र किंचित- जून, 1959, मिथिला दर्शन

91.चिन्तन अनुचिन्तन- जन.-फरवरी 1959, मिथिला दर्शन

92.ओना मासी धँ- 15 जनवरी, 1961, मिथिला मिहिर

93.ओना मासी धँ- 05 फरवरी, 1961, मिथिला मिहिर

साक्षात्कार-

94.अनौपचारिक साहित्य-वार्त्ता- 06 जुलाई 1975, मिथिला मिहिर

95.टेमी के दाग?-अप्रैल 1987,1987, (दोसर पक्ष)मिथिला मिहिर

96. मिथिला मैथिल विभूति : बाबा श्री

बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'- शारदीय अंक 1987, कर्णामृत, कलकत्ता

97.गप्प किछु हमर जबाब हुनकर- वर्ष- 1, अंक-2, नवम्बर 1993, अनुवाता

98.खिसिअयल व्यक्ति नहि लिखत- जून 1994, देस-कोस

अन्य-

99.शोक-श्रद्धांजलि (म.म. पं. मुरलीधर झाक प्रति)-वर्ष-1, अंक-9, साल- 1337, मिथिला

100.विभागीय सभापतिक भाषण : कविता विभाग- 1956, प्रथम अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन, दरभंगा

101.सम्पादकीय- जनवरी 1973, मिथिला दर्शन

102.यात्रीजीक पत्र ललितक नाम- 29 मई 1983, मिथिला मिहिर

103.विश्व सम्मानिक महाकवि विद्यापति- दिसम्बर 1985, हालचाल

104.संवेदना (मणिपद्म श्रद्धांजलि अंक) जुलाई-सितम्बर, 1986, कर्णामृत

105.यात्रीजीक एगारह पत्र किसुनजीक नाम- सितम्बर 1986, चिनगी

पोथीमे संग्रहीत रचना-

106.विद्यापति के देश मे-

(सं. जगन्नाथ प्रसाद, सुमन, अमर) मुक्तक- 1955, संकलन

107.मैथिली पद्य संग्रह-

(स. डॉ. उमेश मिश्र) 1. मिथिले, गोठबिछनी- 1962, संकलन

108.गलप सुधा- 1964, संकलन

(स. डॉ. अशर्फी झा, अमरेश आ श्री रमानन्द),

109.मैथिली साहित्य संग्रह- वंदना, कौसिकीक धार- 1964, संकलन

(पद्यांश- सं. रमानाथ झा)- इजोत-

110.कविता कुसुम- सम्पादक रमानाथ झा- 1964, संकलन

1. हम छी छुब्ध-

2. परमसत्यसँ-

3. हिमगिरक उत्तुंगमे-

111.मैथिली नवीन गीत- सं. रमानाथ झा- 1965, संकलन

1. भावना-

2. सिनुरिआ आम

3. अन्हार जिनगी-

4. आधुनिक राधिका-

5. देखल सपनामे-

112.मैथिली गद्य संग्रह, (तृतीय भाग)-1964, संकलन

(सं. रमानाथ झा, सुमन, ईशनाथ झा)

1. पृथ्वी ते पात्रम-

113.कविता कलाप- 1970, संकलन

1. केहन दिव्य- (सं. शंकर कुमार झा)-

114.कविता संग्रह- 1977, मैथिली अकादमी, पटना

(सं. प्रो. आनन्द मिश्र, आर.सी. प्रसाद सिंह, अमरजी)

1. कविक स्वप्न, 2. पितापुत्र संवाद

3. परम सत्य, 4. एहि घर पर बैसल रहय गिद्ध-

115.काव्य माधुरी- सं. प्रो. आनन्द मिश्र-1980, मैथिली अकादमी, पटना

1. माँ मिथिले, 2. अंतिम प्रणाम,

3. नव नचारी, 4. गोठिबिछनी-

116.मैथिली गद्य प्रसून- सं. बालगोविन्द झा व्यथित- 1980, मैथिली अकादमी, पटना

1. पितापुत्र संवाद

117.कथा कुंज- सं. प्रो. परमानन्द शास्त्री- 1986, मैथिली अकादमी, पटना

1. चारि अहोरात्रि एक दिन

118.पद्य तालिका- (सं. माहेश्वरी सिंह महेश- 1987, मैथिली अकादमी, पटना

तथा डॉ. प्रेमशंकर सिंह)

1. भावना, 2. आधुनिक राधिका,

3. नवतुरिआ आबओ आगाँ-

119.मैथिली कथा- काव्य संग्रह- 1991, मैथिली अकादमी, पटना

(सं. शिवशंकर झा कान्त, नवोनाथ झा)

1. विलाप-

120.कमलदह- सं. नवीन चन्द्र मिश्र, अमरनाथ झा- 1991, मैथिली अकादमी, पटना

1. भावना, 2. युगधर्म,

3. तारक गाछ, 4. अन्हार जिनगी

121.मैथिली कविता संग्रह नेपाल- 1990, मैथिली अकादमी, पटना

(सं. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर', धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

1. जगतारनि, 2. तीसीक तेल मध्य-

अभिनन्दन ग्रन्थ-

122.सारस्वत सरमे हे मराल- (श्री रमानाथ झा, अभिनन्दन ग्रन्थ)

123.गोविन्दाय नमो नम:-पं. गोविन्द झा अर्चा ओ चर्चा

(संस्कृत श्लोक)

पुस्तकक भूमिका इत्यादि-

124.कला (उपन्यास)-प्र. वर्ष- 1948, सम्प्रति

ले. चतुरारानन मिश्र

125.नक्षत्र (कविता संग्रह)- प्र. वर्ष- 1956, दुटप्पी

ले. श्री राम चरित पाण्डेय अनु.

126.अनेरे (कविता संग्रह)- प्र. वर्ष- 1993, भूमिका

ले. श्री हंसराज

127.सभसँ पैघ विजय (कथा संग्रह)- 1966, प्रस्तावना

ले. आशा मिश्र-

128. मोहन लड्डू (गीत संग्रह)-1947, दू आखर हमरो

ले. रूप नारायण मिश्र

नागार्जुनक नामसँ एकर अतिरिक्त यात्रीजी हिन्दीमे सेहो कतोक रचना कएलन्हि अछि जकर विवरण विधाक हिसाबें निम्नलिखित अछि-

उपन्यास : (हिन्दी)

1. रतिनाथ की चाची- नागार्जुन- द्वि. स. 1953, किताब महल, इलाहाबाद

2.वलचनमा (हिन्दी संस्करण)- नागार्जुन- द्वि. स. 1967, किताब महल, इलाहाबाद

3.दुखमोचन- नागार्जुन- चतुर्थ संस्करण, 1966, किताब महल, इलाहाबाद

4.वरूण के वेटे- नागार्जुन- चतुर्थ संस्करण, 1957, किताब महल, इलाहाबाद

5.बाबाबटेसर नाथ- नागार्जुन- चतुर्थ संस्करण, 1954, राजकमल प्रकाशन

6.कुम्भीपाक- नागार्जुन- चतुर्थ संस्करण, 1954, राजकमल प्रकाशन

7.चम्पा-

(कुम्भी पाकक संक्षिप्त संस्करण)- नागार्जुन- चतुर्थ संस्करण, 1954, जी.टी. रोड, शहादरा

8.उग्रतारा-नागार्जुन- तृ. संस्करण, 1970, राजपाल एण्ड सन्स

9.हीरक जयन्ती- यात्री, 1962, आत्माराम एण्ड सन्स

10.इमरतिया- यात्री, 1968, आत्माराम एण्ड सन्स

11.नई पौध- यात्री, 1953, आत्माराम एण्ड सन्स

काव्य रचना- (हिन्दी)

12.युगधारा- नागार्जुन, 1953, जनसेवा प्रकाशन

13.सतरंगे पंखोंवाली- नागार्जुन, 1959, यात्री प्रकाशन, कलकत्ता

14.प्यासी पथराई- नागार्जुन, 1962, यात्री प्रकाशन, कलकत्ता

15.खून और सोले- नागार्जुन, 1962, यात्री प्रकाशन, कलकत्ता

16.प्रेत का बयान- नागार्जुन, 1962, यतीन प्रेम, पटना

ISSN 2229-547X VIDEHA

17.चना जोर गरम- नागार्जुन, 1952, हंस- कार्यालय, इलाहाबाद

18.शपथ- नागार्जुन, 1952, हंस- कार्यालय, इलाहाबाद

19.अब तो बन्द करो हे देवी यह चुनाव का प्रहसन- नागार्जुन, 1952, ब्रजदुलार स्ट्रीट, कलकत्ता

20.भस्माकर- नागार्जुन, 1972, राजकमल प्रकाशन

21.तालाब की मछलियाँ- नागार्जुन, 1974, अनामिका प्रकाशन

(एहि संग्रहमे- युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली,

प्यासी पथराई आँखें काव्य संग्रहक बीछल

चुनल कथा सभ संग्रहीत अछि)

बाल साहित्य- (हिन्दी)

22.वीर विक्रम- नागार्जुन, पुस्तक भंडार, पटना

23.तुकों का खेल- नागार्जुन, बाल सखा, पटना

24.नदी बोल उठी- नागार्जुन, ऐजन

25.वानर कुमारी- नागार्जुन, ऐजन

26.प्रेमचन्द्र की जीवनी- नागार्जुन, ऐजन

निबंध- हिन्दी-

27. एक व्यक्ति एक युग- नागार्जुन, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद

उपयुक्त तालिकामे सहजहि देखल जा सकैछ जे मैथिली साहित्यमे 'यात्री'जीक तीन गोट उपन्यास, दू गोट कविता पाँच गोट साक्षात्कार, एक सौसँ बेसी विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित रचना, (कविता, आलेखादि) आदि अछि। एकर अतिरिक्त मैथिलीक विभिन्न पोथी सभमे जेना- मैथिली पद्य संग्रह, गल्प सुधा, कविता कुसुम मैथिली गद्य संग्रह, मैथिली नवीन गीत, कविता संग्रह, कविता कलाप, काव्य माधुरी, मैथिली गद्य प्रसून कथा कुंज, पद्य तालिका, मैथिली कथा कमलदह आदिमे हिनक रचना संग्रहीत अछि। यात्रीजीक रचना सभ अभिनन्दन ग्रन्थ, विभिन्न पोथी सभक भूमिका, पत्र-पत्रिका सभमे स्तम्भ लेखनक रूपमे सेहो भेटैत अछि। अहिना हिन्दी साहित्यमे सेहो उपन्यास, काव्य, वाल साहित्य, निवंध एवं अन्यान्य विधापर हिनक लेखनी चलल

अछि। हिनक विविध प्रकारक रचना देखलासँ ई स्वयं परिभाषित भऽ जाइत अछि जे यात्रीजी वहुमुखी प्रतिभाक धनी छलाह।

यात्रीक रचनाक विश्लेषण :-

'यात्री'आ 'नागार्जुन'ओना तँ दू रूपमे रचना कएने छथि, मुदा उपन्यास ओ कविता हुनक प्रमुख ओ विशिष्ट क्षेत्र रहल अछि। बाङला आ संस्कृतमे तँ मात्र काव्ये रचना कएने छथि मुदा एहू दुनूमे कविक रूपमे हिनक देखब विशेष रूपेँ उपयुक्त लगैत अछि। उपन्यास हो अथवा कविता दुनूमे ई जन सामान्यक पक्षधरताकेँ उजागर कएने छथि। हिनक रचना विशेष शैलीमे विशेष प्रभावी ओ लोक प्रचलित भाषामे देखल जा सकैछ।

मैथिलीमे हिनक तीन गोट उपन्यास आ दू गोट कविता संग्रह प्रकाशित अछि जे क्रमश: एहि प्रकारेँ- पारो (1946), चित्रा (1949), नवतुरिया (1954), बलचनमा (1966)आ पत्रहीन नग्न गाछ (1967)। एकर अतिरिक्त यात्री समग्रमे करीब 80 गोट कविता संकलित अछि। हिनक आधा दर्जन कथा, तीन गोट स्तम्भ लेखन सेहो संकलित अछि। एहिसँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे हिनक रचना विधा कतेक व्यापक छल।

यात्रीक प्रथम उपन्यास 1946मे प्रकाशित भेल। ता धरि भारत वर्ष स्वतंत्र नहि भेल छल। अवस्था आकर्षक छलनि। ओ समय राजनीतिक ओ सामाजिक रूपसँ संघर्षक समय छल। ओहिसँ पहिलुक शताब्दीमे विश्वक क्षितिजपर पव राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक चेतनाक उदय भए चुकल छल। पूँजीवादी अवधरणाकेँ ध्वस्त करबाक उद्देश्यसँ मार्क्सवादी दर्शनक प्रभाव सम्पूर्ण विश्वमे परिव्याप्त भऽ रहल छल। एकरा अन्तर्गत शासक ओ शासित, पूँजीपति ओ सर्वहारा आदिक अवधरणा ओ शब्दावली प्रचलित-व्यवहृत भऽ गेल छल। भारतवर्षमे राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती आदि नवीन विचारक ध्वजवाहक बनि उभरि चुकल छलाह तथा सामाजिक चिन्तन संबंधी हुनकलोकनिक अवधारणा प्रभाव देखायब प्रारंभ कऽ देने छल। सम्पूर्ण देशमे द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद अथवा सामाजिक यथार्थवादक अवधारणा पसरि गेल छल। भारतीय स्वतंत्रता संग्राममे राष्ट्रीय अवधारणाक संगहि समाजवादी विचारधारा संग-संग चलि रहल छल। भारत वर्षमे किसान आन्दोलन सेहो सक्रियता देखा रहल छल। एहि वैश्विक एवं भारतीय चिन्तन ओ क्रियाशीलताक प्रवाहपूर्ण युगमे यात्रीजी साहित्य जगतमे नव चिन्तन-नव विचारधाराक संग पदार्पण कएलनि। हिनक उपन्यास पर दृष्टिपात कएलासँ स्पष्ट होइत अछि जे तीनू उपन्यासमे तीन विषय अछि।

'पारो'उपन्सासमे वयसमे अनमेल विवाह जन्य सामाजिक समस्याक मनोवैज्ञानिक पक्षक उद्घाटनक दिशामे सांकेतिक डेग मात्र उठाओल गेल अछि, मुदा मैथिली जगतमे इएह डेग आधुनिक ओ प्रगतिशीलताक दृष्टिसँ साहसिक डेग छल, कारण अद्यावधि वर्जित क्षेत्र यौन-आकर्षणक वर्णन-चित्रण करबाक साहस कएल गेल जकर दूरगामी प्रभाव समकालीन आ परवर्ती साहित्यपर पड़ल।

ISSN 2229-547X VIDEHA

हिनक 'नवतुरिया' (1954) उपन्यासक कथानक सेहो वैवाहिक समस्यापर आधारित अछि मुदा ई 'पारो (1946) सँ दू डेग आगाँ बढ़ि कए अछि। एहि उपन्यासमे तत्कालीन समाजक गतिविधि सेहो स्थान पाओलक अछि। नवीन विचार, क्रियाशीलता, प्राचीन-नवीनक संघर्षकेँ सेहो एहिमे समेटबाक प्रयास भेल अछि। एहिमे समाधानक दिशा संकेत, नारी जागरणक संग नारी शक्तिक आवाहन ओ सहभागिताक संदेश देल गेल अछि। नवयुवक वर्गक आगाँ अएबाक कथावस्तु एहिमे लेल गेल अछि। वैवाहिक समस्यासँ संबंधित रहितहु एहि उपन्यासमे नवोन्मेषकेँ प्रश्रय देल गेल अछि।

यात्रीजीक मैथिलीक तेसर उपन्यास थिक 'बलचनमा' (1966)। एहि उपन्यासक हिन्दी संस्करण पहिने प्रकाशित भेल छल आ एकर हिन्दी मूल सन 1966 ई.मे प्रकाशित भेल। एहिमे हिनक 'पारो'आ 'नवतुरिया'सँ भिन्न कथावस्तु राखल गेल अछि। एहिमे हिनक 'पारो'आ 'नवतुरिया'सँ भिन्न कथावस्तु राखल गेल अछि। एहिमे किसान आन्दोलन, फलीभूत भावना, जागरूकता, धनवानक उत्पीड़न आ निर्धन पीड़ित अवस्था-भावनाकेँ प्रश्रय देल गेल अछि। अर्थात् धनवान-निर्धनक संघर्ष, भूमिक प्रति धरती पुत्रक मोह ममत्व आदि समाविष्ट कएल गेल अछि। स्वातंत्रयोत्तर कालक परिवर्तित होइत समाजमे दलित जागरणक संदेश सेहो एहिमे नीक जकाँ कएल गेल अछि।

प्रगतिशील, यथार्थवादी अथवा नवीनताक मूलमे नवीन अवधारणा सामाजिक भावात्मक स्तरपर फ्राइडक धारणा-वासना अथवा यौन भावना ई दुनू अवधारणा मुख्य रूपेँ सक्रिय रहल अछि। एकरा रचनाकारलोकनि अपन कौशल ओ क्षमतासँ विभिन्न रूप दैत रहलाह अछि। यात्री सेहो ओहि कोटिमे राखल जा सकैत छथि किन्तु कथावस्तु एवं अभिव्यक्ति शिल्पक क्षेत्रमे ई ओहि दुनूसँ आगाँ बढ़ि जाइत छथि। स्थानीय वैशिष्टकेँ समाहित करैत नवीनताक वरण हिनक साहित्यिक गरिमाक श्रीवृद्धिमे आधारभूमिक काज करैत अछि। 'पारो'मे जतए फ्रायडीय अवधारणाक अनुसार समवयस्क 'नारी-पुरुष'क परस्पर आकर्षण भावनाकेँ स्थान भेटल अछि तँ 'नवतुरिया'मे नवजागरणक समाज सुधारक विषमता विनासक युवाशक्तिक अवतरण ओ सक्रिय नेतृत्व क्षमताक संकेत दैत मार्ग प्रशस्त करैत अछि। वास्तवमे तीनू उपन्यास स्वतंत्रता कालक पूर्ववर्ती ओ निकटवर्ती कालक परिस्थिति भाव ओ सेघर्षक क्रियाशीलताकेँ कथावस्तुक आधार बनौलक अछि। पारो ओ नवतुरिया दुनूमे नारीकेँ प्रधानता दए तानी-भरनी बुनल गेल अछि जाहिमे यथार्थक विद्रुप स्वाभाविकताक संग स्थान पाबि सकल अछि। ओना बलचमामे सेहो बलचनमाक बहिनकेँ सेहो एही अवधारणासँ देखल जा सकैछ। तीनू उपन्यासमे चरित्रकेँ नीक जकाँ ठाए कएल गेल अछि। शैलीक दृष्टिएँ पारोमे प्रथम पुरुषमे कथा कहल गेल अछि- विरजू द्वारा। एहिमे चरित्र चिन्तनरत अछि। पारो एवं विरजू दुनूक मनोगत भाव देखाओल गेल अछि। कुण्ठा किंवा क्रानि दुनू पात्रक मनोगते रहैत अछि वाह्य वा प्रकट रूपमे नहि। नवतुरियामे उपन्यासकार घटित घटनाक चित्रण करैत छथि। पात्रक संख्या आ घटनाक क्रियाशीलताक मात्र

ओहिमे रहैछ। बलचनमामे तँ आओरो अधिक गतिविधि गामसँ शहर धरि पहुँचैत अछि। धनिक निर्धनक चित्र अछि उत्पीड़न, संघर्ष, भूमि सम्बन्धी अथवा ग्राम्य जीवन, राजनीतिक चेतना आदिक समावेश 'बलचनमा'क कथा वस्तुकेँ विस्तार दैत अछि।

शिल्पक दृष्टिऍं पारोमे वर्तालाप पद्धति अपनाओल गेल अछि। मुदा नवतुरिया ओ 'बलचनमा'मे वर्णनात्मक घटनाक चित्रण पद्धति अपनाओल गेल अछि।

'नवतुरिया'मे नवीन समाजिक चेतनाक अनुकूल 'गरम दल'क चर्चा अछि जाहिमे अनेक नवयुवक माहे, बुलो, गोनउरा, टुनाई आदिकेँ स्थान दऽ साहसी परिवर्तनक आकांक्षी युवा वर्गकेँ ठाढ़ कए नव संदेश देल गेल अछि। तहिना परम्परापोषंक ओ रूढ़िवादीलोकनिक रूपमे खोखाइ झा, मुखिया, चौधरी, मुटकी मिश्र फतूरी काका आदि नारी नवतुरिआक चरित्र सेहो ठाढ़ कए सकत। संघर्ष ओ परिवर्तनक भावकेँ विश्वसनीयता प्रदान कएल गेल अछि। केन्द्रीय समस्याक समाधान हेतु अपनहि बीचसँ उपयुक्त बरक रूपमे वाचस्पतिकेँ ठाढ़ कएल गेल अछि। एहि प्रकारेँ कोकनल रूढ़िभंजन ओ सामाजिक पुनर्निमाणक दृष्टान्त बनल नवतुरिया।

सहज, सरल फड़कैत भाषाक प्रयोग यात्रीजीक सभ उपन्यासमे बेछप अछि। वातावरणक अनुकूल ठेँठ शब्दावली, तत्सम, तद्भव देशी-विदेशी, विदेशीक ग्राम्य प्रयोग पात्र ओ परिस्थिति अनुसारेँ सटीक रूपेँ करब यात्रीक उपन्यासक वैशिष्ट्य थिक।

उपन्यासे जकाँ यात्रीक कविता सभमे सेहो समाजिक यथार्थवादकेँ प्रमुखतासँ स्थान देल गेल अछि। हिनक प्रथम काव्य संग्रह 'चित्रा'मे 1931 सँ 1949 धरिक चुनल कविताकेँ राखल गेल अछि। प्रत्येक कविता अपन पृथक वैशिष्टसँ युक्त अछि। जेना विलापमे सामाजिक कुप्रथा ओ नारी नैराश्यकेँ उजागर कएल गेल अछि। 'कविक स्वप्न'मे प्रगतिवादी उद्देश्यक घोषणा कएल गेल अछि। 'अन्तरात्माक भाव'हिमगिरिक उत्संगमे सिनुरिया आम आदिमे संस्कार संस्कृति, मिथिला मातृभूमि सभ भावक कविता एहिमे स्थान पओलक अछि।

तहिना 1967 ई.मे प्रकाशित आ 1968 ई.मे साहित्य अकादमी दिल्लीसँ पुरस्कृत कविता संग्रह 'पत्रहीन नग्न गाछ'मे पारंपरिक सामाजिक यथार्थतासँ परिपूर्ण, प्रतीक पूर्ण, प्रयोगपूर्ण ओ वक्रोक्तिपूर्ण आधुनिक वातावरण नव्यतम स्वरूपमे विद्यमान अछि। एहिमे नव नचारी, अन्हार जिनगी, नवतुरिए आबओ आगाँ, आधुनिक राधिका आदिक संगहि प्रकृति वर्णनसँ युक्त माघ, फागुन, चैत, वैशाख, अषाढ़, साओन, मेघवर्णन आदि कविता अछि।

हिनक काव्यमे मानवीयताक रचनात्मक प्रीतिरोध सर्वस्पर्शीय संदेवदना, एकरे परिधिमे, सामाजिक कुरीति, एहि जालमि फँसल, पछुआएल अपेक्षित नारी ओ दलित समाज तथा नव युगक संदेशवाहक, नवयुवकक पक्षधरता नीक जकाँ उजागर भेल अछि।

यात्रीक काव्यक प्रसंग डॉ. वासुकी नाथ झा लिखैत छथि- ''कथ्य, सत्य ओ यथार्थक खर-खर धरातलपर आक्रोश ओ संवेदनाक मार्मिकता यात्रीक काव्यमे बेछप अछि। 'अगराही लगौ बरू वज्र खसौ' भावक उद्दीपन मिथिलाक नारी वर्गक आजुक संदर्भमे निष्पत्ति दिस अग्रसर होइत स्पष्ट दृष्टिगोचार होइत अछि। कविक युगद्रष्टा ओ युगस्त्रष्टा होएबाक विशेष सन्दर्भमे एकरा देखल जा सकैत अछि।''[23]

यात्रीजीक कविता सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक स्थिति-परिस्थिति ओ विद्रुपताक प्रति सचेत तँ करितँहि अछि, संगहि जागरूकता आ सुधारक प्रेरणा सेहो दैत अछि। हिनक काव्यमे विद्यमान वस्तु स्थितिक समाजशास्त्रीय दृष्टिसँ विवेचन अपेक्षित अछि।

यात्रीजीक काव्यक भाषा बेछप अछि। सर्वत्र व्यावहारिक लोक भाषाक सटीक प्रयोग सरलता-सहजतासँ परिपूर्ण ओ प्रवाहपूर्ण, ओजस्वितापूर्ण, स्वत: सम्प्रेषण सक्षम शब्दावली ओ शिल्प शैलीक परिपूर्णता विद्यमान अछि। आधुनिक मैथिली कवितामे मुक्त वृत्तिकेँ व्यापक ओ गरिमापूर्ण बनेबाक श्रेय हिनका देल जाइत छनि।

हिनक योगदानकेँ एहि प्रकारेँ रेखांकित कएल जा सकैछ- मार्क्सवादी ओ फ्रायडीय सिद्धान्तक प्रभावपूर्ण प्रयोग, सामाजिक यथार्थकेँ कविता आ उपन्यासमे सटीक रूपेँ प्रयोग, मुक्त वृत्तिकेँ कलात्मक बनाय सर्वस्वीकृत बनाएब, सामाजिक यथार्थकेँ व्यंगक माध्यमे काव्यमे प्रभावी बनाय ग्राम्यचित्रक शब्दावलीक प्रयोगसँ भाषामे सरलता, सहजता, स्वाभाविक भाव बोध सहज प्रभाव सामान्य पाठक धरिकेँ अभिभूत करबामे सक्षम होयब।

वर्त्तमानक साहित्यकार जतए आई स्त्री विमर्शक नारा दऽ रहल छथि ओतए यात्रीजीक 20म शताब्दीक चारिम दशकक कविता विलाप, बूढ़वर, जगतारनि स्त्रीक स्वरकेँ, आर्तनादकेँ तथा आर्त्तनादक अभ्यन्तर उद्भूत संश्लिष्ट अन्तर्द्वन्द्वकेँ ओकर गाम्भीर्यकेँ जगजियार कऽ चुकल छथि। ई कविता सभ वास्तमे स्त्री-विमर्श सामाजिक दृष्टिसँ वस्तुत: भविष्यद्रष्टा सिद्ध करैत अछि जे आइ चरितार्थ भए रहल अछि।

-अनुपम रैना, शोधार्थी, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

---

[1]परिचायिका- डॉ. भीमनाथ झा, 107

[2]मैथिली साहित्यक इतिहास- पृ.- 206, डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश

[3]History of Maithili literature- page- 160, Dr. Jaikant Mishra.

[4]यात्री : मेमे बाबूजी, शोभाकनत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1990, पृ.- 13

[5]दिनकर का व्यक्तित्व- पृ.- 8ए डॉ. प्रमिला

[6]दिनकर का व्यक्तित्व- पृ.- 8ए डॉ. प्रमिला

[7]मानक हिन्दी कोश- पृ.- 124ए पाँचवा खण्डए रामचन्द्र वर्मा

[8]हिन्दी विश्वकोश- पृ.- 150ए प्रथम संस्करण खण्ड

[9]उपन्यासकार नागार्जुन- पृ.- 1, श्याम प्रकाशन जयपुर, 3 1985, बाबू राम गुप्त

[10]आज के लोक प्रिय हिन्दी कवि नागार्जुन- पृ.- 3 प्र. राजपाल एण्ड सन्स- 3, डॉ. प्रभाकर माचवें

[11]उपन्यासकार नागार्जुन- पृ.- 2, रामबाबू गुप्त

[12]नागार्जुन मेरे बाबूजी : पृ. सं. 58, शोभाकान्त

[13]नागार्जुन मेरे बाबूजी : पृ. सं. 46, शोभाकान्त

[14]नागार्जुन मेरे बाबूजी- पृ.- 53, शोभाकान्त

[15]यात्री समग्र : 'यात्री समग्र'क सन्दर्भमे- 2003, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

[16]नव भारत टाइम्स : साक्षात्कार, अपराजिता देवी, 29 जुलाई 1991, अंक- पटनासँ प्रकाशित

[17]बाबा नागार्जुन- पृ.- 14, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, सं.- नरेन्द्र कोहली

[18]बाबा नागार्जुन- पृ.- 14 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, सं.- नरेन्द्र कोहली

[19]उपन्यासकार नागार्जुन- पृ.- 6, श्याम प्रकाशन जयपुर, बाबूराम गुप्त

[20]यात्री- (2000) पृ.- 20, चेतना समिति पटना, सम्पादक डॉ. श्री हरिनारायण मिश्र

[21]यात्री- (2000), पृ.- 20, चेतना समिति पटना, सम्पादक डॉ. श्री हरिनारायण मिश्र।

[22]परिचायिका- पृ.- 107, डॉ. भीमनाथ झा

[23]यात्री साहित्यावलोकन- पृ.- 5, 2011, चेतना समिति पटना, स. वासुकी नाथ झा

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**



डॉ. ललन कुमार झा

पं. कुशेश्वर कुमर ओ पर्व निर्णय: एक समीक्षण

धर्मशास्त्रीय निबन्ध 'पर्व निर्णय'पं. कुशेश्वर कुमर द्वारा प्रणीत अछि। हिनक नाम मैथिल निबन्धकार लोकनिक बीच समादृत अछि। ई ज्योतिष शास्त्रमे तीर्थ एवं आचार्य छलाह संगहि काव्य (तीर्थ), धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण एवं मीमांसा (कर्मकाण्ड)क सेहो उद्भट्ट विद्वान छलाह। ज्योतिष आओर धर्मशास्त्र दुनूमे वैदुष्य रहबाक कारणेँ ई दुनू शास्त्रमे ग्रन्थक प्रणयन कएलन्हि अछि। मिथिला देशीय पंचागम् (1328-1338 साल पर्यन्त), वित्रिभ लग्न भ्रमणम्, गोल प्रवेशिनी, पंचागदीपिका, ज्योतिषरत्नावली, ज्योतिष शिशुबोध, शुद्धि बोधिनी हिनक ज्योतिष ग्रन्थ अछि। ई धर्मशास्त्रक व्यवहार मंजूषा कृत्य मंजरी, व्यवहार दीपिका, सदाचार चन्द्रिका आओर पर्व निर्णय ग्रन्थक प्रणेता सेहो छथि।

पर्व शब्दक व्यापक अर्थ अछि। ओना व्रत पर्व समानार्थक अछि, मुदा तत्वत: पर्वक अन्तर्गत व्रत अबैत अछि नहि कि व्रतक अनतर्गत पर्व। एहि पर्वक तिथि स्थिर करबाक लेल ज्योतिष शास्त्रक सहारा लेबए पड़ैत अछि। मिथिलामे पर्व निर्णयमे अनेक प्रकारक मतभिन्नता रहैत आएल अछि। एहि विषयकेँ ध्यानमे राखि कऽ महान् धर्मशास्त्री पं. कुशेश्वर शर्मा एहि सामाजिक मतभेदकेँ दूर कऽ एक निर्णयात्मक ग्रन्थक प्रणयनक विचार कएलन्हि। पं. शर्मा भिन्न-भिन्न पर्वक सम्बन्धमे निबन्ध ग्रन्थक अवलोकन कऽ समकालिक विद्वान लोकनिक विचार लऽ कऽ कोनो एक निर्णयपर पहुँचबाक विचार कएलन्हि। एहि हेतु ओ मिथिलाक विद्वान लोकनिसँ गामे-गाम घूमि कऽ सम्पर्क कएलन्हि। सभ विद्वान लोकनिक मतक संग्रह कऽ विभिन्न पर्वक हेतु ओ जे ग्रन्थक प्रणयन कएलन्हि ओएह आइ 'पर्व निर्णय'क रूपमे अछि जाहिमे विभिन्न पर्वक निर्णय हेतु सम्पादक पं. कुशेश्वर शर्मा तेरासी विद्वान् लोकनिक निबन्धक संकलन कएलन्हि आओर सभ विद्वान लोकनिक निबन्धक तत्तपर्व निर्णय हेतु प्रस्तुत कएलन्हि। एहि तरहेँ श्रावण माससँ आरम्भ कऽ चैत्र कृष्ण प्रतिपदा धरिक विमर्श

कएल गेल अछि। ग्रन्थारम्भक पूर्ण विषयानुक्रमणिका देल गेल अछि, जाहिमे भिन्न-भिन्न पर्वक निर्णय हेतु ओहि-ओहि विद्वान लोकनिक नाम सेहो देल गेल अछि।

मुख्य पर्व आइयो मिथिलामे पूर्ण श्रद्धा भक्तिसँ मनाओल जाइत अछि आओर किछु समाप्त प्राय। अछि जेना मिथिलाक प्राचीन पंचांग कहैत अछि जे अशून्यशयनव्रत जे भगवान विष्णुकेँ लक्ष्य कऽ मनाओल जाइत छल से समाप्तिक तरफ बढ़ल जाइत छल आओर आइ ओ अस्तित्वमे नहि अछि। स्त्री आओर पुरुष दुनू अपन शाश्वत संगक लेल एकरा मनबैत छल। साँपसँ रक्षाक लेल मौना पंचमी आओर नागपंचमी पर्व आइयो क्रमश: श्रावण कृष्ण आओर शुक्लपक्षमे मनाओल जाइत अछि।

मिथिलाक सुप्रसिद्ध पर्व मधुश्रावणी श्रावण शुक्ल तृतीयाकेँ नवविवाहित कन्या आओर वरक द्वारा मनाओल जाइत अछि। विवाहक प्रथमे वर्ष एकरा उत्साहक संग मनाओल जाइत अछि। एहि पर्वकेँ मनएवाक मुख्य उद्देश्य अछि सर्प जातिसँ कोनो प्रकारक क्षति नहि होमए। श्रावण शुक्ल पूर्णिमाकेँ रक्षा बन्धन पर्व केवल मिथिले टामे नहि लगभग सम्पूर्ण उत्तर भारतमे मनाओल जाइत अछि।

मैथिल आचारानुसार भद्रा रहित उदय गामिनी पूर्णिमाकेँ रक्षा बन्धन पर्व मनाओल जाइत अछि। भाद्र कृष्ण चतुर्थीकेँ बिहुला पूजा आइयो प्रचलित अछि। मिथिलामे कृष्ण अष्टमीकेँ कृष्णाष्टमी मनाओल जाइत अछि, अन्यत्र विशेषत: वैष्णव सम्प्रदायवला जयन्ती व्रत करैत अछि। भाद्र मासीय अमावस्याकेँ कुशोत्पाटनक मिथिलामे परम्परा अछि। पितृविहीन लोक सभ जातिक, विशेष रूपसँ पितृकर्मक लेल कुश अवश्य उखारैत अछि, किएक तँ बिनु कुशक कोनहुँ क्रिया नहि होइत अछि-

“बिना दर्भेण या सन्धया पिंतृदेव क्रियाश्च या:।
सफला विफला यस्मात् तस्मात् कुशयुतो भवेत्।।”

- पर्व निर्णय- 64

हरिताली-हरितालिका :-

भाद्र शुक्ल तृतीया हरिताली या हरितालिका व्रतक नामसँ प्रसिद्ध अछि जे स्त्री लोकनिक लेल यावज्जीवन सुन्दर पति आओर सौभाग्यक लेल अनुष्ठेय अछि। माली (सखी)क द्वारा ह्त भऽ जएबाक कारणेँ हरिताली नामसँ प्रसिद्ध अछि। स्त्रीक लेल तृतीया व्रतक बड़ पैघ महत्व अछि। जेना श्रावण शुक्ल तृतीया मधुश्रावणी, भाद्र कृष्णक कज्ञली आओर शुक्ल पक्षीय हरितालिका व्रत बड़ श्रद्धाभावसँ स्त्रीलोकनि अनुष्ठान करैत छथि। बेशी काल ई चतुर्थी संयुक्ता ग्राह्य अछि-

“सा च तृतीया परयुतैव ग्राह्या-
रम्भाख्या वर्जयित्वा तु तृतीया द्विजसत्तम।
अन्येषु सर्वकार्येषु गुणयुक्ता प्रशस्यते।।”

-पर्व निर्णय- पृ.- 68

चतुर्थीचन्द्र (चौठचन्द्र) :-

मिथिलामे एहि पर्वक बेशी प्रचलन अछि। चतुर्थी चन्द्रक दर्शन पं. जीवनाथ राय निषिद्ध मानलन्हि अछि, मुदा धात्रेयिका वाक्यक पाठ कऽ दर्शन कएल जा सकैत अछि। ब्रह्म पुराणक अनुसारैँ-

“नारायणोऽभिशप्तस्तु निशाकरमरीचिषु।

स्थितश्चतुर्थ्यामद्यापि मनुष्यानापतेच्च स:।।

अतश्चतुर्थ्याचन्द्रन्तु प्रमादाद् वीक्ष्य मानव:।

पठेद् धात्रेयिकावाक्यं प्राङमुखो वाऽप्युदङमुख:।।”

-पर्व निर्णय- पृ.- 70

धात्रेयिका वाक्य स्यमन्त कोपारधानमे एहि प्रकारैँ अछि-

“सिह: प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हत:।

सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तक:।।”

अनन्त पूजा :-

भाद्र शुक्ल चतुर्दशीकैँ भगवान विष्णुक अनन्त रूपक पूजा कएल जाइत अछि, जे पूर्णिमायुता ग्राह्य अछि-

“तृतीयैकादशी षष्ठी शुक्ल पक्षे चतुर्दशी।

पूर्वविद्धा न कर्त्तव्या कर्त्तव्या परसंयुता।।”

-पूर्व निर्णय- पृ.- 78

भाद्र पूर्णिमा ऋषि अगस्त्यक तर्पणक लेल प्रसिद्ध अछि। मिथिलामे काश पुष्प हाथमे लऽ कऽ तर्पण करबाक विधान अछि। आश्विन कृष्णपक्षमे क्षयतिथिकैँ पार्वण करबाक विधान अछि। कमसँ कम कर्म पर्व (अमावस्या)कैँ तँ अवश्ये पार्वण करबाक चाही। ओना पं. कुमर प्रतिदिन पितृपक्षमे श्राद्ध करबाक समर्थन कएलन्हि अछि। ब्रह्मपुराणक अनुसारैँ जँ पितृपक्षमे एको दिन श्राद्ध (पार्वण) कऽ लेल जाए तँ वर्ष पर्यन्त पितर तृप्त रहैत अछि-

“यो वै श्राद्धं नर: कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे।

तस्य संवत्त्रय यावत् संतृप्ता: पितरो ध्रुवम्।।”

-पर्व निर्णय, पृ.- 84

जीवित पुत्रिका :-

महिलालोकनिक सभसँ प्रिय व्रत जीवित पुत्रिका आश्विन कृष्ण अष्टमीकैँ मनाओल जाइत अछि। महिलालोकनि अपन सन्तान विशेषत: पुत्रक कल्याणार्थ एकर अनुष्ठान श्रद्धाभक्तिसँ करैत छथि। भविष्य

ISSN 2229-547X VIDEHA

पुराणक अनुसारेँ आश्विन कृष्णक जीमूतवाहन व्रत सौभाग्य प्रदान कएनिहार अछि। प्रदोष एकर मुख्य पूजाकाल अछि। जाहि प्रदोष कालमे अष्टमी पड़ैत अछि ओएह समय अनुष्ठेय अछि। सप्तमी विद्धा अष्टमी व्यात्र्य मानल गेल अछि। अष्टमी तिथि पर्यन्त निराहार तथा बिनु जलक उपवास कऽ नवमीमे पारण कएल जाइत अछि, भनहि अष्टमी दोसर दिन कतेको विलम्ब तक किएक नहि रहए। 'पारणान्तं व्रतं ज्ञेयम्'क अनुसारेँ नवमी तिथिकेँ पारण करबाक विधान अछि। कोनहुँ स्थितिमे अन्न जलादिक सेवन हितकारी नहि होइत अछि-

''आश्विनस्यासिताऽष्टम्यां या: स्त्रियोऽन्नं च भुज्जते।

मृतवत्सा भवेयुस्ता विधवा दुर्भगा ध्रुवम्।।''

-पर्व निर्णय, पृ.- 93

नवरात्र :-

आश्विन शुक्ल प्रतिपदासँ नवमी पर्यन्त शारदीय नवरात्र उत्तर भारतक हिन्दूलोकनिक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पर्व अछि। द्वितीया युता प्रतिपदा मान्य अछि-

''यो मां पूजयते भक्त्या द्वितीया दिगुणान्विताम्

प्रतिच्छारदीं ज्ञात्वा सोऽश्नुते सुखमक्षयम्।।''

-पर्व निर्णय, पृ.- 99

अमावस्या युता प्रतिपदा निन्दनीय मानल गेल अछि-

''यदि कुर्यादमायुक्ता प्रतिपत् स्थापने मम।

तस्मैशापायुतं दत्त्वा भस्मशेषं करोम्यहम्।।''

-पर्व निर्णय, पृ.- 99

कोजगरा :-

आश्विन शुक्ल पूर्णिमाकेँ कोजगरा पर्व ब्राह्मणक लेल विशिष्ट महत्त्व रखैत अछि। देश भेदसँ ई चन्द्रोदय व्यापिनी वा निशीय व्यापिनी दुनू ग्राह्य अछि। 'को जागर्ति महीतले' एहि जज्ञासासँ लक्ष्मी रातिमे घुमैत अछि। प्रदोष कालमे लक्ष्मीक पूजाक विधान अछि।

दियावाती (सुखरात्रि, दीपावली) :-

कार्तिक कृष्ण अमावस्याकेँ श्यामापूजाक निशीथ कालमे पूजाक विधान अछि। प्रदोषकालमे उल्का भ्रमणानन्तर लक्ष्मीक पूजा आ गोसाउनिक घरक पूजाक विशेष रूपसँ विधान अछि। पितृपक्षक अन्तिम दिन रहलासँ महालयाक अन्तिम दिन मानल जाइत अछि। सायंकाल उल्काभ्रमणसँ मर्त्यलोकमे आएल पितरकेँ हुनक पुत्रादि उल्का दीपसँ स्वर्गलोक पठा दैत छथि। दिनमे चतुर्दशी होअए तथा रातिमे अमावस्या होअए ओहि दिन लक्ष्मीक पूजा करबाक चाही इएह सुखरात्रि कहबैत अछि।

ISSN 2229-547X VIDEHA

कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भातृ द्वितीया) :-

पं. कुशेश्वर शर्मा एहि द्वितीयाक प्रसंगमे पं. बदरीनाथ झाक निबन्धक आश्रय लेलन्हि अछि। एहिमे अशून्यशयन व्रत, यम यमुनाक पूजन, चित्रगुप्तक पूजा, भगिनी द्वारा भाएकेँ आदरपूर्वक भोजन प्रदान तथा भाए द्वारा सेहो बहिनकेँ वस्त्र-भूषणादिसँ संतोष प्रदान करब ई चारिटा कृत्य कहल गेल अछि। ई द्वितीया पूर्व विद्धा आओर परविद्धादुनू समयानुसार प्रचलित अछि।

षष्ठी निर्णय :-

व्रतानुष्ठानमे षष्ठीक बड्ड महत्त्व अछि। ई बारह प्रकारक मानल गेल अछि। सप्तमी विद्वा षष्ठीए मान्य अछि। पंचमी विद्धा गर्हित अछि आओर एकरा कएनिहारक धन ओ सनतानक हरण होइत अछि।

अक्षय नवमी :-

ई युगारम्भ तिथिक रूपमे मान्य अछि। ई नवमी युगादि कृत्यक लेल दशमी विद्वा ग्राह्य अछि। वाचस्पति मिश्र कार्तिक शुक्ल नवमीकेँ अत्यन्त पुण्यप्रद मानलन्हि अछि- ‘कार्तिके शुक्लपक्षे तु त्रेताऽथनवमेऽहनि।’

रविव्रत निर्णय :-

पं. कुशेश्वर शर्मा रविव्रत निर्णयक प्रसंगमे पं. वासुदेव झाक निबन्धकेँ उद्धृत कएलन्हि अछि। तदनुसार अग्रहण, माघ,वैशाख आओर आषाढ़ शुक्ल पक्षीय रविकेँ भगवानसूर्यक व्रत करबाक लेल कहल गेल अछि। निर्णयानुसार मेष शशिगत सूर्यक रहलेपर रविव्रत करए, जँ वैशाखमे मलमास होअए तइयो।

श्री जानकी महोत्सव :-

प्राचीन मैथिल परम्परामे अग्रहण शुक्ल पंचमीकेँ श्रीसीताक जन्मोत्सव मनाओल जाइत अछि।

श्री पंचमी (सिर पंचमी) :-

माघ शुक्ल पंचमी श्री पंचमी वा सिर पंचमी कहबैत अछि। ई चतुर्थी युता ग्राह्य अछि। उपवासादिक अतिरिक्त सभ पंचमी पूर्व विद्धा ग्राह्य अछि। एहि दिन शिष्टजन हल प्रवहण ओ ओकर पूजा करैत अछि।

माघ शुक्ल सप्तमी :-

ई सप्तमी स्नान माघ शुक्लक करबाक प्रसंग उदय व्यापिनी ग्राह्य अछि, जे सूर्यग्रहणक तुल्य अछि। सातटा आक, बैर आओर जौवक पातकेँ माथपर राखि स्नान करबाक चाही। पर विद्धा सप्तमी कदापि अनुष्ठेय नहि अछि।

होलिकादहन :-

होलिका दाह सायाम व्यापिनी भद्रा शुन्य फाल्गुन पूर्णिमाकेँ करबाक चाही। एकर मुख्य काल प्रदोष अछि-

"प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या फाल्गुनी पूर्णिमा सदा।" प्रतिपदानमे होलिकार्पण दोषावह होइत अछि। होलिका दाहक पश्चात् दिनमे फाल्गुनी पूर्णिमाकेँ सिन्दूर क्रीड़ाक विधान अछि।

रामनवमी व्रत :-

काल माधवमे पुनर्वसु नक्षत्र युक्त चैत्र शुक्ल नवमी मध्याह्न योग भेलासँ महापुण्य प्रदान कएनिहार होइछ। नवमीमे उपवास कऽ दशमीमे पारण कहल गेल अछि।

बैशाख शुक्ल तृतीया :-

बैशाख शुक्ल तृतीया अक्षय तृतीयाक नामसँ प्रसिद्ध अछि। ई चतुर्थी युता ग्राह्य अछि।

वटसावित्री व्रतम् :-

ज्येष्ठ कृष्ण अमास्याक दिन मिथिलामे महिलालोकनि वटसावित्री व्रत करैत छथि। चतुर्दशी विद्धाअमावस्याक अनुशंसा कएल गेल अछि। ई अवैध्यक कामनासँ कएल जाइत अछि। प्रतिपदा युक्त अमावस्या 'गर्हित' मानल गेल अछि।

पञ्चाग्नि व्रत :-

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया रम्भा तृतीया कहबैत अछि। एहिमे महिलालोकनि पञ्चाग्नि व्रत करथि एहन शास्त्रीय विधान अछि। ई तृतीया द्वितीया युते करबाक चाही।

गंगा दशहरा :-

ज्योष्ठ शुक्ल दशमी गंगा दशहराक नामसँ जानल जाइत अछि। एहि दिन गंगा स्नानसँ दशविध पापक नाश होइत अछि।

एकादशी व्रत :-

शुद्धा एवं दशमी विद्धा नामसँ दुइ प्रकारक एकादशीक वर्णन कएल गेल अछि। अरुणोदय कालमे जँ दशमी रहए तँ ओहि दिनक एकादशी पाप मूलक उपवास युक्त विद्धा एकादशी कहबैत अछि। ई व्रत दुनू पक्षक एकादशी करए अथवा शुक्ल पक्षक एकादशी व्रतकेँ करए।

चतुर्दशी व्रत :-

चतुर्दशी शुद्धा आओर विद्धा नामसँ दुइ प्रकारक होइत अछि। चतुर्दशीमे उपवास कऽ चतुर्दशीयएमे पारणा उत्तम कहल गेल अछि। मिथिलामे कृष्ण चतुर्दशीएक ख्याति अछि।

पूर्णिमा कृत्य :-

ई पूर्णिमा चतुर्दशी विद्धा ग्राह्य नहि अछि, पर विद्धे ग्राह्य अछि। एहि तिथिमे अमावस्याक तरहेँ पितृ श्राद्ध आवश्यक अछि, अन्यथा नरकभाक होबए पड़ैत अछि।

सोमवारी व्रत :-

स्त्री लोकनिक हेतु मिथिलामे सोमवारी व्रत खूब प्रचलित अछि।

अतिचार :-

दैवज्ञ बान्धव ग्रन्थमे कहल गेल अछि जे वर्षकेँ पूर्ण नहि भेलापर जँ वृहस्पति पूर्व शशिकेँ छोड़ि पर राशिगत भऽ जाइत अछि तँ अतिचारक प्राप्ति होइत अछि। एहि अवधिमे विवाहादि कार्य नहि होइत अछि।

कुम्भ पर्व निर्णय :-

प्राचीने कालसँ हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन आओर नासिकमे कुम्भ पर्वक प्रचलन अछि। जँ सूर्य मेष राशि तथा वृहस्पति कुम्भ राशिमे होअए तँ हरिद्वारमे, सूर्य जखन मकर राशिमे होअए तथा वृहस्पति अजग (मेष राशि) मे होअए तखन प्रयागमे जखन वृहस्पति सिंह राशिगत होअए तखन उज्जयिनीमे आओर गुरु कर्क राशिमे होअए तथा सूर्य चन्द्रमा सेहो कर्क राशिमे होअए तखन नासिकमे कुम्भ योग होइत अछि।

दीक्षा ग्रहण :-

मिथिलामे मंत्र ग्रहणक अत्यधिक महत्त्व बताओल गेल अछि। यावत् पर्यन्त दीक्षा नहि ग्रहण कएल जाइत अछि तावत धरि बीज मन्त्रक उच्चारण नहि कएल जाइत अछि। मन्त्र ग्रहणकसम्बन्धमे कहल गेल अछि जे पिता, मातामह, कनिष्ठ भ्राता तथा शत्रु पक्षाश्रित व्यक्तिसँ मन्त्र नहि ग्रहण करबाक चाही। पारम्परिक मैथिल शिष्टाचारसँ दीक्षा देबाक लेल माता सर्वश्रेष्ठ मानल गेल अछि।

एहि तरहेँ पर्व निर्णयक सम्बन्धमे पं. कुशेश्वर शर्मा विभिन्न निबन्धक संकलन पर्व निर्णय सम्बन्धी जिज्ञासाक शान्तिक लेल सार्थक प्रयास कएलन्हि अछि।

ग्राम+पोस्ट- रहुआ
थाना- सौर बाजार
जिला सहरसा, 852127

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली

बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल

१

मैथिली आ हिन्दी

मैथिली	**हिन्दी**
हमरा सभक	हमारा
हमर	मेरा
ओकर	उसका
ई	यह
ओ	वह
ई सब	ये
ओ सब	वे
अछि	है
छी	हूँ
देखनाइ	देखना
जीनाइ	जीना
गेनाइ	जाना

पीनाइ	पीना
छूनाइ	छूना
सुतनाइ	सोना
पढ़नाइ	पढ़ना
जाउ	जाइए
जो	जा
राम गेल	राम गया
सीता गेलि	सीता गई
आननाइ	लाना
बजनाइ	बोलना
बिसरनाइ	भूलना
छह	हो
लिखैत अछि	लिखता है
लिखि रहल अछि	लिख रहा है
जायत	जाएगा
अयताह	आएंगे
राम जाइत अछि	राम जाता है
सीता जाइत अछि	सीता जाती है

सीता जाइत छथि	सीता जाती हैं
राम खेनाइ खेलक	राम ने खाना खाया
राम सोहारी खेलक	राम ने रोटी खाई
तोँ ई काज केने छह	तूने यह काम किया है
राम फिल्म देखने छल	राम ने फिल्म देखी थी
राम फिल्म देखने छला	राम जी (आदर) ने फिल्म देखी थी
राम पाठ समाप्त कऽ लेने होयत	राम ने पाठ समाप्त कर लिया होगा
राम पाठ समाप्त कऽ लेने हेता	राम जी (आदर) ने पाठ समाप्त कर लिया होगा
राम सीताकेँ देखलक	राम ने सीता को देखा
राम सीताकेँ देखलनि	राम जी (आदर) ने सीता को देखा

ऊपर अहाँकेँ स्पष्ट भऽ गेल होयत जे हिन्दीमे कर्त्ता लेल ‘‘ने’’ प्रयुक्त भेल मुदा मैथिलीमे ई रिक्त रहल। कर्म लेल हिन्दीमे ‘‘को’’ आ मैथिलीमे ‘‘केँ’’ प्रयुक्त भेल।

हिन्दी	सेब	एक सेब	दू सेब	दो सेबों में
मैथिली	सेब	एकटा सेब	दूटा सेब	दूटा सेबमे
हिन्दी	सिपाही	एक सिपाही	दो सिपाही	दो सिपाहियों ने
मैथिली	सिपाही	एकटा सिपाही	दूटा सिपाही	दूटा सिपाही
हिन्दी	साधु	एक साधु	दो साधु	दो साधुओं को

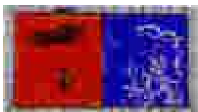
मैथिली	साधु	एकटा साधु	दूटा साधु	दुनू साधुकेँ
हिन्दी	चमगादड़	एक चमगादड़	दो चमगादड़	दोनों चमगादड़ों पर
मैथिली	बादुर	एकटा बादुर	दूटा बादुर	दुनू बादुर पर
हिन्दी	चिड़िया	एक चिड़िया	दो चिड़िया	दो चिड़ियाओं
मैथिली	चिड़ै	एकटा चिड़ै	दूटा चिड़ै	दुनू चिड़ै

एतय स्पष्ट भऽ गेल जे बहुवचनमे हिन्दीमे शब्दक रूप परिवर्तित भेल मुदा मैथिलीमे से नहि भेल। एहिसँ पहिने क्रियामे किछु ठाम स्त्रीलिङ्मे हिन्दी सन परिवर्तन मैथिलीमे सेहो भेल (गेलि) मुदा बेसी ठाम (जाइत अछि, छथि) परिवर्तन नहि भेल। आदरसूचक वाक्यमे हिन्दीमे क्रियामे परिवर्तन नहि भेल मुदा मैथिलीमे भेल (देखलक/ देखलनि)। स्त्रीलिङ्क बहुवचनमे हिन्दीमे रूप परिवर्तित होइताछि मुदा मैथिलीमे से नहि होइत अछि।

कारक/ विभक्ति (मैथिली)	**कारक/ विभक्ति (हिन्दी)**
राम	राम ने
रामकेँ	राम को
गेन्दसँ, लाठीसँ, लाठी द्वारा	गेन्द से, लाठी द्वारा
रामकेँ, रामकलेल, राम हेतु	राम को, राम के लिये, राम हेतु
गाछसँ (विलगाव)	पेड़ से
रामक घर, रामक पोथी, सीताक राम	राम का घर, राम की किताब, सीता के राम
घर पर, खोतामे	घर पर, घोसला में

२

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली आ बांग्ला

मैथिली	**बांग्ला**
अपने	आपनि
नै (नहि)	नय
छी	आछि/ छि
काज	काज
इनार	इनार
करै (करैत) छी	कोरेछि
गेल छलौं (छलहुँ)	गियेछिलाम
बाजू नै	बोलबेन ना
रान्हल	रान्ना
की	कि
संगे	शंगे
चाह	चा
दू टा	दुटो
ई सब	एशब
सिंघाड़ा	शिङाड़ा
कोन	कोन

हाथ	हात
अखन	ऐखोन
पाँचटा	पाँचटा
अच्छा	आच्छा
छथि	आछेन
छी	आछि
हुअय	आछो
करू	कोरून
चाही	चाइ
खोलै छी	खुलछि
कोनो	कोनो

बांग्ला ''अ'' ओड़िया सन ''ओ'' उच्चरित होइत अछि।

मैथिली सन इ/ ई आ उ/ऊ केर ह्रस्व-दीर्घ उच्चारणमे भेद नहि अछि आ ऐ मैथिलीमे अ+इ आ बांग्लामे ओ+ई उच्चरित होइत अछि। औ बांग्लामे ओ+उ उच्चरित होइत अछि।

''न'' आ ''ण'' केर उच्चारण बांग्लामे एके रङ होइत अछि। मैथिलीमे ''ण'' केर उच्चारण कखनो काल ''ड़'' होइत अछि (गणेश=गड़ेस)।

व/ ब एके रङ ''ब'' (मैथिली जकाँ) सन उच्चरित होइत अछि।

आश्विन मैथिलीमे लिखलो आ बाजलो ''आसिन'' जाइत अछि मुदा बांग्लामे लिखल आश्विन आ बाजल आश्शिन जाइत अछि।

तहिना :-

बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि	**बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि**
अन्वेषण	अन्नेशन
श्वास	शाश
उच्छ्वास	उच्छास
अक्षर	अक्खोर
पद्म	पद्दो
विस्मय	बिश्शय
उज्जवल	उज्जल

फेर बांग्लामे एना लिखल आ फराकबाजल सेहो जाइत अछि:-

बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि	**बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि**
संस्हा	शंस्था
स्हान	स्थान
सुस्ह्	शुस्थो
असुस्ह्	अशुस्थो

बांग्लामे कोनो शब्द पर विशेष बल देबाकलेल -तो जोड़ल जाइत अछि।

बांग्लामे पूर्व निर्दिष्ट वस्तु लेल प्रयुक्त वस्तुवाचक संज्ञा/ सर्वनामक एकवचनमे -टा -टि आ बहुवचनमे -गुलो, -गुलि जोड़ल जाइत अछि।

बांग्लामे संख्यावाचक शब्दक संग -टा, -टि, -टे, -टो जोड़ल जाइत अछि मुदा -गुलो, -गुलि केर प्रयोग नहि होइत अछि।

बांग्लामे ‘‘संग’’ आ ‘‘लेल’’ सन अव्यय लेल सम्बन्ध विभक्तिक प्रयोग होइत अछि जेना:-

चायेर शंगे- चाहक संग

आमार शंगे- हमरा संग

आमार जोन्ने- हमरा लेल

बांग्लामे सर्वनामक सम्बन्धवाचक रूपबनेबा लेल सर्वनामक तिर्यक रूपमे -देर जोड़ल जाइत अछि।

आमा-आमादेर-हमर

आपना-आपनादेर-अहाँक

तोमा-तोमादेर- तोहर

एना-एनादेर-हिनकर

वर्त्तमान काल आज्ञार्थकक बाद -ना प्रयोग जोर देबा लेल कयल जाइत अछि।

देखू ने- देखुन ना

कोनो शब्द पर बल देबा लेल मैथिलीमे द्वित्व+एकार केर प्रयोग होइत अछि जेना- कम्मे, एक्के। बांग्लामे ई प्रभाव -इ युक्त भेलासँ अबैत अछि जेना-कमइ।

मैथिलीमे ‘‘अछि’’ केर नकारात्मक ‘‘नहि अछि’’ प्रयुक्त होइत अछि मुदा बांग्लामे ‘‘आछे’’ केर नकारात्मक लेल मात्र ‘‘नेइ’’ प्रयुक्त होइत अछि।

अपूर्णकालिक क्रियारूप मे जँ धातु स्वरांत होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपक संग कालवाची प्रत्यय -च्छ जोड़ल जाइत अछि। जँ धातु व्यंजनान्त होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपमे -छ जोड़ल जाइत अछि। कालवाचक प्रत्यय लगेलाक बाद पुरुषवाचक प्रत्यय जोड़ल जाइत अछि।

मैथिली	बांग्ला
हम अबै छी	आमि फिरिछि
हम जाइ छी	आमि जाच्छि
ओ सब आबै छथि	उनि फिरछेन
अहाँ जाइ छी	आपनि जाच्छेन
तूँ आबै छैँ	तुमि फिरछो
तूँ जाइ छैँ	तुमि जाच्छो
ओ सब अबैत छथि	तिनि फिरछेन
ओ सब जाइ छथि	तिनि जाच्छेन
ओ आबै छथि	शे फिरछे
ओ जाइ छथि	शे जाच्छे
अहाँ अबैत छी	आपनि फिरछेन
अहाँ करैत छी	आपनि कोरछेन

बांग्लामे एक प्रकारक असमापिका क्रिया होइत अछि- क्रियाक तिर्यक रूपक। बादमे -ते जोड़लासँ ई बनाओल जाइत अछि।

करय मे- कोरते (कोर+ते)

जाइ मे- जेते (जा+ते)

आबय मे- आशते (आश+ते)

मैथिली सन बांग्लामे सेहो दू शब्द वा वाक्यकेँ जोड़बा लेल ओ, आर, एबं (मैथिलीमे एवं/ एवम्) केर प्रयोग होइत अछि। बांग्लामे ‘‘ओ’’ केर प्रयोग ‘‘संग’’ केर अर्थमे सेहो होइत अछि।

हमहूँ- आमि ओ

धातुक पाछाँ पुरुषवाचक प्रत्यय लगा कय क्रियाक सामान्य वर्त्तमान कालक रूप बनि जाइत अछि।

कर+इ= कोरि

कर+एन= करेन

कर+ओ= करो

कर+इश= कोरिश

कर+ए= करे।

३

मैथिली आ भोजपुरी

भोजपुरीमे

केर बदला	**ई वर्ण प्रयुक्त होइत अछि**
ण	न
ल	र
ष	ख
श	स

भोजपुरीमे सहचर तीन प्रकारक अछि, विपरीतार्थक, समानार्थक्, आनुप्रासिक आ विशेषार्थ बोधक सहचर।

विपरीतार्थक सहचर

शब्द	**विपरीतार्थक सहचर**
हकासल	पियासल
लरम	गरम
रकम	पताई
साँप	गोजर

समानार्थक सहचर

शब्द	**समानार्थक सहचर**
लकड़ी	काठी
कनिया	बहरिया
पुरखा	पुरनिया
किन	बेसाह
बिआ	बाल
नेग	चार

आनुप्रासिक सहचर

शब्द	**आनुप्रासिक सहचर**
अखोर	बखोर
हरवा	हथियार
बोहनी	बट्टा
पर	पाहुन
चासा	बासा
चिरई	चुरुंग

विशेषार्थ बोधक सहचर

शब्द	**विशेषार्थ बोधक सहचर**
सेवा	खरचा
अह	जह
तगड़	बगड़
अकट	बहेर
आउँज	गाउँज

भोजपुरीक किछु उपसर्ग

नि-निदरदी

कु- कुअन्न

अध- अधमरु

भोजपुरीक किछु प्रत्यय

डाका- अइत- डकइत

हार- चूड़ी- चूड़ीहार

लकड़ी- लकड़ीहार

हर-मुस- मुसहर

बाप- बहर

मामा- ममहर

भोजपुरीमे संज्ञासँ विशेषण

कातिक- कतिका

आइन- धुँआ- धुआँइन

भोजपुरीमे विशेषणसँ संज्ञा

पियर- पिअरी

अई- थेथर- थेथरई

अवती- बूढ़- बुढ़उती

भोजपुरीमे संज्ञासँ संज्ञा

अई- लरिकाई

भोजपुरीमे विशेषणसँ विशेषण

ISSN 2229-547X VIDEHA

लाल- ललछहूँ

औठा- पहिल- पहिलौठा

स्त्री प्रत्यय

आइन- मिसिर- मिसराइन

आनी- देवर- देवरानी

भोजपुरीमे वचन

लइका (एकवचन)- लइकन (बहुवचन)

हाथी (एकवचन)- हाथिन/ हाथियन (बहुवचन)

मैथिली	**भोजपुरी**
छथि	तारी
खाइत अछि	खाता
खुजैत अछि	खुलता
नहि खेलाइत छथि	खेलत नइखन
नहि अछि	नइखे
नहि जयताह	ना जइहन
नहि खयताह	ना खइहन
जाइ छी	जातार
पढ़ैत छी	पढ़ तानी

खाइ छथि	खा तारन
अहाँ	रउआ

भोजपुरीक सेहो विभिन्न रूप अछि, जेना क्षेत्रानुसार बा, बाटे, बीया, बड़वैं, बटे/ बानी बाजल जाइत अछि।

४

मैथिली आ मगही

भुव्अनेश्वर शर्माक मगही शब्दकोषमे किछु वर्ण आ संयुक्ताक्षर जेना ण, श, ष, ऋ, लृ, क्ष, त्र, ज्ञ हटा देल गेल अछि। मैथिली सन मगहीमे सेहो ‘‘व’’ केर उच्चारण ‘‘ब’’ आ कतेक ठाम ‘‘य’’ केर उच्चारण ‘‘ज’’ होइत अछि।

मगही सेहो अपन उत्पत्ति ८४ सिद्ध आ नाथ सम्प्रदायक नाथ साहित्यसँ मानैत अछि। मगही क्रियामे एकटा आकारक मात्रा कम होइत अछि जेना:-

मैथिली	**मगही**
एनाइ	अनई
गेनाइ	गनई
धोनाइ	धोनई

मगही लोकोक्ति आ कहावत:

अदरा गेल, तीन गेलन, सन, साठी, कपास- स्त्रदरा नक्षत्रमे वर्षा नहि भेने सन, साठी (धान) आ कपासक खेती बर्बाद भऽ जाइत अछि।

ओछा के प्रीत बालू के भीत- ओछ व्यक्तिसँ दोस्तियारी क्षिक होइत अछि।

ब्लातदेवल- खोराकी चलायल

सिहरी फटल- अकश-तिकश खतम भेल।

हहास कयल- दोसरकेँ आगू बढ़ैत देखि कऽ जरल।

तुला राशि के भेल- बड्ड तमसायल

कन्या राशि के भेल- काजसँ बेकार भेल।

ओरहन देवल- शिकाइत कयल।

पीढ़ा देवल- आदर देल।

खोपसन देवल- उलहन देल।

डॉ रामनरेश मिश्र ‘‘हंस’’ मगधक भाषा मागधीक विकसित रूपकेँ मगही कहलनि अछि। मागधी प्राकृतसँ असमिया, बांग्ला, ओड़िया, मैथिली, भोजपुरी आदि भाषा सेहो बहार भेल अछि।

मगहीमे ‘‘र’’ लेल ‘‘ल’’ ‘‘ड़’’, ‘‘ल’’ लेल ‘‘र’’ ‘‘ड़’’ केर प्रयोग होइत अछि। मगहीमे सेहो निर- लगा कऽ निरइठ बनैत अछि (अइठ/ निरइठ)।

मगही लोकगाथा

आल्हा, सोरठी वृजभार, लोरकाइन, रेसमा-चुहरमल, सारंगा-सदाबृज, छतरी-घुघुलिया, कुँवर विजयी, राजा भरथरी, गोपीचन्द, सोभां नायक, सती बिहुला, नेटुआ दयाल सिंह, राजा ढोलन सिंह, मान गुजरिया, मामा-भगिना, विक्रम, कर्दब-लीला, बनजारा, हिरनी-बिरनी, सहलेस, नूनाचार, राजा हरिचन, बाबा चिन्तामन, बकतौर, बिहुला-विसहरी, बाबा लखन्दर बिहुला-विषधर।

मगही लोकनाट्य, नाट्य-गीत आ लोक-नृत्य

-कीर्त्तन, जातरा, करमा भइया दूज, जीतिया (नायिका रुसि कऽ नैहर चलि गेल, धनरोपनीक बाद किसान-मजदूर ई नाट्य करैत छथि।)

-फागू, चैता, सावनी, बारहमासा, रोपनी।

-दूधवंशी (दुसाध), साफी (धोबी), च्हन्द्रवंशी (कहार), कोइरीक नाट्य गीत।

-जनी- जातिक- डोमकच, बीछामार, चुलहारिन, सीता-मीता, गेदुरी।

-ओझा-डाइन।

-सामा-चकेवा, बगुला-बगुली, जाट-जाटिन, सास-पुतोह,

-सगबेचनी, मछली बेचनी, जीराबुन, दही बेचनी।

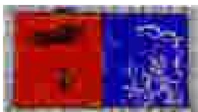
-नाच, नेटुआ-कसबिन, कठपुतली।

आब किछु मैथिली आ तकर मगही रूपक चर्चा कयल जा रहल अछि।

मैथिली	**मगही**
खेलेलौं (खेलेलहुँ)	खेलली
हएत	होत
अछि	हे
छथि	हथ/ हथुन
छी	ही
जायत	जइतो
एता	अतथुन
भेटत	मिलतो

मगहीक रूप

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

पटनाक आसपास मारलुक (मारबौ) आदिक प्रयोग होइत अछि जे कने दक्षिण गेला पर हथिन/ छथिन आदिमे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

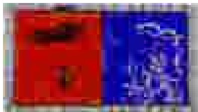
५

मैथिली आ संथाली

मैथिली	**संथाली**
पिता	बा
बाबी (बा)	नुनुगो (बुडीगो)
बाबा	गोड़म्बा
नमस्ते	जोहारगी
भेल	हुयेना
उसरि कऽ (जल्दी)	उसारा
अछि	काना/ गिया
छी	काना
आर	आर
सँ	ते
एखन लगाइत	एहोबोक् लगीत
देखाउ	उदुगमे
विलम्ब	बिलम्ब

दिऔ	मे/ में
करू	मा/ कामीयमे
नहि	आलोम
बनू	बिनाक्आ
बुरबक (बोका)	बोका
आउ	हजुक्मे
ध्यान	ध्यान
दाँत सभ	डाटा
लगा लिअ	लगाव ताम
सत्त	सरी
खबरि	खोबोर
हमरा	इञ
खराप	बड़ीच्
मोन	मोने
लगा कऽ	लगाव
काज	कातेक
कँ	दो
घास	घास

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

आनू	अगुकुम
अहाँ सँ	आमसांव
जरूर	जरूड़
थोर	थोड़ा
पंखा	पंखा
बिजली	बिजली
लैम्प	लैम्प
कागत-पेंसिल	कागज-पेंसिल
मना	मना
मामिला	मामला
समय	समय
धन	धन
मेहनति	मेहनत
अहाँ	आम
कुकुड़ (पु.)	सीता
कुकुड़ (स्त्री.)	सीता इंगा
पिल्ला (कुकुड़क बच्चा)	सीता होपोन
बाछी	बछी

बेंग	रोटे
पनही (जुत्ता)	पनाही
करैल	कारला
घर (दलान)	दुलान
मचान	मचान
कड़छु	कड़छु
पटिया	पटया
चालनि	चलनी
सलाइ-काठी	सलाई कठी
सूत	सुतम
थारी-बाटी	थरी-बटी
लोटा	लोटा
बोरा	बोरा
गहूम	गुहुम
दही	दाही
थुथुन	थुथना
गाहकि (गहकी)	गहकी
अखबार	खोबोर कागज

हरियर	हरयड़
खर्चा	खर्चा
साफ करब	साफा
बीछब	बाछाव
बनायब	बिनाव
नव करब	नावा
नेहोरा करब	नेहोर
जिरायब (विश्राम करब)	जिराव
थरथरी	थारथाराक्
आछी करब (छीकब)	अछीम
साटब	साटाव

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**अनुपम रैना**

यात्रीजीक मैथिली रचनामे समसामयिक जीवनक अभिव्यक्ति

बहुभाषा विज्ञ वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' मैथिलीक मुख्यतः दू उपन्यास आर कविता संग्रह लिखि समस्त मिथिलाक तात्कालिन आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक, धार्मिक परिदृश्यक चित्रण क्रमशः विश्लेषित प्रारूपक सँग कएलन्हि अछि । यात्रीजीक प्रादुर्भाव राजनीतिक रूप सँ भारतीय उपनिवेशक परिवर्तनक काल छल । अंग्रेजी हुकुमतक बर्बर तानाशही एवं ब्रिटिश सरकार द्वारा मान्य जमींदरी प्रथा समाज केँ शोषक वर्गक हाथ में कठपुतली बना राखि देने छल । सम्भ्रान्त समाजक मुट्ठी भरि लोक बहुसंख्यक गरीब प्रजाक ऊपर पाशविक अत्याचार, दमन, शोषण कए समाजक दुर्गति करबा में लीन छल । भारतीय अर्थव्यवस्थाक रीढ़ खेती छल जे जमींदारक हस्तगत छल । जमींदारक अत्याचार किसानक मनोबल के तोरि देने छल । अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार सँ सम्पूर्ण देश मे अर्द्धशिक्षित वर्गक संख्या बढ़ि गेल । बल्कि विभीषिका सँ महामारी दुभिक्ष आदि सँ जान-
मालक हानि चेचक, प्लेग, हैजा अदि बिमारी महामारीक रूप अखित्यार कएने छल । एहना परिस्थिति में सामाजिक विषमता, अंधविश्वास वर्ग-भेद, वर्ग-उपवर्ग, छूत-
अछूत, धार्मिक पाखण्ड आदि समाजक मध्य रोग जकाँ पसरि गेल छल जे कवि यात्री जी अपन रचना मध्य व्यक्त करबा सँ नहि चुकलाह अछिः-

मकडाक जाल सँ बेढल हुइ चुलहाक मुँह

थरी-गिलास सब बेचि बिकिन खा गेलइ ऊँह

समाजक दुरावस्थाक दृष्य कें एहि प्रकारे देख वैत कवि यात्रीक उक्त पंक्ति के देखल जायः-

कैंचा जकरा से, खाए भात

क रहल मौज से, जकरा छइ कोनी गतात

दरिद्रताक अभिशाप समस्त मिथिलांचल भोगिरहल छल । अन्न पानि दवा दारूक कोनो युक्ति नहि छल । समाधानक उक्ति ढूढ़वाक प्रयास मे कवि यात्री कहैत छथि ।

नहि रहलइ ककरो किच्छु मात्र तोहर भरोस ।

माँटिक महत्व कें चीन्हि लेलक ई देश-कोश ।

वस्तुतः भगवानक भरोसे जीवऽ बला व्यक्ति कें साफ शब्द में कहऽ चाहैत छथि जे अपन धरतीक भरोस करू, देह मे मांइट लगाउ, कर्म करू, मेहनत करू एही बदौलत समस्याक समाधान भए सकत। नहि कि मात्र देवताक भरोसे सब किछु छोरि जीवन के बेकार बना देव । मिथिलाक परिस्थिति सँ खिन्न यात्री कोनो विकल्प नहि देखि रहल छथि । एहन परिस्थितिमे कवि अपन भाव के शब्द दैत कहैत छथिः-

अन्न नेछै कैंचानै छै कौड़ी ने है

गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे?

उठह कवि, तो दहक ललकाय कने

गिरि शिखा पर पथिक हल चातैक रे!

कवि अपनहि अपन आत्मबल कें मजबूत करैत कहैत दथि अर्थहीन संसाधन बिहिन समाजक उत्थान करबा लड हमरे अथै कें आगु आबऽ पड़त । निश्चित रूपैं यदि संकल्पक सँग जनहित हेतु संघर्ष कएल जायत तँ असम्भव नहिं जागृतिक शंखनाद भटका रहल मात्र कने प्रयासक आवश्यकता छैक, साहस क आवश्यकता छैक। कोनो पैद्य बात नहि जयनाद जैहैत तऽ अवस्से उँच से ऊँच पहाड़ कें पथिक सहज रूपें रास्ता बना लैत अछि।

जिन्दगी भरि जे अमृत मंथन करल

जिन्दगी भरि जे सुधा संचित करए

ओ पिआसैं मरि रहल अछि, ओकरे

अमृत पीवा सँ जगत वंचित करए

ओकर मूल भूत अधिकारक हनन होइत छैक। ओकर उचित हिस्सा नहिं भेटैत छैक। एहन बर्बर समाजक सामन्ती सोच बलाक प्रति अभिजात्य वर्गक प्रति घोर घृणाभाव आक्रोश सँ भड़ल कवि अपन मनोभाव के पुनः शब्द दैत कहैत छथि

हमर वीणा ध्वनि कने पहुँचैत जँ

सटल पौजर बोनिहारक कान में

सफल होइत तखन ई स्वर साधना

चिर उपेक्षित जनक भौटव गान में।

अन्न बिना सटल पाँजर कुपोषणक बोनिहार अवश्य परिवर्तन आनत यदि शिक्षक अलख ओकर घर घरि पहुंच जेतैक । भारत सर्वशक्तिमान सम्पन्न ‘चन्द्रगुप्त’ क राज्यक अभ्युदय भेल तहिना प्रेरणाश्रोत माध्यमक आवश्यकता छैक ।

परम मेघावी कतेबालक जत

मूर्ख रहि हा गाय चरवैत छथि

कते वाचस्पति कते उदयन जत

हाय! बनगोइठा विछैत फिरैत छथि

तानसेन कतेक रविवार्म कते

घास छिलथि वाग्मतीक कछेड़ में

कालिदास कतेजक विद्यापति कते

छयि हेड़ाएल महिसवारक हेड़मे

कवि यात्री एही सँ चिंतीत छथि । के एकर मार्गदर्शन करत के सोचत गरीब निरिहक हेतु ताहि सँ मेधावी गरीब बच्चा अपन स्थान अपन अधिकार निरूपित कऽ सकत । ओहने स्थिति मिथिलांचलक सुसंस्कृतिक अपसंस्कृति में बदलि देलक ।

स्वार्थां भए परम्पराक नाम पर कुव्यवस्था कें परिपाटी बनालेलक कवि एहि भयानक मनोवृत्तिक चित्रण कए वास्तविक जीवनक स्थिति सँ परिचय करौलनि अछि ।

समस्त भावनाकें दरकिनार करइत समाज में पसरल दर्भिक्ष जकाँ स्त्रीक प्रति अन्यायपूर्ण मानसिकता समाजक स्वीतत्व पर प्रश्नचिन्ह लगवैत अछि। धन एक मात्र उदेश्य बनि मनुष्यक जीवन के नर्क बना दैत छैक। एहन स्थिति क बेटीक बाप शुभछन कहि, बेटीक बापक उत्तरदायित्व कें नकारबक चेष्टा करैत अछि। जहिना माछ मखानक खेती अर्थोपार्जनक साधन अछि तहिना बेटीक जन्म एकरा व्यवस्था सँ कम नहि एहि सँ बेसी सोचबाक ककरो उद्देश्य नहि समय नहिं।

अहुरिया कटलक मललक हाथ

बाबू भाभी माय झुकौलनि माथ

हुनक अन टोटल बात एकदिश

झरकल सन हमर अहिबात एकदिस

करब की सब पी गेलऊँ घोरि कऽ

चम्पाक कली-फेकल गेलऊँ खोंटिकऽ

समाज में पसरल कुव्यवस्थाक झांकी एखनहुँ अनवरत देखवा में अवइयै।

पारो:-

मैथिली में पहिल उपन्यास ‘‘पारो’’ 1946 ई0 में प्रकाशित भेलाक बाद उपन्यास जगत मे श्री बैधनाथ मिश्र ‘‘यात्री’’क नाम विख्यात भए गेल। अपन पहिल कृति ‘‘पारो’’ सन सामाजिक ओ मनोवैानिक उपन्यास लिखि ‘‘यात्री’’ मैथिली उपन्यास मे एक नवीन प्रयोग कए देलैन्हि। गद्य-
शैलक विलक्षणता सेहो यात्री सन कविमे अछि एहि सँ पहिल बेर लोक परिचित भेल आ अपन एहि पहिल परिचय मे यात्री तेहन ने सामाजिक रूढ़ परम्पराक चचार्प कएलैन्हि जे ओ विवादक विषय बनि गेल। आश्चर्य एहि बातक जे यात्री कोनएहन अपराध कए देलनि जकर किछु विद्वान लोकनि घोर निन्दा कए देलैन्हि। परन्तु एतबा कहि देब जे यात्रीक ई पहिल प्रयोग जे ओ गद्य रूप मे बएतैन्हि पूर्ण सफल भेल अछि। हुनक गद्य शैलीक विलक्षण प्रतिभा सँ हमरा सभकें ‘‘पारो’’ द्वारा परिचय भेल अछि। तँ ई निर्विवाद सत्य धिक जे यात्रीक ई ‘‘पारो’’ सामान्य पारो नहि अपितु मिथिलक आइ धरिक जीवनक ई पहिल ओ अंतिम पारो थिक। पारोक परिचय ई अछि-

"पारो नामि रहय। चेहरो नामे रहैक।

हाथ सीक सन-सन। देह लक-लक पातर।

टाङ सन्ठी सन-सन। कटगर ओकर आंखि जेहेन

छलै तेहेन आन कोनो अंग कथी ले रहते।"

यात्रीक एहि पारोक पूरा नाम छल पार्वती । पारो एहि उपन्यासक मुख्य नायिका अछि ।आ एकर मुख्य नायक ब्रजकान्त झा उर्फ बिरजू तेसर जे चरित्र एहि मे अछि ओ छथि वैधव्य सँ देदीप्यमान ललाट वाली पीसी जनिक नाम प्रतिभा मा अछि । एहि उपन्यास मे चारिम सभ सँ महत्वपूर्ण व्यक्ति छथि चैधरी जी । यात्रीक चैधरी जी सँ परिचय कए लेल जाए-
"वेश गोर नार । चेहरा नाम; मुहठान कटगर । नाल भरल। भौंहे सघन। कपार ने पैथ ने छोट । दहिना कान मे कनौसी । वाम कानक जड़ि मे, ऊपर दिस छोट छीन मसुविर्धि।"

मैथिल समाज मे आएल रूढ़िवादी परम्पराक उद्घोष। मिथिलाक सभ्यता संस्कृति दर्शन सेहो एहि मे यात्री यत्र-तत्र करौने छथि।

"पारो"क कथानक प्रसंग डॉ0 अमरेश पाठक अपन ग्रन्थ मे केने छथि मुदा जंएह कहने छथि ओ बड़ महत्वक बात-

"कथावस्तुक विकास दृष्टिएँ यात्रीक पारो महत्वपूर्ण रचना अछि। इहो उपन्यास वैवाहिक समस्याकेद्द लए लिखल गेल अछि। निर्धनताक कारणें पारोक विवाह एक अधवयसू चैधरी जीक संग होइत अछि। पारोक हृदयक विषाद कँ पारोक विभिन्न उक्ति द्वारा व्यक्त करबाक चेष्टा कएल गेल अछि।

एकर कथानक निर्माण मे औचित्यक त्याग भेल अछि। ई वर्णन सामाजिक वातावरणक, साहित्यिक आदर्शक प्रतिकूल अछि । उपन्यासक कथानक कँ मानव जीवनक यथार्थ सँ घनिष्ठ रूपें सम्बद्ध होएब आवश्यक छैक ई सत्य किन्तु ओहि सत्यक कुत्सिक रूपक चित्रण साहित्यक मयार्दाक प्रतिकूल अछि।

यात्री जी नवतुरिया मे मैथिल समाजक पर्व-त्योहर सभक सेहो चर्चा केने छथि जेना-
जन्माष्टमी, दुर्गापूजा, पौचन्द्र, दीपावली, आदिक सांकेतिक चर्चा देने छथि, पितृपक्ष सन मैथिल समाजक अपन संस्कृतिक चर्चा कए ओ एकर महत्व के देखाएबाक प्रयास कैने छथि। पितृपक्ष मिथिला साज मे खूब प्रचलित अछि। एहि मे लोक अपन अपन मृत माए, मातामही, पितामही, सासु, प्रपितामही आदि जलक अर्ध दैछ आ एक-
एक टा ब्राह्मण के भोज करवैछ तकर चर्चा एहि मे भेल, अछि, जाहि सँ मिथिला समाजक संस्कारक प्रतीति होइछ।

एहिना मैथिल समाज मे प्रचलित विवाहक अनेकानेक सामग्री सभक नाम सेहो एहि मे अंकित भल अछि संगीह समाजक प्रचलित विवाहक विधि सभक सेहो चर्चा भेल अछि, जाहि सँ मैथिल समाजक संस्कृतिक चित्र भेटैत अछि।

मैथिला समाज मे विवाह मैथिल-
विवह पद्धतिक अनुसारे होइछ आ दुर्वाक्षतसन कार्यक्रम होइ तकरो चर्चा कए यात्री जी मिथिलाक गरिमा के बढ़ौने छथि।

यात्री सँ एहि सामाजिक उपन्यासक माध्यम सँ मिथिलाक रूढ़िवादी परम्परा पर वोट कैने छथि, तँ अन्धविश्वास सँ आक्रान्त नौगछिआ गामक नवतुरिआक द्वारा वीनी चेतना सेहो जागृत कैने छथि।

एहि तरहे जनसाधारणक भाषा मे अपन भावना व्यक्त करैत यात्रीजी मानव जीवनक सभसँ महत्वपूर्ण बिन्दु दिश दृष्टिपात कैने छथि आ साहित्य समाजक दर्पण अहि एहि बात कँ नवतुरिआ लिखि कए साकार कए देने छथि आ नवीन पीढ़ीक हेतु मार्ग प्रशस्त कए देने छथि जे आबधु नवतुरिआ, करथु मैथिल समाजक उद्धार ।

जे कहलैन्हि से यात्री पूरा सेहो कएलैन्हि तरखने सँ हिनक उपन्यास नवतुरिआ एतेक महत्व पाबि रहल अछि आएकरा पाबि कए यात्री सन बौद्ध भिक्षु आह्वाला दित भए रहल छथि आ नवीन मिथिला कँ उजागर होइत देखबाक लेल जीवन सँ संग्राम कए रहल छथि ।

बलचनमा -
''बलचनमा'' कँ जँ यात्रीक प्रतिनिधि उपन्यास कही तँ कोनो अर्नगल प्रलाप नहि होएत कारण यात्री एहि उपन्यास माध्यम सँ समाज कँ ई देखएबाक प्रयास कएलैन्हि जे शोषित वर्ग कँ बलचनमा सदृश मजबूत बनि कए स्वयं अपन अधिकारके रक्षा करबाक होएत आ जें अपन अधिकार ओ शक्ति के नहि चिन्हूत, नहि बुझत, आ निरीह बनल रहल तखन ओकर शोषण होएबा सँ कोनो नहि बचा सकैछ आ नहि कोनो बचबाक विकल्प रहि जाइछ ।

मोन पड़ैछ हरिमोहन बाबूक ओ पांती जाहि मे ओ यात्री के कहने छथि-

'छे टका लाखे जहां मैथिलीक कोषागार।

तैत खेदित होइछ मन इ देखि कै व्यवहार

जाय ''बलचनमा'' एते तँ पाबि के दुत्कार

आर स्वागत होइ ओकर जाके प्रयागक हार।''

बलचनमाक प्रसंग यात्री जी अपन ‘‘आईने के सामने’’ नामक, लेख मे लिखने छथि-
‘‘बलचनमा से डरता हूँ। मै अपने इस खेतिहर हीरो से इन दिनों बहुत घबराता हूँ। वह चालीस से उपर का हो चुका है। एक बार गांव का सरपंच भी चुना गया था। सात-सात बेटों का बाप है अब हमारा बलचनमा।

अरे, बड़ा गुस्सैल है बलचनमा.......पीछे पड़ जाता है, तो फिर तबाह कर देता है........

यह मेरा मानस पुत्र ठहरा न?

बलचनमाक प्रसंग डा0 श्री ब्रजकिशोर वर्मा ‘‘मणिपद्म’’ अपन एकटा लेख ‘‘श्री नागार्जुनक चिन्तन धारा’’ मे लिखने छथि-

‘‘बलचनमा विद्रोही थीक । ओ सक्रिय आ सामाजिक रूप थीक आ ओ कपार पर अनवरत हथौड़ा पीटेवाला लोक थीक ।

डा0 दिनेश कुमार झा ‘‘बलचनमा’’क प्रसंग अपन मत व्यक्त करैत कहत छथि-
‘‘बलचनमा’’ यात्रीक उपन्यास कलाक कीत्रिस्तम्भ अछि । डॉ0 जयकान्त मिश्र ‘‘बलचनमा’’क प्रसंग अपन मन्तव्य ‘‘मैथिली उपन्यास ओ सामाजिक चेतना’’ नामक आलेख मे दैत कहैत छथि-

‘‘अपने उपन्यास बलचनमा के माध्यम से नागार्जुन ने सर्वप्रथम ग्रामीण जीवन और भूमि व्यवस्था के साथ बनते-बिगड़ते सम्बन्धों को उद्घाटित किया है।

यात्री अपन मातृभूमि मिथिला धाम कँ गामक कृषक गरीबी, ओकर दुर्दशा, जमीन्दार लोकनिक द्वारा होइत ओकर शोषण, ओकरा पर कएल जाइत अत्याचार सन सामाजिक समस्त्रा कँ उजागर करबाक उद्देश्य से एहि ‘‘बलचनमा’’ न सन उपन्यासक रचना कएलीन । ई पहिने अपन मातृभाषा मे सएह एकर रचना कएलैन्हि पश्चात हिन्दी मे एकरा अनुवाद कैलन्हि ।

यात्रीक बलचनाम मे सम्पूर्ण मिथिलांचल समाजक चित्र अंकित भेल ओ चित्र अछि सर्वहारा वर्धक संघर्षक, शोषण, अत्याचार, अमानवीयता, ओ समाज मे पसरल बिसंगतिक चित्र देखल जा सकैछ । समाजक मालिक कहाबए वला लोकक कुकृत्यकँ। कोन तरहे एकटा जीव ओहो मे मनुष्य तकरा पशहुओं सँ बदत्तर स्थिति में बांधि कए मारि रहल अछि । एहि तरहे गरीब लोकनिक आर्थिक शोषण एहि समाज मे होइत छल आ समाज मौनव्रत धारण कैने छल । परिश्रमी श्रमिकक जीवन समाज मे केहन छल देखल जा सकैछ ।

‘‘नीक सँ भगवान करबे करैत छथि? धारि परानीक परिवार छोड़ि कए हमर बाप मरि गेल, इहो भगवान ठीके एकलक। भूख में मारे दाई ओ माए आमक गुठरीक गुद्दा चूरि-चूरि कए सकैत छल, इहो भगवान ठीके करैत छलाह आ मालिक लोकनि कनकजीर आ तुलसी फूलक गमकइत भात, राहरिक दाहि, परोरक सीमन, घी,

ISSN 2229-547X VIDEHA

दही, चटनी खइत छल, सएह अहो भगवानेक लीला छत। यौकोर दलम बागक तेल हुनका हमर दू कट्ठा खेत पहित छल आ हमरा अपन पौकोर पेटक लेल मुट्ठी भरि दाना ।''

-अनुपम रैना, शोधार्थी, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**डॉ. ललन कुमार झा**

पुत्र ओ पितृकर्म

पिता पुत्रक सम्बन्ध अनुकूल नहि रहलासँ सामाजिक व्यवस्थामे गतिरोध उत्पन्न होएब स्वाभाविके अछि। पुत्रक प्रति पिताक कर्तव्यकेँ नकारल नहि जा सकैछ तँ पुत्रक कर्त्तव्यमे सेहो गुरुतर भारमे वृद्धि भऽ जाइत अछि जे पिताक प्रति अनुकूल व्यवहार करए, किएक तँ पिता तँ गुरुओक गुरु होइत अछि। तँ जीवितावस्थामे पुत्रक कर्त्तव्य विशेष महत्त्व रखैत अछिकारण हुनक ऋणसँ पुत्र मृत्युपरान्त मुक्त नहि होइत अछि। जीवितावस्थामे पुत्र पिताक कहब मानए ओ मृत्युपरान्त हुनका निमित्त पिण्डदान करए एहिमे ओकर पुत्रता अछि, ई शास्त्रीय वचन अछि।

'जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरिभोजनात्।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभि: पुत्रस्य पुत्रता।।

'पुत्' नामक नरकसँ मुक्ति दिएवाक कारणेँ पुत्र कहबैत अछि। एकरा सम्बन्धमे स्मृतिकार बौधायन कहने छथि जे 'पुत्' शब्द नरकक पर्याय अछि आओर दुख तँ नरक अछिए। एहि नरकसँ त्राण दिआबएवला पुत्र होइत अछि। तँ पिता इहलोक ओ परलोक दुनूक लेल पुत्रक कामना करैत अछि।

'पुदिति नरकस्यारण्या दु:खंच नरकं विदु:।
पुत्रस्त्राणात्तत: पुत्रमिच्छन्ति परत्र च।।'

एहि सम्बन्धमे मनु सेहो कहलन्हि अछि जे पिताकेँ पुत् नामक नरकसँ त्राण दिअएबाक कारणहि सुत पुत्र सेहो कहबैत अछि, एकरा साक्षात ब्रह्मा कहलन्हि अछि।

‘‘पुंनाम्नो नरकाद्यस्मात्त्रायते पितरं सुत:।

तस्मात्पुत्र इति प्रोक्त: स्वयमेव स्वयंभुवा।।’’

मनुस्मृति- 9/138

पुत्त्र शुद्ध रूप अछि पुत्रक जकर प्रयोग पुत्र मात्र भऽ गेल अछि। पुत्रहीन व्यक्तिक लेल पुत् नामक नरक सुरक्षित कएल गेल अछि। ‘आत्मा वै जायते पुत्र’ एहि शास्त्र वचनानुसार पति स्वयं अपन पत्नीक गर्भसँ पुनर्जन्म लैत अछि जाहिमे हुनका असीम आनन्द होइत छन्हि। पिता सभ दुखकेँ बिसरि जाइत अछि जखन हुनका पुत्ररत्न प्राप्त होइत छन्हि संगहि पुत्र पिताक सभ क्लेशकेँ दूर कयनिहार होयबाक चाही। जहिना नाव अथाह सागरकेँ पार कराए दैत अछि ओहिना पुत्र इहलोक ओ पारलौकिक दुनू लोकसँ मुक्ति दिआए दैत अछि। इएह कारण अछि जे आनादिकालहिसँ एहिठाम पुत्र जन्मक कामना करैत देखल जाइत अछि। कहल गेल अछि जे- ‘अपुत्रस्य गतिर्नस्ति। भारतीय सनातन धर्मानुसार पितरक लेल प्रतिदिन तर्पण करबाक चाही। एहि तर्पणसँ पितर मृत्युक उपरान्त कोनो योनिमे किएक नहि होथि हुनका सर्वविध तृप्ति भेटैत छन्हि। नित्य जल तर्पणक कामना पितर अपन सन्तानसँ करैत छथि एवं बड़ प्रसन्नतासँ ओकरा ग्रहण करैत छथि। पुत्रहीन पितरकेँ जलक बड़ दुख होइत अछि ओ अश्रुक रूपमे पिबैत छथि। ‘अभिज्ञान शाकुन्तलम्’मे महाकवि कालिदास राजा दुष्यन्तक पुत्रहीनताक व्यथा व्यक्त कएलन्हि अछि। राजा दुष्यन्त शापवशात् गर्भवती पत्नी शकुन्तलाक त्याग कऽ देने छलाह आ पुत्रहीनताक शंकासँ परम खिन्न छलाह। हमर पितर सन्तानहीन प्राणीक द्वारा देल गेल तर्पणक जलकेँ नोरक रूपमे पिउताह।

‘अस्मात्परं वत यथाश्रुतिसंभृतानि को न: कुले

निवपनानि नियच्छतीति।

नूनं प्रसूतिविकलेन मया प्रसिक्तं धौताश्रुशेषमुदकं

पितर: पिबन्ति।।

अभिज्ञान शाकुनतलम्- 6/25

एहने सन भाव महाकवि कालिदास रघुवंश महाकाव्यमे व्यक्त कएलन्हि अछि। राजा दिलीप वशिष्ठसँ इएह प्रार्थना करैत छथि जे पुत्रहीन हमरा बाद पितृ तर्पण जलकेँ दुर्लभ बूझि हमरासँ देल गेल तर्पण जलकेँ हमर पितृ, पितामहादि पितरगण अपन-अपन श्वांस-प्रश्वाससँ ईषत् गरमकेँ पिबैत छथि- ई सत्य अछि किएक तँ दुखी व्यक्तिक नोर तथा श्वांस दुनू गरम-गरम निकलैत अछि।

‘‘मत्परं दुर्लभं मत्वा नूनमावर्जित मया।

पय: पूर्वे: स्व नि:श्वासै: कवोष्ठमुप भुज्यते।।''

रघुवंश- 1/67

राजा दिलीप निवेदन कएलन्हि जे पुत्रहीन हमरा बाद श्राद्ध पिण्डक भावी लोप देखएवला हमर पूर्वज पितृगण दुखी भेलासँ हमरा द्वारा प्रदत्त स्वधा-स्वधान्त पितृमन्योत्सर्ग पितृभोज्य पदार्थक संग्रहमे तत्पर भेलापर सेहो पर्याप्त रूपसँ भोजन करएवला नहि होइत छथि।

''नूनं मत्त: परंवश्या: पिण्डविच्छेददर्शिन:।

न प्रकामभुज: श्राद्धे स्वधा संग्रहतत्परा:।।''

रघुवंश- 1/66

पुत्रक एहि महत्तापर विचार करैत नारद इक्ष्वाकुवंशीय पुत्र राजा हरिश्चन्द्रसँ गर्हस्थ्य मोंछ, दाढ़ी एवं तपस्यादिसँ वारण करैत केवल पुत्रक इच्छा करबाक कहलन्हि-

'पुत्रं ब्रह्मण मिच्छत्वं सर्वलोकोऽवदादद।'

-हरिश्चन्द्रोपाख्यान- अध्याय, 33/गाथा- 04

ऐतरेय ब्राह्मणक एहि अध्यायमे नारद पुत्रक प्राप्तिकेँ अनिवार्य मानलन्हि-

''नापुत्रस्य लोकोऽस्तीति।'' गाथा, 09

एवं प्रकारेँ एहि जगतमे पुत्रक विशिष्टता अछि जे पिताकेँ इहलोक तथा परलोक दुनूसँ पार कराए दैत अछि। तेँ पिता-पुत्रक प्राप्तिक लेल व्याकुल रहैत छथि। कोनो पिता प्राथमिक रूपसँ पुत्रेक कामना करैत छथि। पुत्री कतेको गुणवती किएक नहि होअए पिताकेँ पुत्र चाही। जतए अपुत्र व्यक्तिक मृत्युसँ पूर्व कर्ता पुत्र बनबैत अछि आओर मृत्युक पश्चात् ओ कर्ता निमंत्रण पत्रमे 'मत्पुत्रत्वकर' वा स्त्रीपक्षमे 'मत्पुत्रत्वकरी'क प्रयोग करैत अछि। एहन विशिष्ट पुत्रकेँ धर्मशास्त्री लोकनि अधिकारक संग कतिपय कर्त्तव्य निर्धारित कएलन्हि अछि।

डॉ. ललन कुमार झा, स्थायी पता- ग्राम-पो-रहुआ, भाया-सिमरी बख्तियारपुर, जिला- सहरसा 852127

- अध्यक्ष, मैथिली विभाग, यू.भी.के.कॉलेज करामा आलमनगर, पो- भागीपुर, जिला- मधेपुरा।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**डॉ. चित्रलेखा**

मिथिलाक परिचय

वेद-वेदान्त, पुराण, उपनिषद, धर्मशास्त्र आ तंत्र-मंत्र विद्या एवं संसारक मानव चिन्तनक इतिहासमे ई अपन महत्त्वपूर्ण भूमिकाक लेल सुविख्यात अछि। एतबे नहि एक दिस जँ सामवेदक प्रथम मंत्रद्रष्टा आ ऋगवेदक मरूत्सूक्तक प्रणेता- ऋषि गौतम, शुक्लवेदक प्रणेता- महर्षि याज्ञवल्क्य, भीजल धोती आकाशमे सुखबएवला साधक-मदन उपाध्याय, षड्दर्शन टीकाकार वृद्ध वाचस्पति मिश्र, भगवान जनदिनोकेँ चुनौती तक दऽदेबएवला उदयनाचार्य, आयाची- भवनाथ मिश्र, परमाचार्यवर्य मण्डन मिश्र आदि लोकनिक अविच्छिन्न परम्परा सभसँ मिथिला सदा अलंकृत रहल अछि तँ दोसर दिस मित्रऋषिक आत्मजा मैत्रेयी, ऋषिगर्ग तनया गार्गी, भारद्वाजसुता कात्यायिनी, ऋषि अत्री- कलत्र सती-अनुसूया, जनकनन्दिनी जानकी, भारती, भामती, लखिमा आदि मनस्विनी-विदुषी लोकनिसँ महनीय तथा वन्दनीय रहल अछि। ई भूमिजा जगज्जननी जगदम्बा लक्ष्मीस्वरूपा विदेह नन्दिनी वैदेहीक वसुधा रहल अछि।

12वीं शदीक बंगाली महाकवि कर्णपुर परिजातहरणमे श्री कृष्ण- सत्यभामाक विमानकेँ मिथिलामे प्रवेशक वर्णनक क्रममे लिखैत छथि जे-

''जानकी- जनन- भूमिरीक्ष्यातामम्बुजाक्षि मिथिलेयमग्रत।।

यत्र विज्ञवदनेष्ह्यु दर्पिता नृत्यति

प्रतिगृहं सरस्वती।''

जाहिठाम प्रत्येक घरमे सरस्वती सोल्लास नृत्य करैत होथि, ओहिठामक विद्वत परम्परा अनिवार्य रूपसँ अद्भुत हएत, संगहि जाहि क्षेत्रक राजाकेँ ऐश्वर्य आओर राज वैभवसँ असम्पृक्त रहि कऽ वीतरागी विदेहक योगस्थ कर्णमीमांसकक दृष्टान्त रूपमे आनन्दकन्द भगवान श्री कृष्ण द्वारा अभिहित कएल गेल हो।

श्रीमद्भागवतमे 57 मैथिल जनकक नामक उल्लेखक पश्चात् कहल गेल अछि जे एतेक जनक कर्मयोग विद्याक विशारद भेलाह आओर योगीश्वर- महर्षि- गौतमक प्रभाव सँ घरमे रहितहुँ ओ सुख आ दु:ख आदि द्वन्द्व सभसँ विमुख छलाह। अर्थात् घरेमे जीवनमुक्त भऽ कऽ अन्तमे पब्रह्ममे लीन भऽ गेलाह।

वेद, पुराण, उपनिषद्, स्मृति आदि ग्रन्थमे मिथिलाकेँ मोक्षक नगरी कहल गेल अछि। एहि सम्बन्धमे शास्त्र-पुराणक निम्नलिखित वचन द्रष्टव्य अछि-

''अयोध्या, मुथुरा, माथ, काशी, काञ्ची,अवन्तिका।

पुरी द्वारवती चैव सप्तैता मोक्ष दायिका।''

शास्त्रक उपर्युक्त वचनमे कहल गेल अछि जे अयोध्या, मथुरा, माया (मिथिला), काशी, काञ्ची, अवन्तिका आ द्वारिकापुरी ई सातटा मोक्षक धाम अछि।

अनादिकालहिसँ जगज्जननी माँ जानकी जन्मभूमि आओर राजा जनकक राज्य मिथिला तपोमय एवं तपोवन रूपमे सुविख्यात अछि। जतए वेदान्तक मूल ज्ञानकाण्ड एवं कर्मकाण्ड समन्वित रूपसँ प्रचलित अछि।

मिथिला महात्म्यक गूढ़ रहस्यक ज्ञान प्राप्त करबामे महाभारतक निर्माता भगवान वेदव्यासोकेँ तेना ने बुझि पड़लन्हि जे हुनको लिखऽ पड़लन्हि जे- यदि दूरहुँ सँ मिथिलाकेँ नमन कऽ लेल जाए तँ मुक्ति भेटत सुनिश्चिते बूझू- एहिमे कोनो प्रकारक संशय नहि-

''मिथिला ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि।

तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते, नात्र संशय:।।''

खास कऽ जगज्जननी जगदम्बा जानकीक एहि मिथिलाक, पावन भूमि पर अवतरित भेलसँ एकर महत्त्व आओरो बढ़ि गेल। वेद-वेदाङ्ग, धर्मशास्त्र उपनिषद्, स्मृति, पुराण, काव्य आदि समस्त वाङ्मयमे भिन्न-भिन्न ढंगे एहि मिथिलाक महत्ताक प्रतिपादन उपलब्ध होइत अछि। संगहि प्राचीनता, संस्कृति, धर्मानुकूल आचरण, अध्यात्म ज्ञानक प्रमुखता आदिक दृष्टिएँ एकर महत्ता स्वत: स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

मिथिलाक भूमि एक दिस अपन स्वर्णिम संस्कृति, इतिहास, आलिंपनकला, विद्वता पुरातत्व, मनस्विनी, नारी, युद्धवीर पुरुष लोकनि तथा मिथिलाक लोकदेवीसँ भरल पड़ल अछि तँ दोसर दिस सारस्वत पुत्र लोकनि गौतम, याज्ञवल्क्य, मदन उपाध्याय, धीरेन्द्र उपाध्याय, कालिदास, भवभूति, वृद्ध वाचस्पति मिश्र, आयाची- भवनाथ मिश्र मिथिला विभूति मण्डन मिश्र, उदयनाचार्य महाकवि विद्यापति, कवीश्वर चन्दा झाप्रभृति नरपुंगवर रत्नक सुरभिसँ मँह-मँह करैत अछि तँ तेसर दिस क्रांतिकारी शहीदक त्याग बलिदानमे अग्रगण्य गणेशी, अकलू सूरजनारायणक जीवटतासँ चतुर्दिक मिथिलाक भूमि त्रिवेणीक सदृश पूजनीय, वन्दनीय, अभिनन्दनीय ओ महनीय बनल अछि।

एहिठाम सनातन कालहिसँ एकहि संग शाक्त, शैव ओ वैष्णव आदि सभ पन्थक उपासक निवास करैत आबि रहल छथि। सभ गाममे ग्रामदेवता आ ग्रामदेवी प्रतिष्ठित छथि। लोकक आस्था अविकल-अविचल ओहि देवतासँ जुड़ल अछि। फलत: गाममे धार्मिक तनावक अभाव देखल जाइत अछि। एतबे नहि एतए बहएवला धार आ पोखरि सभ सदानीरा रहल अछि, जकरा पानिसँ गृहस्थ पटौनीक अतिरिक्त पान, मखान, माछ, आम आदिक उत्पादन कऽ अपन जीविका 'सादा जीवन उच्च विचार'क आदर्शक अन्तर्गत जीबैत आबि रहल छथि। एतुक्का लोकक लेल माँछ-भात तँ प्रसिद्ध अछिए संगहि कतेको शाकाहारी छथि। एहिठामक पारम्परिक वेष-भूषामे साँचीवला धोती-कुरता, पाग-डोपटा, चानन-ठोप आ मुँहमे गुलाबी खिल्ली पानक संगहि खान-पानमे मुख्य रूपसँ दही-चूड़ा-चीनी, अमोट, माढ़, मखान, तरूआ, तिलकोड़, खम्हारू, साग, अरिकोंच, ओल, अदौड़ी, वर-बड़ी, कुम्हरौड़ी, अँचार, खट्मिट्ठी, ठकुआ, भुसबा, लाइ-चुड़लाइ, तिलबा, केहुनियाँ खाजा आ मुङबाआदि पर्याप्त मात्रामे खएबाक तथा अतिथि लोकनिकेँ खुअएबाक प्रथा रहल अछि। मिथिलाक बेसी लोक शक्तिक उपासक छथि तँ कबुला-पाती आ परिस्थिति विशेष पर छागरक बलिप्रदानक प्रथा सेहो प्रचलित अछि।

एहिठामक पावनि-तिहारमे दुर्गापूजा, दियाबाती, छठि, तिलासंक्रान्ति, भ्राद्वितिया, जूड़शीतल आदि बेसी प्रसिद्ध अछि। संगहि एकर अतिरिक्त अनेक पर्व मिथिलावासी लोकनिक जीवनक आस्थ्ज्ञा-विश्वासकेँ सनातन धर्मक प्रति दृढ़ता प्रदान करैत अछि। मिथिलामे जे धार्मिक सहिष्णुता विद्यमान अछि से आनठाम देखबामे नहि अबैछ। एत एक समुदायक लोक दोसर समुदायक पावनि-तिहारमे सम्मिलित होइत रहल अछि।

मिथिलामे अनेक सिद्धपीठ- तीर्थ ओ देवालय तथा ऋषि-मुनिक आश्रम वद्यमान अछि, जाहिमे जनकपुर, सीतामढ़ी, शिलानाथ, श्रीजलेश्वर, श्रीकामदानाथ तथा श्री दुर्गा उच्चैठ, श्री भैरव, श्री यामुण्डास्थान, राजेश्वरी, श्रीकपिलेश्वर, अहल्यास्थान, भद्रकालिका, भुवनेश्वर, भुवनेश्वरी, कुशेश्वरस्थान, जयमंगला, उग्रतारास्थान, सिंहेश्वरस्थान, मुक्तेश्वर स्थान, छिन्नमस्तिका, विदेश्वरस्थान, एवं वाल्मीकीआश्रम, डोकहर, गौतमाश्रम आदि प्रसिद्ध अछि।

एहिठाम अनेक वंशक शासन रहल अछि। जाहिमे जनक वंश, पाल वंश, सेन वंश, कर्णाट वंश, ओइनबार वंश एवं खण्डवाला वंश प्रमुख अछि।

गीतमे लोककथा गीत, लोकगीत, सोहर, समदाउनि, फागु भगैत झिझिया, नचारी महेशवाणी, पराती आदि वद्याक स्वर लहरी सनातन कालहिसँ मिथिलामे अनेक पावनि-तिहार पर निनादित होइत आबि रहल अछि। उपर्युक्त पृष्ठभूमिसँ चमकैत-दमकैत हमर मिथिलासम्पूर्ण संसारक संस्कारक मुख्य स्त्रोतास्वनी रहल अछि।

सम्पर्क-

एसोसिएट प्रोफेसर

मैथिली विभाग

यू.भी.के. कॉलेज, कड़ामा- आलमनगर

बी.एन.मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

सन्दर्भ सूची-

1. वेदभूमि- मिथिला- संस्कृति दर्शन- श्री हरिदेव झा
2. मिथिला की धरोहर- पं. श्री सहदेव झा
3. मिथिला माहात्म्य, दरभंगा
4. मिथिला के वेद वेदान्त- पं. श्री सहदेव झा

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**डॉ. चित्रलेखा**

मिथिलाक भाषा एवं साहित्य

मिथिलाक प्रत्येक क्षेत्रक मैथिलीमे स्वरक दृष्टिऍं रंच मात्रक अन्तर स्पष्ट देखबामे अबैत अछि। जखन अन्तर्राष्ट्रीय भाषामे एकरूपता नहि, राष्ट्रीय स्तरक भाषामे भिन्नता तँ अन्य भाषामे रंचमात्रक भिन्नताकेँ भिन्नता नहियेँ कहल जा सकैत अछि। शब्दक उच्चारण ओ क्रियाक अनतमे जोर दऽ देलासँ जे स्वरक उहापोह परिलक्षित होइत अछि तकरा अन्तर नहियेँ कहल जा सकैत अछि। ओहुना कहावत अछि जे-

“तीन कोसपर पानि बदलय

पाँच कोसपर भाषा

दिल्ली हो बा ल्हासा।”

स्वाभाविक बात थिक जे तीन कोसपर पानिक स्वादमे किछु अन्तर होइछ तँ किन्तु अछि तँ ओ आखिर पानियेँ। तहिना शब्दक उच्चारण-प्रयोग जे अगल-बगलसँ कनेक-मनेक प्रवाहित रहैत अछि ताहि आधारपर आएल अन्तरपर विचार करैत डॉ. ग्रियर्सन श्री गोविन्द झा, डॉ. सुभद्र झा, डॉ. दिनेश कुमार झा आदि ठाम-ठामपर अपन अन्तर-विचारक चर्च कएने छथि। श्री गोविन्द झाजी पूर्णियाँ, भागलपुर ओ पूर्वी संथाल परगन्नाक बोलीकेँ पूर्वी मैथिली, मुंगेरक बोलीकेँ दक्षिणी मैथिली, मुजफ्फरपुर आ पूर्वी चम्पारणक बोलीकेँ पश्चिमी

मैथिली, नेपालक तराईक समस्त मैथिली क्षेत्रक बोलीकेँ उत्तरी मैथिली तँ मध्य मिथिलाक ओ सभ क्षेत्र जाहिठाम मैथिलीक अलावा ककरो विशेष प्रभाव नहियेँ जकाँ छैक तकरा केन्द्रीय मैथिली कहि कऽ चर्चा कएलन्हि अछि।

तहिना डॉ. दिनेश कुमार झा अपन प्रसिद्ध ग्रन्थ ‘‘मैथिली साहित्यक आलोचनात्क इतिहास’’मध्य सेहो बोली ओ स्वरक उहापोहकेँ आधार बनबैत ओहि मैथिलीकेँ जे मिथिलाक हृदयस्थलीकेँ स्पर्श करैत अछि अर्थात् मिथिलाक केन्द्रमे बाजल जाइत अछि तकरो केन्द्रीय मैथिली कहलन्हि अछि, ओ केन्द्र थिक उत्तरी दरभंगा ओ मधुबनीक क्षेत्र। केन्द्रीय स्थान होएबाक कारणेँ एहि केन्द्रीय मैथिलीकेँ ओ आदर्श मैथिली सेहो कहि कऽ सम्बोधन कएलन्हि अछि। दक्षिणी दरभंगा, दरभंगा शहरी क्षेत्रक पूर्वी मुजफ्फरपुर, पश्चिमी पूर्णियाँ धरिक क्षेत्रमे बाजल जाइबला मैथिलीकेँ दक्षिणी मैथिली कहने छथि तहिना पूर्णियाँक पूर्वी क्षेत्र एवं सम्पूर्ण बंगालक दिनाजपुर ओ कि मालदह क्षेत्रमे प्रचलित मैथिलीकेँ पूर्वी मैथिली कहि सम्बोधन कएलन्हि अछि।

उत्तरी संथाल परगन्ना, दक्षिणी मुंगेर ओ भागलपुर दक्षिणी भागक मैथिलीकेँ छिका-छिकी मैथिली नाम देलन्हि अछि। ताही प्रकारेँ पूर्वी चम्पारण ओ पश्चिमी मुजफ्फरपुरक प्रचलित मैथिलीकेँ पश्चिमी मैथिलीक नामे चर्चा एकलन्हि अछि। उत्तरी दरभंगा तथा मधुबनी क्षेत्रमे बसल मुसलमान सम्प्रदायक बीच बाजल जाइबला मैथिलीकेँ जे रंच-मात्र परिवर्तन परिलक्षित करैत अछि। तकरा जोलही मैथिली तथा जातिगत हिसाबेँ अन्तर भेल भाषाक आधारपर पूर्वी सोतिपुराक क्षेत्रक बोलीकेँ केन्द्रीय जनसाधारणक मैथिली कहि- एकर क्षेत्र मधुबनी सबडिविजन मानलन्हि अछि।

स्पष्ट अछि जे बोलीक उच्चरणक आधारपर मैथिलीक रूप निर्धारित कएल गेल अछि। सूक्ष्मतासँ विचारोपरान्त डॉ. दिनेश कुमार झाक मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहासमे चर्चित रूप ग्रियर्सनक द्वारा देल गेल विचारसँ बहुत दूर धरि मेल खाइत अछि। ग्रियर्सन मैथिली भाषाक विभाषाक रूपमे तँ कतहु चर्च नहि कएलन्हि अछि किन्तु बोलीमे स्वरक उहा-पोहक आधारपर आदर्श मैथिली, दक्षिणी मैथिली, पूर्वी मैथिली, छिका-छिकी मैथिली, पश्चिमी मैथिली आ केन्द्रीय जनभाषाक मैथिली कहि कऽ चर्च अवश्यक कएलन्हि अछि।

स्वरक उच्चारणमे कनेक-मनेक क्षेत्रियताक दृष्टिए अन्तर स्पष्ट अवश्य अछि तेकर ई अर्थ नहि जे मैथिली भाषा ओ साहित्यमे कतहु अन्तर अछि। नेपालक सप्तरी, बारा, जनकपुर, सरलाही, विराटनगर, सुनसरी, धरानअथवा धनकुट्टा क्षेत्रक मैथिली, एहि क्षेत्र सभक प्रयुक्त होइत मैथिलीसँ भिन्न नहि। हँ, एतबा अवश्य जते राजनीतिज्ञ भलेँ ही ओकरा अन्य देशमे बाँटि कऽ धऽ देने हो। मैथिली दुनू क्षेत्रकेँ अपन एकरंगक स्नेह दए एके संग एक दोसराक हृदयकेँ महने अछि।

हँ, एखन किछु राजनीतिज्ञ अपन पेट ओ राजनीति चलएबाक हेतु संगहि राजनीतिक रोटी सेकबाक निमित्त एकर अपनहि अंगकेँ अंगिका आ बज्जिका नाम दए एकर अंकेँ विकलांग बनएबाक कुत्सित प्रयासमे अवश्य लागल छथि। यद्यपि हमरा जनैत ओ सुफल होमयबला नहि छथि, ओ भाषणे आ पोस्टर धरि समटा कऽ रहि जएताह। तथापि, ओ सभ अस्थिरताक जहर फैलएबासँ बाज नहि आबि रहल छथि तथा मैथिलीक खुट्टा एखन धरि डोलल नहि अछि तथापि एकर सुरक्षा हेतु एकरो राजनैतिक संरक्षणक नितान्त आवश्यकता अछि जाहिसँ मैथिली अपन कतेको हजार वर्षक अपन किलाकेँ डोलय नहि देअए।

सन्दर्भ सूची :-

1. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास- डॉ. दिनेश कुमार झा
2. मिथिला- डॉ. लक्ष्मण झा
3. मिथिला भाषामय इतिहास- मुकुन्द झा वक्शी

सम्पर्क-

एसोसिएट प्रोफेसर

मैथिली विभाग

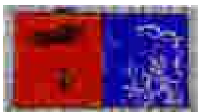
यू.भी.के. कॉलेज, कड़ामा- आलमनगर

बी.एन.मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३. पद्य

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

इरा मल्लिक

३३ टा कविता आ गीत

इरा मल्लिक
१
लक्ष्य कठिन नहिं
जीत हमर हेतय
जनैत छलहुँ हम
हारि नहिं बैसब
मोन में
ठनने छलहुं हम।
एकाएक जे बिर्रो उठल
जिनगी में हमर।
गत्र गत्र व्यथित छल
किनका सं कहितौं।
परिस्थिति एहन
किछ बाट नहि भेटय
अहि बाट जाउ आ कि ओहि बाट जाउ
इत: तत: में मन छल
भगवान के भरोस छल
श्रेष्ठ जन के आशीर्वाद संग छलै
परिस्थिति बुझ्सु
सरल ते नहिये छल;
ओहि कांट कूश भरल

बाट संओ निकलनाय।
मोन में अपन हम
ठानि चुकल छलौं
नहिं हारब थाकब
सतत आगू ताकब
अछि कठिन बाट
एक मोन में उचाट
विजयक प्रचंड वेग
बढ़बैत डेग
मोन में अथाह भरल
आत्मविश्वास क तेज
सफलताक ताज
मेहनत के राज
दिन राति में नहिं
ताकल विभेद
सुदृढ विचार
संयमित व्यवहार।
ओहि कंटकीर्ण बाट पर
चलैत रहलहु
एक एक डेग
बढ़ैत रहलहुं
मंजिल दूर छल
लक्ष्य पेनाय सुगम नहिं छल
मुदा;
एकटा दृढ़ आस छल
अपन कर्म पर विश्वास छल
जीत हमरे हेएत
आइ नहिं ते काल्हि

विजेता हमही छी
पहाड़ तोड़ि हम
बाट बना लेब सुन्दर सन
ओहि सुमार्ग पर चलि
उन्नति के शिखर छुअब
ओ विस्तृत अनन्त नीलाभ
सम्पूर्ण आकाश हेएत हमर ।
कामयाबी के बाट
बहुत आसान नहिं
किन्तु ओतेक सेहो कठिन नहिं
मोन में जौं एक बेर ठानि लिय
ते किछ दुर्गम नहिं।
ओहि विजयीभाव संओ
सफलताक शिखर निश्चय भेटत।
ई हमर विश्वास अछि।
जीवन के मूलमंत्र अछि
पहिने स्वंय के जय करू
हौसला राखू!
धैर्यपूर्वक, भए एकाग्रचित्त
अनासक्त भाव सँओ
कर्म करैत रहू।
कर्म करैत रहू।

२

महानगरक माया

ई महानगर छै यौ भाइ!
बड़ड भव्य! विशाल! मनोरम!
मायावी नगर!

एतय लोग बहुत व्यस्त भेटत
नगर व्यस्त! सड़क व्यस्त!
दिन-रातिक कोनो भेद नहिं।
व्यस्त लोग,
अपने में मस्त लोग!
नहिं छैन्ह किनको
आन किनको संओ लेनाइ-देनाइ!
अपार्टमेंटी व्यवस्था छै
भरपूर सुख सुविधा छै।
नम्हर गाड़ी! चकाचक फ्लैट!
फ्लैटक भीतर सजल -धजल
एक सुन्नर दुनियाँ।
सुंदर घरवाली
सभ्य बच्च! मुदा! नेनपन संओ दूर!
बाल सुलभ कौतुक नहिं भेटत एतय।
पड़ोसी एक- दोसर संओ
अनचिन्हार।
जिनगी में भागम -भाग
मचल छनि
बड़का-बड़का मॉल ,
रेस्टोरेंट , थिएटर
जिनगी संओ खुश हेबाक
सब साधन
तहियो किनको मुँह पर
उत्फुल्ल आत्मीय खुशी
कहाँ देखै छियै!
सब सँओ अपस्यांत ई शहरी लोग
अपन डफली ,अपने राग

अपने सुर, अपने तान
अलापि रहल छै!
कैंचाक(पैसा के) रौद छै
ओकर प्रचंड चकाचौंध छै
पाइ के उपार्जन
मात्र इयैह एकटा लक्ष्य छै।
सौंसे नगर भागि रहल अछि
ओहि गन्तव्यक दिस!
जीवन में आगू बढ़बाक
तीव्र लालसा में
मनुक्खक मानवता
कतहु नष्ट भS गेल छै
एक -दोसर कँ धकेलि कS
छिटकि मारि ,अपन हित
साधि लेबा में
कनिको नहिं हिचकै छै।
भौतिकवादी लोग!
हृदयविहिन लोग!
गरीबक एकटा विशाल वर्ग
सेहो छै एतय
शहरक बाहरी ताम-झाम
आ चकमक दिन-राति देखि
महानगरक महामाया सँओ
दिक् -भ्रमित लोग!
गाम -घरक खेती-पथारी
बाड़ी-झाड़ी, डीह -डाबर
आमक गाछी, पोखरि ,मांछ
उज्जर मखान!

ISSN 2229-547X VIDEHA

खिलखिलाइत हँसी-खुशी
सब किछु त्यागि
मायावी शहरक मोह-पाश संओ
बन्हा गेल छैक-------बड्ड मजगूती सँओ!
शहर में बढ़ैत मजदछर वर्ग
दुनु सांझक बुतात (रोटी) के ब्योंत में
ओझरायल जा रहल छै
करेजा-तोड़ मेहनति
करैत दिन -राति
तहियो ओकर बच्चा
भूखे बिलबिलाइत भेटत!
मंदिर में,
मूर्तिक दुग्धाभिषेक हेतै
घैलक घैल दूध
दुग्धाभिषेक के नाओं पर
बहाओल जाइत छै।
मन्दिरक बाहर गरीबक बच्चा
भूखे - पिआसे चिचियाबैत
तापित पिपासित
ओहि शिशुक कंठ तर
एको बुन्न दूध नसीब नहिं
भूखे तड़पैत शिशुक लेल
मानवताक! करूणाके एको बुन्न
नहिं भेटत शहर में।
बड्ड अजगुत देखल
अहि संसार में
किनको जिनगी में
सब दिन होली छै

ISSN 2229-547X VIDEHA

आ सब राति दिवाली छै
दोसर दिस, किनको भाग्य में
अन्हारे-अन्हार पसरल छै
मनुक्खक ई सीमा-रेखा
कहिया धरि! आखिर कखन धरि
जीबैत रहतैक।
जिनगीक ई दुनु रंग
समय के चक्की में
कि अहिना पिसाइत रहतैक?
गरीब आ धनिक,
समृद्ध आ विपन्न
कारी उज्जर बनल
महानगरक ई सीमा - रेखाक भेद
मरैत मानवता
टुटैत सामाजिक सरोकार
किनको ते मिटबैये पड़तैन्हि
शहर वा गाम
हमाज तँ समाजे छैक
समाजक जन-जन में
सुखमय भोरक सेहन्ता
जगाबS पड़तैक
कृष्ण बनि
शंखनाद करS पड़तैक
सुखी समाज!! खुशी समाज!!
सर्वे भवन्तु सुखिन:
सर्वे सन्तु निरामया!!!!!

३

स्वर्णिम भोर क आस

(जीवन एक आस थिक! ई जिंदगी के हम आशावान बना जीबय के प्रयास करी! इयैह अहि कविताके मूलमंत्र अछि! कविताके इयैह प्राणतत्व छैक। पढ़ब अहां सब।)

घुरि आओत ओ दिन!
हाँ यौ!
ओ शुभ दिन
एक दिन,
घुरि औतै जरूर
हमरा विश्वास अछि मोन में।
सुख -दुख ते बुझू
जीवनक अंग थिक।
घबड़ाएब कियैक!
जहिना
अमावस्या आ पूर्णिमा
दिन संग राति
सबके अस्तित्व छै
एखन दुख सँओ ग्रसित,
दुखित संसार अछि।
मुदा ओकरो अंत निश्चित छैक।
केहनो घुप्प अन्हार राति होउक
कि ओ रोकि सकै छै
स्वर्णिम भोरक आगमन के।
हम जनैत छी
फेर आओत
ओ दिन।
खुशी सँओ उछाह सौँ भरल!
बिसरत सब दुख
जे एखन तक लोग

भोगि चुकल छैथ।!
चूल्हा में आगि हेतइ
खुशी के बसात हेतैक
नीपल चिनबार पर
बासन में दालि आ
बटलोही में भात हेतैक
ठरिया गेन्हारी के सुअदगर साग
चार (छत) पर सँओ तोड़ल
तिलकोरक पात ।
आइ तरूआ लेल
तिलकोरक पात
चाउरक पिठारे संग सजता।
ओह!
तीमन तरकारी
भात दालि
गरम गरम!
अग्नि देवता की जय।
जारैन गोइठा
चूल्हा ढेकी
जाँत में दररतै
अगबे राहरि
काकी मैंया जंतसार गेतैक
आनन्द पसरतै
गीतक धुन संओ
स्वर्ग उतरतै धरती पर
नाचि उठतै अंगना।
बासन पानि
तीमन तेल।

डिबिया जरैत
हरैत तिमिरक अस्तित्व
पसरैत इजोत !चहुँओर।
सुखक दिन औतय।
मनुक्खक दिन बदलतै।
कोठी भरल अन्न
खुशी भरल मन्न
दलानक आतिथ्य
देवता घर सं उठैत
गोसाउनिक गीतक ।
गूंजायमान हेतैक
धूप लोबान के सुगंधि संओ
पवित्र भ जेतै घर ,
झूमि उठतै खेत -खलिहान।
आओत अगहन मास।
जीवन में तखन ओअतैक
हास उल्लास
चहुंदिस पसरैत हँसी के स्वर लहरी
चतरैत रहतै सबटा खुशी
लतरैत रहतैक जीवन बेल।
जी नहिं हारू!
मोन नहिं मारू
जिनगी मिलल अछि
कर्मठता संओ संवारू!
धैर्य संओ सम्हारू!

४

मनुक्ख

कोना चलि दैत छै लोग ओहि बाट पर

जे टिकल रहैत अछि निछच्छ
झूठ,छल,प्रपंच फरेब के बुनियाद पर।
जिंदगी के दौड़ में भनहि पाछू रही
मुदा एहन शार्ट कट के बाट
हमरा मंजूर नहिं।
हमर संस्कार के स्वीकार नहिं।
ककरो नोर पर हम खुशी के महल
ठाढ़ नहिं क सकै छी!
दुनिया एहने भ गेल अछि
काजक बेर लोग दोसरा के
बापो कें बाप बना लेत
काज निकलि गेल ते
निकालि देत कात।
हम देखैत रहैत छी
लोगक स्वार्थपरक संबंध
प्रपंच रचैत
पांखि लगा उड़ैत
लिप्सा लोलुपताक उडान दिस।
आओर कतेक नीचा खसत नैतिकता
पैर तर कतेक धंगाइत रहत
इमानदारी! भलमनसाहत!
सोचि के मोन
बहुत उदास अछि।
हाँ! हम बहुत उदास छी!

५

इयैह कामना हमर

(हमर ई कविता पढ़ैत छी कतेको बेर हम! मुदा मोन हमर, अहि रचना कें फेर फेर पढ़य लेल उत्सुक रहैत अछि सदिखन!अहूँ सब पढ़ू हमर ई रचना!)

पसरल अछि भीड़
चारों दिस अथाह,दूर तक।
हम ताकि रहल छी
ओहि भीड़ भाड़ में
अपन हित मित
कुटुम्बीजन कें।
मुदा कियौ नहि
दूर दूर तक
दृष्टिगत होयत छैथ।
हम हारि थाकि के बैस चाहैत छी
किन्तु, इ की?
हम ते ओहि भीड़ में
स्वंय हेरा चुकल छी!
हम के छी?
हमर कि पहचान अछि!
अपन ठेकान कोन अछि,
सोचय लगलहुँ।
मोनेमोन ओझरा गेल छलहुं।
अपन कहि के हमरा लग
ते किछु नहिं अछि।
ई तन के चोला,
ओ मन
सब हमर कहां अछि।
चलैत प्रवाहित सांस सं पूछलियै
ओहो कोनो निश्तुक्की नहिं दैत अछि जवाब।
शरीर सँ सेहो पूछलियै हम
कतेको बेर
बहुत टोहकारलियै ओकरा

ते एक्के बेर खौंझा के बाजि उठल
हम शरीर छी!
हम कोनो एक तत्व संओ बनल छी?
पांचो पांच तत्व के मेल संओ
हमर अस्तित्व अछि।
हम कोना के
तोहर सवालक जवाब दियउ।
क्षिति,जल,पावक,गगन,समीर
सबसंओ तोरा पूछहि पड़तौ
अपन मोनक सवाल।
हम छघुनता में पड़ि गेलहुँ!
शरीर अपन वश में नहिं
कखन रहत नहिं रहत
साथ छोड़ि देत
के कहलक अइ।
आ हम ओहि में
अपन अस्तित्व ताकि रहल छी!
सदिखन मोनक अनुरूप
परिस्थिति नहिं होयत अछि।
अछि चारि दिन के ई जिन्दगी
अहि जिन्दगी सं कामना अछि
जावत जीवैत रही
लोकहित काज आबि सकी
हमर एक एक सांस
किनको खुशी के कारण बनय।
अहि जग में ,
आओर राखल की छैक,
मोह,माया,तृष्णा!

अपूर्व मृगतृष्णा!!!!

६

भोर विभोर

भोर !
ओह!!!
भोर हमरा विभोर कS दैत अछि!
हमरा बड्ड नीक लगैत अछि।
अह्लादभरल आतुर हमर मोन
निशदिन,
भोर के बाट जोहैत अछि।
नैसर्गिक सौन्दर्य संओ पूरित,
हे उषाकाल!
उगैत सूर्य के रक्तिम लाली!
मुग्ध भ जायत छी हम
अहाँक अनुपम
बाल अरूणोदय
रूप निहारि।
नव उर्जा संओ
ओत प्रोत लगैत अछि
भोरूकवा पहर !
आकाशक कपाटपट खोलि
हँसैत मुस्कैत
ओ ललकी किरण!
नवकुसुमित
मुंह खोलि खिलखिलाइत पुष्पबृन्द!
हरित पात पर
चमकैत हीरक ओसकण!
संगीत लहरी भरैत

चतुर्दिक मधुर राग छेड़ैत
मंद मंद सिहकैत पवन।
पसरल चहुंदिस
प्रकृतिक हिलकोर
झुमैत मदमस्त बयार।
सोन सन झलकैत
गहुँमक बालि।
स्वर्णिम उषाकाल के नभांगनमें
किरिण फुटैत भोर
लुटबैत चहुँओर
निर्द्वन्द्व खुशहाली
मनोरम प्रकृतिक सुंदरता।
खग विहग के कलरव
प्राण - ओज संओ भरल
तन्मयता स्फूर्ति ,
जखन भरैत अछि जन जन में
प्रकृतिक सामीप्य भेटि जायत अछि
मेटा जायत अछि सब
शोक संताप।
जी उठैत छी हम
पलभरि में
उत्फुल्लताक संग
एक नवशक्ति सं प्रेरित
आत्मशक्ति सं सिंचित जीवन।
जगैत संसार,
अलसाएल नीन्द तोड़ैत,
शीतल बयार।
कठिन मातृत्व के सुंदरता,

अलख जगबैत
बिहसैत शैशव के निश्छलता,
स्वच्छ नदी के कलकल छलछल
पानि भरैत पनिहारिन।
भोर होइ संओ पहिनहि
कान्ह पर हल धेने,
दुनु बैल के आगू केने
परातीक सुर दैत
गीत गबैत,
अपन कर्मभूमि
दिस जाएत कृषक,
बाट में कतेको बेर
बारंबार जोर जोर संओ
बैल के टोहकारैत
जेना सबटा मोनक बात
ओकर बैल बुझैत हो
आकि बैलद्वय के बात
बुझैत होय ओ किसान।
जगत के निश्छलताक
अपूर्व दर्शन
जीवात्माक मौन संवाद स्वरूप
किसान आ बरद;
ओहि दुनु जीव के मध्य
विलुप्त होयत अन्तर्भेद
आत्मा संग परमात्माक एकाकार
सहजहि ओहि भाव के
अध्यात्म रूप पाबि
आत्मज्ञान भ जायत अछि।

तपोभूमि में
श्रमाहूति दइ लेल तत्पर
माथ में पगड़ी बन्हने किसान
एकटा गमछा मात्र देह पर।
ओ साधारण शरीर नहिं अछि
सख्त कठोर भुजदंड
निरन्तर श्रमतप संओ तपल
फौलादी मजगूत चाकर छाती।
तपोभूमि में
अपन खून पसीना में भीजल
एक एक श्रम बिन्दु सँगे
श्रमाहूति देताह।
संग में छैन्ह हुनकर
सहगामिनी सहधर्मिणी सहचरी!
भोर! अपना संग अनैत छैक
जीवन के कतैको सुन्दरता
विविध रूप रंग छटा
पवित्रता !
दृष्टिगत होयत अछि जे
संसार के परिवर्तन!
आरंभ आ अन्त,
प्रकृतिक नियम थिक।
दिन आ राति,
समय के मर्यादा थिक।
सुख क साथ दुखक आहट
आ दुखक गर्भ में सुखक आस
हमेशा अंर्तनिहित होइत अछि।
इयैह जीवन - चक्र थिक

अटल! शाश्वत आ परम सत्य।

७

घुंघट के बदलैत स्वरूप

ललना!
आब नहिं ओ घुंघट में रहती
जमाना के संग कदम मिला कए
आगू पथ प्रशस्त ओ करती।
तानल घुंघट के भीतर
दबल सिकुड़ल छल हुनकर दुनिया
घुप्प अन्हरिया चहुँ दिस पसरल।
कलुसित कुंठित जीवन छल,
छल मौन शापित बिखरैत प्रतिपल।
दुनु नयन के संपूर्ण गगन ते
बस ओहि घुंघट में सिमटल छल।
मोन में उठैत विचार बवंडर
रूढ़िवादी समाजक स्वनिर्मित
कतेको तरहक वर्जना आ बेरी
ऊँच -नीच के प्रश्न आ उत्तर।
आब ओ अपन अस्तित्व पहिचानि चुकल छैथ
नेत्र अपन ओ खोलि चुकल छैथ
जानि चुकल छैथ घुंघट के तर्क ओ
शर्म हया नयन के गप्प थिक।
पैघक लिहाज ,स्त्री के लालित्य
ओकर कुलिन व्यवहार में निहित थिक।
जानि रहल छैथ ललना ,
आब! घुंघट नहिं अछि स्त्री के गहना।
घुंघट के व्यापक अर्थ अछि गहरा
घुंघट नहिं आब लाजक पहरा।

अपन प्रखर प्रतिभा के दम पर
अपन शक्ति स्वरूप सार्थक करती
व्यापक जग असार पसरल छै
उन्नति पथ पर अग्रसर होयती।
मौका सबके दुनिया दैत छैक,
फेर अस्तित्वहीन बनि किये ओ जीती।
अपन आत्मविश्वास जगेलैन ललना,
पाछू मुड़ि नहिं एकबेर तकलैन
सफलता क हरेक क्षेत्र में
कामयाबी के झंडा फहरौलैन!
साबित केलैन्ह अपन अस्तित्व ओ,
दुनियाँ भरि सन्देश पठौलैन!
सफलता के बाट कठिन होय केतबो,
संघर्षमय हो!
कंटकीर्ण हो!
ललना कहियो विचलित नहिं हेती!
समाजक एहेन सड़ल गलल मानसिकता,
कहियो ओ स्वीकार नहिं करती।
आब नहिं ओ घुंघट में रहती!
आब नहिं ओ घुंघट में रहती!

८

सच छै

अहाँ के देह सँओ बन्हि कऽ
अहीं के नेह में सनि क ऽ
हमर
जिनगी बदलल
हम!हम नहिं रहलौं
अपन पहचान

सब बदलल!
अपन वजूद
व्यक्तित्व
सब किछु
बिसरि चुकल छी हम।
नहिं हमरा में
हमर स्वत्व बाँचल
आओर नहिं अपन स्वातंत्र्य
सब किछ मेटाकS
अप्पन दुनिया अनुपम बसा नेने छी
ओकर सुन्दर रंग छटा में
आकंठ हम डूबल छी।
अर्पण !
समर्पण !
पूजा!
,अराधना!
सब प्यार में समाहित अछि अहाँके।
स्वयं समर्पित केला संओ
मिलल जीवन के एक
नवीन अर्थ!
अपूर्व अछि !
सबसँ अलग;
पसरल आब --- !समबन्धक विस्तृत क्षितिज!
सुन्दर !सम्पूर्ण!
समग्रता सँओ भरल।
ई दू आत्मा
दू शरीरक गप्प नहि थिक
ई थिक द्वैतक योग सौँ बनल

अद्वैत क निर्मल अविरल प्रवाह
जखन नहिं द्वैत बाँचय
एकाकार भऽजायत अछि
जेना कि ,
बून्न !
सागर में विलीन भ
एकत्व स्वरूप प्राप्त भ जायत अछि।
किछ एहने सन दशा अछि
हमर आ अहाँक अस्तित्वक ।
एक दोसर के पूरक!
हमर मोन कहि उठैत अछि
कि अहाँ
कि हम
दुनू में अन्तर कतय!
एक आत्मा छी
एक प्राण बसल
शरीरक कोन गप्प थिक
ई ते नश्वर छैक
रहत आ कि नहिं रहत
सत्य इएह अछि!
हमरा अपन अहि रूप में
दर्शन होयत अछि
सत्य शिव सुन्दर स्वरूप के।
हमशरीर मात्र अलग छी!
मुदाअहाँ ;
हमर आत्मा छी!!!
हम अहाँक अन्तर्तम में बसल
अहींक स्वरूप धारण क लेने छी!

दू तन एक प्राण छी!
हमरा अहाँ में ई विभेद कतय!
पवन संओ सुरभि विलग कतय!
पवन संओ सुरभि विलग कतय!!!

९

जीवन-चक्र

डाँढ झुकल अछि
नैन थाकल अछि
तहियो हम्मर माँ
कत्तेक सुन्दर अछि।
चाम लटकि गेल
केश उज्जर छैन्ह
शुभ्र इजोरिया सन
हँसी निर्मल छैन्ह!
उमिरक बान्ह सँओ
के बान्हत ममता
जननी जग के
सृजनहार छैथ।
जीवनक किछु
एहने सन सत्य
उमिरक चारिम प्रहर
बड़ निर्मम कठोर
भेल भाव प्रचंड
इहो शब्द बुढापा जर्जर!
ई थकित नैन
किछ कहैत बैन
सिकुड़ल अछि चाम

विस्तृत अछि ज्ञान।
अनुभव के गप्प
सब मुश्किल हमर
होयत अछि अंत
ओकर कहल
हर एक शब्द
हमरा लेल अछि
वेदजन्य उपमान
नि:शब्द कथन!
किछु सिखबैत अछि
हमरा!
हुनक,
बड गहन सघन
केशक शुभ्र स्वच्छ
इहो धवल रंग
ई उमिरक सत्य
अछि संख्या के ढलन
दुनियाँक चलन
कि वयस ढरल
उतरल उमंग!
परिपक्व चिंतन
सुखद मनन
प्रज्ञा प्रणीत
मौन चिंतन
इहो छल एक -एक
गुजरैत प्रहर
प्रकृतिक आगमन
अनुभव अगाध

ISSN 2229-547X VIDEHA

विस्तृत नीलाभ
नवसृजनक लेल
छैथ ओजपूरण !
नबका पीढ़ी के
ओ कल्पतरू।
जीवनक अजस्त्र
सब आत्मिक प्रमुदित,
अह्लाद भरल!
ई समयक चक्र
चलैत रहत
निर्बाध !अनवरत्।
इयैह थिक
इहलौकिक परम सत्य!

१०
सम्हारू निज अस्तित्व क

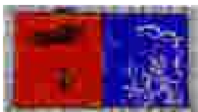
जीवन- यात्रा
सहज होयतो
अनायास
कखनो -कखनो
असहज भऽउठैत अछि!
बहुत बेर !
कतेको बेर,
ई
देखना गेल छैक जे
बेकसूर होयतो
कसूरबार ठहरा देल जायत छैथ लोग।
ओहो अपन

स्वजन द्वारा!
विश्वास के धज्जी उड़ैत देखि
आत्मा कलपि उठैत अछि।
ओ चोट के गहराई
व्यक्तित्व के
अतल तल तक
हताहत करैत
आत्मा तक उतरि जाएत अछि।
बड़ी आसानी आ सहजता संओ
स्वभावक कोमलता ,
सहजता आ मृदुलता के
बड़ी निष्ठुरता संओ मसलि के
आत्मा के;
विदिर्ण क दैत छैथ किछ लोग।
अहि परिस्थिति संग
अपना के सम्हारब बहुत कठिन होयत छैक।
अहि अवस्था में
अहि परिस्थिति में
अपन मोन के
एकदम शान्तचित्त,स्थिर राखब
होयत छैक परम जरूरी ।
स्वयं में
अपन आत्मशक्ति कें
जाग्रत करब जरूरी।
लोगक पक्ष के
सुनबाक साहस राखब जरूरी।
लोगक आरोप प्रत्यारोप में
कतेक सच्चाई छै

या ओ आरोपक परिधि के
ओ कुटिल मानसिकता के लोग अपना हित में
कतेक व्यापक बनौने अछि
सब बात के अर्थ बुझब जरूरी।
जरूरी नहिं छैक जे
हम देखि रहल छी ओ
नितान्त सत्य हो
भ सकैत अछि
देखल ओहि परिदृश्य के
कोनो आओर अर्थ हो
ओहि परिदृश्य में
ओकर सच दबि रहल हो
जे भी कारण हो
यदि अहांके
जबर्दस्ती कसूरबार बनबय के प्रयास होय
तखन
ओहि लोग संओ,
ओहन विषम परिवेश संओ
डटि के सामना करी
सौम्य शान्त व्यक्तित्व में
मुखर प्रखर रूप धारण करू
शान्त शीतल चन्दन स्वभाव के
रगड़ि अग्नि प्रज्वलित करू।
देखा दियऊ
साँच हर अवस्था में सांच होयत छैक
सांच के प्रमाणक आवश्यकता नहिं
सांच शक्तिवान अछि
सांच के आंच नहिं।

आ बिना विलम्ब केने
शीघ्र स्वंय के
ओहि निषेधात्मक विचारधारा संओ
अपना के सर्वथा पृथक करी ।
एकरा पलायनवाद नहिं बुझू।
अपन बहुमूल्य समय कें
अपन उर्जा कें
शक्तिवान बनाउ।
सक्षम बनाउ।
व्यक्तित्व में विस्तार दियौ।
अपन अस्तित्व के सम्मान करू
अपन व्यक्तित्व के आदरणीय रहय दियौ
अपना के सहेज क राखू।
अहांक अपन
समय,उर्जा,मर्यादाक सम्मान
स्वंय करब उचित!
लोग के कि लगैत छैक!
हुनका ते बस
आगि लेसि
हवा दैत
धू धू जरैत ओहि आगिक पसाहि में
हाथ सेकैत
बड्ड आनन्द अबैत छै ।
मुदा!
ई अटल सत्य छै
कि
जे कियो अबुझ लोग
अकाश के पाथर मारत

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ते ओ पाथर
वापस ओकरे चोट पहुंचाएत निश्चित।
हरेक ध्वनि के
प्रतिध्वनि होएत अछि।
तैं
जे हमर मूल स्वभाव अछि
एकटा नित्य आत्मा अछि
ओहि में
आकाश सदृश व्यापकता के
यथावत रहय दी!
शुभ्र!
पवित्र!
जाज्ज्वल्यमान्!

११

एहन कियैक होयत छैक
(अपन माँ के इयादिमे)

माँ हमर!
माँ !
अहाँ चलि गेलौं।
कियैक!
क्षितिज के ओहि पार!
सब किछ लगैत अछि रिक्त- तिक्त
अधूरा अधूरा।
अहाँ बिन किछ नहिं लगैत अछि अप्पन।
सब किछ लगैत अछि वीरान सन
अहां हमरा सदिखन जे

ISSN 2229-547X VIDEHA

बजबैत रहैत छलौं !
टोकैत छलौ !!
कोनो बात पर
हमरे नाम
अहाँक इयादि रहैत छल
कतेक जोर सँ
हमरा टोहकारैत छलहुँ।
हम खौंजाएत अहाँ पर सबटा तामस अपन झारैत छलौं
आब कियैक ओहि आवाज के
सुनबाक लेल मोन हमर
हरिदम व्यग्र होयत अछि।
ओ शब्द !अहाँक !
ओहिना एखन धरि
हृदय में बसेने छी माँ।
बजबैत शब्द जे छल
एखनो कान में ओहिना गुंजैत अछि
चेहाय तकैत छी चारो दिस
कतौ नहिं पबैत छी अहाँके।
सदिखन हमर मोन
पूछ चाहैत अछि अहाँ सँओ कतेको सवाल।
हमर मोन में घुमरैत
कतेको प्रश्न !उत्कंठा !उलझन !
अहाँ सुनिते सुलझा दैत छलौं जे चुटकी में।
आबो हम अहिं सँ माँगय चाहैत छी ओ सब समाधान
व्याकुल मोन त्राण नहिं पबैत अछि।
आंखि अपन बन्द कऽलैत छी
अहींक स्वरूप
हम अपन पलक तर समेट लैत छी

पबैत छी हमरा दिस तकैत निहारैत
अहींक दुनु सुन्दर नयन
ठोर सँओ मधुर हंसी निर्झर झहरैत पबैछी
पबैत छी ठोर सँओ निर्झर झहरैत मधुर हँसी
अहाँ दिस निहारिते ,
बिसरि जायत छी ओ सब सवाल
जे पूछबाक छल अहीं सँ
अहाँ बुझि जायत छी हमर परेशानी
सम्हारैत छी हमरा ;जेना लगैत अछि
अहाँ कहैत छी !
बेर बेर चेतवैत छी!
हमरा जगबैत कहि रहल छी;
उठू! देखू!
जतन करू।बचपना छोरू
पैघ बनू। शक्तिमंत बनू।
बुझबैत कहैत छलौं
अहि अगम अथाह संसार में
अहाँ सँओ बढि अहाँक शुभचिंतक
क्यो नहिं! किन्नहु नहिं!
अपना पर विश्वास राखू। सहिष्णुता आ धैर्य जरूरी
दुख के गहराई के समझू
सुख के उँचाई जानू
सब किछु अहि दुनिया में
संभव छैक।
सृष्टि सत्य ते ; विनाश सेहो सत्य।
कोनो भी कार्य के
दुनू पहलू पर गौर करू
सब किछु छितरायल छैक

अहि चराचर जगत मे।
मुदा!
दू टा पहलू जे अछि प्रकृतिक
एकटा आदि अछि तँ
दोसर अंत।
दुनू पहलू के ध्यान में राखू
जतय आदि छैक
ओतय अन्त निश्चय!
अन्हरिया राति अछि
ते निश्चित फेर होयत
स्वर्णिम भोर के उदय!
स्वर्णिम भोर के उदय!!

१२
बाँचय दियउ अस्तित

हँसैत नारी!
बिहुँसैत नारी।
जीवनगीत गबैत नारी।
जीवनक रँग मेँ रंगैत नारी!
चूल्हा चिन्बार नीपैत नारी!
भानस भात करैत नारी।
गोलेगोल सोहारी पकाबैत नारी।
तिमन तरकारी रन्हैत नारी।
थारी मेँ खुशी परसैत नारी।
भरि घरक चिँता करैत नारी।
भोरे अँगना सँ दुख केँ
बहारैत नारी।
चिक्कन चुनमुन अँगना

नीपैत नारी।
घोघतर लाजे लजाइत नारी।
मातृरुप सुन्नर सजैत नारी।
पतिप्रेम मैँ भीजल
शील निमग्न नारी।
रूपगर्विता
स्वँयमुग्धा मधुर नारी।
सृष्टि सृजन के आधार नारी।
अपन दुख अपने सहैत नारी।
धरणीरूप धरैत नारी।
जीवन के सार्थक करैत नारी।
करेज मैँ एक प्रश्न उठैत अछि,
जौँ नारी एतेक विशेष छथि.
अस्तित्व हुनके कियैक आइ
शेष छन्हि?
कियैक साँस लेबS सँ पहिने,
हुनक साँसक डोर तोरि देल
जायत छैन्ह?
दुनियाँ मैँ प्रवेश सँ पहिने,
कन्या कियैक नष्ट क देल जाय छैथ।
कन्या भ्रूण हत्या
एक गहन विषय थिक।
हे नारी!
उठु! जागू!
अपन शक्तिरूप जाग्रत करू!
अहाँ सृष्टि के रचयिता छी!
सँपूर्ण सृष्टि के विनाशक
गर्त सँ बचाऊ।

या देवी सर्वभूतेशू शक्तिरूपेण
संस्थिता।

१३
इयैह सच छै

ज़िन्दगी
हमरा कतेको
सुख!
खुशी!
मान -सम्मान संओ
अनुगृहित केलक अछि।
कतेको अनुकूल परिस्थिति
हमरा अपन बहुपाश में अंजोरय लेल
आतुर मिलल।
मुदा;
अपना-परायाक
अपमान-घृणा!
उपेक्षा-अवहेलनाक दंश
सहबाक विवशता संओ
ग्रसित सेहो भेल छलौं।
सुरक्षा ,भय,
यश,अपयश,
लोगक उलहन उपराग!
सेहो जिंदगी में आएल आ गेल!
निर्बाध चलैत हम
बाट मिलल अपार
स्नेहसिक्त ममता दुलार।
लोगक स्नेह प्यार के सौंदर्य सँओ

हम जीवित छी।
प्यार ममता बिलहैत एलहुँ अछि !
ओकरे शक्ति संओ
हमर जीवनीशक्ति मजबूत बनैत अछि।
सबसँओ अनसम्हार
हम प्यार ममता पबैत छी।
जीवन इयैह थिकैक
सबके संग जीब क देखियौ
किनको घृणा ,अवहेलना के
प्यार में बदलि देखियौ।
सोहनगर स्वर्णिम बनि जाएत अछि
ई चारि दिन के जीवन यात्रा।
नहिं कतहु राग अछि अहि में
नहिं कतहु पूर्वाग्रह।
सबसँओ अलग ,
एक अलख जगबैत अछि जिंदगी।
हमर जिंदगी के सब दुख सुख
हमर अपन थिक।
जहिना हम सुख के स्वागत करैत छी सहर्ष
ओहिना जिनगी में आओल
दुख, कठिनाई,उपेक्षा
सबके ओहि तन्मयता सँओ
आलिंगन करैके प्रयास करैत एलहुँ अछि।
हमरा लेल हमर जिन्दगी
के अर्थ बहुत व्यापक अछि।
जखन लोगक देल
तिरस्कार, अपमान के प्रतिउत्तर
हम पूर्वाग्रहजनित प्रतिकार सँ नहिं,

अपितु,
सम्मान देबा उचित बुझैत छी।
बहुत सुन्दर अछि ई दुनियाँ
बहुत सुंदर अछि
मानव संग मानव के ई मौसम।
मनुक्खक अहि रिश्ता मनुक्ख संग,
कखनो!
ठिठुरैत पर्णहीन अछि ते कि,
ओतहि बिहुँसैत बसन्त सेहो अछि।
नजरि खोलि देखिय उ
किछु नहिं छै ई दुनिया में
सब माया अछि
कि ल क एलहु आछि
कि ल क जायब
शाश्वत रहि जायत
सिर्फ आ सिर्फ
हमर अपन
व्यवहार
नम्रता
उपकारिता
सदाशयता
दयालुता!!!!!!

१४
माँ

माँ
माँ के कोर मैं,
बैसल शिशु,

मातृत्व धन्य करैत छैक।
जननी अपन आँचर में,
दुनियाँ समेट लैत छैथ।
करेज सँओ सटल ,
शिशुक स्पर्श,
आलोड़ित करैत अछि,
जननी के मर्मस्थल,
शिशु मुख निहारैत माँ,
डूबि जायत छैथि ,
एक असीम सुख में,
निःशब्द, शान्त।
भरि लैत छैथ अपन आँचर में,
फूल,
अमृत,
गँध!
बिसरि जायत छैथ ओ ,
अपन पीड़ा,
व्यथा,
अन्तर्द्वँन्द्व।
मुँह पर छलकि जायत छैन्ह,
एकटा निश्चिन्त हँसी के स्मित रेह!
स्थिर खुशी के ठेह!
भोरका स्वर्ण किरण सँ दीप्त,
दुख तिमिर हरैत प्रकाश पुँज!!
दुख,पीड़.व्यथा ,
सबके पाछू छोड़ि.
जननी बढ़ि जायत छैथ,
उज्ज्वल भविष्य दिस।

माँ-शिशु क अन्तर्भेद के
ओकर मर्म के ,
नहिं बुझि सकल कियो!
माँ के कोरा मेँ शिशु,
वर्त्तमान के कोरा मेँ समाहित,
भविष्य!
अहि अभेद्य रिश्ता के मर्म के,
बुझनाय आसान नहिँ ,
अँतहीन!
अहि स्नेह तँतु के
नहिँ कतहु आदि छै !
नहिं कतहु अंत!!
ई एकटा अटूट बंधन छैक
अंतहीन!
पावन!!
विलक्षण!!

१५

हम्मर भौजी

(ई कविता हमर मोनक बहुत करीब अछि!)

लाल साड़ी पहिरने भौजी,
मिथिला आँचर छथि ओढ़ने,
चिक्कन चुनमुन गोर माथ पर,
लाल टिकुली छथि सटने ।
छनछन पएरक नेपुर बाजे,
हाथक चूड़ी खनकए ,
भौजी शोभा छथि ! हमर घर के।
बाजब हुनकर मधुर मधुर छन्हि,

अधर रहै सदिखन मुसकैत ,
घर मे सबहक ध्यान रखै छथि,
थकैत नहि छथि ओ कौखन,
घरक साज सँभार करैत,
गृहिणी बनि मान बढ़ाबथि,
भौजी शोभा छथि! हमर घर के!
बाबीक छथि चित्र सुन्नरि
माँजीक शोभारानी,
भोर भिनसर उठि के
भौजी पहिने,
बाबी के चरण छुबै छथि
मांजी के नेह स्नेह लऽभौजी
दिन के शुरुआत करय छथि
हम छोट भाइ बहिन ले भौजी,
जननी रूप धरै छथि,
भौजी शोभा छथि !हमर घर के!
स्वजन बन्धु औ सर कुटुंब मे ओ ते
मैथिल संस्कार बेबहार निभाबथि,
पाविन तिहारमे हमर भौजी,
नीक नीक पकवान पकाबथि,
भार्या रूप धए भौजी हमर ,
भैयाक मान बढ़ाबिथ,
घरमे प्राण संचार करै छथि भौजी !
शोभा छथि हमर घरक!

१६

गीत

....

दर्द दर्द में फर्क बहुत अछि

हँसी हँसी केर अर्थ अलग अछि |
पीर गहनतम शान्त दर्द अछि
टीस पीर के मर्म बुझल अछि |
पीर सत्य थिक सुख क्षणिक अछि
नुका सकब दृग नोर भरल अछि |
घोंटि सकब नीलकंठ बनि विष
शिवरूप धरब कहु कहाँ सरल अछि |

१७

लालसा

एक मुट्ठी सुख क कामना!
एक आंजुर प्रकाशमय भोर क लालसा !
जीवन सँओ जुड़ल
कतेको! असंख्य प्रश्न ?
उत्तर !
हम तकैत छी
तिमिर अंधकारक बीच।
नहिं भेटैत अछि कोनो बाट !
अंतहीन सवाल उगैत रहैत अछि,
प्रश्नक कांट बेधि रहल अछि।
तन- मन दुनू के ,
एक के बाद एक!
निरंतर! लगातार !
अज्ञानक ओहि गहन अंधकार में
नहिं सुझैत अछि
एकोमिसिया!
क्षीणोमात्र!
प्रकाश क रेह!

नहिं पबैत छी कोनो जवाब!
टटोलैत छी हम अपना के
चिन्है चाहैत छी अप्पन अस्तित्व के!
एक इच्छा पूर्ण नहिं भेल
आकि
पनपि जाइत अछि
दोसर इच्छा , बालहठ नेने,
आ ठाढ़ भ जाइत अछि सोझ में ।
किनको जीवन! कि र्निद्वंद छैक?
ई यक्षप्रश्न ! हम्मर सम्मुख,
सीना तानि ठाढ़ भ जाइत अछि।
नै त सुख शाश्वत छै,
आ नै दु:ख निरंतर!
सब
क्षणिक ! प्रवंचना!
छलनामयि !क्षणभंगुर छैक!
चिरस्थाई किछु नहिं !!
मनुक्खक इच्छा!
कहियो पूर्ण नहिं होइत छैक।
हरेक इच्छा ,दोसर संभावित इच्छा के,
निमंत्रण दैत! सब एक दोसर सँओ जुड़ल!
जीवन पर्यंत ओझरायल! अंतहीन छै ई लिप्सा!
सुख के नित्य,सुंदर ,
शाश्वत बनैबाक पिपासा में,
आकंठ डुबल रहबाक ब्योंत में,
खुशी के ओहि मृग मरीचिका क पाछू
अपस्याँत मनुक्ख !
आत्मचेतन सौं दूर,

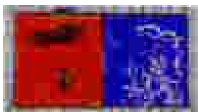
निरंतर !
समय नष्ट करैत जाइत अछि।
किंतु
एक बुन्न आत्मचेतन सँओ
जागृत विवेक, मनुक्खक जीवन के
संपूर्ण बनेबाक सामर्थ्य रखैत अछि।
आत्मज्ञान में सुख छै,
आत्मज्ञान में संतोषक भाव निहित छै।
आत्मज्ञानक समग्र प्रकाश पुंज के
नपबाक कोनो कसौटी नहिं छै।
दानी दान करबा सँओ,
ज्ञानी ज्ञान बांटै सँओ,
मजदूर मेहनैति करै सँओ,
जननि वात्सल्य प्रेम सँओ,
नदी मीठ जल देबा सँओ,
तरुवर छाया प्रदान करबा सँओ,
जे सुख पबैत छैक
ओहि अंतर्मनक सुख में,
ओहि क्षणक सुख में
अपार आनंद छै!
ओहि असीम आनन्द क
कोनो पराकाष्ठा नहिं छै।
वएह सुख अनादि, अनंत
अलौकिक छैक!
ओहि शाश्वत सत्य में
ईश्वर परमानंद छै!!
अप्प दीपो भव!!!

नारी

...........,.,,.

हँसैत नारी!
बिहुँसैत नारी।
जीवनगीत गबैत नारी।
जीवनक रँग मेँ रंगैत नारी!
चूल्हा चिन्बार नीपैत नारी!
भानस भात करैत नारी।
गोलेगोल सोहारी पकाबैत नारी।
तिमन तरकारी रन्हैत नारी।
थारी मेँ खुशी परसैत नारी।
भरि घरक चिँता करैत नारी।
भोरे अँगना सँ दुख कैँ
बहारैत नारी।
चिक्कन चुनमुन अँगना
नीपैत नारी।
घोघतर लाजे लजाइत नारी।
मातृरुप सुन्नर सजैत नारी।
पतिप्रेम मेँ भीजल
शील निमग्न नारी।
रूपगर्विता
स्वँयमुग्धा मधुर नारी।
सृष्टि सृजन के आधार नारी।
अपन दुख अपने सहैत नारी।
धरणीरूप धरैत नारी।
जीवन के सार्थक करैत नारी।
करेज मेँ एक प्रश्न उठैत अछि,
जौँ नारी एतेक विशेष छथि.

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

अस्तित्व हुनके कियैक आइ
शेष छन्हि?
कियैक साँस लेबऽ सँ पहिने,
हुनक साँसक डोर तोरि देल
जायत छैन्ह?
दुनियाँ मेँ प्रवेश सँ पहिने,
कन्या कियैक निवेश होयत छैथ।
कन्या भ्रूण हत्या
एक गहन विषय थिक।
हे नारी!
उठु! जागू!
अपन शक्तिरूप जाग्रत करू!
अहाँ सृष्टि के रचयिता छी!
सँपूर्ण सृष्टि के विनाशक
गर्त सँ बचाऊ।
या देवी सर्वभूतेशू शक्तिरूपेण
संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

१९
कविता
माँ के कोर मेँ,
बैसल शिशु,
मातृत्व धन्य करैत छैक।
जननी अपन आँचर मेँ,
दुनियाँ समेट लैत छैथ।
करेज सँओ सटल ,
शिशुक स्पर्श,
आलोड़ित करैत अछि,

जननी के मर्मस्थल,
शिशु मुख निहारैत माँ,
डूबि जायत छैथि ,
एक असीम सुख में,
निःशब्द, शान्त।
भरि लैत छैथ अपन आँचर में,
फूल,
अमृत,
गँध!
बिसरि जायत छैथ ओ ,
अपन पीड़ा,
व्यथा,
अन्तर्द्वँन्द्व।
मुँह पर छलकि जायत छैन्ह,
निश्चिन्त हँसी के स्मित रेह!
भोरका स्वर्ण किरण सँ दीप्त,
दुख तिमिर हरैत प्रकाश पुँज!
दुख,पीड़.व्यथा पाछू छोड़ि.
जननी बढ़ि जायत छैथ,
उज्ज्वल भविष्य दिस।
माँ के कोरा मेँ शिशु,
वर्त्तमान के कोरा मेँ समाहित,
भविष्य!
अहि अभेद्य रिश्ता के मर्म के,
बुझनाय आसान नहिँ ,
एक अटूट बँधन छैक ,
अँतहीन!
अहि स्नेह तँतु के

नहिँ कतहु आदि छै
नहिँ कतहु अँत!

२०

होली के एक दूटा पाँति

रँगक हुड़दँग मचल पिया बसँती
होरी मेँ,
सबहक मोन मेँ उमँग भरल पिया बसँती होरी मेँ।
छै भँगक तरँग मचल पिया बसँती होरी मेँ,
बुढ़बो दियर लागै पिया बसँती
होरी मेँ!
राधा छैथ जीवन आ मेहनैति
छथि श्याम यौ,
सब हाथ के काज दियौ हेत
जीवन आसान यौ।
हिँसा आ द्वेष दँभक होलिका
जरा दियौ,
कटुताकेँ छोड़ि रँग दोस्ती मेँ
रँगाउ यौ।
नारी नारायणी थिकि , हुनका
मान सम्मान दियौ,
जिनका सँ ई सृष्टि छैक, हुनक
शक्ति जगाउ यौ।
▯
२१

बेरोजगार

केहन घर केहन दलान,

हम बेरोजगारक नहिँ पहचान कतओ।
शहर शहर हम भटैक रहल छी,
नहिँ डिग्री के मान सम्मान
कतओ।
पैरवी भरल अहि दुनियाँ मेँ,
कोनो जनता राखौ ईजोतक आस
कतओ।
सब उमँग भ जाएत छै पस्त,
बिग्रल शिच्छा तँत्र के नै उपचार
कतओ।
एक सँ एक घाघ बैसल छै
अड्डा जमाके, के कम बेसी से बुझेतै कतओ।

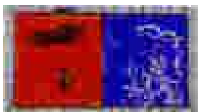
२२

कविता

हमर अहि छोट छोट आँखि के,
बड्ड पैघ पैघ सपना अछि।
अपन नान्हि नान्हिटा पाँखि सँ,
बड्ड ऊँच उड़ान भरै के कामना अछि।
सदिखन सजबैत रहैत छी,
अपन इ कपोलकल्पित स्वप्न के,
अछि इ जागल आँखि के सपना,
बैसल हम एकान्त शाँत,
खिड़की सँ देखल,
दूर पसरल विस्तृत आकाश के,
निलाभ अनन्त गगन छल!
अपनहि मेँ पूर्ण सँपूर्ण!
नहिँ कतहु ओर एकर,

नहिँ छल कतहु छोर।
लोगक अहि बस्ति मेँ,
भीड़ भाड़ आ,
रेलम ठेलम मेँ,
अपस्याँत भऽ जायत छी,
पस्त भऽ जायत छी हम।
लेकिन,
हमहुँ तै हिस्सा छी अहि भीड़ के!
ककरा सँ भागु?
लोगक अहि भीड़ सँ,
आकि,
रोजमर्रा के समस्या सँ!
नहिँ नहिं,
कोनो बाधा ,
हमर सजायल नयनक सपनाके,
डगमगा नहि सकैत अछि।
अहि भीढ़ मेँ हमरो,
व्यस्त रहऽ के अछि,
भाग्यवादी नहि बनि,
अपन कर्मठता सँ,
सदाशयता आ विश्वास लगन सँ,
जनमानस मेँ नवचेतना जगाबऽ के अछि,
जाति पाति के भेद मेटा कय,
घर घर मेँ नारी शिच्छा के
अलख जगाबऽ के अछि,
हमरा ते एक नवीन शिच्छित,
मैथिल समाजक ,
नवनिर्माण करय के अछि !

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

२३
बाट जाम होय कि,
मगज विकास रुकबे करत.
बेइमान हो नेता ते,
देश के नैया डूबबे करत।
पूँजीपति हो लालची,
चोर धनबटोर सूदखोर,
विकराल मँहगाइ ते,
आसमान छुबबे करत।
भूख सँ बिलबिलाइत अछि,
बाल बच्चा वृध्दजन,
देशक सरकार के
थूका फजीहत हेबे करत।
बढ़ैत जनसँख्या सँ त्रस्त अछि,
साँसे सँसार आइ,
बेरोजगारीक मारि सँ,
दू चारि आब होए पड़त।
जहि देश मँ होय एकता,
अखँडताक दिव्यमँत्र,
ओते सुख शाँति समृध्दि के.
त्रिवेणी बहबे करत!!!!

२४
जाड़क राति अछि,
थर थर तन काँपय,
कँपकँपायत देह पर,
गरम नरम,
स्वेटर शाल ओढ़ि कय,

गीत जाड़ के गाबी,
चलु चलु हम जाड़ भगाबी।
गरमा गरम पकौरी के सँग ,
गरमागरम चाय बनाबी,
मोनगर सोहनगर बात मगन भै
सखावृन्द सँग खूब बतियाबी,
चलु चलु आइ जाड़ भगाबी।
लकड़ी काठी जोड़ि जोड़ि कय,
धधरा के धधकाबी,
घूरक तर के गप्प सरक्का,
एकरो आनँद उठाबी,
चलु चलु आइ जाड़ भगाबी।
आबि गेल अछि जाड़क दिन,
स्वेटर रजाइ कोट के दिन,
अमीरक ठाठ बाट के दिन,
गरीबक गुदरी सुजनी के दिन,
जतन करी,
दुनू वर्गक अहि सीमा रेखा के,
सब मिलकय दूर हँटाबी,
चलु चलु आइ जाड़ भगाबी!!!!!

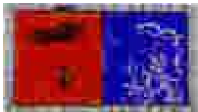
२५

गीत

हम हारि जाइ छी जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
जीतै छी हम बाजी जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
बिरह लै करोट जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।

व्यथित हो जौं मोन जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
प्रीत छेड़य राग जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
मोन मयूर नाचै जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
फाग मचाबै धूम जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
साओन के कजरी जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
बरखा के पड़य फुहार,
तखन इयाद करै छी तोरा।
भिजय पोरे पोर जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
जाड़ मेँ काँपै गात जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
शीतल बहै ब्यार जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
कोयली कुहकै चहुँ ओर,
तखन इयाद करै छी तोरा।
बेला महकय चहुँ ओर,
तखन इयाद करै छी तोरा।
बैरिन हो बतिया जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
चाँदनी हो रतिया जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।
बसि पिया दुर्देश जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

पतियाँ नै सन्देश जखन,
तखन इयाद करै छी तोरा।

२६
जीवन

जीवन अछि,
आह, कराहक सिलसिला ,
पीड़ा आ दर्द के
रंगीन,
मनमोहक कथा!
सब किछ,
भ्रम,
स्वप्न,
मिथ्या,
प्रवँचना!
दुनियाँक सब रिश्ता अछि,
ममताक मृगतृष्णा!
जीवन के ,
सिर्फ अपना लेल जिनाय.
अपन लेल सोचनाय,
हमर जीवन,
बस हमरे लए?
नहिँ नहिँ,
एना सोचब तै.
होयत स्वार्थ हमर,
नितांत स्वार्थ !
जीवन के किछ अर्थ भेनाइ,
ते जरुरी छैक,

जीवन के एक लछ्य भेनाइ,
ते बेहद जरुरी छैक।
ओ लछ्य,
भए सकैत अछि,
भिन्न भिन्न ।
ककरा हम कहबै,
सत्य.
ककरा हम,
असत्य ठहरा सकैत छी।
किन्तु एक सत्य ,
मानव जीवन मैँ,
आनि सकैत अछि,
अथाह शान्ति.
असीम आनन्द!
ओहि सत्य के बुझबाक ,
हम प्रयास करैत छी निरंतर!
हमरा लए हमर जीवन मैँ,
सबसे पैघ वैभव,
ओ स्वर्गिक सुख अछि,
जे दैत अछि
अपूर्व सँतोष,
मानव सेवा मैँ छिपल अछि,
हमर अँतर्मन के ओ ,
अलौकिक सत्य!
मानव सेवा आ परोपकार सँग,
जी उठैत अछि ,
हमर आत्मा,
तृप्त भS जायत अछि मोन,

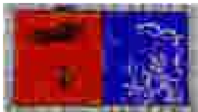
ओहि आत्मिक सुख के आगू,
दुनियाँ के सब सुख .
बुझायत अछि छोट , छोट,
बहुत छोट!!!
मानव सेवा आ परोपकार,
यैह अनँत निधि अछि ,
यैह निताँत सत्य अछि,
यैह एक लछ्य अछि,
हमर जीवन के!!

२७

जिनगी के राह मैँ,
धूप छाँह बहुत छैक।
सँग अहाँके,
नेह अहाँके पाबि,
मन मैँ हमर एहसास जागल,
धूप हो या हो छाँह,
अहाँक स्नेहक तपीस के सम्मुख.
धूप की?
छाँह की?
ककरो कि बिसात छैक!
रौद ते रौदे छै,
भकभक तेज, लाले लाल,
आगि उगलैत गरम गरम!
कतहु त्राण नहिँ,
किँतु,
अहाँक स्नेह पाबि,
इ तेज रौद,

गँधपुष्प मैँ बदलि जायत अछि,
हमर जीवन के राह मैँ,
फूल बनि बिछ जायत अछि,
चानन शीतल छाँह बनि,
गम -गम करैत,
सुरभित बाट,
गन्ध सुवासक ,
नगर बनि जायत अछि।
अहाँक स्नेहक डोर पकड़ि हम,
सुगँधित सुवासित ,
ओहि नगर मैँ,
घुमैत रहैत छी,
बावरी,
मतवारि बनि,
अहि गली, ओहि गली!
धूप छाँह के इ खेल ,
हमरा नीक लगैत अछि,
एहि मैँ,
अहाँक आओर सामीप्य पाबि,
सिमटि जायत छी,
ओहि गेह मैँ,
जतय अहाँक मजबूत,
दुनु बाँहि के घेरा अछि,
ओहि बहुपाश के घेर मैँ,
हमर एक बड़ड सुँदर,
घर बसल अछि,
जे हमर सुख चैन के,
बसेरा अछि!!!!!

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

२८
भोर भेलै,
घरनी के तँ हाल बड़ा बेहाल छै,
तहियो ओ नेहाल छै।
घरनी धुरी छैथ गृहस्थी के।
आँखि मिरैत उठि पुठि भोरे,
भनसाघर ओ दौड़ै छैथ,
चाय बनाब के छैन्ह हुनका,
केतली चूल्हा पर चढ़बै छैथ,
नास्ता संग तैयार करै छैथ,
दिनभरि के दिनचर्या,
घरनी धुरी छैथ गृहस्थी के।
घर भरि कान मैँ तूर तेल लेने,
एखनो निसभरि सूतल छैथ,
पतिदेव आ नेना के,
जगेनाय एखैन तँ बाँकि छै,
ऑफिस आ स्कूल भेजवाक,
सरंजाम केनाइ तँ बाँकिये छै,
तहियो भोरतरँगक खुशियाँ,
समेटि आँचर मैँ बान्है छथि,
घरनी धुरी छैथ गृहस्थी के।
जीवनक अइ आपाधापी मैँ,
खुशी के फूल लोढ़य छैथ,
ओहि फूलक सुरभित माला सँ,
परिवारक बगिया सजबै छथि,
जीवन के सृँगार बसल,
सुँदर हिनक गृहस्थी मैँ,
सँगीतक सुर तान बसल अछि,

मनभावन हिनक गृहस्थी मेँ,
घरनी धुरी छैथ गृहस्थी के!

२९
आँखि सुतल नहिँ रातिभरि,
मोन भटकैत रहल जिनगी के,
बितल पल पर ,कखनो आइ पर!
मोनक गति विचित्र छैक,
छन मेँ अहिठाम, पल मेँ ओइठाम,
यादि अबैत अछि ,अपन बचपन के,
मधुर, सुँदर, सोहनगर बात,
माँ के लोरी,बाबी के प्यार,
दुलार भैया के,बहिनक नेह,
कनियाँ पुतरा के ब्याह,
देर तक, दूर तक,
बस खेलहि खेल,
निर्बाध स्वच्छँद!!!!!
किताबक बस्ता, स्कूलक रस्ता,
सब यादि अछि।
बरसा के पानि,
कागज के नाव,
गरमीक रौद,
आमक टिकोल,
जाड़ के मास,
थरथराइत गात,
सबकिछ पाछू छुटि गेल।
छुटि गेल ओ मेला ठेला,
पावैन तिहारक अपनत्व रंग,
बाग बगीचा, अँगना झूला,

सब किछ अछि ओहिना अंकित,
हमर मोन के कोना मेँ,
किँतु एकहि पल मेँ जी उठैछ,
अंतर्मनक शिशु आइ,
मचलि उठल,
आँखि मेँ भरि लैत छी,
कतेको सुँदर रँग,
आ समेट लैत छी,
अपन आँखि मेँ,
पलक मेँ बँद क दै छी,
अपन बचपन!
अपन नेनपन!!

३०

बड़ी अजीब मँहगाई छै!
आटा चाउर तेल शक्कर,
मँहगी के छूलक आसमान,
गृहिणी भनसाघर मेँ देखु,
कतेक भए गेलि परेशान,
बड़ी अजीब मँहगाई छै!
एतेक मोट तनखा के गड्डी,
मासांत पति घर अनै छथि,
दस दिन मेँ हालत गड्डी के देखु,
कतेक पातर दुब्बर भऽ जाय छै,
बाँकि महिना के बीस दिन,
कोना चलत, की करैथ उपाय,
बड़ी अजीब मँहगाई छै!
पनपियाइ बेरहट के व्यँजन,
सुनु! सब फीका फीका भ गेल,

भोर साँझ के चाय सँग बिसकुट,
सेहो गिनती मेँ कम भेल,
एतेक कतर व्योँत मेँ घरनी,
अतिथि के कोना करती सत्कार,
बड़ी अजीब मँहगाई छै!
पावैन तिहारक बात नै पूछू,
घरनी कोना करती ओरिआन,
कपड़ा सियेती या उपहारमँगेती,
कोना पकेती पुआ पकवान,
बड़ी अजीब मँहगाई छै!!!

३१

लाल साड़ी पहिरने भौजी,
मिथिला आँचर ओढ़ने,
चिक्कन चुनमुन गोर माथ पर,
लाल टिकुली छैथ सटने।
छनछन पएर के नेपुर बाजे,
हाथ के चूडी खनकए ,
भौजी शोभा छैथ ,
हमर घर के।
बाजब हुनकर मधुर मधुर छैन्ह,
अधर मुस्कैत सदिखन,
घर मेँ सबके ध्यान रखै छैथ,
थकैत नहिँ छैथ कौखन,
घर के साज सँभार करैत,
गृहिणी बनि मान बढ़ावैथ,
भौजी शोभा छैथ,
हमर घर के।

बाबी के छैथ चित्रसुन्नैर,
माँजीक भव्यारानी,
भोर भिनसर उठि ,
भौजी पहिने,
बाबी आ माँ के,
चरण छुबै छथि.
हमसब भाय बहिन ले भौजी,
जननीरुप धरै छथि,
भौजी शोभा छैथ हमर
घर के।
स्वजन बन्धु सर कुटुँब मेँ भौजी,
मैथिल बेबहार खूब निभाबैथ,
पावैन तिहार मेँ हम्मर भौजी,
नीक नीक पकवान पकावैथ,
भार्यारुप मेँ ओत ,
भैया के मान बढ़ावैथ,
घर मेँ प्राण सँचार करै छैथ,
भौजी शोभा छैथ हमर घर के।

३२
माँ!
बैसल दूर गाम मेँ
हम्मर माँ जोहि रहल छैथ
बाट अपन बेटी के।
दिन बितल बीतल हफ्ता
मास बितल बिति गेल साल
कनिको दिन लेल अबिये जैतैथ
सोचथि बेटी लय निशदिन माँ
भाग्य सराहथि विधिना मनावैथ

ISSN 2229-547X VIDEHA

अपन सुता लय हम्मर माँ
सोचि रहल छैथ
अपन मोन मेँ
धी जीवनक यथार्थ सच माँ
लछ्मी रूप, रूप सरस्वती
अन्नपूर्णा अछि हमर वनिता
सौँसे परिवार के
एक स्नेह डोर मेँ
बाँन्हि रखने छथि हमर सुता!
सौंसे परिवार के
एक स्नेह डोर में,
बाँन्हि रखने छथि हमर सुता!!

३३

हम स्त्री छी

हम!!!!

जखन थाकि जाएत छी

घर गृहस्थीक दैनिक जिम्मेवारी मे

आ ओझराएल रहय छी ओकर जाल कराल सँओ

छोट पैघ जिम्मेदारीक

ओहह!!!!

ई अनवरत यात्रा!

एकर आवश्यकता पूरा करैत करैत

पलखैत नहिं भेटैत अछि

प्राण सांस उखैर जायत अछि

थसथसा जायत अछि देह

थकमका जायत अछि डेग

सूर्य किरण उगै सँओ

सूर्य अस्त तक के हमर

अनवरत चलैत

गृहस्थी क यात्रा

कोना पूरा भऽजायत अछि

किछु नहि बुझना जायत अछि।

एको घड़ी अपन सुधि लै के

पलखैत नहिं भेटैत अछि।

बसंत के खनक

वसुन्धरा के श्रृंगार

प्रकृतिक मनोरम दृश्य

प्रचंड रौद

तामसे घोर अकाश

धरती मे फाटैत दरारि

सूखल चास बास

चैत बैसाखक कहर

साओन के झूला

बरखाक बून्न

उमरैत नदी प्रवाह

उमगैत देहक धाह।

पूस माघक जाड़

थरथराइत गात

होलीके रंग

परिवार के संग

सब मौसम जीबैत छी

अपन काज राज के बीच

सब संग जीब लैत छी

सुख दुख के रंग

अपन खुशहाल गृहस्थी मे

बाँटि लैत छी ओहि ब्यस्त दिनचर्याक बीच

सुख आ खुशी।

हम गृहिणी के

गार्हस्थ्य धर्म एक

साधना अछि

एक-एक दिन के तपस्या सँओ

सजैत अछि! बसैत अछि

ई खुशहाल गृहस्थी ।

ज़िन्दगी मे आओर कोनो कामना

शेष नहिं बचैत अछि!

हम स्त्री के दुनिया के

इएह सत्य थिक ।

प्रेम सँओ परिपूर्ण

हृदयक उद्गार

ममता

मानवता

सदाशयता

परोपकार

श्रद्धा

संस्कार

आत्मगौरव

अर्पण!

समर्पण!

ISSN 2229-547X VIDEHA

पूजा!

पवित्री!

सब अहि मे

समाहित रहैत छैक

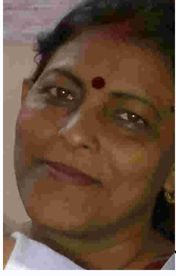
आ ओहि मे समाहित होयत अछि

हमर गौरवमयी नारित्व!

एक संपूर्ण सृष्टि के आधार!!!!

रचनाकार:-इरा मल्लिक, रिलायंस ग्रीन्स टाउनशिप जामनगर गुजरात।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**इरा मल्लिक**

५ टा शृंगार गजल

मैथिलीक पहिल शृंगार गजल- भक्ति गजल, बाल गजल आ सोझे गजल, तकरा बाद प्रस्तुत अछि मैथिलीक किछु "पहिल शृंगार गजल" सभ, सरल वार्णिक बहरमे- पहिल बेर विदेहमे- सम्पादक।

श्रृंगार गजल

१

अछि राति बितै सँ रहब बाँकि
किछु बात अहाँ सँ कहब बाँकि।

कहै के अहाँ सँओ दू -चारि शबद
कोना कहबै ओ बात गढ़ब बाँकि।

अहाँ संगे दूरी बाँचल जे किछु
अछि बालू के भीत ढहब बाँकि।

जी भरिके बात अहाँ सँ करब
छै नेह के तपन सहब बाँकि।

कहू प्रीतक डोर ई बान्हू कोना
अछि लाज सँ आब मरब बाँकि।

मिलन सुर्ख लाल गुलाब कली
रसधार सुधा में बहब बाँकि।

छोट डेग प्रेम पथ में अपन
जीवन भरि संग चलब बाँकि।

सरल वार्णिक (वर्ण-१२)

२
गमाउ नै गोरी छन मधुराग भरैये
हमर हृदय सँ फूल पराग झरैये।

देखु लाज सँ गालक गुलाब खिल गेल
लोगक नैनाक काँट बेहिसाब गरैये।

नैना चितवन अल्हड़पन देखैत छी
कोना मुस्की मिसरिया पर जान जरैये।

अधर कोमलकली छै रस सँ भरल
मन भँवरा बौरायल से जानि परैये।

मोन फागुनी बयार बनि मस्त मगन
सिनुर लाज सँ मुखरा गुलाल भरैये।

रूप चर्चा पसैरि गेल गामहि गाम मैँ
कोना चलतै लोग दिने मैँ बाट हेरैये।
सरल वार्णिक (आखर-१५)

३
जी के जंजाल बनल हमर हेयै कंगना
खनक खन बाजि उठै जागि गेलै अंगना ।

दौड़ि बहियाँ पकड़ि पिया करै बरजोरी
अरज न मानै केहन मचबै उधंगना ।

सासु पढ़ैथ गारि ननदी करै ठिठोली
तीख नैना गोतनीयाँक लगै हड़कंपना ।

बैरिन भेल ननदी बैरि छोट देउरबा
बैरि सजनजी कतेक करै तंगचंगना ।

आँचर सम्हारि तँ बाजि उठल कंगनी
मोरा बारि बयस भेल बड़ा यै बेढ़ंगना ।

कतेक सासु मनाबी ननदिया पैँया लागी
ककरा की कहबै जौँ पड़ल कूपै भंगना ।

प्रीत मीठ साजन के नीक हुनक संगना
देखि मुस्की इजोरियाँ सिहकै अंग अंगना ।
वर्ण - 16

४
गजल (श्रृँगार.मल्हार)

बरखा बरसै छै दिन राति अहाँके इयाद सताबै
ओहिपर कारि अन्हरिया राति अहाँ बिन चैन न आबै। अहाँ----

घिरलै कारी घटा घनघोर वन मेँ नाचै मोरनी मोर
एसगर सून्न भवन छै मोर बिजुरिया देखि डराबै। अहाँ----

बरसैत कजरा के धार हमरा इहो दैत उपराग
प्रीतम द्वारजोहै छी बाट अहाँके मोरा हिय हहराबै। अहाँ -----

पिया अहाँ बसु दूरदेश मेघ सँ भेजू अपन सँदेश
करोट फेरैत कटै छै मोरा रतिया नैना नीर बहाबै। अहाँ-----

बून्ने मोती सजल सब पात देखि सिहरै छै मोरा गात
भिजै कजरा गजरा बिंदिया कोयलियो के बोली सताबै। अहाँ----

विलमनै करियौमहाराज अबियौ छोड़ि काम आ काज
हमर कँगना पायल के झँकार रहि-रहि अहींके बजाबै। अहाँ---

वर्ण -21

५
गमाउ नै गोरी ई छन बाते बेबात मेँ
हमर हृदय सँ फूल पराग झरैये।

देखु लाज सँ गालक गुलाब खिल गेल
लोगक नैनाक काँट बेहिसाब गरैये।

नैना चितवन अल्हड़पन देखैत छी
कोना मुस्की मिसरिया पर जान जरैये।

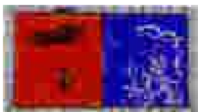
अधर कोमलकली छै रस सँ भरल
मन भँवरा बौरायल से जानि परैये।

मोन फागुनी बयार बनि मस्त मगन
सिनुर लाज सँ मुखरा गुलाल भरैये।

रूप चर्चा पसैरि गेल गामहि गाम मेँ
कोना चलतै लोग दिने मेँ बाट हेरैये।
आखर-15

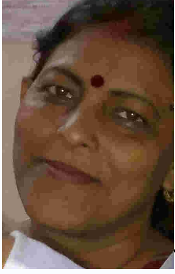
ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**इरा मल्लिक**

२ टा बाल गजल

१

अछि बड्ड जिद्दी बरसात
कहल नै मानै एको बात।
कहल-----

घटाटोप बादल आवारा
ठुमकि के नाचै चारु कात।

कहल-----
कखनोटिप-टिप कखनोझम-झम
भिजलै धरती गाछे पात।
कहल -----

भैया के भिजलै कापी बस्ता
जे नै कराबै मेघ बसात।
कहल-----

सब मौसम छै आनी जानी
बरसातक फरके बात।

कहल------

सँग कजरी झूला साजल
इन्द्रधनुष के रँगे सात।
कहल------

वर्ण-10

२

भरि रस्ता कादो कीचड़ पसरल बाहर कोन्ना जेबै हम
कन्हा चढ़ि इसकूल जायलेल बाबू के कोना मनेबै हम।

मुसलाधार बरसै छै बदरा एक्कोपल लेल थमतै नै
इसकुल पहुँचै मेँ देरी हेतै निश्तुक्की छै मारि खेबै हम।

गल्ली कुच्ची अँगना डबरापोखैर भरि गेलै खेतक आरि
पानिये चानी पीटल छै सबतरि नाव कोना चलेबै हम।

लकड़ी काठी जारैन चुल्हा सब तीतलै बड़ड मोशकिल छै
सेहोदेखि माथठोकि कहैछै माँजी भातो कोना पकेबै हम।

सँगी साथी सबघर मेँ घुसरल कियो नहिँ बहराबै छै
इन्दरराजा ढोल बजाबै ढम्म सँ के नचतै जे गेबै हम।
वर्ण- 22

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

इरा मल्लिक

६ टा बाल गीत/ कविता

१

बाल कविता
चल चल्ल रौ मिता!
घूमि अबि कने सँसे गाम।
साल भरि जे बाट तकलियै,
तखन एलै गर्मी छुट्टी,
हम किताब बस्ता सँ करबै,
देखहि केहन नम्हर कुट्टी,
चल चल्ल रौ मिता।
पोखरि झाँखरि गाछी बिरछी,
एको बाँकि नहिँ छोड़बै हम,
जँगल मेँ खूब मँगल करबै,
इहो छुट्टी पड़तै बड़ कम,
चल चल्ल रौ मिता।
भोरे उठि पुठि हुड़दँग मचेबै,
पोखरि मेँ छपाक सँ कुदबै,
दुपहरिया धरि,
चुभकैत डुबकैत रहबै
पोठी इचना माछ पकड़बै,
लहकैत मटकैत अँगना एबै, करिया झुम्मैर खेलैत दीदिया के,
छिटकि मारि चारो चित्त खसेबै ,

एतै फेर ते बड़ड मजा,
चल चल्ल रौ मिता!
हक्का बक्का छथि माँ बाबुजी,
देख बदमस्ती अपन छौँड़ा के,
मने मने सोचि रहल छथि,
छौँड़ा रहल नहिँ कोरा के!
चल चल्ल रौ मिता,
आब बौआबी सौँसे गाम!!
दुपहरिया धरि

२
मेघ बरसलै,
धरती बिहूँसलै,
भीजय गहे गह,
धरती बनल छै रानी,
राजा बनलै मेघ,
ढमढम बाजै ढोल नगाड़ा!
बिजली चमकलै,
ह्रदय हहरलै.
सखी बसै दूर देश,
नाचि रहल छै ,
छमछम छमछम,
वन मेँ मोरनी मोर,
ढमढम बाजै ढोल नगाड़ा!
घिर घिर आओल,
कारी बदरिया,
बरसै रस मेघ फुहार,
देखि रहल छै इन्दर राजा,
धरती अछि रसे विभोर,

ढमढम बाजै ढोल नगाड़ा!
३
माँ हमरो किनि दिअ खिलौना!
खेलब मोन भरि,
नहि उत्पात मचायब,
नहि पसारब आब,
हम कोनो घेउना,
माँ हमरो किनि दिअ खिलौना।
ना ना नहि करू,
जिद अहाँ छोरू,
आनि दिअ कनि सुँदर सुँदर,
भालू, बन्दर, खग, मृग छौना,
माँ हमरो किनि दिअ खिलौना।
जाउ बजार अहाँ जल्दी सँ,
करु नहि देर ,
हमरो सँग लऽ लिय,
रिमोटवाऽल्ला ओ मोटर गाड़ी,
हवाइ जहाज किनू,
होय मँहग या भारी,
बैटरीवाला मोटर-बोट हो,
हाथी .घोड़ा,या गुड़िया छोट हो,
ढोल, मजीरा,ड्रम, कैसियो,
जे पसँद होय अहाँके मैया,
किनि दिअ नहि ताकु रुपैया,
माँ हमरो किनि दिअ खिलौना।
लेकिन माँऽऽ!
नहि चाहि हमरा,
बंदूक ,रायफल, तीर, कमान,

खेल खेल मैँ हम नहि सीखी,
हिँसा सनके पाप ,
हम छी भारतमाँ के सपूत,
हमरा भरS के अछि ,
बड्ड ऊँच उडान ,
जन जन के रच्छा कS सकी,
देश के कय सकी कल्यान,
देश मैँ आनी खुशहाली,
बालपन के,
खेल खेल मैँ.
पूर्वाभ्यास एकर कS ली,
माँ! हमरो किनि दिय खिलौना।

४
छम छम बरसा,
छम छम पानि,
चम चम बिजली,
चमकै आइ,
चम चम बिजली चमकै छै,
जियरा मैँ आगि लगावै छै।
कारी कारी घटा घिर आओल,
मन के मोर शोर मचाओल,
बिजली चमकै जियरा हहरै,
कारि अन्हरिया राति भयाओन,
पिया के सन्देश सुना दिअ आइ,
चम चम बिजली चमकै छै।
सँग सहेली घर चलि गेलि,
सून भवन मैँ छी हम अकेली, सनननन बड़ी जोर पवन अछि,
घन घमँड देखावै आइ,

चम चम बिजली चमकै छै।
मन के मोर सुनु इक बैन,
पाओत मोन कोना कहु चैन,
किछ ते जतन करु अहाँ इहो रैन,
छोड़ू मचेनाय शोर किलोल,
पहुँ के सन्देश सुना दिय मोर,
चम चम बिजली चमकै छै।
५
मानवताक गीत।
एक स्वर मेँ बाजि उठल,
मानवता के गीत।
मानव छी ,
मानव सँग भेद!
कदापि नहिँ।
ऊँच नीच के जातिभेद!
कदापि नहिँ।
धनीक आ गरीबक वर्गभेद!
उचित नहिँ।
नारी कए दुर्बल ,
पुरुष के सबल,
जतेबाक जरूरति नहिँ।
समाज के,
अहि कुत्सित विचार के
दूर करबाक जरूरति अछि,
एहेन भेदभाव केँ,
स्वाहा केनाय जरुरी अछि।
सब छी एक-एक-एक।
मानव सँग मानव के नेह,

आब जोरनाय जरुरी छैक।
नारी कय शक्ति!
पुरुषक शिवरूप जाग्रत केनाइ,
नितांत जरूरी छय।
नारी जगाबथु अपन,
सम्मानिय, शिष्ट आ
वीराँगना रूप,
पुरुष अपन कर्मठता आ
पुरुषार्थ सँओ,
निर्माण करु नवसमाज के।
आउ हमसब मिलकय,
सम्मान करी,
ईश्वर के अहि सुँदर रचना के,
उत्थान करी अपन समाज के!
६
बाबी(दादी माँ)
शिशु हसन, जखन बाबी के,
मुँह पर पसरि जाय,
बाबी हमरा बड़ नीक लागय। कतेक कहानी गीत सुनाबय,
फकरा ,कहबी के अँबार लगादय,
चुपेचाप नचारी,कोबर ,सोहरके,
बड़का बड़का बारहमासा के,
मल्हार, फागुन , चैता के,
गीतक पाँति सिखाबय,
अरिपन रँग बिरँग बनाके,
हमरो सँ बनबावय।
बाबी हमरा बड़ नीक लागय।
पैघक आदर मान करेनाय,

छोट पर प्यार दुलार बरसेनाय, धीरे हँसनाय,धीरे बजनाय,
शील गुन के बात सिखेनाय,
बाबी ओहिछन दुनियाँ मेँ,
सबसे सुँदर लागय,
बाबी हमरा बड़ नीक लागय।
ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**इरा मल्लिक**

५ टा गजल आ तीन टा शेर

१
जमाना देलकै दरद बहुत किनका कहबै
करेजक भेल कत्तेक टुकड़ी किनका कहबै |
किछ बात एहेन जहि सँ हम अनजान छलौं
बड़ी भेद भरल बेदर्द लोग किनका कहबै |
उप्कार में अप्कार तकै जग के रीत पुरान छै

हवन करैत जौं हाथ जरल किनका कहबै |
मुँह आगू जैह मीठ बनै पीठ पाछू उपहासी
मुखौटा लगेने लोक छै फरेबी किनका कहबै |
जे जेतबे नम्हर चोर बात हुनके लम्बा चौड़ा
साधु बनल मुँहचोर रक्षक किनका कहबै |
सज्जन के नै ठौर कतौ दुनियाँ चोर ठकैत के
झूट्ठा बनै पवित्र एतै धर्मात्मा किनका कहबै |
सरल वार्णिक(वर्ण- १८)

२
जिनगी जहिना तहिना कटैत रहलौं
सुख दुख के जउँर (रस्सी) सँग बटैत रहलौं |
कान्ह पर छलै घर जिम्मेदारी क बोझ
हँसि हँसिके ओ बोझ सब उघैत (ढोऐत)रहलौं |
दुख एलै हम कहियो निराश नहिं भेलौं
सुख के मोती हम पानि सँ छटैत रहलौं |
रैन अन्हरिया छलैक तहियो की भेलय
सवर्णिम भोर के आस लए खटैत रहलौं |
बड़ अजगुत दुनियाँ के चलन की कहू
तकै नीको में बेजाय सब सहैत रहलौं |
पिघलैत रहल रसेरस दुख के घड़ी
मेहनैतिये के मोजर छै जनैत रहलौं |
दुनु हाथक भरोस छै मेहनैति के जोर
जीवन में सुख के संगीत गबैत रहलौं |
सरल वार्णिक- (वर्ण -१६)

३
प्रीतके मीठे होय छै बोल सेहो हम जानि गेलौं
प्रीतके बोल बड़ा अन्मोल सेहो हम मानि गेलौं |

इन्द्रधनुष के सातों रंग सँ प्रीत सजल अछि
मनमा करै मोर किलोल सेहो हम जानि गेलौं|

प्रीतक नहिं छै भाषा कोनो एकर कोनो नै बोली
अनहद बाजै प्रीतक ढोल सेहो हम जानि गेलौं|

पोथी पढि बनलौं हम ज्ञानी बहुत अभिमानी
प्रीतके ढाई आखर बोल सेहो नहिं जानि पेलौं|

प्रीतक रीत विरह के पीड़ा दारुण दुखदायी
करेजा सालै छै अनघोल चुप्पे हम कानि लेलौं|

तरसि गेल दरस बिन नैना प्रीत निरमोही
मौन छै व्याकुल नैना बोल सेहो हम मानि गेलौं|
सरल वार्णिक(वर्ण-१८)

४

हुनक नैन झरैत नोर हम देखने छी
भरल आँखिक लाल कोर हम देखने छी |

नैन चुपचाप रहय बोल किछ नै फुटै
हुनकर बिजुकैत ठोर हम देखने छी |

उठैत करेजक दरद कहु के बुझतै
सालैत ओ टीस पोरे पोर हम देखने छी |

नेहमहल ओ सजेने छलैथ जतन सँ
बिखरै महल खंड थोर हम देखने छी |

हुनका के बुझाबै इयैह जिनगी थिकैक
कानबै कनैत चहुँ ओर हम देखने छी |
(वर्ण - 16)

५
जेतबेटा चादरि हो ओतबे पैर पसारल करु,
दुनियाँ के इएह सत थिकैक नै बिसारल करू।

आमद होय कम्म खर्च नम्हर कोना गुजर जेतै,
नापि तौलि अपन दुनियाँ नीक सँ सम्हारल करु।

बूँदे बूँद सँ घट्ट भरै छै इहो ते सब जनिते छी,
गागर मेँ सागर भरि दियौ मन नै हारल करु।

मितव्ययी बनब अहाँ जीवन अहीँक शिष्ट हैत,
जग मेँ झुठक चकाचौँध बहुत छै तारल करु।

झूठक जिनगी चहटगर होय छै से जानि लिय,
ऋणियाँ बनि क अपन जिनगी नै गुजारल करु।
वर्ण-(19)

३ टा शेर
१
अहाँके बाट हियासल कतेक दिन सँ।
अछि राति इ पियासल कतेक दिन सँ।
मात्रा क्रमः 1222 1221 1121 212
२
प्रीतक मीठे होय छै बोल सेहो हम जानि गेलौँ।
बिन बाजन बाजै इहो ढोल सेहो हम मानि गेलौँ।
मात्रा क्रमः 2222 2122 1222 2122

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

३
पढ़ि लिखि बनल छलौँ हम कतेक ग्यानी बनल अभिमानी।
प्रीतक ढाई आखरक मोल सेहो नहिँ जानि पेलौँ।
मात्रा क्रमः 2222 2122 1222 2122

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**इरा मल्लिक**

७ टा श्रृन्गार गीत

१

लऽ चलु नदी के पार सखि,
ओहि पार हमर प्रियतम छैथ।
हम केश सजेलौँ गजरा सँ,
नयन लगेलौँ कजरा तँ,
लै अधरकली के लाली सँ,
भेल लाज सँ गाल गुलाबी तँ,
अहाँ धरू एखन पतवार सखी,
लऽ चलु प्रियतम के गाम सखी।
सजि धजि के नयन बिछैने छलहुँ,
नयनन मेँ सपन सजैने छलहुँ,
तड़पैत अछि आकुल व्याकुल मन,
इहो पीर नै सहत हमर तन मन,
अहाँ करु किछ जतन उपाय सखि,
लऽ चलु प्रियतम के ठाँम सखी।
प्रियतम जोहै छैथ बाट हमर,
बैरिन भेल रैन, नदी के लहर,
तरिणी तट नौका बन्हल पड़ल,
नाविक सुतल निसभेर बनल.
अहाँ करु नहिँ एको छन देर सखी,
नाविक के तुरत जगाउ सखी।
लऽ चलु नदी के पार सखी,

ओहि पार हमर प्रियतम छैथ।

२

ओहि राति!
ओहि राति ! सपन में अयला सजना !
बिहुँसैत अधर भीजल नयना!
ओहि राति! सपन में अयला सजना!
नहुँ नहुँ दीप जरय ओहि प्रीतमहल,
हम बाती मधुर बनल सजना!
ओहि राति ! सपन में अयला सजना!
पिपासित छल मन! तन थिरकि रहल !
तकय चानक दिस चकोर नयना !
ओहि राति! सपन में अयला सजना !
वन कानन मन विरहिन पपीहा !
पीउ पुकारि रहल काँपय गगना !
ओहि राति! सपन में अयला सजना !
प्रीतकुँज जखन कुहकल कोयली!
आधे राति बिखरि गेल भोर जेना !
साँस उसाँस सुरभित सुरभित !
महुआ मादक बौरायल मना !
ओहि राति ! सपन में अयला सजना !
ओह!!
ओहि राति सपन में अयला सजना !!

३

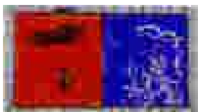
अहाँ कहै छी ,
बैसू लग मैँ, नीक लगैये।
नेह नयन निहारब सजना,
बड नीक लगैये।

हाथ कें हाथ सँओ साथ मिलल,
जखन पयलौं नेह अहाँके,
जीवन डोर में बान्हि पिया,
सोहागिन बनलौं अहाँके,
अहाँ हँसै छी सौंसे घर आब ,
झिलमिल चाँद लगैये,
नेह नयन निहारब सजना,
बड नीक लगैये।
सुध बुधि नहिँ अछि अपन आब तेँ,
मुखड़ा देखि अहाँके,
सिँगार अहीँ छी,
साज अहीँ, पिया!
प्यार बसल अँगना में,
अकछ करै छी पिया हमरा ,
तहियो बड नीक लगै छी,
घर में होली, दशमी, दिवाली,
निशदिन आब लगैये।
अहाँ कहै छी,
बैसु लग में, बड नीक लगैये।
नेह नयन निहारब सजना,
बड नीक लगैये।
४
साँच हमर मीत अछि!
साँच हमर मीत अछि!
विपति कष्ट हानि लाभ,
सबके कसौटी में,
कसल हमर मीत अछि,
साँच हमर मीत अछि!

ISSN 2229-547X VIDEHA

जीवन के दू बाट मेँ,
एक गली हार तँ,
दोसर गली जीत अछि,
अहि दू गली मेँ देखु,
जीत हमर मीत अछि,
साँच हमर मीत अछि!
नहिँ स्वार्थ नहिँ लोभ,
नहिँ दंभ नहिँ छोभ,
अहि सबसे ओ बहुत दूर,
प्रीतक रीत मेँ हुनक,
नहिँ ओर कोनो छोर छै
साँच हमर मीत अछि!
सूर्य के किरण सन,
केसर के फूल सन,
सुँदरता आ उष्मा सौँ,
परिपूरित हमर मीत अछि,
साँच हमर मीत अछि!
जीवन के अहि तपोवन मेँ,
शान्त स्वच्छ पर्णकुटीर,
क्लान्त थकित मन जतय,
पावय सुख अनँत अछि,
साँच हमर मीत अछि!
मैत्री अछि अमूल्य चीज,
नैसर्गिक जगत के,
विहुँसैत ठोर के,
मधुर रसधार बनल,
गान हमर मीत अछि,
साँचे कहैत छी ,

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्राण हमर मीत अछि,
सुनु!
साँच हमर मीत अछि!
साँच हमर मीत अछि!!!!!

५
पिया के घर!
सुँदर चौखट,
फूलक बेल ,
सुँदर आँगन,
मन के आँगन,
हमर अति चँचल!
सिँदूर भरल सिउथ,
मँहदी रचल हाथ,
सिहकैत तन,
लाज भरल,
बड्ड मीठ मुस्कान!
मिठास भरल
घरभरि के प्यार,
अरमान नया,
प्रीत नया,
मीठ मनुहार!
कजरारे नयन,
सपन सुँदर,
करोट लैत,
रिश्ता के बैन!
मिलन के रुत,
सपना के सेज,
मनभावन रैन,

चूड़ी के खनखन,
मदमस्त पाजेब,
गीत गबै रुनझुन रुनझुन!
गजरा के गप्प,
कजरा के गप्प,
नेह भरल ,
शरारत प्यारक गप्प,
तनमन के गप्प,
गुमशुम गुमशुम,
भोर नया,
शबनम शबनम!
६
गजब तोहर रूप गजब तोहर सिँगार गे छौँरी,
तैपर तिरछी नजरिया मारै सौ सौ कटार गे छौँरी।
एहन बालि छौ उमिरिया कोना लचकै छौ कमरिया,
एना चलभि बीच बजरिया मरतै सँसार गै छौँरी।
छौ ठोर गुलाबी बसँती तोहर गाल गुलाबी बसँती,
सुँदर बदन तोहर छौ गुलाब के भँडार गै छौँरी।
गोरिया रँग तोहर बेजोड़ केहन मारै छौ इजोर,
चकाचक चढ़ल जुआनी पर मिटौ सँसार गै छौँरी।
७
नभ के आँगन मैँ एखन,
चाँद के अबइया छै।
नभ के------!
विस्तृत नभ नील वर्णी,
शाँत नि:शब्द भेल,
झिलमिल तरेगण मिल,
एकसँग बिहुँसि गेल,

स्वागत मेँ चाँद के,
चाँद के अबइया छै,
नभ के आँगन मेँ देखु,
चाँद के अबइया छै,
नभ ------!
दिवस बितल , भेल साँझ,
साँझ के कपाट खोलि,
रत्नजड़ित साड़ी मेँ,
सलज्ज चाँद प्रगट भेल,
सोलह कलासँ पूर्णचँद्र,
अमृत बरसाबय छै,
चाँदनी धवल छटाँ सँ,
दिगन्त हरसाबय छै,
चाँद के अबइया छै,
नभ के आँगन मेँ एखन,
चाँद के अबइया छै,
नभ -------!

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**अशोक जे. दुलार**

१ टा बाल-कविता

प्रिया रानी

प्रिया रानी गै!
एते तोँ ने हल्ला मचा;
बुढ़िया जइसन बात बजै छैँ,
छैँ तों एखन बच्चा।
प्रिया रानी गै एते तोँ......॥
सूति-ऊठि नित लेट्रिन जाही
दतमनि करही अपने,
मुँह-कान के धो-पोछि कऽ
नहा-सोना ले तखने;
थोड़-थोड़ कऽ खाही ओतबे
सकही जतबे पचा।
प्रिया रानी गै एते तोँ.....॥
अँगने मे घोसियैल रहै छैँ
बात नीक नहि भेलै,
संगी-साथी बाट जोहै छौ
जाही आबो खेलै;
खाली कानय बात ने मानय राखि देलैँ तोँ नचनी नाच नचा।
प्रिया रानी गै एते तोँ.....॥

मुस्की तोहर हुलकी मारौ
झहरौ नयना नोर,
संगी संगे गीत गाबै
छाड़ि दे आबो कोर;
सुनि ले एखनो दकर ने कखनो,
आम लताम कच्चा ।
प्रिया रानी गै, एते तोँ....॥
सा ते भवतू सीख लेलैँ तू
गिनती सिखही आब,
पहिने पढ़ही तखन लिखिहेँ
पूरा करिहैँ ख्वाब;
सजि-धजि कऽ इस्कुल जेबैँ
बुधमनि हेबैँ सच्चा।
प्रिया रानी गै एते तोँ....॥
गरहलि-गाँथलि प्रिया रानी
बाजय बोल अनमोल,
दुध्दा दाँत झलकि उठय क्षण
आँखि घुमाबय गोल;
खिलखिलाइत-खन बाँहि पसारय
कहैते चचा-चचा।
प्रिया रानी गै एते तोँ......॥

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

ISSN 2229-547X VIDEHA

**अशोक जे. दुलार**

७ टा कविता

१

मन काबू रख बाबू

****

मन काबू मे रख बाबू
आगू पाछू लख बाबू।
बोली मे गोली भरने
ओल सनक नहि भख बाबू।
बेसी बुधियारी कयने
तीन ठिया नहि मख बाबू।
दुनियादारी घोर बितै
आँखि फुजल तूँ रख बाबू।
गाल बजा नहि काज करै
बेसी नहि चख चख बाबू।
संबंध जुड़ल नहि हिय मे
केश कटा की नख बाबू।
चालि चलन देखल बिगड़ल
फूरै नहि अक-बक बाबू।
बिन बातक अनघोल मचै

छाती कर धक धक बाबू।
भाव अभावे शान कहाँ
नहि रस्ता भरिसक बाबू।

२

योग करू ने मीता

सब शमित रोग करू ने मीता
भोग कम, योग करू ने मीता
कर्मरत अहि दुनिया मे रहितहुँ
अल्प उपभोग करू ने मीता
दुखहि डूबल नहि रहि कय झामर
नित नियम योग करू ने मीता
अछि बनल काल करोना जग भरि
योग उपयोग करू ने मीता
मानलक आब तऽ दुनिया सगरो
योग मनयोग करू ने मीता
जोड़ि सबके ल'क' संगहि चलि ली
एहने ब्यौंत करू ने मीता
आब संयोग सुखद सुंदर हो
देश हित ध्यान धरू ने मीता
अलहदे चीन भजै'ए गोटी
तोड़ि मुह हाथ धरू ने मीता

३

जाड़ कतेक पड़ै छै यौ

****

बंकू बाबू डुग्गू बाबू

ISSN 2229-547X VIDEHA

औ जाड़ कतेक पड़ै छै यौ।
सुटकल दुबकल रहियौ घर धरि
बड़ शीतलहरि लहरै छै यौ।
स्वेटर पहिरू टोपी पहिरू
से एहि सँ जाड़ टरै छै यौ।
धोन्हीं चादरि सुरुज नुकेला
उफ़!पछबा हाड़ गड़ै छै यौ।
हाँ,हाँ,टोपी नहि ने फेकू
एना मे कान ठरै छै यौ।
खोंता धेने चुनमुनियाँ सब
नहि बकरी घास चरै छै यौ।
कुकुर बिलैया कूँ कूँ म्याऊँ
कंबल सीरक हेरै छै यौ।
गामो घर मे बूढ़-पुरनियाँ
घूरे लग जाय अरै छै यौ।
जाड़क अमरित आगि कहाबय
दुखिया संताप हरै छै यौ।
जाड़ कसैया बड़ निर्दैया
ओ ककरो ने छोड़ै छै यौ।
ठहरू ठहरू थोड़हि दिन बस
जाड़ोक उमेर ढरै छै यौ।
नेना भुटका घर मे बैसल
ई कविता याद करै छै यौ।

४

हमरा सबहक नेताजी

****

रगड़ा झगड़ा ठनने फीरथि
से हमरा सबहक नेताजी।

ISSN 2229-547X VIDEHA

पूज्य बनल रहता ओ कोना
बेबात फसाद करेता जी।
बतकुट्टनि के खेती सनगर
आ सौंसे आगि लगेता जी।
प्राण बसय हुनकर सत्ता मे
कुर्सी लय ग़दर मचेता जी।
चारि बरस धरि निमुआने सन
पचमे आबि फुसियेता जी।
जाइत-पाइत धर्मास्त्र बल
मरछाउर छीटि सुतेता जी।
आगाँ पाछाँ मोटर पों पों
औ अगबे धूलि फकेता जी।
चलती हुनकर की देखै छी
चलती देखबथि चहेता जी।
केहन अनबुझ बूझथि सबके
पढ़ने बिनु खूब पढ़ेता जी।
५

बेसी हमरा सँ के बुधियार!
<><>¤¤¤¤<><>***<>
बेसी हमरा सँ के बुधियार!
फूट डारि कऽ राज करै छी,
अपन तिजोरी खूब भरै छी,
टीकमटीक ओझरायल रहौ बस,
तेहने तेहन काज करै छी,
केहेन-केहेन पानि भरै छथि
मानथि हारि बड़-बड़ सुतिहार।
बेसी हमरा सँ के बुधियार!!
बुद्धिजीबी जे वर्ग कहाबथि,

उछलथि कूदथि गाल बजावथि,
रस्ता हम्मर वैह सोझराबथि।
अपन बिरादर आखिर अपने
शान हुनक तऽ हमरे झपने,
हुनकर सिदहा हमरे नपने,
बालि बनि हम कियैक ने गरजी,
बढ़ले जाय हमर अधिकार!
बेसी हमरा......!!
जतय जे गऽर ऊँट बैसै बस
गोटी तैखन सैह भजै छी,
बहुरुपिया अछि रूप हमर
हरेक रूप मे बेश छजै छी,
धर्म-अफीम नशा केर पुड़िया
तकरो बाना खूब जनै छी,
पर उपदेश कुशल हम अपने
प्रवचनो दऽ खूब गजै छी ,
चोरी टा सँ मोन भरय नहि
{पेट तऽ बिना चोइरोक भरैए}
ताँय डकैती पर उतरल छी
तैँ की डकैत कहत संसार!
बेसी हमरा सँ के बुधियार!!

६

हम मजदूर बिहारी
¤*******¤****¤
हम मजदूर बिहारी

भैया,हम मजदूर बिहारी
घर छोड़ी लाचारी
भैया,हम मजदूर बिहारी।
हमरे बल पर नहर-छहर
आ बनय महल अटारी,
हमरा स्वेदे लहलहाइत फसिल,
पंजाबक खेती-पथारी।
भैया,हम मजदूर बिहारी।।
आसेतु हिमालय पसरल सगरो,
हमरा काज ने कोनो भारी;
सोझमतिया हम मारल जाइ छी,
नफ्फा लूटय बणिक-व्यापारी।
भैया,हम मजदूर बिहारी॥
अखरा नोन आ मिर्च हरियरका
संग प्याजु सोहारी,
रुक्खा-सुक्खा खा जीबै छी
के कीनत महग तरकारी।
भैया,हम मजदूर बिहारी॥
घर बनबितो बेघर रही
भेटय सगरो टिटकारी;
कतहु 'भैया' 'बंदा'कतहु
चलय करेजा आरी।
भैया,हम मजदूर बिहारी॥
उपजाओल हमरे भोग ने हमरा,
कखनो कऽ बिचारी;
बैठल ठाँव जे बात बनाबय
आगाँ ओकरे भरि थारी।
भैया,हम मजदूर बिहारी॥

ISSN 2229-547X VIDEHA

माया-जाल प्रपंच बनल ई
योजना सब सरकारी;
कोनो दल सरकार बनै छै
लागै एक्के बेमारी।
भैया,हम मजदूर बिहारी॥
बौआ-बुच्ची किताब ने काँपी,
कनियाँ के ने निम्मन साड़ी;
मेहनतकश के मोल ने एतबो
समय केहेन ई भारी।
भैया,हम मजदूर बिहारी॥
खन असोम तऽ खन मुंबई मे
हमरे पर गोला-बारी;
मनिआडर के आस मे परिजन
सुनि दै औनी-पथारी।
भैया,हम मजदूर बिहारी॥

७

स्वप्न-परी
****

ऐ स्वप्न परी घड़ी दू घड़ी, बिलमि कनेको जाउ ने।
तृषित नयन निहारि रहल,
झलक देखा तरसाउ ने॥
काल कराल केर चक्र चलय अछि,
रस क्षण केर पीबि लियऽ।
जानि ने की अछि अगिला पल मे,
एहि पल के जीबि लियऽ॥
प्रबल प्रतीक्षे पीड़ित छी,
कय मन उन्मन भरमाउ ने!

ऐ स्वप्न परी.......॥
जन जीवन मे उत्ताप बढ़ल,
सब किछु बनल व्यापार अछि।
सब संबंध शिथिल पड़ल,
ससरि रहल संसार अछि॥
तप्त बनल जीवन-मरुथल,
स्नेहामृत बरिसाउ ने!
ऐ स्वप्न परी....॥
खिलल कमल-दल अछि मुख-मण्डल,
मधुरिम हास सुशोभित।
मन भमरा भमि-भमि आबय,
अधर सुधा-रस लोभित॥
दय ग्रिव-हार लवंग-लता भुज,
कुंतल घटा घहराउ ने!
ऐ स्वप्न परी....॥
ई मदिर नयन छलकाबय हाला,
भरय दियऽ थोड़ जीवन-प्याला।
यौवन रस केर धार ने बान्हू,
डूबि मरय दियऽ आइ ने थाम्हू।
दु:ख दर्द केर शव पर नेहक
सिँगरहार झहराउ ने!
ऐ स्वप्न परी......॥
ई चंचळ चितवन चोरी चोरी,
उन्मादक ज्वारि उठाबय अछि।
रुन-झुन खन-खन खिळ-खिळ हासे,
मनक सितार बजाबय अछि॥
कदलि थंभ पर केहरि कटि ई,
ता पर सुमेरु उठाउ ने!

ऐ स्वप्न परी......॥
सुंदर तन आ सुंदर मन अछि,
मंदिर हमर अहीँ छी।
प्राण अहाँ मे ध्यान अहाँ मे
अहीँ आकाश मही छी॥
अटकी भटकी जीवन पथ पर,
गेंठ कने सोझराउ ने!
ऐ स्वप्न परी......॥

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**विष्णु कान्त मिश्र**

कुरसी

चोरा-नुक्की खेल खेलाइते ,
निर्लज्ज बनि आब टाल ठोकै छै।
क्रिमिनल गैंगक सरदारबनै लेल,
आन पार्टीक मेम्बर फोड़ै छै ।।
जन प्रतिनिधि बनब सर्वोत्तम बिजिनेस थिक,
अहिसँ जुनि केओ मुह मोड़ू ।
जखनहि कतहु पाइ -पोस्ट भेटय ,
पहिलुका पार्टीक जड़िके कोड़ू ।।
संविधानक मूल भावना संग,
सतत खेल खेलाइत रहू ।
प्रजातंत्रके कनगुरिया ऑगुरपर ,
टिकलीजकाँ नचैल करू।।
जतिआरे -धार्मिक उन्माद लोकमे,
सतत सूइ भोंकि जगैल करी ।
भेंड़ा -महिसिक कानि समाजमे,
जालजकाँ पसारि चली ।।
कुरसीक खातिर मन्दिर-मस्जिद,
गुरुद्वारा-चर्चक दोहाइ दिअ ।
दिग भ्रमित करू अहिना सबके,
मुट्ठीमे सभहक टीक लिअ ।।
गाँधीक नाम सभ बेचि-बेचि क' ,

स्वर्गहुमे हुनका अशान्त करू।
करैत रहू उनटा काज सभ अहिना ,
गगनचुंबी मूर्तिक निर्माण करू।।
नाकसँ उपर पानि गेल छै ,
धक्का आब मारैटा पड़तै ।
प्रजातंत्रक चीरहरण कहियाधरि हेतै,
कौरवक अन्त होएबे टा करतै ।।
अपनहि घरक किछु दुर्योधन सभ ,
भारतके गुलाम बनाय रहल छथि।
आजादीक गुलामीक विरोधाभासमे,
'विष्णु 'नग्न सत्य उगलि रहल छथि।।
कुकुरके कारासँ मतलब ,
नांगरि डोलाय कारा खयलक ।
दोसर ठाम देखितहि खाद्य वस्तु,
ओतुका बाट पुन:फेर धयलक ।।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**आशीष अनचिन्हार**

दू टा गजल

१

घड़ी दू घड़ी जे बिता गेल भमरा
बहुत बात हमरा सिखा गेल भमरा

गमक लीखि देबै मधुर रस परागो
जदी गाछ फूलक पटा गेल भमरा

निमाहब कठिन छै हलाहल समाने
अपन आन खातिर बिका गेल भमरा

हमर टीस लेलक अपन टीस देलक
तकर बाद किम्हर नुका गेल भमरा

रहै दाग पुरना मुदा दर्द नवके
हवन कुंड लग सकपका गेल भमरा

सभ पाँतिमे 122-122-122-122 मात्राक्रम अछि
(बहरे मुतकारिब मोसम्मन (चारि सालिम वा बहरे मुतकारिब सालिम अठरुक्नी)। यदि=जदि केर उच्चारण रूप जदी लेल गेल अछि। वर्तनी रूपमे 'यदि' सही छै।

२

बाहर बाहर जोड़ल भतार
भितरे भीतर टूटल भतार

छै मृगतृष्णा सन के विकास
इम्हर उम्हर दौड़ल भतार

इच्छा माने पूरा समान
किम्हर जेतै परिकल भतार

लेने हेतै सभटा हिसाब
चुप्पे रहि रहि कानल भतार

हमरा आने देलक समाद
अपने लोकक दागल भतार

सभ पाँतिमे 22-22-22-121 मात्राक्रम अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**प्रियंवदा तारा झा**

उम्मीदक आश्रय

शब्द नीरव , युक्ति हारल ,थाकल मन प्राण
विकास बाधित ,संचार स्थावर ,भ्रमित ज्ञान विज्ञान
भीरुमन , शिथिल तन , विकल विश्व अनुखन
व्योमचारी बनल बन्दी, भय ग्रसित सदिखन।

प्रगतिक मार्ग सब धूमिल भऽ रहल
मायक कोरमे , शिशु भूखसऽ बिलखि रहल
मनुष्य सऽ मनुष्य भयभीत भऽ रहल
संवेदनापर व्याधि भय हावी भऽ रहल।।

निश्चय विकट समयई ,अछि परीक्षाक घड़ी
विश्वव्यापी व्याधि जनित आतंकक कड़ी
दैन्य ,नैराश्यभाव अछि भेल प्रबल
अदृश्य शत्रुक भीति सबपर भारी पड़ल।।

विवश भेल मानव, बुद्धि हेरायल, ओझरायल तर्क
क्षुब्ध भेल सोचि रहल, हम छी मानव अति विशिष्ट
विश्व जीतल , प्रकृति बान्हल ,अर्जित नूतन आयाम

पुरुषार्थक नित नवीन परिभाषा ,जीतल धरा व्योम।।

नहिं स्वीकार करब पराजय , नहिं छोड़ब उम्मीदक आश्रय
हम आयब , हम आयब, लय समाधान संसार बचायब।।

प्रियम्वदा
१५ /५/२०२०

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**आनन्द दास**

चिट्ठी

अहां स्कूल पहुंचते, तेसर लाइनमे बैसि जायब।
मास्सेबके नज़रि अछि, हमरे-अहां पर,
अंत्याक्षरीमे, अहां गीत गाएब, हम बस्ता बजायब।
अहां हमरा काजर आ हम अहांके नजरि लिखब।
लिखै छी हम चिट्ठी, अहूं जवाब लिखब।
स्कूलक चारके तेसर बत्तीमे, खोइन्स जायब।
नजरि झुका मुस्का देब,
इशारा जानि, अहांक चिट्ठी हम दौड़ि ल' आयब।
अहां हमरा जामुन आ हम अहांके गुलाब लिखब।
लिखै छी हम चिट्ठी, अहूं जवाब लिखब।

टीसन पढ़ै लेल आयब, त' सीधे अंगना आबि जायब।
बाहर, सखी सब अहांके किरिया खुवायत,
कहत भौजी छथिन, मुदा अहां नै ल जायब।
अहां हमरा सत्तु आ हम अहांके सतुआईन लिखब।
लिखै छी हम चिट्ठी, अहूं जवाब लिखब।

(एकटा बात; अहां जखन प्रेममे होइ छी, दोसरे लोकमे रहै छी, दुनियाके सब भेद-भाव, ऊंच-नीच, जाति-पातिसँ ऊपर बुझैत छीयै, प्रेमक अलावा सब चीज़, गैर-जरूरी होइत अछि।)

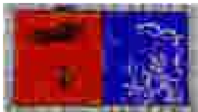
जुनि डरु लोक सब स'...,

प्रेमक पवित्रताके ज्ञान नै केकरो, लोक त' अगियाबताह भ' अनेरो नाचत।
प्रेम त' होइत अछि, जाति-पाति स' ऊपर,
अपन प्रेम पवित्र हेतै, पायल जकां छन-छन बाजत।
अहां हमरा प्राण प्रिये आ हम अहांके प्राणेश्वरी लिखब।
लिखै छी हम चिठ्ठी, अहूं जवाब लिखब।
हे..., हम अहांक मोनक सबटा बात बुझै छी, ज्यादा नै बौआऊ, धरातलेपर रहु ;
प्रेमक आनंद लिय, प्रेममे जिबु, उन्मुक्त गगनमे घुमू।
प्रेमक ई त' उमरे अछि, प्रेम अनंत अछि,
प्रेमक अंत नहि करु, सावनक फुहारमे मोर बनि झुमु।
अहां हमरा राधा आ हम अहांके कृष्ण लिखब।
लिखै छी हम मोनमे चिठ्ठी, अहूं मोनेमे जवाब बुझब।
लिय... लिख देलौं हम चिठ्ठी, आब... अहूं जवाब लिखब।

- -आनन्द दास, "बाबाअंगना", नवानी, 25.04.2020

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

कल्पना झा- एकटा कविता

ने एतय छी ,
ने ओतय छी,
हम कतैय छी?
हम असोराक ओ रउद छी,
जे छजाक लाइंघ खसैय छी,
हम पाइनक ओ धार छी,
ज्यों रुकैत छी त मांटी में लपटायल थाल छी,
हम मरबाक ओ दाबा छी,
जे नेहू नहू ढहय छी,
हम देवालक ओ इंटेबा छी,
जे नूनी लाइग खसैत छी,
हम कोन सूरत में गढल छी,
जेकर नहिं कोनो स्वरुप छी,
हम ओ राहगीर छी,
ज्यों रुकैत छी त थकैत छी,
हम चौखैट के भीतर घुटैत छी,
मगर डेग बढाबैथ डरैय छी,
संस्कार क छवि सं ओझरायल,
हम कुहिर रहल छी,
ने एतय छी,

ने ओतय छी,
हम कतैय छी ?
-कल्पना झा, बोकारो

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

डा जियाउर रहमान जाफरी

आजाद ग़ज़ल

....

आँखि मे हमर नोर रहल
देश मे लम्पट चोर रहल

नोन, तेल आ कपड़ा लत्ता
जिनगी भर ई जोर रहल

समय किछु नहि आबि सकल
बिजुरी संग इंजोर   रहल

सोचैत रहेत छी अबहू हम
आँखि मे किएक भोर रहल

कतइ विकासक बात चलत
दिल्ली दोसर छोर   रहल

अहाँ त किछु नहि   कहलहूँ
मुदा ई कोना शोर   रहल

हम ते ग़ज़ल सुनैत   रहलहुँ
अहाँ क की गठजोर   रहल

....

-डा जियाउर रहमान जाफरी, हाई स्कूल माफ़ी +2, वाया -अस्थावां, जिला -नालंदा 803107, बिहार

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

GAJENDRA THAKUR

RAJDEO MANDAL- THE POET, THE NOVELIST/ PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE

A SURVEY OF MAITHILI LITERATURE
VOLUME II
GAJENDRA THAKUR

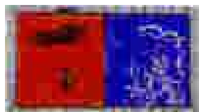




a Videha archive imprint

Issue No. 88 (November December 2019) of Muse India at http://museindia.com/Home/PastIssue displays Maithili

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

literature in a very poor light. Moreover, it wrongly claims to be a representative review of the entirety of Maithili Literature. In actuality it was a representation of the so-called "dried main-drain" of Maithili Literature, in line with the Sahitya Akademi, Delhi. It is expected that Muse India will correct itself by announcing an issue exclusively devoted to the parallel tradition of Maithili literature. *–*Editor

T.K. Oommen writes in the 'Linguistic Diversity' Chapter of 'Sociology', 1988, page 291, National Law School of India University/Bar Council of India Trust: "...*the Maithili region is found to be economically and culturally dominated by Brahmins and if a separate Maithili State is formed they may easily get entrenched as the political elite also. This may not be to the liking and advantage of several other castes, the traditionally entrenched or currently ascendant castes. Therefore, in all possibility the latter groups may oppose the formation of a separate Maithili state although they also belong to the Maithili speech community. This type of opposition adversely affects the development of several languages*."

T.K. Oomen further writes: "… *even when a language is pronounced to be distinct from Hindi, it may be treated as a dialect of Hindi. For example, both Grierson who undertook the classic linguistic survey of India and S. K. Chatterjee, the national professor of linguistics, stated that Maithili is a distinct language. But yet it is treated as a dialect of Maithili*". (ibid, page 293)

1

RAJDEO MANDAL- THE POET, THE NOVELIST

ISSN 2229-547X VIDEHA

The constant shedding of Tears

-Maithili poem by Sh. Rajdeo Mandal - from his anthology of Maithili poems "Ambara"

Out of the eyes of my beloved

tears like a river

always keep flowing

and in that water of tears

people plunge

some feel cold

and some feel hot

some say wow!

and some feel bad.

but my blind-deaf accomplice

does not care,

her tears always keep flowing

but from some time her tears have stopped coming out

now perhaps she has emptied herself of tears

or

is she storing it !?

Verse is not apopular genre.it is appreciatedby a few. For a language like Sanskrit, the volunteers who are engaged in its popularisation, are using simple Sanskrit for it. They translate short stories and novels from other Indian languages into simple Sanskrit. But here translation of verse into Sanskrit is not done, because verse is read by none. A language, the number of whose speakers are so little that a need has been felt for organisation camps for its spoken form, translation from verse into that language is considered misuse of energy.

In Maithili the situation has become so grave that if we envisage a situation where there are no villages left, the number of speakers of this language would become a small number. People would speak in Maithili only in seminars and sittings. Thje need has already been felt for pronunciation and vocabulary enrichment classes even for the authors and singers of Maithili.

Then what is the purpose of writing verse in this language, i.e., Maithili? What is the purpose and what is the need for it? People write verse due to paucity of time, as the other genres require devotion of more time. The situation becomes even more grave when people gives the reason for writing verse in this way.

In this situation the happenings of the neighbourhood, personal ambition, derogatory remarks on others and the travelogue, all these have become the subject matter of verse. But why not use prose for these kind of subjects? The short stories are transformed into drama form for the purpose of staging it. But what is the purpose of converting prose into poem?

The answer is both obvious and simple who know the so-called dried main-channel of Maithili literature. The readers of the converted poems are only the partisan-critiques. And writers of those great poems themselves throw eulogies

on themselves as they have understood the call for self-sufficiency in this way. Why to depend to others for it? They write long prefaces in prose and add it to their collection of verses, declare ther verse as great and path-breaking!

Who will understand the value of creation of verse?The personal worldly experiences, if it is not allowed to percolate deep down, would not be able to become a great poem even though it may remain in rhythm. The spiritual and other-worldly thinking, howsoever non-concrete would still be not able to mesmerise, if that is not able to meet the worldly and make itself relevant, even though it may remain non-rhythmic and may even subscribe to a particular partisan-grouping or even with the use of crutches of ideology. The essential needs of man are food, clothes and housing. And after that the spiritual thinking and related needs. When Buddha asked that all those people wo were participating in the festivities know the eventuality of death and if they do how can they participate in those festivities? Likewise the modern Maithili poets, when they find the base of their language-culture and economics missing behind their feet even then they refuse to accept that truth and then they try to insert the isms to the national-international happenings into their poems, they want to create a patronising literature for the depressed classes and the natives, they want to become benefactor and so it fails to have a cutting-edge.

But when Rajdeo Mandal writes:

From the percolating blood drops

The earth has become freshly-bathed

The bird then asks

Asks from its heart

In the incoming heavy and pitch-dark night

Would our species survive?

, then it goes into our blood and the blood starts running fast. The species of the poetics of the poet or the species of that word? No partisan-critiques nod of self-obsessed preface is required for this poem. No groupism or crutches of ideology is required for this creation.

So the poem needs excellence. It requires base of language and culture. It does not want imported plots and subjects, which is imported to do favours to the poem. It also does not need the imported emotion, which would be a superficial attempt for searching for the disappearing language, culture and dwindling economy, which has gone missing beneath its feet.

Good poem can be written on any subject, it can be written on the anxiety of Buddha regarding future of mankind, for consoling the heart also otherwise people will have to go to the pseudo-preachers. For the language, culture and economy base also, otherwise we will have to start camps for Maithili soon. The transmigration of imagery isalso required, otherwise we will have to create an artificial atmosphere for the poet and for their poems we will have to arrange stage, a stage-camp will have to be organised for his artificial vocabulary and ideology. And people would have to be trained for it. The poets of the so-called mainline of dried-drain are just doing that.

The rhythm and ups and downs of Maithili language, the cultural and professional superiority of its proletariat brimming with confidence having all kinds of professional and cultural skills, the superiority of its cooperative living style, cultural conservatism, polity, daily affairs, social values, morality, economic situation and adaptation in the flood ravaged economy, religion and philosophy all should be the subject of Maithili literature. And if that does not happen it

ISSN 2229-547X VIDEHA

would become one-sided, it will get entrenched after getting lopsided, would become dead fit to be framed and put onto the wall.

To create poetry is a necessity, a literary urge for creation for fulfilling it. When the people of Mithila would go to the camps for learning Maithili language, then can only we start questioning the need of writing poems and creating all type of verse forms. Only then we should discuss the futility of writing poems in Maithili. And that day must not come, for that thew poets would have to remain alert. And so is Rajdeo Mandal and that is why "Ambara" a collection of poem written by him has become the best collection of its genre in the first decade of the 21st Century. His collection of poems "Vasundhara" is the next step. The excellence of verse created by Rajdeo Mandal isbecause of its foundation, the foundation of language and culture. The excellence is because he does not and have not to import the contents of hissubjects. He does not import emotions either, you will not find any of these. The expressions of his imagery lies in the rich vocabulary that he possess. To create poem is the only way left for Rajdeo Mandal. He has to create poem, it's a literary hunger and essentiality of his literary existence. The emotions are poured out in spinning rhythm and becomes his poetry.

"Rahab Ahink Sang"- (Will remain with you only)- From "Ambara"

Crying, calling

My throat dried

The lips dried

As if I was thirsty

The corpses all around

ISSN 2229-547X VIDEHA

Are laughing at me

Nobody is listening to my voice

Where has went

My society

It was necessary to break

The conservatism

Turning of direction

For the future

You all are yourself the greats

Move forward and leave the squabbling

No interruption will be able to stop it

I have not done any big crime

Hey respected you, come here

Do not get angry

I will not break any law henceforth

I will not bother any of you now-on

Keep your kingdom

I donot want the headgear the throne

I will not change my colour anymore

ISSN 2229-547X VIDEHA

I will be with you all only peacefully.

RAJDEO MANDAL- THE FICTION WRITER

"Paro" of Nagarjun-Yatri, notwithstanding the unanswered question whether it was written originally in Maithili or was a translation from Hindi into Maithili by the author himself, did depict first hand account of Maithil Brahmin caste of his contemporary times. He did depict the socio-cultural situation of the period. The novel "Hamar Tol" (My quarter of the village) by Rajdeo Mandal is a first hand account of "Dhanuk" caste of Mithila and has been written in thesetting of the socio-cultural situation that this caste is peculiarly placed in. He inserts everything in it, the belief, which are sometimes not rational, social reform, love, hate, hope as well as disappointment. There was a void after Lalit, the mainstream, as it is called, writers of Maithili language got themselves into a maze due to their chosen subjects. The dark enveloped the literary scene wherein they found the exit tough the going-on impossible. The "Hamar Tol" of Rajdeo Mandal purifies the account of the second-hand account or description of Lalit in "Prithviputra"; and as a result the parallel movement of the stream was able to take along the main course of literatureand moved it forward and relevant.

The author, being a realistic writer, has been forced to make the ending a tragical one. He refuses to see some struggles, or is not able to see, or nobody is able to see it. But he gives details of those struggles too.

"Everyone left in a hurry.

There began a fight between the crow and the Myna. That fight remained unseen, only the tree saw it. And the tree saw many more things, but yet the tree remained silent".

The complexity and perplexity of that silence refined and presented owing to the first hand experiences of those unseen things, this novel has secured its position in the literary history of Maithili literature.

2

A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE

1

FESTIVAL OF LETTERS OR FESTIVAL OF SHAME

SAHITYA AKADEMI AND the DOWNFALL OF INDIAN LANGUAGES (IN SPECIAL CONTEXT OF MAITHILI LANGUAGE)

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

He was wrong on this on two counts. What he referred to was applicable, if it was applicable at all, only to the part of Maithili speaking area, geographically located in India. Maithili is spoken, natively, in India and Nepal both. After treaty of sugauli (ratified in 1816), which was in the aftermath of Anlo-Nepalese war of 1814-16, the hilly regions were incorporated in British India, including Nepalese speaking Darjeeling Area. Similarly in 1816 and 1860, the Britishers ceded some Terai region to Nepal. As a result part of Maithili speaking Area, which were earlier ruled by Malla Kings (when Maithili was official language of the region), was ceded to Nepal. Even today some Maithili scholars (!!) refer to the golden period of Maithili in the period of “Nepali (!!)” Malla Kings (Ramanath Jha, Introduction to Maithili Sahityak Itihas by Dr. Durganath Jha “Shreesh”).

ISSN 2229-547X VIDEHA

Ramanath Jha himself admits that during his visit to “Vir Library” of Nepal (Kathmandu) he came to know about the Nepal legacy (his monograph on kirtaniya natak, which he wrongly presents as Kirtaniya Nach) in respect of Maithili. So he cannot be blamed for his lack of knowledge in this respect. He was wrong on the second count also, and this second count was an artificial creation. He began a tradition of elitism and conservatism in Sahitya Akademi, as a first convener of Maithili language. The tradition which got stronger and stronger in the last 55 years of its Existence of Maithili in that Akademi. So he ensured that the liberal writers, like Sh. Harimohan Jha, attacking casteism and conservatism did not get the award, even though the year 1967 went unrewarded and the Ist award in 1966 was given to a non-literary book in Maithili (academic book of Philosophy!!!).

He himself was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in *Panji* was well known to him, and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married to a “Charmkarini” and was born five years after the death of his father. But he informed it to Sh. Dineshchandra Bhattacharya in a distorted way. Sh. Dineshchandra Bhattacharya writes in the “History of Navya-Nyaya in Mithila”-

“The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila…Gangesha’s family is completely ignored and we are not expected to know even his father’s name.”, and he writes further that all these information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused would allow the award to be given to Sh. Harimohan Jha. So the Sahitya Akademi saved Maithili Language by recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, was wrong on those two counts.

Now come to Nepal, the Prajna Pratisthan and other organizations often recognize Indian Maithili writers, but Sahitya Akademi of India does not

ISSN 2229-547X VIDEHA

recognize Nepalese Maithili writers, be it the Seminars or the poets meet, be it anthology of poems or prose published by the Akademi. Regarding treatment of Nepalese Maithili writers by Sahitya Akademi Sh. Ram Bharos Kapari "Bhramar" laments that there is demand in Nepal that they should also not award Indian Maithili writers/ publish them in their anthologies as reciprocity demands this.

The narrow mindedness of the Maithili advisory board of the Indian Sahitya Akademi has its origin in the organizations that is recognized by Sahitya Akademi, the basis of which is extra-literary credentials. These are pseudo organizations running on paper, political organizations or casteist organizations pocket-run by a few. The complete list is:

MAITHILI LITERARY ASSOCIATIONs (!!!) RECOGNIZED by SAHITYA AKADEMI

01. The Secretary, All India Maithili Sahitya Samiti, Tirbhukti, 1/1B, Sir P.C. Banerjee Road

Allahabad-211 002; 02. The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad

C/o Dr. Ganapati Mishra, Lalbag, Darbhanga-846 004; 03. The Secretary, Chetna Samity, Vidyapati Bhawan, Vidyapati Marg, Patna-800 001; 04. The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6 B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007; 05. The Secretary, Vidyapati Seva Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004; 06. The Secretary, Centre for the Study of Indian Traditions, Tantrabati Geeta Bhavan; Ranti House, Ranti, Madhubani-847 211

What is the literary credential of Centre for the Study of Indian Traditions? Chetna Samiti and Vidyapati Seva Sansthan are casteist political outfits, vehemently displaying casteist attire of a great ancient poet, whose caste is still uncertain (VIDYAPATI), but who was certainly not Brahmin. All India Maithili

ISSN 2229-547X VIDEHA

Sahitya Samiti became non-existent even during the lifetime of Late Jaykant Mishra, same is the case with Akhil Bhartiya Maithili Sahitya Parishad. Mithila Sanskritik Parishad has done a crime through an investiture ceremony of the great Vidyapati, they tried to convert Vidyapati and "Maithili" language as the language of only the Brahmins. When these non-existent organizations exercise voting powers granted by Sahitya Akademi and chose a convener, it is not a coincidence that for the successive times only conservative people among the Maithil Brahmin caste, are chosen. The complete list is:

1. Ramanath Jha, 2. Jaykant Mishra, 3. Surendra Jha Suman, 4. Sureshwar Jha, 5. Ramdeo Jha, 6. Chandranath Mishra Amar, 7. Vidyanath Jha Vidit, 8. Veena Thakur, 9.Prem Mohan Mishra and10. Ashok Avichal.

The result is now for everybody to see. The complete list of Sahitya Akademi awards (till 2019) is:

Total booty distribution- 50 times, Maithil Brahmins- 42 times, Kayasthas- 6 times, Rajpoots- 3 times; Others- 0 times !!!

The result is not on the basis of quality of the books but solely upon the caste based other considerations and the disease has its root in the faulty seedling that the Sahitya Akademi of India found through the faulty literary associations.

What were the objectives of setting of this Akademi.

Sahitya Akademi was established (National Academy of Letters to be called Sahitya Akademi) by Government of India resolution No F-6-4/51G2(A) dated December 1952 "to set high literary standards, to foster and co-ordinate literary activities in all the Indian languages and to promote through them all the cultural unity of the country; to promote good taste and healthy reading habits, to keep alive the intimate dialogue among the various linguistic and literary

zones and groups through seminars, lectures, symposia, discussions, readings and performances, to increase the pace of mutual translations through workshops and individual assignments and to develop a serious literary culture through the publications of journals, monographs, individual creative works of every genre, anthologies, encyclopedias, dictionaries, bibliographies, who's who of writers and histories of literature."

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national and international levels, " along with the workshops and literary gatherings-about 200 in number per year".

The Akademi recognises " Besides the twenty two languages enumerated in the Constitution of India", English and Rajasthani as languages. 24 language Advisory Boards have been constituted by Sahitya Akademi "to render advice for implementing literary programmes in these 24 languages".

The Akademi gives prizes in 24 languages recognised by it for original and translated works. It gives " special awards called Bhasha Samman to significant contribution to the languages not formally recognized by the Akademi as also for contribution to classical and medieval literature"; "It has also system of electing eminent writers as Fellows and Honorary Fellows and has also established fellowship in the names of Dr. Anand Coomaraswamy and Premchand".

FESTIVAL OF LETTERS (SHAME)!!!!

In February every year, Sahitya Akademi "holds a week-long Festival of Letters; It begins with the ceremony to present the Akademi's Annual Awards for creative writing".

ISSN 2229-547X VIDEHA

In February every year there is need to examine whether Sahitya Akademi is fulfilling its objective, whether Sahitya Akademi is aware of the rich cultural and linguistic variety prevalent in India.

On scrutiny it is revealed that Sahitya Akademi believe in "forced standardisation of culture through a bulldozing of levels and attitudes" and it is not "conscious of the deep inner cultural, spiritual, historical and experiential links that unify India's diverse manifestations of literature".

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national and international levels, "along with the workshops and literary gatherings-about 200 in number per year". If we see the data in respect of Maithili it comes out that every year around 12 books should have been published in Maithili and the Maithili writers might have attended 30 seminars every year at regional, national and international levels and might have participated in 8 literary gatherings every year. The number of Maithili books published by the Akademi is pathetically low, and when we see the assignments, through which these books get artificially prepared (be it translation, anthology or monograph), then the people getting these assignments are often related to the members of the advisory board (as the answer to RTI application by Sh. Vinit Utpal brings forth). The quality suffers, as a result there is no readership.

How this Akademi failed? And why this Akademi failed? And what action should be taken against the Akademi for its intentional failure?

Firstly, Akademi is not the name of a man or woman. Akaemi or its member of advisory Board consists of persons, and if the group of persons is failing the Akademi, that language itself is to blamed! But again the language is not the

name of a man or woman. So, the people speaking that language are to be blamed for the failures of the Akademi. Really!!

Even if it is partially true, the Sahitya Akademy cannot shirk from its responsibilities. How an advisory committee can be considered representative of Maithili speaking people (even that of India), when the Convener of that language is nominated by six organisations (recognised by the Sahitya Akademi for reasons best known to it), having no remote connection with literature. Sahitya Akademi sowed seeds of Acacia and expecting Mango fruit. Having said that it is also true that the Akademi or any organisation can transform itself, but only when the conservative people representing these find pressure from the literary fraternity, change themselves or are replaced.

What is the solution?

The literary fraternity has already taken initiative by establishing parallel Sahitya Akademi awards and parallel literary meets. It should be taken further. All legal means should be explored to take the Akademi to task. On all available forums, the fact be made clear that the literature being prepared by Sahitya Akademi through assignments, are not grammatically correct, that it is not upto mark and are of inferior quality. On all available forums, it should be made clear that the thin, casteist looking (quantatively and qualitatively) and pale Maithili literature, that is being shown by the Sahitya Akademi of India to the world, has no readership or respect in its native speaking area of India and Nepal. And that Maithili has moved itself not because of Sahitya Akademi but in spite of it.

Demand

The six organisations representing Maithili should be derecognized with immediate effect and an inquiry initiated to ascertain its genuineness. A committee should be set up to scrutinize the work done by the Sahitya Akademi

(in respect of Maithili) in the last 55 years. The awards should be kept in abeyance till results of the inquiry are made public and corrective steps are taken.

2

THECELEBRATION BEGINS

Videha Ist Maithili Fortnightly International e-journal has e-published more than 300 issues till date. Meanwhile We will enumerate the problems faced and solutions found by us. The Journey began in the year 2000 at yahoo geocities- the first words on internet in Maithili was written by me on the yahoo geocities sites (now yahoo has discontinued geocities) towards the end of 2000 when I suffered a major accident which kept me confined to cretches for nearly one and a half years. But that perhaps shaped my destiny. I could concentrate on my Maithili writings and on my research on Tirhuta Manuscripts. On 5th July 2004, the first blog in Maithili came (gajendrathakur.blogspot.com) as "Bhalsarik Gachh", which was rechristened as Videha ejournal from 1st January 2008. From Ist January 2008 it came to be published as a fortnightly journal. The 1st rechristened issue brought the story of life and creations of a forgotten Maithili poet Late Ramji Choudhary (1878-1952).

Till eighth issue of Videha the columns on Music, Mithila Painting, Children column, Learn samskrit through Maithili got strengthened. Moreover the projects on digitalisation of Maithili Classics and Panji Manuscript-leafs got started. The searchable dictionary (Maithili-English_Maithili) was designed and strengthened. From eighth issue a latest unpublished Maithili Play of Nachiketa "No Entry Maa Pravish" began its e-publication in Videha. Nachiketa, the greatest dramatist of Maithili Literature was silent for the last 25 years, so far as drama was concerned.

Technology has two aspect, bad (its chances of misuse) and good (its good use). It is a great leveller, it challenges status quoist forces. It is applicable in all areas of knowledge. So a school going children today has more clear understanding of the universe and atoms than the Aryabhata or Sir Issac Newton had. After mass scale use of printing education and literature expanded its wings, but only after the "Internet and electronic trasformation of tools of knowledge", it has became universal, it has jumped geographical boundaries. All shackles unfurled, the weak links of the chain were identified, the chain which tried to capture knowledge, which tried to thwart its expansion, started breaking down. And the greatest beneficiary became the Maithili Literature. What is Videha, nothing, its only its commitment to Maithili Language, that helped it expand its base, and Videha became the means that was able to bind together the Maithili speaking areas in both parts of the boundary (India & Nepal). Videha gave Maithili a batch of committed writers, a batch of committed readers. It challenged status quoist and casteist forces. It challenged confused writers, who were using Maithili as a tool to ride the ladder of Hindi. The lack of criticism, the lack of teeth in criticism was the reason that some writers and dramatists were using Hindi-Mix Maithili for cheap popularity, they were using derogatory language for the so-called lower castes of their society (some were finding plea in Natyashastra- when even the modern-day Samskrit Drama is not using Prakrit etc.!!), and for their mimicry those castes started keeping distance with this kind of literature. And once the confusion of the confused thinned, a new type of awakened literature, stage and drama (top-class) became the norm.

Videha is getting regularly some excellent brains. Since its inception Videha, the idea factory, is dependent upon them. So far as their versatile qualities are concerned, people associated with Videha are different. All are known for their perseverance and resilience. All are known for their hard work. All are known for their quality work. All are known for their discipline. And above all, all are

committed; committed to Maithili and to the Mithila. The cumulative force resulted in a natural revolution. A revolution in the field of Maithili Literature, art, music, craft, stage and drama. The only International e-journal in Maithili started this quality movement in Maithili. Nothing less than world standard was acceptable. The awards were instituted to recognize the parallel field of Maithili Literature, art, music, craft, stage and drama. Only the best were selected, there was no scope for the second best. The participation of readers in the decision-making processes was encouraged. The readers got full access to the digitalised Maithili Literature. More than 500 Maithili books and around 11000 palm-leaf mithilakshar manuscripts were digitalised and were made available online under "Videha Archive" section of www.videha.co.in (and the number is increasing everyday). The audio-video-paintings-photographs were archieved, all these archieved "art and lifestyle" of people of Mithila were then placed online. The Videha Archive (http://www.videha.co.in/new_page_15.htm) is a unique gift to the world.

So what is the ideology of people associated with Videha. Is it a collective thinking? No, of course not. In Videha all are welcome. Here all are welcome to discuss their respective ideology. Having said this, it needs emphasis that there are some basic human principles where no compromise is possible. The casteists, those having genetic superiority complex (which is another name of inferiority complex), the practitioners of plagiarism, those who are unable to take part in a healthy discussion and persons who are not able to withstand criticism on their creation, Videha is not a platform for them. Ideology of people associated with Videha may have different tinge, it is not necessary that all should toe to the line taken by any member of the editorial board. Videha believes in individuality of ideas and the editorial board never imposes its ideology upon its members. At the same time it is being emphasized that each

member of the Videha editorial board has strong ideological leaning, the ideology of humanism is practiced by all.

Videha-Maithili Literature Movement has its roots in year 2000 when I started making Maithili Websites on yahoo geocities. After Yahoo Closed geocities these sites were automatically deleted. However the early form of Videha "Bhalsari Gachh" was started on 5 July 2004, http://www.videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html and it is the earliest presence of Maithili on the internet. Videha and its vibrant members did their utmost in translating lacs of words on wikipedia and they successfully opposed the nomenclature "Bihari Languages" http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html (Gerard M accepted the role of Umesh Mandal, the co-editor of Videha, go to Grerad M's blog and click the Dasipat Aripan photo from Videha archive (Preeti Thakur) placed at his blog, you will reach http://videha.co.in/). In Google translate/ wikipedia localisation drive, in Tirhuta and Kaithi script research and in the localisation of Braille in consonance to Maithili Language, Videha shouldered the responsibility as a pioneer in technology viz-a-viz Maithili Language. It was pioneer in many respects. It started for the first time a Maithili Websites Aggregator at http://videha-aggregator.blogspot.com/, first braille site in Maithili, first mithilakshar site in Maithili among others (total list available at http://www.videha.co.in/new_page_15.htm and http://www.videha.co.in/feedback.htm).

Videha has organised several dozen Maithili book fairs till date. The 16th Videha Maithili book fair was held at Sagar Rati Deep Jaray, Patna on 10-11th December 2011 and the 17th Videha Maithili book fair was held at Guwahati, on 22-23 December next year at the Vidyapati Parv organised by Mithila Sanskritik Samanvay Samiti. The detailed list of all the venues (datewise) are available at http://esamaad.blogspot.com/2011/11/blog-post_4803.html. Videha also

ISSN 2229-547X VIDEHA

organised a parallel Sahitya Akademi Kavi Sammelan, besides awarding parallel Sahitya Akademi prizes, as corrective measures, as the awards and Kavi Sammellans of Sahitya Akademi were awarded/ organised in a unilateral manner where merit took a beating. Videha has, thus, fulfilled its obligation by interfering into the murky affairs of government organisations. Videha cannot remain a silent spectator, be it plagiarism or copyright violations. So the authors like Pankaj Parashar, Ashok Sahu, who were engaged in lifting others articles/ stories/ poems were banned after verifying the sources and target writings.

Literature in translation is a major issue with Videha. Lack of translation in America resulted in Americans lagging behind in quality literature. We practise literature in translation in both directions- from Maithili into English and from other languages into Maithili. So far as translations from other languages into Maithili are concerned English, Nepali, Sanskrit and Hindi act as buffer languages in the process. Direct translations into Maithili are limited; and it is done directly only from English, Sanskrit, Hindi, Nepali and Bengali, although there are some exceptions. So far as question of translations from Maithili into other languages is concerned, directed translations are again limited; and it is again done directly only into English, Hindi, Sanskrit, Bengali and Nepali, barring some exceptions. Videha contacted some notable personalities of class literature, took permission and translated those literature into Maithili. Most of the time English was used as a buffer language and translation work from English, Hindi, Konkani, Telugu, Gujarati, Oriya, Kannada, Nepali and Telugu into Maithili was completed; and these works were regularly published in Videha. Maithili novels, poems and short stories, on the other hand, were translated from Maithili into English and were published on a regular basis in Videha.

VIDEHA became a Maithili Literature movement? No, VIDEHA was from the day one a Maithili Literature movement. Many established misconceptions got cleared

through VIDEHA. The well known facts, the not so obvious plot of some people to kill Maithili through its twin institutions the Sahitya Akademi and the CIIL was unearthed. The Right to Information came in handy.Sri Vinit Utpal asked for information from Sahitya Akademi through his RTI application dated 23.09.2011 (file no. RTI-125) and sought information on "Assignment assigned by Maithili Advisory Board, Sahitya Akademi under the convenership of Sri Vidyanath Jha 'Vidit'". The information included proposal received, proposal rejected and proposal kept in abeyance." The statutory mandatory information supplied by the Sahitya Akademi unearthed a vicious circle of Maithili speaking so-called litterateurs, hell bent upon making Maithili a language- "of the Maithil Brahmin, for the Maithil Brahmin and by the Maithil Brahmin". More than 90% of the assignments went to the friends, relatives and acquaintances of the 10 member Maithili Advisory Board. No assignment to Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Bechan thakur (the greatest Short-story-novel writer of Maithili, the greatest Living poet of Maithili and the greatest living Maithili dramatist; respectively), Sh. Umesh Paswan, Sh. Umesh Mandal, Sh. Ramdev Prasad Mandal "Jharudar", Sh. Durganand Mandal,Sh. Sandeep Kumar Safi or to Sh. Anand Kumar Jha. When each and every member of the Maithili advisory board is hand in glove with the Sahitya Akademi to kill Maithili language then where lies the hope? The demand for Mithila state by these people will see that 10 Maithil Brahmin families would loot the Mithila state. Then where lies the hope? Here lies the hope. Sh. Bechan Thakur has created a parallel Maithili stage and theatre, a slap on the existing slapstick humouristic Maithili theatre. Sh. Umesh Paswan is a discovery of the Parallel Sahitya Akademi Poetry festival organised by Videha. Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Jharudar, Sh. Sandeep Kumar Safi and Sh Umesh Mandal have pumped their energy, wealth and time for our Maithili Language. This language will live...proofs are given below:-

ISSN 2229-547X VIDEHA

The Google translate

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

then Wikipedia translate:

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator
http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili
http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai
http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html)

[Monday, May 09, 2011

The #Bihari #Wikipedia is actually written in #Bhojpuri

This is the kind of article that has many people's eyes glaze over. It is about standards, scientific documents and it is about languages most of my readers have never heard about. For the people that do speak one of the languages that are considered Bihari it is extremely relevant and it has implications for Wikipedia.

This is information provided by Umesh Mandal that explains about the "Bihari group of languages" in relation to the Maithili language:

ISSN 2229-547X VIDEHA

Kellogg (1876/1893) and Hoernle (1880) regarded Maithili as a dialect of Eastern Hindi; Beames (1872/reprint 1966: 84-85), regarded Maithili as a dialect of Bengali, Grierson has done a great service to Maithili language, however, he erred when he gave a false notional term of "Bihari" language, after that western linguists started categorizing Maithili as a dialect of "Bihari" language; although there is nothing known as "Bihari Language" and both Maithili and Bhojpuri are spoken in Bihar (of India) as well as in Nepal.

Umesh is working on the localisation of MediaWiki for the Maithili language and as this language is currently in the Incubator, the language committee does its due diligence and tries to understand if Maithili can have a place in the Bihari Wikipedia. The information provided by Umesh makes it quite clear: "no".

This still leaves us with the misnomer that is the Bihari Wikipedia. Apparently the language used for the localisation and the articles is Bhojpuri. Bhojpuri has the ISO-639-3 code "bho".

Are you still following all this? Ok, there is one question I am not asking: How about the Kaithi script?

Thanks, GerardM]

Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/ ."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

TIRHUTA UNICODE See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman pandey http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf at Page 23 the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

The Maithili Speaking area is shrinking. It is shrinking due to a conscious-subconscious policy of the Governments of India and that of Nepal; and the situation became critical due to invasion of Hindi and Nepali media and the biased educational system in Maithili speaking areas, and also due to the large scale migration that has happened in one single generation. The question of Hindi saw to it that Vajjika, Angika and now Thethi, Surjapuri etc. languages should get the tacit support of supporters of Hindi, first in the name of religion and second in the name of caste . Through this they did not support Vajjika, Angika, Thethi or Surjapuri; but they tried to weaken Maithili, which ultimately resulted in the weakening of Vajjika, Angika, Thethi and Surjapuri. For all this, the Maithili speaking people, more so the officials (I will explain it later on), are also responsible, as they themselves tried to delimit Maithili within the two castes and four districts. All others people and areas, than these, were considered northern, southern, eastern and western deviations of so-called pure Maithili, that was fictitiously considered as being spoken by these Maithil Brahmins/ Karna Kayasthas of Madhubani, Darbhanga, Saharsa and Supaul districts. For the last 45 years the officials, yes I call them officials, the officials

ISSN 2229-547X VIDEHA

of the Maithili Department of Sahitya Akademi, did not try to accommodate the people outside this fictitiously delimited domain. But the major problem lies somewhere else. The slow poisoning was given in many disguises, be it the faulty top-heavy education system, which neglected primary and middle school education through the Mother Language Maithili, or be it through the concept of dialect, which initially conveniently declared languages like Maithili as dialects. The elementary education through Maithili was a non-started because the Maithili books published by the Bihar State Textbook Publishing Corporation Limited seemed to be in Avahatt, it was not fit for children. Further the authors and subjects selected for these books had the casteist bias. Maithili became a tool for caste based politics, as once Hindi had been a tool for religion based politics. Still these officials, of Maithili Department of Sahitya Akademi, are residing in their own built ghetto, bereft of any thinking or vision. Another reason for the present plight of Maithili is the policy undertaken by the tax-collectors of Mithila (permanent settlement Zamindars of Kornwallis), whom the sycophants call King or the great king (Raja/ Maharaja) or Mithilesh (King of Mithila), actually these were mere tax collectors, the right for which were given to the highest bidders on a permanent basis; and there were not one such Mithilesh (tax collectors), but many within the borders of Mithila. These tax collectors employed mostly those two castes from four districts in their merchandise venture, and as the selection was based on sycophancy, so the work suffered. So they imported the lathiyals from outside Mithila region. The masses of Mithila suffered blow from the double-edged weapon. First, from their own people who did not consider them as their own and second they got looted from the outsiders. Now after sometime these outsiders, the non-Maithili speaking people, found it convenient to declare the masses (not belonging to the two castes from four districts) as non-Maithili speaking people, and the officials/ sycophants from those two castes from four districts tacitly agreed to it.

Now these outsiders, the non-Maithili speaking people, formed a majority in many places of Mithila, and they led the rumour that Maithili, like Samskrit, is a upper-caste phenomenon, and thus they legitimized their anti-Maithili stance (all these facts have been brilliantly dealt with in the Maithili Novels of Sh. Jagdish Prasad Mandal) and they propagated the case of Hindi, first on the basis of religion and second on the basis of caste. But why our own people fell in their trap, why these tax-collector Maharajas did not consider the masses of Mithila as their own, and imported the perpetrators to loot their own masses? The simple answer is that, merit took a downward leap in auction based tax collection rights allocation.

We started from one and reached number three, then thirty and now three hundred!! and we are growing…... and are 300 not out, and are creating a grand history. http://www.videha.co.in/ Videha Ist Maithili Fortnightly e Journal ISSN 2229-547X has e-published its 300th issue recently. When I began this venture in the year 2000 with a samsung TV net appliance, and when the existing http://www.videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html was posted on 5th of July 2004, I moved all alone. Then on 31st January 2007 I suddenly thought to include the public, as after some ground work I was ready for it. I decided to e-publish Videha, and did publish it, on a fortnightly basis, the first issue that came on 1st January 2008 tried to include all the previous posts.

From all corners of this planet earth the people tried to change the destiny of Mithila and Maithili. Now Sh. Ashish Anchinhar, Sh. Munnaji (Manoj Kumar Karn), are part of our team; and together we are 300 not out now. With 300 plus issues, 30,000 pages of Maithili literature (100 lac words corpora) creation and 11000 Tirhuta manuscript transcription we maintained 50000 word Maithili-English vocabulary database. Now we are 350 strong, with 350 authors.

Videha has faced challenges and has withstood it. We never shirk from any question and/ or problem. The question of state of Mithila is one such question which often comes calling. We are in favour of the states of Mithila within the sovereign borders of India and Nepal. We are in favour of Mithila. But which type of Mithila, that type that we had during the Zamindari Raj, where means of sustenance and avenues of existence remained limited for a few castes? Or that culture that existed within "Aryavarta-Indian Nation newspaper" and other Industries during that Raj. All of these got galloped by a dozen family of Mithila mostly from a single caste!! No, we are not in support of that Mithila, that Mithila where Maithili would be swallowed, as it is being swallowed by the Sahitya Akademi and the CIIL, swallowed by another dozen families. We are not in favour of that Mithila where the proceeding of the legislative assembly would be held in language other than Maithili. Till the misgivings of the people of Mithila is addressed, we cannot support any Mithila state movement. So the people striving hard for Mithila state should sit on protest before the advisory board members of the Sahitya Akademi/ CIIL and sing patriotic songs in front of their houses; and pressurise them to not to misuse government funds by unscrupulously awarding functions of Akademi outside Mithila and not to misuse the power of assigning translation and other rights to themselves and to those people who are hell-bent upon destroying our language. The RTI application by Sh. Vinit Utpal http://esamaad.blogspot.com/2011/11/vinit-utpals-rti-application-dated.html has thwarted an attempt to strangulate Maithili, but if the supplementary work is not done the sinister design would re-surface again. We request the Maithili advisory board members of Sahitya Akademi to immediately return their assignments taken in their own name and in the name of the members of their family. Otherwise pressure should be mounted to force this 10 member Maithili Advisory Board members to voluntarily resign from their

membership in the larger interest of Maithili. So what is our answer viz-a-viz demand of Mithila state: its a categorical Yes.

The technology centric venture called Videha became a success. The native speakers of Maithili reside in Bihar (of India) and in South-East Nepal. The net connectivity had been very poor in these areas. Then how the authors, new and old, started using unicode for writing for Videha. The Nepal Side of Mithila had been using Preeti, Kantipur, Himala etc. fonts, the Kolkata Maithils had been using the Marathi fonts and the rest had been using the fonts based on old remington keyboard. All these three types of fonts are ASCII fonts. We researched into these fonts and provided font converters to our Nepal based authors. We also provided phonetic and remington based unicode writers to all Maithili authors, who asked for it. We asked the authors that they may send their creations in any font, but at the same time we encouraged them to use unicode fonts. The technical support that we provided resulted in numerous receipt of typed entries from persons like Sh. Gangesh Gunjan, who in earlier stages had been sending their creations in their own handwritings. As Sh. Gangesh Gunjan was well versed in remington keyboard typing, so he made great use of the remington unicode typewriter. He sent that software to some of his friends too and he was courteous enough to intimate about this to us, although there was no need for that. Sh. Saketanand also used that software and sent his short-story कालरात्रिश्च दारुणा in unicode, and it was published in one of the issues of Videha. The technology centric venture called Videha became a success because we made it simple and intelligible at a time when even the technologists were not sure about the future of this unicode. The virtual medium was being seen with anxiety by the literary fraternity, the copy-paste system of theft was rampant in those days. But we assured the authors that with Videha they may rest assured that the copyright thief's would not be spared, while at the same time we were firm, that only for fear of misuse of technology we

should not stop our venture midway. With internet and technology the geographic barrier became non-existing. The end of problem of distribution in Maithili literature became possible due to our technology-friendly attitude and it proved a boon for our Maithili language. And it made the technology centric venture called Videha a success.... It is success of the parallel Maithili literature movement.

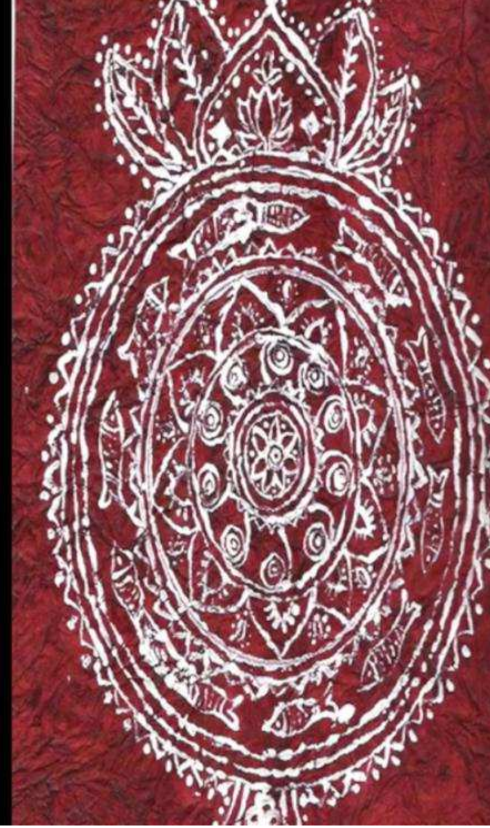
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री

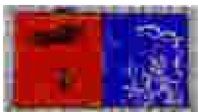
[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)]

Videha e-Learning





विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

पेटार (रिसोर्स सेन्टर)

शब्द-व्याकरण-इतिहास

MAITHILI IDIOMS & PHRASES मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश- रमाकान्त मिश्र मिहिर (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

मैथिली शब्द संचय MAITHILI DICTIONARY- RAMDEO JHA (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

ENGLISH MAITHILI COMPUTER DICTIONARY

MAITHILI ENGLISH DICTIONARY

अणिमा सिंह -Shishu_Geet_Khel_Anima_Singh

डॉ. रमण झा

मैथिली काव्यमे अलङ्कार   अलङ्कार-भास्कर

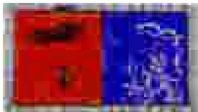
आनन्द मिश्र (सौजन्य श्री रमानन्द झा "रमण")- मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

BHOLALAL DAS मैथिली सुबोध व्याकरण- भोला लाल दास

राधाकृष्ण चौधरी- A Survey of Maithili Literature

....

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मूलपाठ

तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

राजेश्वर झा- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव)

Surendra Jha Suman दत्त-वती (मूल)- श्री सुरेन्द्र झा सुमन (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस) CIIL SITE

....

समीक्षा

सुभाष चन्द्र यादव-राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

शिव कुमार झा "टिल्लू" अंशु-समालोचना

डॉ बचेश्वर झा- B_JHA_Nibhand_Nikunj.pdf

डॉ. देवशंकर नवीन- Adhunik_Sahityak_Paridrishya

डॉ. रमण झा- भिन्न-अभिन्न

प्रेमशंकर सिंह- मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

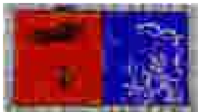
हिआओल

अखियासल CIIL SITE

दुर्गानन्द मण्डल-चक्षु

RAMDEO JHA दत्त-वतीक वस्तु कौशल- डॉ. श्रीरामदेवझा

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

SHAILENDRA MOHAN JHA परिचय निचय- डॉ शैलेन्द्र मोहन झा

....

अतिरिक्त पाठ

पहिने मिथिला मैथिलीक सामान्य जानकारी लेल एहि पोथी केँ पढ़ू:-

राधाकृष्ण चौधरी- मिथिलाक इतिहास

फेर एहि मनलग्गू फाइल सभकेँ सेहो पढ़ू:-

केदारनाथ चौधरी

चमेलीरानी माहुर करार

कुमार पवन

पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा) (साभार अंतिका) डायरीक खाली पन्ना (साभार अंतिका)

योगेन्द्र पाठक वियोगी- विज्ञानक बतकही

रामलोचन ठाकुर- मैथिली लोककथा

SAHITYA AKADEMI

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisam.htm

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

ARCHIVE.ORG

https://archive.org/details/%40vijay_deo_jha?&sort=-publicdate&page=2

VIDEHA MAITHILI BOOKS/ PICTURE-AUDIO-VIDEO ARCHIVE

http://videha.co.in/new_page_15.htm

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

ALL INDIA RADIO DOORDARSHAN आकाशवाणी दूरदर्शन

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

https://doordarshan.gov.in/

आकाशवाणी मैथिली पोडकास्ट http://prasarbharati.gov.in/podcast.php?filterlang=Maithili&from=1947-08-15&fromwp=2020-08-29&to=2050-12-31&search=GO

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-1 http://newsonair.com/RNU-NSD-Audio-Archive-Search.aspx

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-2 http://newsonair.com/Regional-Text.aspx

आकाशवाणी दरभंगा http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=282

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWiTEMxVA

आकाशवाणी भागलपुर http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=359

आकाशवाणी पूर्णियाँ http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=256

आकाशवाणी पटना http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=122

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

IGNCA

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm (MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

http://tdil.mit.gov.in/CoilNet/IGNCA/mithila.htm

-

MITHILA DARSHAN

https://mithiladarshan.com/ (online pdf of Maithili journal)

I LOVE MITHILA

https://www.ilovemithila.com/ (online maithili journal)

मैथिली साहित्य संस्थान

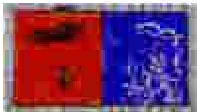
https://www.maithilisahityasansthan.org/

https://www.maithilisahityasansthan.org/resources (online pdf of Reasearch Papers/ books)

....

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMj2pDWIAkXiOHp7A

(अनुवर्तते)

-गजेन्द्र ठाकुर

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) अनुवाद विशेषांक (गद्य-पद्य भारती) ९७म अंक

Videha_01_01_2012 Videha_01_01_2012_Tirhuta 97

८) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

९) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

१०) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

११) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

१२) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१३) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

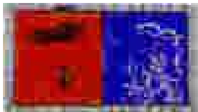
Videha_01_12_2015

१४) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

१५) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

विदेहक दू सए नौम अंक Videha_01_09_2016

एडिटर्स चोइस सीरीज

एडिटर्स चोइस सीरीज-१

विदेहक १२३ म (०१ फरबरी २०१३) अंकमे बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित भेल छल। ई दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समय छल। ओना ई अनूदित रचना छल, तेलुगुमे पसुपुलेटी गीताक एहि कविताक हिन्दी अनुवाद केने छलीह आर. शांता सुन्दरी आ हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद केने छलाह विनीत उत्पल। हमर जानकारीमे एहिसँ बेशी सिहराबैबला कविता कोनो भाषामे नहि रचल गेल अछि। सात सालक बादो ई समस्या ओहने अछि। ई कविता सभकेँ पढ़बाक चाही, खास कऽ सभ बेटीक बापकेँ, सभ बहिनक भाएकेँ आ सभ पत्नीक पतिकेँ। आ विचारबाक चाही जे हम सभ अपना बच्चा सभ लेल केहन समाज बनेने छी।

एडिटर्स चोइस सीरीज-१ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-२

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच ब्रेस्ट कैंसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा केर एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैंसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो ताधरि एहि विषयपर कथा नहि लिखल गेल छल, कारण एहि कथाक ई-प्रकाशित भेलाक १-२ सालक बाद हिन्दीमे दू गोटेमे घोंघाउज भऽ रहल छल कि पहिल हम आकि हम, मुदा दुनूक तिथि मैथिलीक कथाक परवर्ती छल। बादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित भेल।

एडिटर्स चोइस सीरीज-२ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-३

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक किछु बाल कविता प्रकाशित भेल। बादमे हुनकर ३ टा बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल जाहिमे २ टा कविता बेबी चाइल्डपर छल। पढू ई तीनू कविता, बादक दुनू बेबी चाइल्डपर लिखल कविता पढ़बे टा करू से आग्रह।

एडिटर्स चोइस सीरीज-३ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-४

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच जगदानन्द झा मनुक एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ बा उपन्यास प्रकाशित भेल, नाम छल चोनहा। बादमे ई रचना विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल, ई रचना बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कोना लिखी तकर ट्रेनिंग कोर्समे एहि उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही। कोना मॉडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, स्टेप बाइ स्टेप आ सेहो बाल उपन्यास। पढ़बे टा करू से आग्रह।

एडिटर्स चोइस सीरीज-४ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-५

एडिटर्स चोइस ५ मे मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (साभार अंतिका) । हिन्दीक पाठक, जे "उसने कहा था" पढ़ने हेता, केँ बुझल छन्हि जे कोना अहि कथाकेँ रचि चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' अमर भऽ गेलाह। हम चर्चा कऽ रहल छी, कुमार पवनक "पइठ" दीर्घकथाक। एकरा पढ़लाक बाद अहाँकेँ एकटा विचित्र, सुखद आ मोन हौल करैबला अनुभव भेटत, जे सेक्सपीरिअन ट्रेजेडी सँ मिलितो लागत आ फराको। मुदा एहि रचनाकेँ पढ़लाक बाद तामस, घृणा सभपर नियंत्रणकेँ आ सामाजिक/ पारिवारिक दायित्वकेँ सेहो अहाँ आर गंभीरतासँ लेबै, से धरि पक्का अछि। मुदा एकर एकटा शर्त अछि जे एकरा समै निकालि कऽ एक्के उखड़ाहामे पढ़ि जाइ।

एडिटर्स चोइस सीरीज-५ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-६

ISSN 2229-547X VIDEHA

जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा "बिसाँढ़": १९४२-४३ क अकालमे बंगालमे १५ लाख लोक मुइला, मुदा अमर्त्य सेन लिखैत छथि जे हुनकर कोनो सर-सम्बन्धी एहि अकालमे नहि मरलन्हि। मिथिलोमे अकाल आएल १९६७ ई. मे आ इन्दिरा गाँधी जखन एहि क्षेत्र अएली तँ हुनका देखाओल गेल जे कोना मुसहर जातिक लोक बिसाँढ़ खा कऽ एहि अकालकेँ जीति लेलन्हि। मैथिलीमे लेखनक एकभगाह स्थिति विदेहक आगमनसँ पहिने छल। मैथिलीक लेखक लोकनि सेहो अमर्त्य सेन जेकाँ ओहि महाविभीषिकासँ प्रभावित नहि छला आ तेँ बिसाँढ़पर कथा नहि लिखि सकला। जगदीश प्रसाद मण्डल एहिपर कथा लिखलन्हि जे प्रकाशित भेल चेतना समितिक पत्रिकामे, मुदा कार्यकारी सम्पादक द्वारा वर्तनी परिवर्तनक कारण ओ मैथिलीमे नहि वरण् अवहट्ठमे लिखल बुझा पड़ल, आ ओतेक प्रभावी नहि भऽ सकल कारण विषय रहै खाँटी आ वर्तनी कृत्रिम। से एकर पुनः ई-प्रकाशन अपन असली रूपमे भेल विदेहमे आ ई संकलित भेल "गामक जिनगी" लघुकथा संग्रहमे। एहि पोथीपर जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ टैगोर लिटरेचर अवार्ड भेटलनि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखनी मैथिली कथाधाराकेँ एकभगाह हेबासँ बचा लेलक, आ मैथिलीक समानान्तर इतिहासमे मैथिली साहित्यकेँ दू कालखण्डमे बाँटि कऽ पढ़ए जाए लागल- जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डल आगमनक बाद। तँ प्रस्तुत अछि लघुकथा बिसाँढ़- अपन सुच्चा स्वरूपमे।

एडिटर्स चोइस सीरीज-६ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-७

मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफी। सन्दीप कुमार साफीक दलित आत्मकथा जे अहाँकेँ अपन लघु आकाराक अछैत हिलोड़ि देत आ अहाँक ई स्थिति कऽ देत जे समानान्तर मैथिली साहित्य कतबो पढ़ू अहाँकेँ अछौं नहि होयत। ई आत्मकथा विदेहमे ई-प्रकाशित भेलाक बाद लेखकक पोथी "बैशाखमे दलानपर"मे संकलित भेल आ ई मैथिलीक अखन धरिक एकमात्र दलित आत्मकथा थिक। तँ प्रस्तुत अछि मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफीक कलमसँ।

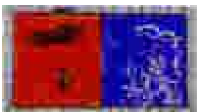
एडिटर्स चोइस सीरीज-७ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-८

नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनेबा लेल किछु लोककथा (विदेह पेटारसँ)।

एडिटर्स चोइस सीरीज-८ (डाउनलोड लिंक)

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

एडिटर्स चोइस सीरीज-९

मैथिली गजलपर परिचर्चा (विदेह पेटारसँ)।

एडिटर्स चोइस सीरीज-९ (डाउनलोड लिंक)

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

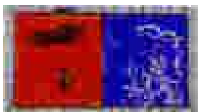
Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन:

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) देवनागरी

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) तिरहुता

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) देवनागरी

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) तिरहुता

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)देवनागरी

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०) तिरहुता

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)देवनागरी

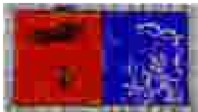
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०) तिरहुता

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]देवनागरी

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५] तिरहुता

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- दोसर संस्करण देवनागरी

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]देवनागरी

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६] तिरहुता

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]देवनागरी

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७] तिरहुता

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]देवनागरी

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८] तिरहुता

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]देवनागरी

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९] तिरहुता

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]देवनागरी

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०] तिरहुता

विदेह:सदेह ११

विदेह:सदेह १२

विदेह:सदेह १३

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of the original works.-Editor

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Maithili Books can be downloaded from: https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

विदेह सम्मान*:* **सम्मान-सूची** (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

सूचना/ घोषणा

१

"विदेह सम्मान" समानान्तर साहित्य अकदेमी पुरस्कारक नामसँ प्रचलित अछि। "समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार" (मैथिली), जे साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक गएर सांवैधानिक काजक विरोधमे शुरु कएल छल, लेल अनुशंसा आमन्त्रित अछि।

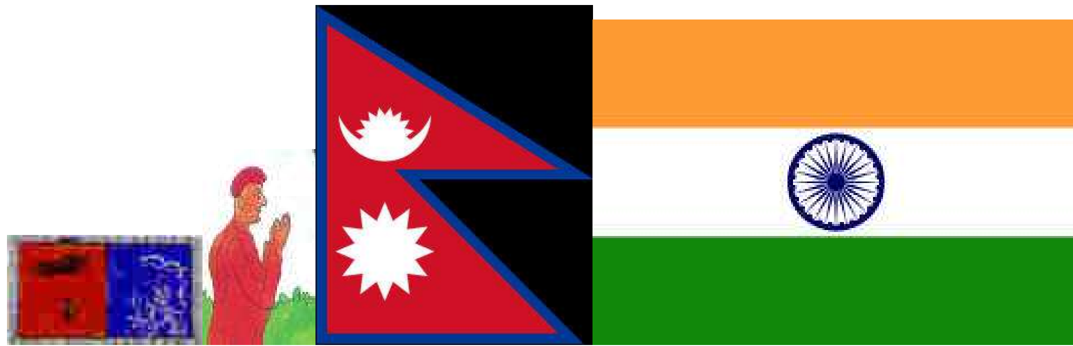
अनुशंसा २०१९ आ २०२० बर्ख लेल निम्न कोटि सभमे आमन्त्रित अछि:
१) फेलो
२)मूल पुरस्कार
३)बाल-साहित्य
४)युवा पुरस्कार आ
५) अनुवाद पुरस्कार।

अपन अनुशंसा ३१ दिसम्बर २०२० धरि २०१९ पुरस्कारक लेल आ ३१ मार्च २०२१ धरि २०२०क पुरस्कारक लेल पठाबी।

पुरस्कारक सभ क्राइटेरिया साहित्य अकादेमी, दिल्लीक समानान्तर पुरस्कारक समक्ष रहत, जे एहि लिंक sahitya-akademi.gov.in पर उपलब्ध अछि। अपन अनुशंसा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२

“मिथिला मखान” फिल्म देखू मात्र १०१ टाकामे। Android App “BEJOD” download करू वा जाउ www.bejod.in पर, signup करू, एकटा ईमेल जायत, अपन ईमेल खोलू आ ओकरा क्लिक करू अहाँक अकाउंट एक्टीवेट भय जायत। आब मिथिला मखान रेण्ट पर लिअ, डेबिट कार्डसँ १०१ टाका ऑनलाइन पेमेंट करू आ फिल्म देखू।



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्: VIDEHA: AN IDEA FACTORY

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि)editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै, आ से हानि-लाभ रहित आधारपर छै आ तैँ ऐ लेल कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA



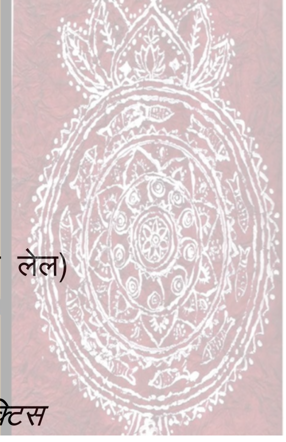
विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA



TOPIC:13 (संघ लोक सेवा आयोगक मैथिली ऐच्छिक- पत्र-१, भाग-१, ६अम क्रमक सिलेबसक लेल)

तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास- गजेन्द्र ठाकुर

(विद्यार्थी लोकनि लेल निर्देश: अनुलग्नकमे देल ब्राह्मीसँ तिरहुता धरिक विकासक सभ अक्षरक प्रैक्टिस करबाक आवश्यकता नहि अछि। एक वा दू अक्षरक अभ्यास पर्याप्त अछि। अनुलग्नक-५ पर ध्यान देब बेशी जरूरी अछि। अभिलेख सभक विस्तृत विवरण आ तिरहुता दिस लिपिक झुकाव विस्तारमे देल गेल अछि। अहाँ जाहि लिपिक अनुलग्नक-५ सँ अभ्यास करी ओतबे अपन नोटमे ओहि अभिलेखसँ सामिग्री उठाबी। सम्पूर्ण मोन रखनाइ नहिये सम्भव छैक नहिये से जरूरी छैक। ई आलेख साढ़े आठ हजार शब्दक अछि, अहाँ अपन सुविधासँ एकर ६००- १००० शब्दक नोट बना सकैत छी।)

लिपि? आ लिपि छी की? लिपिक उद्भव।

एजिप्टक लोक कहै छथि जे हुनकर लिपिक आविष्कार टोथ देवता केलनि, मेसोपोटामियाक लोक कहै छथि जे हुनकर लिपि नीबो देलनि, ग्रीसक लोक ग्रीक लिपिक आविष्कारक हर्मीजकेँ मानै छथि आ भारतमे एकर श्रेय ब्रह्माकेँ जाइ छनि।

पाषाणकालक लोक मारते रास चित्र लिखलनि आ ओहीसँ चित्रलिपिक प्रेरणा भेटल। मुदा ई चित्र सभ चित्रलिपि नहि छल, कारण एकचित्रक सम्बन्ध दोसर सँ नहि छल आ सभटा चित्र फराक-फराक छल। मुदा ओहिसँ पाछाँ जा कऽ चित्रलिपिक प्रेरणा भेटले होएत।

पहिल-लिपि: चित्रलिपि

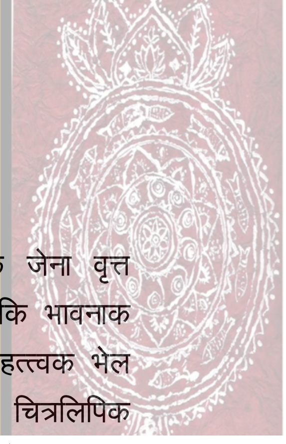
एखन धरिक खोजबीनसँ पता चलैए जे चित्रलिपिक विकास भेल- टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कात- मेसोपोटामिया- (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे), नील नदीक कात (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे।

उपरका खोह आ धारक कातक पाथरपर लिखल चित्र आ चित्रलिपिमे अन्तर बिकछेबाक खगता अछि। अहाँ हमरासँ प्रेम करै छी तँ हमर चित्र लिख देलहुँ, कोनो शिकार करै छी तँ से चित्र लिखलहुँ। से अहाँ भेलहुँ लिखिया। से भारतोमे बहुत ठाम छल, मुदा लिखिया लिपिकार चोट्टहि नहि बनि जाएत। लिपिकार जे चित्र बनेलक से कलकारी लेल नहि वरण् खगता लेल। से एतऽ सूर्य बनेबाक लेल वृत्त बना दियौ, पूरा चित्र बनेबाक खगता एतऽ नै अछि, फेर दूटा एहने चित्रक सम्बन्ध स्थापित करू, दूसँ तीन.. आ चित्र लिपि तैयार।

से चित्रकार चित्र लिखलक, आ लिपिकार बनेलक। लिपिकारकेँ लिखिया नहि कहि सकैत छिऐ। आ से भेल टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कातक (असीरिया, बेबीलोन आ सुमेरमे), नील नदीक कातक (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे ईजियन आ मिनोअन सभयताक लोक।

चित्रलिपि: चित्रात्मक चित्रलिपि आ विचार/ भावनात्मक चित्रलिपि



बाहरसँ दुनू चित्रलिपि अछि मुदा चित्रात्मक चित्रलिपि चित्रक मात्र बोध करबैत अछि जेना वृत्त सूर्यक बोध करेलक। मुदा जखन एकर प्रयोग गुमार लेल होमए लागल तँ ई भऽ गेल विचार आकि भावनाक प्रतीक आ ओहि लिपिक नाम भेल विचार/ भावनात्मक चित्रलिपि। आब कलाकारीसँ बेशी खगता महत्त्वक भेल आ ताहि लेल चेन्हक आकार सेहो छोट भऽ गेल। आइयो चीन आ जापानमे विचार/ भावनात्मक चित्रलिपिक प्रयोग होइत अछि। मुदा पध-आधारित लिपि चीनमे खतम भऽ गेल, मुदा जापानमे ओ आइयो प्रयोगमे अछि।

चित्र-ध्वनि लिपि

भाषाक उद्भव आ विकास भेल। जेना ओतए ध्वनिसँ सम्बन्धित शब्द प्रवेश केलक तहिना लिपिमे सेहो भेल। आ चित्र-ध्वनि लिपिक विकास भेल। एहिमे विचार-भावनाक संग ध्वनिक प्रवेश सेहो भेल आ पाछाँ जा कऽ ओ ध्वन्यात्मक लिपि बनल।

ध्वन्यात्मक लिपि

ध्वन्यात्मक लिपिमे ध्वनि आ वस्तु-व्यक्तिक बीच सम्बन्ध स्थापित करैत चिन्ह बनल। ध्वन्यात्मक लिपिमे ध्वनि वा ध्वनि-समूह लेल चिन्ह बनल। ध्वन्यात्मक लिपिमे पोलीफोन (एक चिन्हक अनेकार्थ वा ध्वनि) आ होमोफोन (अनेक चिन्ह द्वारा एक ध्वनि वा अर्थ) मिला कऽ सेहो अर्थ/ ध्वनि-निर्णय नहि कऽ पबैत छल आ ताहि लेल तेसर ध्वनि-चिन्ह डिटरमिनेटिवक व्यवस्था भेल आ फेर अर्थ वा ध्वनि निर्णय सम्भव भेल।

एहि लिपिसँ पद-आधारित आ व्यंजन-प्रधान लिपि बनल।

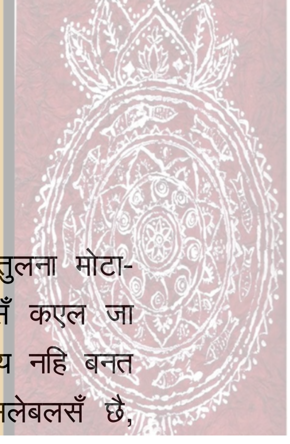
स्थान-लाघव आ प्रयत्न लाघव

एतए प्रयत्न-लाघवक चर्च करब आवश्यक अछि। प्रयत्न लाघव लेल कम प्रयाससँ अपेक्षित परिणामक प्राप्ति। माने भाषाक सम्बन्धमे कम शब्दमे सुस्पष्ट विचार व्यक्त करब, पैघ-ध्वनि लेल छोट सर्वमान्य ध्वनिक प्रयोग करब आ ओही हिसाबसँ लिपिक सन्दर्भमे पैघ चेन्ह लेल छोट चेन्हक प्रयोग करब। ओहिना स्थान-लाघव लिपिमे स्थान-कटौती लेल प्रयुक्त होइत अछि। टॉपिक १२ मे शब्द विचारमे लिपि-उच्चारण सम्बन्धी विशेष जानकारी भेटत। से प्रयत्न लाघवसँ कखनो काल ध्वनि अनचिन्हार भऽ जाइत अछि, आ ओकर रूपान्तर लिपिमे प्रत्न-लाघव आ कखनो काल स्थान-लाघ्वक संग होइत अछि।

पद-आधारित लिपि

पद आधारित लिपिमे प्रयत्न-लाघव आ स्थान-लाघव नहि रहैत अछि। एकरा एना बुझू जे तमिल लिपि अछि सिलेबल आधारित लिपि, रोमन लिपि अछि अल्फाबेट लिपि आ तिरहुता आ देवनागरी अछि अल्फा-सिलेबिक लिपि। माने जतऽ संयुक्ताक्षर नहि अछि से भेल अल्फाबेट आधारित लिपि। माने अंग्रेजी, जे रोमन लिपिमे लिखल जाइत अछि, मे संयुक्ताक्षर नहि होइत अछि, मात्र २६ टा अल्फाबेट होइत अछि, से ओ भेल अल्फाबेट आधारित लिपि। तमिलमे सिलेबल आधारित लिपि अछि। से ओ भेल सिलेबल आधारित लिपि।



तिरहुता आ देवनागरी लिपिमे दुनू तत्त्व अछि से ओ भेल अल्फा-सिलेबिक लिपि। एहि तीनूक तुलना मोटा-मोटी वार्णिक (अंग्रेजी), मात्रिक (तमिल) आ वार्णिक आ मात्रिक (तिरहुता आ देवनागरी) छन्दसँ कएल जा सकैत अछि। मुदा एतऽ एकटा पेंच अछि, अंग्रेजीमे वर्णक गणनासँ जे मीटर निर्माण करब तँ लय नहि बनत से ओतऽ सिलेबल आधारित गणना करए पड़ैत अछि, आ किएक तँ ध्वनिक सम्बन्ध मात्र सिलेबलसँ छै, शब्दकेँ सिलेबलमे तोड़ल जाइत अछि। जापानी लिपि पद-आधारित अछि से ओतऽ ई झमेल नहि अछि, आ ओतऽ ध्वनिक ईकाई लेल जे शब्द प्रयुक्त होइत अछि तकर अनुवाद मोटामोटी सिलेबलमे कएल जा सकैत अछि आ ओही आधारपर हाइकूमे १७ टा ध्वनि पुरेबा लेल गणना होइत अछि । तिरहुता, देवनागरी आ ब्राह्मीमे जे बाजल जाइए सएह लिखल जाइए, आ एतऽ पाणिनीपूर्व आ पणिनिक परम्परामे ध्वनि आधारित सन्धिक निअम बनल अछि। कर्मधारय समासक विग्रह पदात्मक होइत अछि, महादेव भेला महान् देव, आ जँ दूसँ बेशी पद अछि तँ से भेल बहुव्रीहि- जेना लम्बोदर (नमगर जिनकर उदर से, माने गणेश)। अंग्रेजी (रोमन लिपि) मे बजबा काल सन्धि होइत अछि मुदा लिखबा काल नहि, मुदा ओतहुओ दीर्घ लेल डबल ए, डबल बी आदि प्रयुक्त होइते अछि, पंकचुएशन सेहो ई काज करैत अछि, हँ ओतऽ ट्रिपल ए नहि होइत अछि, मुदा हमहूँ सभ तँ दीर्घक बाद प्लुतकेँ छोड़िये देने छी। आ तही कारणसँ मैथिलीमे विभक्ति सटा कऽ लिखल जाइत अछि। तिरहुता आ देवनागरी लिपिमे दुनू तत्त्व अछि से मात्रिक आ वार्णिक दुनू छन्द एहिमे गणना कएल जा सकैत अछि। टॉपिक १ मे पृष्ठ १८ सँ गणना (मात्रिक आ वार्णिक) सम्बन्धी विशेष जानकारी भेटत। सिलेबल जेना शब्दसँ सम्बन्धित अछि पद तहिना समाससँ पहिलमे ध्वनि प्रमुख अछि आ दोसरमे पद (अर्थ)। से वएह पद आधारित लिपि ध्वन्यात्मक लिपिक विकास छल। जकर प्रमाण ऐतिहासिक रूपसँ उपलब्ध अछि, आ जतऽ सँ लिपिक असली विवेचन सम्भव अछि। आ चित्र-लिपिक रूपमे जाहि तीन गोट लिपिक चर्च भेल माने टिग्रिस-यूफ्रेट्सक धारक कात (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे), नील धारक कात (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे एहिमेसँ टिग्रिस-यूफ्रेट्सक धारक कातमे सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे जे सभ्यता सभ क्रमसँ आएल ओहिमे पहिने सुमेरमे क्यूनीफॉर्म लिपिक प्रारम्भ भेल ४००० शताब्दी बी.सी.ई. (बिफोर कॉमन एरा)मे। बेबीलोन लोकनि सुमेरसँ ई लिपि सिखलनि आ हुनकासँ असीरिया लोकनि। माटिक सानल आ लोथ बनाएल पट्टीपर सुखेलासँ पहिनहिये नोकबला स्टायलससँ, मोटा-मोटी ३५० टा अक्षरसँ, ई क्यूनीफॉर्म लिपि लिखल जाइ छल जखन आ फेर रौदमे सुखाएल वा चूल्हिमे पकाएल जाइत छल। आधुनिक कालमे एकरा पढ़बाकश्रेय एकटा अंग्रेज हेनरी रौलिनसनकेँ जाइ छनि। तेसर चरणक बाद धरि ई पद-आधारित बनि गेल छल। एजिप्टमे हायरोग्लाइफिक (हायरोग्लिफिक, हायरेटिक आ डेमोटिक) लिपि क्यूनीफॉर्म लिपिक समकालीन छल। एहिमे २४ टा चिन्ह रहैक जाहिमे सभटा व्यंजन रहैक। स्वर रहबे नहि करैक, से बहुत रास झमेल आ अस्पष्टता आबि जाइ छलैक, से ओकर निवारणलेल ओ लोकनि आर विशेष चेन्ह आ चित्रक प्रयोग करैत छलाह। ओ सभ लाल मोशि-कलमसँ पेपीरस पातपर लिखैत छलाह, ओही पेपीरससँ पेपर बनल अछि। क्यूनीफॉर्म आ हाइरोग्लाइफिक ई दुनू लिपि दहिनसँ वाम दिश लिखल जाइत छल। एहि दुनू लिपिक समकालीन लिपि छल चीनक लिपि से ऊपरसँ नीचाँ लिखल जाइत छल। पहिने एकटा शब्द लेल एकटा चिन्ह छल, मुदा फेर एकटा विचार लेल एकटा शब्दक प्रयोग होमए लागल। चीनक लिपिमे कोनो अल्फाबेट नहि अछि, ४०,००० चिन्ह अछि। एकर अलाबे एलमाइट सभ पहिने देशज रेखात्मक





आ चित्र-प्रचुर अक्षरक प्रयोग केलनि मुदा फेर ओ लोकनि सेहो क्यूनीफॉर्म लिपि पकड़ि लेलनि मुदा ओतऽ ११३ चेन्ह जाहिमे ८०सँ बेशी पद-आधारित चेन्ह छल, केर प्रयोग ओ केलनि।

से एजिप्टक बदला लिपिक आविष्कारक मेसोपोटामिया (सुमेर, बेबीलोन आ असीरिया) क लोक रहथि, जे लिखबाक कलाक आविष्कर्ता छथि। जेना ऊपर चर्च भेल अछि, ओ लोकनि पहिने चित्र लिखलन्हि, आ किएक तँ चित्र बनेबामे बेसी समयक नोकशानी होइत छलन्हि से ओ लोकनि प्रयत्न-लाघव आ स्थान-लाघवसँ चित्रकेँ चेन्ह बना देलन्हि, चेन्हमे समानता आ समरूपता आनि रेखात्मक पद्धतिक लिपि बनेलन्हि। फेर ई चेन्ह ध्वनिकेँ प्रदर्शित करए लागल, आ एहि तरहक मोटामोटी ३५० टा चेन्ह बनल।

सीरिया-साइप्रस आ फिलिस्तीनमे जे खाँटी वर्ण आधारित लिपि बनल ताहूमे, फेर मिनोअन सभ्यतामे जे लिपि आविष्कृत भेल ओहिमे पद-आधारित लिपिक प्रभाव पड़ल। पद-आधारित लिपिक दूटा रूप चीनमे छल मुदा तकर प्रयोग चीनमे बन्द भऽ गेल मुदा जापानमे ई प्रयोगमे अछि जकर किछु चर्च ऊपर आएल अछि।

व्यंजन प्रधान लिपि

एकरा वर्णमाला वा वर्ण आधारित लिपि सेहो कहि सकैत छी। आन लिपि सभमे चेन्ह सभक संख्या ततबा बढ़ि गेल जे शिशु लेल ओकर सीखब असम्भव भऽ गेल। एहि लिपिक विकासक कारण छल प्रयत्न लाघव। एक्के लिपिमे अनेक भाषा लिखब सम्भव भऽ गेल।

टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कात- मेसोपोटामिया- (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे)क क्यूनीफॉर्म लिपि वर्णमाला नहि बनि सकल। एहि लिपिक सम्बन्ध सेमेटिक भाषासँ हेबाक प्रमाण अछि। चित्रात्मक फेर विचारात्मक, फेर ध्वन्यात्मक लिपि ई बनि सकल। मुदा ध्वन्यात्मक लिपि सेहो संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आ क्रिया-विशेषणक आवश्यकताकेँ किछु सुधारक संग पूर्ण कऽ सकल। फेर ई पद-आधारित बनल आ एतहि एकर विकास खतम भऽ गेलैक।

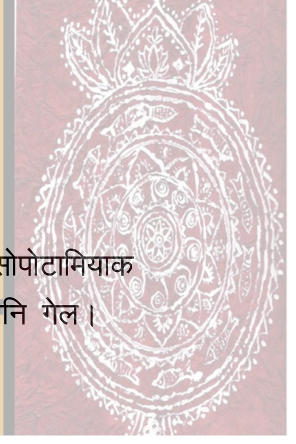
बादमे जा कऽ जुरुथ्रुष्टक अनुयायी लोकनि मेसोपोटामियामे अपन लिपिकेँ व्यंजन प्रधान बनेलन्हि जकरा अर्द्ध-वर्णमाला कहि सकैत छी। मुदा ओहिमे कृत्रिम हेबाक प्रवृत्ति बढ़ल, आ ई प्रवृत्ति ब्राह्मीमे सेहो भाषा-वैज्ञानिक लोकनिकेँ देखा पड़ैत छन्हि।

क्रीटमे सेहो चित्र-प्रचुर रेखाकृतिसँ आगाँ बढ़ि १३५ चेन्हबला भावना-प्रधान आ ध्वनि-प्रधान लिपि बनेलन्हि। हिनकर लिखब वामसँ दहिन आ दहिनसँ वाम दुनू छल।

उतरबरिया सेमेटिक वर्णमाला

सीरिया-साइप्रस आ फिलिस्तीनमे मूल वर्णमालाक आविष्कार दोसर शताब्दी बी.सी.ई. मे भेल जकर नाम उत्तरबरिया सेमेटिक वर्णमाला छल। आ तकर बाद आनो-आन मूल वर्णमाला आविष्कृत भेल जेना आरामाइक, फिनीशिअन, ग्रीक आ ब्राह्मी आ ई लिपि सभ अनचोक्के आविष्कृत नहि भेल होएत वरण ओतहु



वएह प्रक्रिया भेल हएत जे मेसोपोटामियाक लिपि संग भेल छल। मुदा एक स्तरक बाद मेसोपोटामियाक क्यूनीफॉर्म लिपि पद-आधारित लिपि बनि अपन खिस्सा खतम केलक ई लिपि सभ पूर्ण वर्णमाला बनि गेल।

भारतमे लिपि आ लेखनकला

नागार्जुनकोण्डासँ प्राप्त दोसर शताब्दीक एकटा मूर्तिमे राजा शुद्धोधनक दरबारक दृश्य अंकित अछि जाहिमे तीनटा भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कऽ रहल छथि। हिनका सभक नीचाँ बैसल लिपिकार तकरा लिपिबद्ध कऽ रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई आइ धरिक सभसँ पुरान चित्र आधारित प्रमाण अछि। एहिसँ अतिरिक्त पुरान प्रमाण हड़प्पा संस्कृति, अशोकक अभिलेख आदि तँ अछिये। अशोकक अभिलेख आ हड़प्पा संस्कृतिक बीचमे सेहो मारते रास अभिलेख भेटलाछि जेना सोहगौराक ताम-पत्र अभिलेख, पिपरहबाक बौद्ध-भीड़ अभिलेख, महास्थान आ बर्लीक पाथर अभिलेख, आ भट्टिप्रोलुक अभिलेख।

भारतमे हड़प्पा सभ्यतामे पहिल बेर लिपिक प्रयोग भेल मुदा ओ एखन धरि पढ़ल नहि जा सकल अछि। एकर अभिलेख सभ छोट-छोट छैक सभसँ पैघ अभिलेखमे २६ टा चेन्ह छैक। धोलावीर (गुजरात) मे नग्रक द्वारपर एकटा साइनबोर्ड हेबाक प्रमाण अछि जाहिमे ९ टा चेन्ह छैक।

ब्राह्मी आ खरोष्ठी

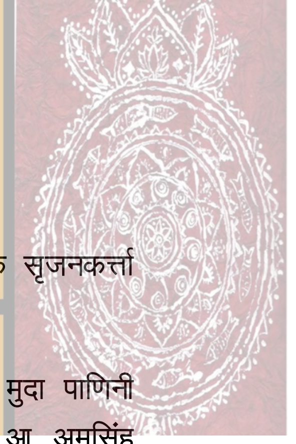
ब्राह्मी वामसँ दहिन आ खरोष्ठी दहिनसँ वाम दिशामे लिखल जाइत अछि। मुदा दुनू भारतक वर्णमाला पद्धतिक आधारपर विकसित भेल अछि। अशोकक अभिलेख ब्राह्मी आ खरोष्ठी (मानसेहरा आ शाहबाजगढ़ी) दुनूमे भेटल अछि आ एकरा एकटा अंग्रेज जेम्स प्रिंसेप १८३७ सी.ई. मे ब्राह्मी पढ़बामे सक्षम भेलाह। खरोष्ठी पढ़बाक श्रेय सम्मिलित रूपसँ कर्नल मसोन आ जेम्स प्रिंसेप कँ देल जाइत अछि। एहि अभिलेख सभमे अशोकक नाम पियदस्सी लिखल छैक आ किछुमे असोक (अशोकक पालि-प्राकृत रूप) सेहो। अशोकक अभिलेखमे लिपिकरक चर्च अछि।

ब्राह्मी लिपि बहुत दिन धरि विकसित आ परिष्कृत/ परिवर्द्धित होइत प्रयोगमे रहलाअ एहिसँ भारतक आन लिपि सभक उत्पत्ति भेल मुदा खरोष्ठी लिपि अपने संग खतम भऽ गेल। अशोकक अभिलेखक अतिरिक्त इण्डो-ग्रीक राजा सभ एकर प्रयोग अपन मुद्रापर केलन्हि जाहिमे तर आ ऊपरमे ग्रीक आ ्खरोष्ठी लिपिमे राजाक नाम लिखल रहैत छल।

नारद-स्मृतिमे लिपिकँ उत्तम आँखि कहल गेल अछि आ एकर सृजन **ब्रह्मा** केलनि तकर चर्च अछि।

बृहस्पति स्मृतिमे चर्च अछि जे छह मासक बाद स्मृति धोखा देमऽ लगैत अछि से पातपर लिखल आखरक सृजन **ब्रह्मा** केलनि।



चीनक विश्वकोष फा-वां-शु-लिनमे सेहो चर्च अछि जे वामसँ दहिन लिखल जाएबला लिपिक सृजनकर्त्ता ब्रह्मा छथि।

एहि लिपिक नाम ब्रह्मी लिपि छल आ से पाणिनी पूर्व व्याकरणाचार्य द्वारा स्वीकृत छल, मुदा पाणिनी व्याकरणक अनुरूप ब्रह्मी अशुद्ध अछि। से एहि लिपिक नाम ब्राह्मी पड़ल। पाणिनी अष्टाध्या आ अमसिंह अमरकोषमे लिपि आ लिबिक चर्च करैत छथि। पाणिनी पूर्व आचार्य यास्क अपन निरुक्तमे बहुत रास पूर्व आ समकालीन व्याकरणाचार्यक नाम गणबैत छथि। वर्णक गणना आधारित छन्द आ व्याकरणाचर्य सभक उपस्थिति अपरोक्ष रूपसँ लेखनकलाक उपस्थितिक आभास करबैत अछि। तीन हजार वर्ष पूर्व झेलम आ चेनाबक बीच गांधार (अखन ओतऽ यूसुफजई पठान निवास करैत छथि) इलाकामे दक्षक संघराज्य छल, एहि इलाकामे काबुल धार पच्छिमसँ आबि कऽ सिन्धु धारमे संगम करैत अछि। ओहि संगमसँ चारि माइल उत्तर लहुर गाम, जे पाणिनीक नानी गाम छल, मे पाणिनीक जन्म भेल, ओइ गामक नाम ओइ कालमे शलातुर रहैक। चीनी यात्री ह्वेनसांग (युआन च्वांग), सातम शताब्दीमे. एहि गामक विद्वान ब्राहमण व्याकरणाचार्यक चर्च केने छथि। माने परम्परा आगाँ-पाछाँ काएम छल।

जैनक भगवती सूत्र एहि **ब्राह्मी** लिपिकेँ नमस्कार करैत अछि।

लिपिक आधार- अक्षर, वर्ण आ मात्रा आ तकर साक्ष्य

ऋगवैदिक ऋचा वर्णवृत्तमे अछि, मात्रिक छन्दमे नहि। वार्णिक छन्दमे अक्षरक गणना होइत अछि।

छान्दोग्य उपनिषदमे अक्षर शब्द उल्लेख अछि दीर्घ स्वरक सेहो।

तैत्तरीय उपनिषदमे वर्ण आ मात्रा दुनूक चर्चा अछि।

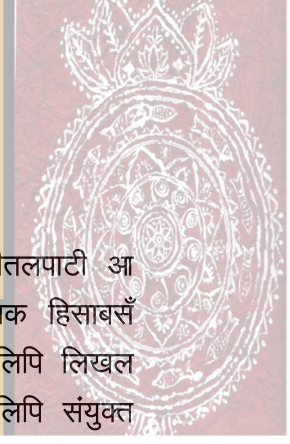
ऐतरेय आरण्यकमे स्वर आ व्यंजन दुनूक चर्चा अछि।

पंचविंश ब्राह्मणमे सभसँ छोट दक्षिणा १२ कृष्णल आ सभसँ पैघ दक्षिणा ३,९३,०१६ कृष्णल सुवर्णक चर्चा अछि।

कौटिल्यक अर्थशास्त्र चूड़ाकर्म संस्कारक बाद लिपि आ अंकक प्रशिक्षणक निर्देश करैत अछि। राजाकेँ मन्त्रिपरिषदक संग पत्राचार आ गुप्तचरक कूटलिपिमे संदेश पठेबाक चर्च अछि। अर्थशास्त्र कहैत अछि जे लिपिकार तेजीसँ लिखबामे निपुण होथि, साफ-साफ लिखथि आ लेख पढ़बामे सेहो समर्थ होथि।

बौद्ध ग्रन्थ सुत्तंतमे अक्खरिका क्रीड़ाक चर्च अछि, जाहिमे अकासी अक्षर बनेबाक स्पर्धा रहैत अछि। बौद्ध भिक्षु लेल एहि क्रीड़ाक निषेध अछि मुदा विनय-पिटक लेखल-कला सिखबाक अनुमति बौद्ध-भिक्षुकेँ दैत अछि। कटाहक जातकमे जाली पत्र देखाकेँ ठकबाक चर्च अछि तँ महासुतसोम जातकमे तक्षशिलाक अध्यापक अपन पुरान शिष्यकेँ पत्र लिखै छथि। कण्ह जातक अक्खर (अक्षरक पालि-प्राकृत रूप) क प्रयोग करैत अछि। महावग्गमे अंक-शब्दक प्रशिक्षण आ कटाहक जातकमे शीतलपाटीक चर्चा अछि जाहिपर लिखब

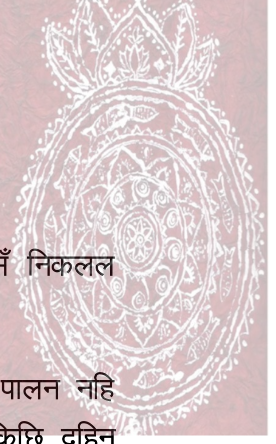


सिखाओल जाइत छल। ललितविस्तर बुद्धक लिपिशाला, हुनकर शिक्षक विश्वामित्र, चाननक शीतलपाटी आ सोनाक लेखनीक चर्चा करैत अछि, एतऽ ६४ टा लिपिक वर्णन अछि जतऽ राजनैतिक सीमाक हिसाबसँ अंगक लिपि, मगधक लिपि वङ्गक लिपिक चर्च अछि मुदा विदेहक लिपिक स्थानपर पूर्व विदेह लिपि लिखल अछि। एकर कारण अछि जे वज्जि विदेहपर अधिकार कऽ लेने छल आ वज्जि आ विदेहक लिपि संयुक्त रूपसँ विदेह लिपि छल। अजातशत्रु तेसर शताब्दीमे वज्जिकेँ जीति मगधमे राजनैतिक रूपसँ मिला लेलन्हि, मुदा सांस्कृतिक रूपसँ ओ अपन अस्तित्व बचेने रहल। ललित विस्तर तेसर शताब्दीक ग्रंथ थिक आ ताहि द्वारे ओ मगध लिपिक संग पूर्व विदेह लिपिक वर्णन करैत अछि। ई प्रवृत्ति बादमे गुप्तकालक तीरभुक्ति (तिरहुत) प्रान्तमे सुदृढ़ रूपसँ सोझाँ आएल आ पूर्वविदेह लिपिक नामकरण भेल तिरहुता। ललितविस्तरमे बाल अवस्थामे बुद्ध-सिद्धार्थक वर्णमाला प्रशिक्षणक चर्च अछि आ ओहिमे वार्णिक अक्षरक काँति आ अलंकरणक योजनाक चर्च अछि जे ब्राह्मी लिपिक अछि।

उतरबरिया सेमेटिक वर्णमाला आ ब्राह्मीक बीचमे अलेफ् आ अ, बेथ् आ ब्, गिमेल् आ ग, दालेथ् आ द, हे आ ह, वाव् आ व, जाइन् आ ज, चेथ् आ घ, थेथ् आ थ, योध् आ य, काफ् आ क, लामेध् आ ल, मेम् आ म, नुन आ न, सामेख आ स, आइन् आ ए, फे आ प, साधे आ च, कॉफ् आ ख मे अद्भुत समानता अछि आ मानवक मस्तिष्क कोना दूर रहलोपर एक्के रङ अछि तकर द्योतक अछि। बूलरकेँ ब्रम भेलन्हि जे ब्राह्मी लिपि उतरबरिया सेमेटिक लिपिक अनुकरण केलक। ई ओ काल छल जखन हड़प्पा आ मोहनजोदाड़ोकेँ सेहो मेसोपोटामियाक आउटपोस्ट ताधरि मानल जाइत जाधरि भारतक आन भागमे उत्खनन नहि भऽ गेलै आ हड़प्पा संस्कृतिक देशज रूप प्रकट नहि भऽ गेलैक (हर्मन कुल्के आ दीतमार रोथरमण्ड, अ हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, २००४, पृ. १९, मुदा ओ पृ.५४ पर अखनो भ्रममे छथि जे खरोष्ठी अरामेइक लिपिक आधारपर बनल जे तखन फारसक आधिकारिक लिपि छल। अरामाइकमे मात्र २२ टा अक्षर छैक, स्वरक अपूर्णता अछि, ह्रस्व-दीर्घक भेद नहि अछि, स्वरक मात्राक सेहो अभाव अछि से ओ भारतीय भाषा लेल अयोग्य अछि, खरोष्ठीमे ई सभ गुण अछि, संगे दीर्घ-गुण-वृद्धि ध्वनि लेल भेदक चिन्ह सेहो अछि, प्राकृत अभिलेख लेल ई ब्राह्मी सन सक्षम छल, मात्र दहिन-वाम रहने ई विदेशी नहि भऽ जाएत। खरोष्ठी दहिनसँ वाम लिखल जाइत अछि मुदा एकर वर्णमाला भारतीय अछि, दहिनसँ वाम लिखल जएबाक कारण किछु विद्वान लोकनिकेँ एहिमे फारसक प्रभाव देखाइ पड़ैत छनि, मुदा सत्य तँ यएह अछि जे ब्राह्मी आ खरोष्ठी लिपिमे एक्के वर्णमालाक प्रयोग भेल अछि।))। जेना सङ्गीतमे भारतक सारेगामा क सात टा सुर आ पश्चिमी ऑक्टेव (ओत्तहु साते टा छैक, ऑक्टेव माने आठम सँ पुनः पुनरावृत्तिक मात्र ई प्रतीक अछि) ई सिद्ध करैत अछि जे भाषा कोनो हुअए कान वएह छैक मनुक्खबला। ब्रेल आ इण्टरनेशनल फोनेटिक अल्फाबेट ध्वनिक संग मस्तिष्क (ब्रेल) क सेहो संप्रेषण मोटामोटी एक्के हेबाक प्रमाण दैत अछि (देखू अनुलग्नक) से पहिने तँ किछु विद्वान एकरा बैक्ट्रो-पालि आ आरियानो-पालि विदेशी लिपि बुझि कऽ कहलन्हि, कनिंघम एकरा गांधारी कहलन्हि, मुदा ललितविस्तर आ चीनक विश्वकोष फा-वां-शु-लिनक प्रमाण अकाट्य छल आ ओतऽ वर्णित एकर नाम खरोष्ठी सर्वमान्य भेल। चीनी साक्ष्य ब्राह्मीक उद्भव ब्रह्मा द्वारा आ खरोष्ठीक सर्जन ब्राह्मण आचार्य खरोष्ठ द्वारा भेल मानलक अछि। तेसर शताब्दीक बाद अभिलेख संस्कृतमे लिखल जाए लागल, प्राकृतक प्रयोग बन्द भऽ गेल। प्राकृत लेल ब्राह्मी आ खरोष्ठी दुनू सक्षम छल मुदा संस्कृतक सन्धियुक्त अलंकृत



क्लिष्ट शब्द, पद आ समास लेल मात्र ब्राह्मी। से एक बेर जे एकर प्रयोग बन्द भेल तँ प्राकृतसँ निकलल भाषा सभ लेल सेहो ब्राह्मीसँ निकलल लिपिक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल।

ब्राह्मीक एरागुडीक अशोकक अभिलेख २६ पाँतीमे अछि। वाम दहिन लेखनक पूर्ण रूपसँ पालन नहि भेल अछि, ओना बेशी पाँती वाम-दहिन अछि। किछु वाम-दहिन पाँतीमे किछु अक्षर वाम-दहिन तँ किछि दहिन वाममे अंकित अछि, किछि ऊपर नीचाँ सेहो अछि। ८ पाँती दहिन-वाम अछि। एक पाँतीमे मात्र एक अक्षर अछि। से दहिन वाम रहने विदेशी प्रभाव सिद्ध नहि होइत अछि। खरोष्ठी सन जापानी सेहो दहिन वाम लिखल जाइत अछि।

ललितविस्तरक प्रसंग सेहो इशारा करैत अछि जे व्याकरणक विशेषताकेँ पूर्ण करब ब्राह्मीक उद्देश्य छल, मुदा ई आग्रह ऋगवेदसँ अर्थशास्त्र तक अछि, आ भारतीय परिप्रेक्ष्यमे ब्राह्मी आ ओहिसँ निकलल लिपि ओहि आग्रहकेँ पूर्ण करैत अछि, आ एकर परिष्कृत रूपकेँ कृत्रिम नहि वरण् स्वाभाविक मानल जेबाक चाही। से किछु विद्वान ब्राह्मीक व्याकरण सम्बन्धी आवश्यकताकेँ पूर्ण करए लेल भेल परिष्करणकेँ विदेशी अक्षरकेँ भारतीय प्रारूपमे आनब कहलन्हि अछि (बूलर, ऑन द ओरिजिन ऑफ द इण्डियन ब्राह्मी अल्फाबेट, १८९८), मुदा कनिंघम एकरा भरतीय चेन्ह सभसँ बहार भेल मानलन्हि अछि (कनिंघम, कोरपस इन्सक्रिप्शनम इण्डिकेरम, खण्ड-१)।

ब्राह्मी लिपिक अतिरिक्त ६३ टा आर लिपिक चर्च ललित विस्तरमे अछि। सम्पूर्ण यूरोपमे ग्रीस आ रसियन कॉमनवेल्थ छोड़ि कऽ (एहि दुनू ठाम अलग-अलग लिपि छैक) सम्पूर्ण यूरोपमे रोमन लिपिक प्रयोग होइत अछि। से सम्पूर्ण यूरोपमे आइ मात्र तीनेटा लिपि छैक। जँ रूसकेँ यूरोपसँ हटा दी तँ ओ भारतक बराबरे अछि। भारतमे सभ प्रान्तमे मोटामोटी अलग-अलग लिपि अछि, मुदा तमिलक अतिरिक्त सभमे अल्फा-सिलेबिक (अक्षर आ संयुक्ताक्षरक) निर्वहण मोटामोटी एके रङ होइत अछि। एकर कारण छापाखानाक देरीसँ आगमन मात्र अछि।

ब्राह्मीक मानक रूप आ ओकर क्षेत्रीय शैली

ब्राह्मीक मानक रूप छल आ तकर प्रमाण अछि अशोकक अभिलेख। अशोक १४म प्रस्तर-अभिलेखमे कहै छथि जे अभिलेख-आलेखनक गुण-दोष लिपिकरक जिम्मा अछि, आ सएह कारण छल जे अशोकक अभिलेखमे अक्षर आ ओकर आकारमे समरूपता अछि आ ईहो प्रमाणित होइत अछि जे अशोकक काल धरि ब्राह्मीक मानक रूप आबि गेल छल। जे भेद अछि से क्षेत्र अनुसार, लिपिकरक लेखनक अनुसार आ लेखन उपकरणक विविधताक अनुसार अछि, आजुक हिसाबेँ जँ असमतल पाथर, खोह आदिपर लिपिकार द्वारा पुरातन उपकरणसँ जतेक असमरूपता आएल अछि से मानक ब्राह्मीक स्थिति आर सुदृढ़ करैत अछि। पंकचुएशन संस्कृतमे रहबे नहि करए से प्राकृतमे सएह परम्परा आगाँ बढ़ल। विराम चिन्हक व्याकरणगत आवश्यकता ब्राह्मीक लिपिकारकेँ ओही कारणसँ आवश्यक नहि लगलन्हि।

कुटिल लिपि

कुटिल लिपि

;

उत्तर भारत ६अम शताब्दी सी.ई.

;

पच्छिम (शारदा) ; पूब (किराँत, रञ्जना, भुँजिमोल, तिरहुता, नेवारी, तिब्बती, नन्दीनागरी आ देवनागरी।

कुटिल लिपिक विशेषतासँ प्रेरित नामकरण- न्यूणकोण वर्णमाला (बूलर, इण्डियन पालियोग्राफी, प.६८), नह शीर्ष वर्णमाला (टॊड, एनल्स ऑफ राजस्थान, पृ. ७००), भारयीय नाम सिद्ध मातृका,काश्मीर आ वाराणसीमे प्रचलित (अल-बेरुनी, भारत, पृ. १७३, सचाउ), देवल प्रशस्तिमे एकरा लेल कुटिलाक्षरणी प्रयुक्त भेल। आदित्यसेनक अफसड़ पाथर-अभिलेखमे एकर नाम विकटाक्षरणी अछि। विक्रमांकदेव चरितमे कुटिल लिपिमे सिद्धहस्त कायस्थ लोकनिक चर्च अछि।

जेम्स प्रिंसेप, जे १८३७ ई. मे अशोकक अभिलेखकेँ पढ़ने छलाह, एकरा लेल कुटिल लिपिक नामकरणक अनुशंसा केलन्हि (जर्नल ऑफ एशियाटिक सोशाइटी ऑफ बेन्गाल, पार्ट-५ पृ. ७७८)।

कुटिल लिपिक विकासक की कारण छल? पहिल तँ ई छल जे लिखबाक करची-कलम आ मोशिक प्रयोग संग नव उपकरण आ पुरान उपकरणक नव प्रयोगसँ अलंकरणयुक्त अभिलेख लेखनक इच्छा जागृत भेल, लटपटौआ लिखबाक आग्रह सेहो एहि लेल कारण बनल। एहिसँ उपरका भाग फन सन बनि गेल कारण मोशि ढबकि जाइ, पाछाँ नाङरि आ पद-चिन्ह सेहो सुस्पष्ट भेल। अलंकरणक प्रवृत्तिसँ वर्ण वृत्ताकार आ चिक्कन स्वरूप लेबऽ लागल। अलंकारक कारणसँ एकर नाम पड़ल सिद्धमातृका।

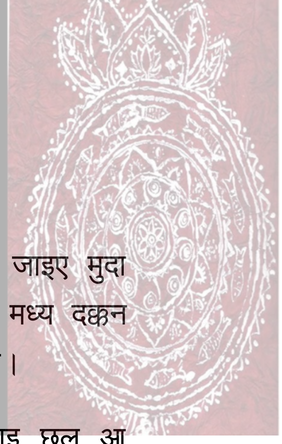
कुटिल लिपिक अभिलेख भेटल अछि, कौशाम्बीक माटिक सदण्ड सप्तदीपक (ई मोन पाड़ैए मौर्य कालक बौद्ध सप्ताक्षरी (प्रसिद्ध मंत्र) कूटाक्षरक), मंदसौरक यशोधर्मनक अभिलेख, ईशानवर्माक हरहा पाथर-अभिलेख, सर्ववर्मनक असीरगढ़ मोहर-अभिलेख, अनन्तवर्मनक बराबर आ नागार्जुनी खोह अभिलेख, ईश्वर वर्मनक जौनपुर पाथर-अभिलेख, शाहपुरक प्रतिमापर अभिलेख , मन्दागिरि अभिलेख, जीवितगुप्त द्वितीयक देववार्णार्क स्तम्भ अभिलेख, हर्षवर्धनक मधुबन आ बाँसखेड़ा ताम्रपत्र-अभिलेख, हर्षवर्धनक सोनीपत मोहर-अभिलेख।

तिरहुता

तिरहुता लिपिक खोजमे आब भारतक पूब भागमे आउ।

पूब भागक ब्राह्मीक बाद किराँत, रञ्जना, भुँजिमोल, तिरहुता, नेवारी, तिब्बती, नन्दीनागरी आ देवनागरीक प्रयोग भेटैए।



किराँत लिपिमे लिम्बू भाषा आदि लिखल गेल। ई सभ लिपि वामसँ दहिन दिश लिखल जाइए मुदा रञ्जना लिपि कूटाक्षरमे ऊपरसँ दक्षिण लिखल जाइए। नागरीक रूप नन्दीनागरीक प्रयोग मुदा बेशी मध्य दक्कन आ दक्षिण भारतमे भेल आ माध्वाचार्यक द्वैत दर्शनक संस्कृतमे लिखल पाण्डुलिपि नन्दीनागरीमे अछि।

विदेह, अंग, वज्जि आ नेपालक तराईमे संस्कृत आ मैथिली दुनू तिरहुतामे लिखल जाइ छल आ एहिमे सभ विषय, जेना साहित्य, गणित, धर्म, दर्शन लिखल जाइ छल आ पाता (सुख-दुख दुनुक) चलै छल आ चिट्ठी-पत्री अहीमे होइ छल। कैथीक प्रयोग हिसाब-किताब, खाता-खतियान लेल होइ छल आ मुख्य रूपसँ कायस्थ एकर प्रयोग करै छला। मुदा मिथिलाक कर्ण-कायस्थक पञ्जी मात्र तिरहुतामे लिखल गेल (मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण- मेजर विनोद बिहारी वर्मा, १९७३)। एकर विपरीत मैथिल ब्राह्मणक पञ्जीक किछु फील्ड-वर्क आ पत्रचार कैथीमे भेल (अनुलग्नक) मुदा एतहु पञ्जी मात्र तिरहुतामे लिखल गेल। ई १४म शताब्दी सी. ई. (कॉमन एरा) सँ शुरू भऽ कऽ २०म शताब्दी सी.ई. धरि रहल जखन देवनागरीमे पञ्जी लिखब प्रारम्भ भऽ गेल।

किछु नव आविष्कृत लिपि

लिपिक अनुकरणसँ साइन (इशारा) भाषा वधिर लेल **१८म शताब्दी** सी.ई. (कॉमन एरा) मे वधिर स्कूलमे फ्रांसक चार्ल्स मिशेल देल एप्पे द्वारा आविष्कृत भेल। ई एहेन लिपि अछि जे कागतपर नहि वरण् वायु माने वातावरणमे बनाओल जाइत अछि। अन्ध-दिव्यांग लेल ब्रेल लिपि **१९म शताब्दी**मे फ्रांसक लुइ ब्रेल आविष्कृत केलनि। **२०म शताब्दी**मे रघुनाथ मुर्मू संथाली भाषा लेल ओल-चिकी लिपिक आविष्कृत केलनि।

ब्राह्मी लिपिक पुबरिया प्रकारक मुख्य अभिलेख सभ अछि- समुद्रगुप्तक हरिषेन लिखित प्रयाग प्रशस्ति जे अशोकक स्तम्भपर लिखल गेल छल, चन्द्र गुप्त-२ क उदयगिरि खोह लेख, स्कन्दगुप्तक कौहम स्तम्भ अभिलेख, चन्द्रगुप्त-२ आ कुमारगुप्त-१ क गढ़वा अभिलेख।

तिरहुता लिपिक खोजमे हम सभ उत्तर आ दक्षिणमे सँ उत्तर भारतीय आ फेर उत्तर भारतीयसँ उत्तर-पूब दिस बढ़ब। उत्तर आ दक्षिण भारतक लिपिक जे अन्तर अछि से ''म'' मे देखाइत अछि। उत्तर भारतक दुनू प्रकार माने पूब आ पच्छिमक प्रकार श, ष, ल आ ह मे देखाइत अछि।

गुप्त कालक अभिलेखक पूब प्रकारमे ''ल'' केर वाम अंग सोझे नीचाँ दिस झुकैत अछि (उदाहरण जौगड़क फराक अभिलेख)। ''ष'' केर आधार चेन्ह गोल बनाओल गेल आ बिचुलका चेन्हक माला सन बनि गेल। ''ह'' केर आधार चेन्ह धकिया देल गेल आ एकर सुल्फी उर्ध्वाधरसँ जोड़ि देल गेल।

स्कन्दगुप्तक भिताड़ी स्तम्भ अभिलेखे, ओना तँ भारतक पूबमे अछि, मुदा ओहिमे उत्तर भारतक पच्छिम प्रकारक लिपिक प्रयोग भेल। कलाकार पच्छिमसँ आओल हेताह ताहि कारण सँ ई भेल होयत। फेर ईहो भेल जे उत्तर भारतक ब्राह्मीक पूब आ पच्छिम प्रकारक सीमा रेखा परिवर्तित होइत रहल। कन्नौजपर अधिकारक लेल राष्ट्रकूट, गुर्जर-प्रतिहार आ पाल राजवंशक बेच संघर्ष मोटामोटी ७५०-१२०० ई. क मध्य भेल। एहि तरा-उपरी युद्धमे गुर्जर-प्रतिहार जखन बीस पड़लथि तँ पछबरिया कलाकारक कलाकारी पूब दिस






बढ़ल। तहिना पाल जखन बीस पड़लाह तखन पुबरिया कलाकार सभकेँ बेसी पच्छिम धरि रोजगार भेटलन्हि। पछबरिया ब्राह्मी नागरी बनल आ पुबरिया ब्राह्मी तिरहुता, असमी, बांग्ला आ ओड़िया। पुबरिया प्रकारक पच्छिम आरि पाल साम्राज्य, मगध आ विदेह+वज्जि निर्धारित भेल। दसम शताब्दी धरि नागरीक पुबरिया आरि बनारस निर्धारित भऽ गेल आ ओ पूर्ण रूपसँ पुबरिया ब्राह्मीसँ फराक भऽ गेल।

घियासुद्दीन तुगलकक बाद फिरोजशाह तुगलक आक्रमणसँ तिरहुत साहित्य आ कलाक क्षेत्रमे पछुआ गेल आ ओकर लिपिक बड्ड भारी नोकसान भेलै। तिरहुता लिपिक विकास ओतहि ठमकि गेलै।

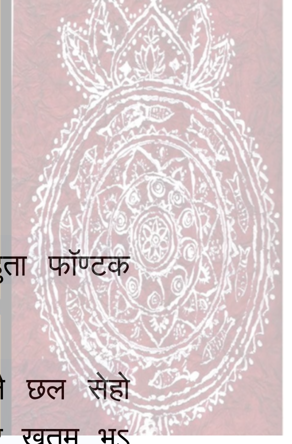
मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। १२९४ ई. मे जन्म आ १३०७ ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ १३२४-२५ ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन केलन्हि। मुदा एहि हारिसँ पहिने मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक स्थापनाक ओ प्रयास केने रहथि, ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य । आधिकारिक स्थापक नियुक्य भेलाह मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त। हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, मिथिलाक पण्डित लोकनि १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। ओना तँ ओहि समयमे हरसिंहदेव मिथिलासँ पलायन कऽ गेल रहथि तैयो हुनका सांकेतिक रूपमे एकर संस्थापक मानल गेल।

क्षत्रियक पञ्जी तँ आब उपलब्ध नहि अछि मुदा ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक जे पञ्जी उपलब्ध अछि तकर लिपि मात्र तिरहुता अछि आ २०म शताब्दीक पञ्जीक तिरहुता जे एहि पञ्जी सभमे अछि से १३२६ ई. (१४म शताब्दीक) क पञ्जीक तिरहुतासँ एक्को मिसिया भिन्न नहि अछि। फॉण्ट बनलाक एकर विकासक सीमा बिना रूप परिवर्त्तित भेने असीम भऽ गेल अछि आ एक्के खाँचामे कलाकार अपन कलाकारी देखा कऽ कएक डिजाइनबला अक्षर निर्मित कय सकैत छथि।

से ब्राह्मीक विकास भेल उत्तरी आ दक्खिनी प्रकारमे। उत्तरक प्रकार दू भागमे बँटि गेल, पुबरिया आ पछबड़िया। आ मोटा-मोटी १०म शताब्दीमे पुबरिया लिपि पछबरिया लिपिसँ पूर्ण रूपसँ भिन्न भय गेल। पुबरिया लिपिक सीमा मगध, अंग आ तिरहुत निर्धारित भेलै आ नागरी जे पछबरिया ब्राह्मीक रूपमे गुप्त साम्राज्यक पतन धरि प्रयागोसँ पच्छिम धरि सीमित छल ८म शताब्दीमे ई वाराणसी धरि पहुँचि गेल १२म शताब्दीमे गंगाक दक्षिणमे मगधमे पछबरिया आ पुबरिया दुनू प्रकारक प्रयोग होमय लागल। मुदा गंगाक दक्षिणमे मगधसँ पूब पुबरिया प्रकार मात्र रहलै, आ गंगाक उत्तरमे तिरहुतमे सेहो पुबरिये प्रकार मात्र रहलैक। मुस्लिम आक्रमणक बाद समस्त मगधमे पछबरिया प्रकार पसरि गेलैक मुदा १४म शताब्दी धरि (उदाहरण महाबोधि मन्दिर गया) पुबरिया लिपिक प्रयोग एतऽ पूर्णरूपसँ बन्न भय गेलैक।।

१३२६ ई. मे पञ्जी लिखबाक प्रारम्भ भेल आ तहियासँ २०म शताब्दी धरि ई तिरहुतामे बिना परिवर्तित भेने लिखाइत रहल आ ओकर ओही रूपमे फॉण्ट बनि गेलै (देखू गूगल बुक्सपर विदेह आर्काइवक पञ्जीक ११००० तालपत्र/ बसहा कागत अभिलेख, जे प्रारम्भसँ २०म शताब्दी धरिक अछि, २०म शताब्दीक अन्तमे पञ्जी सेहो देवनागरीमे लिखल जाय लागल)। तँ तिरहुताक उद्भव आ विकासक सीमा रेखा १३२६ ई. भेल



जखन तिरहुताक अन्तिम रूप निर्धारित भय गेल। पञ्जीकारक नीक-अधलाह हस्तलिपिकेँ तिरहुता फॉण्टक विभिन्न डिजाइन मात्र मानल जा सकैत अछि।

एकर ई परिणाम भेलै जे तिरहुतामे जे संस्कृत ग्रंथ लिखल जाइ छल, वा पाता चलै छल सेहो अपरिवर्तित रूपमे २०म शताब्दी धरि चलल। तुगलक आक्रमणसँ अभिलेख लिखनिहारक रोजगार खतम भऽ गेलन्हि आ जे कियो बचलाह से तालपत्र आ बसहा कागतपर लिखल अभिलेखसँ भिन्न लेखबाक क्षमतासँ रहित भय गेलाह।

छापाखानाक प्रयोगक बाद आ यूनीकोडक अंकनक बाद आब डिजाइनक आपसमे लिपि परिवर्तन सन प्रयोग सम्भव भय गेल।

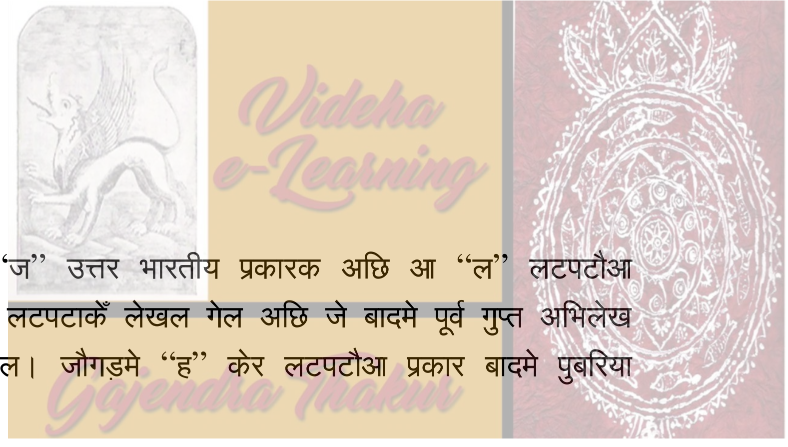
मैथिलीक अष्टम सूचीमे गेलाक बाद संघ लोक सेवा आयोगक परीक्षा आ सरकारी कार्यमे मैथिलीक प्रयोग लेल केन्द्र सरकार मात्र देवनागरीक अनुमति देने अछि। पहिने देवनागरी, तिरहुता, बांग्ला, तमिल आदि लिपिमे संस्कृत लिखाइत छलै, मुदा आब सरकार मात्र देवनागरीमे संस्कृत लिखबाक आदेश देलक अछि। ओना बिहार-झारखण्ड आदिमे अखनो सांकेतिक रूपमे स्कूल, कॉलेजक परीक्षामे आ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षामे मैथिली अहाँ देवनागरी वा तिरहुतामे लिखि सकै छी। केन्द्र सरकार संघ लोक सेवा आयोगक परीक्षा आ अन्य कार्य लेल संस्कृत, हिन्दी, मैथिली, मराठी, कोंकणी, डोगरी, बोडो आ नेपाली केँ देवनागरीमे; संथालीकेँ ओल-चिकी वा देवनागरीमे; सिन्धीकेँ अरबी वा देवनागरीमे; उर्दू आ काश्मीरीकेँ फारसी लिपिमे; मणिपुरी आ बांग्लाकेँ बांग्ला लिपिमे लिखबाक आदेश देने अछि। असमी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया, तमिल, तेलुगु अपन-अपन अही नमक लिपिमे लिखल जायत आ पंजाबी भाषा गुरुमुखी लिपिमे लिखल जायत।

आब फेर तिरहुताक विकास दिस घुमैत छी। गुप्त साम्राज्यक पतन धरि पुबरिया लिपिक आरि-धूरि प्रयागक लग-पासक इलाका रहय जे आठम शताब्दीमे काशी पहुँचि गेलैक। १२म शताब्दीसँ-१४म शताब्दी धरि मगधमे पुबरियो प्रकारक प्रचलन रहलै, जकर बाद ओहि इलाकामे मात्र नागरीक प्रचलन रहल। १४म शताब्दीमे १३२६ मे पञ्जी लिखेनाइ शुरू भेल आ मुस्लिम आक्रमणक बाद तिरहुताक विकास पूर्ण रूपसँ ठमकि गेल आ ओ ओहि कालमे जाहि रूपमे रहय तही रूपमे २०म शताब्दी धरि रहल।

तिरहुता लिपिक १३२६ ई. धरि क्रमिक विकास आ अन्तिम स्वरूपक प्राप्ति

अशोकक प्रयाग आ रामपुरवा, मठिआ, पहेरिया, निग्लीव, राधिया, सारनाथ स्तम्भ लेख सभमे एकरूपता अछि, एकरा ब्राह्मीक उत्तरवर्ती उत्तर-पूर्वी प्रकार कहल जा सकैत अछि।

उत्तर-पूर्वी प्रकारमे किछु विशेषता अछि। ‘‘ख’’ केर नव रूप भेटबामे अबैत अछि। बोधगयाक एकटा अभिलेखमे ‘‘ख’’ केर आधार त्रिभुजक आकारक अछि। नव-मौर्य काल, जे अशोकक परवर्ती कालक अछि, मे ‘‘च’’ मे दू टा घुमघुमौआ आकृति लम्बवत रेखाक दुहू दिस बनैत अछि, मुदा दुनू घुमाव एक आकारक नहि अछि, छोट-पैघ अछि आ ताहि कारणसँ वृत्त नहि बनि पबैत अछि। महाबोधि मन्दिरक रेलिंग- बुद्ध



परिक्रमा- मे अभिलेख सभाछि जाहि मे ‘‘य’’ आ ‘‘ज’’ उत्तर भारतीय प्रकारक अछि आ ‘‘ल’’ लटपटौआ अछि। जौगड़क फराक पाथर-अभिलेखमे मुदा बड्ड लटपटाकेँ लेखल गेल अछि जे बादमे पूर्व गुप्त अभिलेख (४म-५म शताब्दी) क पुबरिया प्रकारमे आर पुष्ट भेल। जौगड़मे ‘‘ह’’ केर लटपटौआ प्रकार बादमे पुबरिया प्रकारमे देखल जाइत अछि।

उत्तर-मौर्य कालक ब्राह्मीक परवर्ती अक्षर प्रकार

दशरथक नागार्जुनी खोह अभिलेख उत्तर-पूर्वी प्रकारक अछि आ तकर बाद महाबोधि मन्दिरक रेलिंग (परिक्रमा)क स्तम्भ सभपर अभिलेखमे ई सेहो देखाइत अछि।

नागार्जुनी खोह अभिलेखक लटपटौआ ‘‘ल’’ दर्शनीय अछि। ‘‘श’’ कलसी अभिलेखसँ मेल खाइए आ पुबरिया घुमौआ ‘‘श’’क ई पूर्व रूप अछि (४म-५म शताब्दी)। ‘‘स’’ सेहो परिवर्तित अछि, उपरक नोकशी नमहर भऽ कनेक झुकि कऽ दोसर पाँति सनबनैत अछि।

महाबोधि मन्दिरक रेलिंग दशरथक नागार्जुनी खोहक५० बर्ख बादक अछि। एहिमे ‘‘क’’ कटार सनाछि, ‘‘ग’’ दू प्रकारक अछि- लटपटौआ आ कोणाकार, ‘‘प’’ मे बेस परिवर्तन अछि आ दूटा समकोण स्पष्ट देखाइ दैत अछि। ‘‘म’’ सेहो दू तरहक अछि, पहिल प्रकारमे वृत्त नीचाँ आ अर्धवृत्त ओकर ऊपर अछि, दोसर प्रकारमे त्रिभुज नीचाँ आ समकोण ओकर ऊपर अछि। ‘‘र’’ वक्र पाँतिक रूपमे अछि। ‘‘व’’ मे नीचाँ दिस वृत्तक स्थान त्रिभुज लऽ लेने अछि। ‘‘स’’ दू प्रकारक अछि, पहिल वामदिस कने वक्र, निचुलका नोकशी नीचाँ दिस आ दोसर मौर्यकाल सन जतय निचुलका नोकशी कने नम्हर रहैत छल। ‘‘ह’’ बड्ड लटपटौआ अछि जे उत्तर भारतक पूर्वी भागक ब्राह्मीक स्वरूप छल।

सारानाथसँ प्राप्त अभिलेख (०१ ई.पू. सँ ०१ ई. धरि)

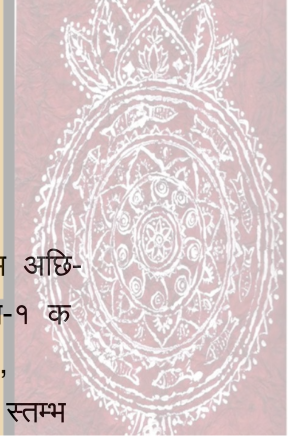
उत्तर-पच्छिमक (०१ ई.पू.-०२ ई.पू.) प्रकारसँ कोनो अन्तर नहि अछि। लम्ब रेखा कने छोट भेल अछि, वक्र रेखा सभ कलाकारीककारण कोणीय भेल अछि। जँ स्वर शब्दक बीचमे अबैत अछि तँ मौर्यकालक कोणीय प्रकार लटपटौआ स्वरूप लय लैत अछि।

कुषाण अभिलेख

ब्राह्मी लिपिक उत्तर भारतीय प्रकारक पूर्वी प्रकार बोधगयाक महाबोधि गाछक नीचाँमे राखल पाथरमे प्राप्त होइत अछि। ‘‘प’’ केर उर्ध्वाधर रेखा छोट भेल अछि, ‘‘म’’ मे निचुलका भागक त्रिभुज आकार पूर्व कुषाण स्वरूपसन अछि। ‘‘श’’ कोणीय अछि आ एहिमे क्षैतिज रेखा वाम लम्बवत पाँतिकेँ छू नहि सकल अछि। साहेत-माहेत क बोधिसत्त्वक आकृतिपर लटपटौआ ‘‘ह’’ अछि आ आनठाम कोणीय ‘‘ह’’। ‘‘स’’ मे पछुलका भाग चाकर अछि। ‘‘य’’ कखनो-काल अधोलिखित अछि आ एहिमे तीन फाँड़ अछि।

गुप्त युगक प्रारम्भ (४म- ५म शताब्दी)



पूर्व प्रकार ''ल'', ''ह'', ''ष'' आ ''स'' मे स्पष्ट अछि। एहि कालक मुख्य अभिलेख सभ अछि- समुद्रगुप्तक प्रयाग स्तम्भ प्रशस्ति, चन्द्रगुप्त-२ क उदयगिरि खोहाभिलेख, चन्द्रगुप्त-२ आ कुमारगुप्त-१ क गढ़वा भांगल अभिलेख, कुमारगुप्त-१ क धनैदाहा अनुदान-पत्र, कुमारगुप्त-१ क मानकुँवर अभिलेख, स्कन्दगुप्तक बिहार स्तम्भ अभिलेख, भीमवर्मनक कोसम आकृति अभिलेख आ स्कन्दगुप्तक कौहम स्तम्भ अभिलेख।

लिपिक प्रकारक अन्तर कोना पकड़ी?

उत्तर भारतक प्रकार आ दक्षिण भारतक प्रकार (नागरी सहितमे) अन्तर ''म'' अक्षरपर ध्यान देलासँ आ उत्तर भारतक पूर्वी आ पश्चिमी प्रकारमे ''ष'', ''ल'' आ ''ह'' पर ध्यान देलासँ लिपिक कलाकारीमे भिन्नता पकड़ाइत अछि।

तिरहुताक स्वरूप एहि तरहेँ पूर्वी प्रकारसँ बहार भेल। ''ल''-एकर वाम भाग सोझे-सोझ नीचाँ दिस खसैत अछि। ''ष'' केर आधार कलाकार गोल बनेने छथि आ कनछियाह बिचुलका रेखासँ घुमाकय मिलेने छथि। ''ह'' केर आधार थकुचि कऽ छोट कयल गेल अछि आ ओकर नोकशी लम्बवत रेखामे मिला कऽ वाम दिस घुमाओल गेल अछि। ''स'' मे हरदम एकर वाम लम्बवर रेखाक अन्तमे घुमाव रहैत अछि, जे पहिने वक्र वा नोकशी सन रहैत छल। ई कुषाण कालक मथुरामे सेहो भेटल अछि। समुद्रगुप्तक प्रयाग स्तम्भ प्रशस्ति पूर्वक प्रकारक मानक रूप अछि।

तिरहुता भारतीय लिपिक तंत्र सिद्धांत

बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त आ चतुष्कोणक प्रयोगसँ कलाकार तंत्र-मंत्र कय सकल होथि से सम्भव नहि मुदा तिरहुताक अक्षरकेँ सुन्दर बनेबामे ओ अवश्य सफल भेलाह।

ब्राह्मीक उत्तरवर्ती पूर्व प्रकार (५५० ई. सँ ११०० ई.)

बुहलर (बूलर) एहि कालक लिपिकेँ सिद्धमातृका कहैत छथि।

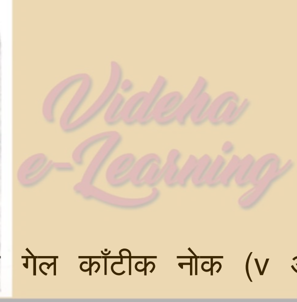
५५० ई.-६५० ई.

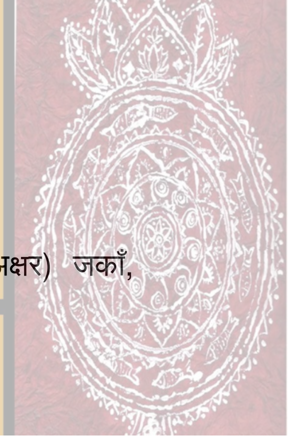
एहि कालक मुख्य अभिलेख सभ अछि- नन्दनक अमौना अनुदान अभिलेख, शिवराजक पटियाकेला अनुदान अभिलेख, अनन्तवर्मनक बराबर खोह अभिलेख, अनन्तवर्मनक नागार्जुनी खोह अभिलेख। मुख्य परिवर्तन जे तिरहुता दिस भेल ओ अछि:

-तीन फँड़ बला ''य'';

-''घ'', ''प'', ''फ'', ''ष'', ''स'' केर नीचाँ दिस समकोणीय प्रवृत्ति संगे एहि सभ चेन्हमे दहिन दिस पुच्छी वा लम्ब जे पछबरिया प्रकारमे विकसितभेल तकर अभाव।

६५० ई. सँ ७०० ई.



-“अ” केर वाम अंगक उपरका भागक कनेक नमगर भय गेल काँटीक नोक (v अक्षर) जकाँ, निचुलका भाग वक्र बनि गेल आ माथपर बट्टम सन चेन्ह अर्द्धविराम सन

“आ”- दोसर वक्रमे अन्तर अर्द्धविराम सन, दहिन अंगक निचुलका भागसँ जुड़ल

“इ”- गुप्त कालक लिपिक पश्चिम प्रकार जे बिन्दु वा निचुलका वृत्त सन छलै से पैघ वक्रमे विकसित भय गेल

“उ”- निचुलका भागक क्षैतिज रेखा वक्रमे परिवर्तित भय गेल आ नमगर भय गेल आ अही रूपमे १०म शताब्दी धरि रहल आ तखनजा कय अन्तिम रूपसँ विकसित भेल

“ओ”- नमगर अर्धविराम पाँछा दिस चौरस भय गेल

“क”- पहिल बेर वाम दिस सदैव घुमाव रहय लागल, ई घुमाव ११म शताब्दीमे अर्धवृत्त बनि गेल

“ख”- अक्षरक आधारमे त्रिभुज आकृति बनल फेर ई सोझ रेखा बनल आ फेर घुमि गेल, त्रिभुजक एक भुजा अर्धवृत्त बनि गेल आ दोसर नमगर भय गेल आ वृत्तक दुनू चापकेँ छूलक।

“ग”- आधार रेखाक वक्रता प्रारम्भिक गुप्त कालहिसँ पुबरिया प्रकारमे देखाइ पड़य लागल छल। ६अम शताब्दीक यशोधर्मन अभिलेखक आधार रेखा वामदिस घुमि गेल आ दहिन दिस टेढ़ भय गेल आ दहिन लम्बसँ न्यून कोण बनेलक।

“ङ”- निचुला दहिन दिसुका कोण न्यूनकोण बनि गेल आ लम्बवत सोझ रेखा गोलाइ लय लेलक

“च”- गुप्त कालक दुनू गोलाइ त्रिभुज बनि गेल जे “वी” आकार ऊपरमे लेलक, आधार रेखा वा निचुलका रेखा वाम दिस कने नमगर भय गेल।

“छ”- कोनो अन्तर नहि।

“ज”- पुबरिया प्रकारमे निचुलका प्रारम्भिक गुप्त कालहिसँ क्षैतिज आकार स्पष्ट छल आब लम्बवत रेखामे सेहो स्पष्ट रूपसँ गोलाइ देखाइ पड़य लागल। बिचुलका नव क्षैतिज ओतबी घुमि गेल जतेक निचुलका आधार रेखा छल। उपरका क्षैतिज रेखाक दहिन दिस “वी” आकार जुड़ि गेल।

“ञ”- कनेक लटपटौआ

“ट”- पछबरिया प्रकारसँ बेस अन्तर आबि गेल। खुजल गोलाइ आ “वी” आकृति ओहि गोलाइक उपरका भाग पर क्षैतिज रूपमे राखि देल गेल।

“घ”- आधार रेखाक गोलाइ प्रारम्भिक गुप्त कालक पुबरिया प्रकारमे देखाइ पड़य लागल छल, आब ई तीन फेँड़बला “य” सन बनि गेल।







''ठ''- पूर्वकालक मौर्य प्रकार अखनो प्रयुक्त होइत रहल।

''ड''- दूटा छोट गोलाइ बनि गेल।

''ढ''- कोण गोलाइ लय लेलक।

''ण''- आधार रेखा टेढ़ भय गेल आ ओ निचुलका भागक दहिन दिस न्यून कोण बनेलक आ वाम नोकशी नमगर भय गेल।

''त''- गुप्त कालहिमे दहिन अंगक निचुलका भाग नमगर भय गेल रहय, ई कने गोलाइ लय लेलक आ एकटा ''वी'' आकार ऊपरमे बनि गेल।

''थ''- उपरका भाग चकराइ लय लेलक।

''ध''- छोट चाप अर्द्ध-वृत्त मे बदलि गेल।

''न''- प्रारम्भिक गुप कालक गोलाइ बला रूप बदलि कय आधुनिक नागरी रूप लय लेलक। गोलाइ मुख्य भागसँ फराक भय गेल आ मुख्य भागसँ एकटा छोट क्षैतिज रेखासँ मिलि गेल आ कने छोट सेहो भय गेल।

''प''- कनेक आर बेशी लटपटौआ आकार लेलक आ न्यून कोण आर स्पष्ट भय गेल।

''ब''- ''ब'' केर स्थान ''व'' लय लेलक।

''भ''- ''भ'' आ ''ह'' केर बीच अन्तर खतम भय गेल, पछबरिया प्रकार मे ई पहिनहिये भय गेल छल।

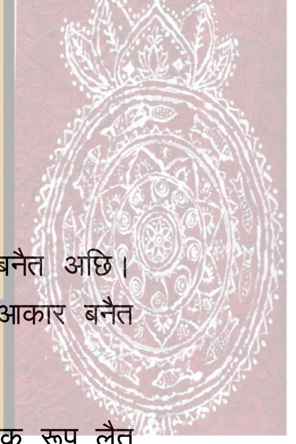
''म''- न्यून कोण आर तीक्ष्ण भय गेल आ तकर परिणाम भेल जे दहिना अंग नीचाँ दिस बढ़ि गेल।

''य''- ''य'' दू प्रकारक, पहिल दू फँड़बला, एकर निचुलका हीसमे न्यूनकोण बनैत अछि आ दोसर प्रकारमे न्यूनकोण ओतेक स्पष्ट नहि अछि मुदा दहिन भागक अंग नीचाँ दिस नमगर भऽ गेल अछि।

''र''- निचुलका छोरपर ''वी'' वा तीरक आकृतिक जे पहिलुक्का अभिलेख सभक पछबरिया प्रकारमे सेहो छल। ई ''ड'' केर छोट रूपसँ मिलानी खाइत अछि।

''ल'' दू प्रकारक अछि। पहिल प्रकारमे वाम अंगक वक्र वा नोकशी नीचाँ दिस नमगर भेल अछि आ सभसँ नीचाँ जा कय कनिये बाहर दिस वक्र रूप लैत अछि । दोसर प्रकारमे वाम अंगक वक्रपर नोकशी अछि जे नमगर भऽ कऽ नीचाँ जेबाक बदला आन्तरिक आकार लैत अछि। ई मोटा-मोटी आजुक तिरहुता आ देवनागरी सन भऽ जाइत अछि।





‘‘व’’- एतय ओही तरहक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि जेना ‘‘ख’’ केर आधारमे त्रिभुज बनैत अछि। त्रिभुजक दुनू भुजा वक्र बनि जाइत अछि, तेसर नमगर भऽ जाइत अछि। अक्षर ऊपर ‘‘वी’’ आकार बनैत अछि।

‘‘श’’- अक्षरक उपरका भाग पूर्व गुप्त कालमे वक्र छल, आब जा कऽ उपरका भाग वक्रक रूप लैत अछि, निचुलका दहिन अंग ऊपर दिस नमगर भेल अछि।

‘‘ष’’- ई तीन प्रकारक अछि- पहिल प्रकारमे रूप वक्रित अछि, दोसर प्रकारमे वक्र फोंक ‘‘वी’’ आकृतिक रूप लैत अछि, तेसर प्रकारमे ‘‘वी’’ आकृतिक उपरका भाग फराक भऽ जाइत अछि आ ‘‘वी’’ आकृति नहि रहि जाइत अछि (ई प्रकार भेटैत अछि ६अम सँ ९अम शताब्दीक उत्तर-पूर्वी अभिलेख सभमे)।

‘‘ह’’- अक्षरक दहिन अंगमे वक्र आ नोकशीक नमगर होयब आ शीर्षपर ‘‘वी’’ आकृति (ढबकल सन) आ अखनि धरिक क्षैतिज आधार रेखा कने टेढ़ भऽ जाइत अछि।

आठम शताब्दी

एहि कालक मुख्य अभिलेख जाहिमे ब्राह्मीक उत्तरकालक पुबरिया रूप फराक होइत अछि-

जीवितगुप्त २ केर देव-बार्नार्क स्तम्भ लेख, धर्मपालक खलीलपुर अनुदान पत्र आ धर्मपालक समयक बोधगया आकृति अभिलेख।

मुख्य बिन्दु अछि।

स्वर- कोनो परिवर्तन नहि भेल।

क, ग, च, ज, ट, ठ, ड, द, ध, न, भ, म, य, ह- कोनो परिवर्तन नहि भेल।

ण- दहिन वक्र वा नोकशी नीचाँ दिस नमगर भेल।

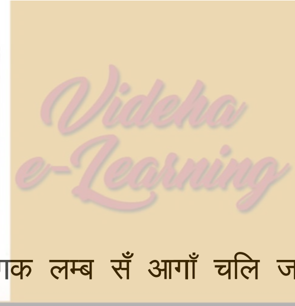
त- नीचाँ दिस नमगर भऽ गेल, निचुलका छोरपर बड़ड छोट वक्र।

‘‘थ’’- ‘‘वी’’ आकृतिक छोरक नमगर भेलासँ उपरका भाग चकरगर भेल।

‘‘प’’ दू प्रकारक- पुरनका रूप जाहिमे न्यूनकोण अखनो स्पष्ट अछि। नवका रूपमे न्यूनकोण उपस्थित तँ अछि मुदा स्पष्ट नहि अछि आ एकर स्थान नीचाँ दिसुका दहिन लम्ब रेखा लऽ लेने अछि।

‘‘ल’’- न्यूनकोण बड़ड छोट भऽ गेल अछिआ दहिन लम्ब रेखा नीचाँ दिस चल गेल अछि।

‘‘श’’- ई दू प्रकारक अछि। पूर्व रूप वक्र संग अछि। बादक रूप ९अम शताब्दीक दिघवा-दुभौली अनुदान सन अछि।



‘‘ष’’- वाम अंगक निचुलका भाग लटपटौआ अछि आ वाम भागक लम्ब सँ आगाँ चलि जाइत अछि।

अफसड़ अभिलेखमे सभ ठाम दन्त ‘‘स’’ केर प्रयोग भेल अछि।

धर्मपालक बोधगया अभिलेख

‘‘श’’ तीन प्रकारक अछि- पहिल प्राचीन रूप जाहिमे उपरका भाग गोलाइ लेने अछि। बादक रूप बिन डण्टाक अछि। एकटा बिचुलका रूप अछि जाहिमे डण्टा सन आकृति छै, मुदा ओ न्यूनकोणकेँ दक्षिण उर्ध्वाधर रेखाक बदलामे नीचाँमे छुबैत अछि।

‘‘ज’’ मे उपरका क्षैतिज रेखा बिला जाइत अछि आ ‘‘वी’’आकृति ओकर बदलामे आबि जाइत अछि। बिचुलका क्षैतिज रेखा एकटा वक्र अछि।

‘‘न’’ दू प्रकारक- पुरनका प्रकार फानी सन छल। आब ई गुप्त आ तिरहुताक बीचबला आकार लऽ लैत अछि।

‘‘ण’’- आधार रेखा बिला जाइत अछि।

‘‘ह’’- निचुलका दिसुका न्यूणकोण बेसी स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

धर्मपालक बाद देवपालक अन्तर्गत तिरहुत प्रदेश रहल। मुदा तकर बाद गुर्जर-प्रतिहार सम्राट तिरहुत छीनि लेलनि, बिग्रहपाल -१ आ नारायणपाल क शासनकालमे।

ब्राह्मीक परवर्ती पुबरिया प्रकार (९अम शताब्दी सी.ई.)

एहि सभमे ई सभ मुख्य प्रकार अछि:

१.देवपालक मुंगेर अनुदान पत्र

२.देवपालक समयक घोसरवा अभिलेख

३.नारायणपालक बादल स्तम्भ अभिलेख

४.नारायणपालक विष्णुपाद मन्दिर अभिलेख

५.नारायणपालक भागलपुर अनुदानपत्र

६.महेन्द्रपालक दिघवा-दुभौली अनुदान-पत्र






७.महेन्द्रपालक रामाज्ञा अभिलेख

घोसरवा अभिलेख

अ/आ- उपरका भाग अखनो पूर्ण रूपसँ विकसित नहि भेल अछि।

इ- दूटा वृत्त वा बिन्दु ऊपरमे आ काटबला वक्र नीचाँमे।

ई-समकोण त्रिभुजक रूप लऽ लेने अछि।

ख- अखनो वाम अंगक नीचाँ दिस ‘‘वी’’ आकृति लेनहिये अछि।

च- चकराइ बढ़ि गेल।

ज- पुरातन रूप- बिचुलका क्षैतिज रेखा कने नीचाँ दिस टेढ़ भेल आ निचुलका क्षैतिज रेखा एकटा छोट वक्रमे खतम होइत अछि।

ट/ ठ केर दहिन अंग नहि देखाइ पड़ैत अछि।

ण- आधार रेखा पूरा-पूरी खतम भऽ गेल।

थ- उपरका भाग चाकर भऽ गेल।

द/ ध- निचुलका रेखा नीचाँ दिस वक्र भऽ गेल अछि।

न- फानी सन पूर गुप्त काल आ तिरहुताक बीचक रूप। फानी अक्षरक मुख्य अंगसँ विलग भऽ गेल।

प- पुरातनरूप नीचा दिस कोनो वक्रता नहि। एकटा अधिक कोण आ एकटा नूनकोण बदलामे निचुलका भागमे दूटा समकोण बनि जाइत अछि।

भ-नीचाँ दिस टेढ़

म- फानी अखनो नहि बनल अछि।

य- न्यूनकोण चपा गेल अछि आ तिरहुता स्वरूप प्राप्त कऽ लेने अछि।

ल- आधाररेखा पूरा-पूरी दबि गेल अछि।

व- न्यूनकोणक बदलामे दहिन उर्ध्वाधर सोझ रेखाक नमगर रूप आबि गेल।






ष- उपरका रेखा टेढ़ भऽ गेल।

स- आधार रेखा फेर क्षैतिज भऽ गेल आ उपरका रेखा नीचाँ दिस टेढ़ भऽ गेल।

ह- पुरातन रूप, न्यूनकोण अखनो दोसर निचुलका रेखा नहि बनल अछि।

विष्णुपद मन्दिर अभिलेख

‘‘इ’’ दू प्रकारक- पहिल प्रकारमे दूटा वृत्त ऊपरमे आ एकटा कटाव नीचाँमे। दोसर प्रकारमे ऊपरमे एकटा छोट क्षैतिज रेखा आ दूटा वृत्त नीचाँमे।

‘‘ख’’ तिरहुताक आकारक रूप लऽ लेने अछि।

‘‘घ’’ अखनो नीचाँमे न्यूनकोण बनेने अछि।

‘‘ट’’- दहिन दिसुका उर्ध्वाधर सोझ रेखा पूरा-पूरी बिला गेल।

‘‘ठ’’- अखनो पुरने रूप अछि।

‘‘प’’- दू प्रकारक। पुरनका रूप जतऽ कोण अखनो अछिये। दोसर रूपमे तिरहुताक लटपटौआ रूप।

‘‘म’’- आधार रेखा विलुप्त भऽ गेल।

‘‘श’’ आ ‘‘ष’’ क रूप फानीबला आ अखुनका रूपक बीचबला रूप लेने अछि।

नारायणपालक भागलपुर अनुदान

अ/ आ- पूरापूरी तिरहुता रूप, एतय धरि जे छोटका रेखा जे दहिना लम्ब रेखाक अर्द्धविराम रूपी कटावसँ मिलैत अछि, नीचाँ दिस टेढ़ भेल अछि।

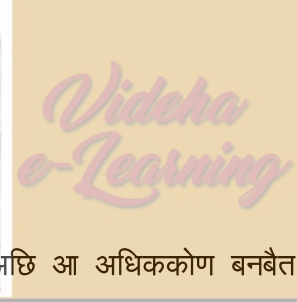
‘‘उ’’- एहिमे एकटा उपरका रेखा बनैत अछि आ लम्बरूपी रेखावाम दिस वक्र भऽ जाइत अछि।

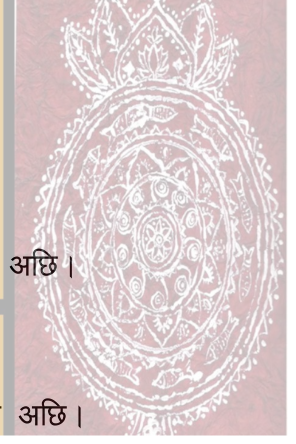
‘‘क’’ केर त्रिभुज चाकर भऽ गेल अछि।

‘‘ख’’ तिरहुता सन लटपटौआ भऽ गेल अछि।

‘‘घ’’ मे न्यूनकोण खतम भऽ गेल आ तिरहुता केर आकार लऽ लेलक अछि।

‘‘च’’- उपरका भाग पातर भऽ गेल अछि।



“ज”- बिचुलका क्षैतिज भाग दू टा सोझ रेखामे बदलि गेल अछि आ अधिककोण बनबैत अछि।

“ट”- उपरका रेखाक दहिन छोरसँ नीचाँ दिस छोटका रेखा जाइत अछि।

“ण”- तिरहुता प्राचीन रूप। दूटा छोट रेखा लम्ब सोझ रेखाक वाम दिस जा कऽ मिलैत अछि।

“त”- ई बदलि गेल अछि, एहिमे एकटा उपरका रेखा आ एकटा लम्ब रेखा समकोण पर अछि संगहि एकटा वक्र लम्ब रेखाक वाम दिस जुड़ि गेल अछि, जेना नागरीमे अछि।

“थ”- तिरहुता सन उपरका वक्र खुजि गेल अछि।

“ध”- उपरा भाग खुजि गेल अछि।

“न”- पुरातन फानीबला रूप, फानी नीचाँ दिस झुकल।

“प”- उपरका दिस पातर भेल।

“फ”- उपरका कम चाकर भेल।

“म”- सभरूप फाने सन।

“ल”- अन्तिम रूपसँ आधार रेखा थकुचा गेल अछि।

“श”- सभ प्रकार फानी सन।

“ष”- पुरातन रूप, उपरका आ निचुलका भाग बराबर, दोसर मे उपरका भाग कम चाकर।

प्रतिहार नरेश महेन्द्रपालक दिघवा-दुभौली अनुदान (गोपालगंज)

एहिमे पुबरिया प्रकारक विशेषता भेटैत अछि जेना च पतरा गेल, ज लटपटा गेल, थ- तिरहुताक पूर्व रूप बुझाइत अछि, फानीबला “म” अछि, “श”मे फानी लम्ब रेखासँ मिज्झर होइत अछि, “ष” मे उपरका रेखा नीचाँ दिस टेढ़ होइत अछि। ई अनुदान पूब आ पच्छिमक मिश्रित रूप प्रस्तुत करैत अछि।

१०म शताब्दीमे पैघ साम्राज्य सभ खतम होइत गेल आ तेँ अभिलेखो नहियेक बराबर अछि। नालन्दा आकृति अभिलेख एहि कालक अछि जाहिमे “भ” केर पुरान रूप देखबामे अबैत अछि। “श” केर परवर्ती रूप देखाइत अछि। बोधगया केर आकृति पर अभिलेखमे सेहो भ केर पुरान रूप भेटैत अछि आ श केर परवर्ती रूप सेहो। ख केर रूप तिरहुता सन अछि।

तिरहुता लिपिक विकासक अन्तिम चरण

किछु लिपि जे अखन धरि नहि पढ़ जा सकल अछि







(१)- हड़प्पा लिपि

(२)- अलंकृत ब्राह्मी, भारतकसभ भागमे छोट-छोट अभिलेख एहि लिपिमे अछि, मोटा-मोटी नाम आ हस्ताक्षर लेल प्रयुक्त होइत छल।

(३)- शंख लिपि- एकर अक्षर सभ शंख सन अछि तँ एकर ई नामकरण भेल। ई सेहो मोटा-मोटी नाम आ हस्ताक्षर लेल प्रयुक्त होइत छल। (**कोल्हुआ, मुजफ्फरपुरक अशोक स्तम्भ (बसाढ़ स्तम्भ) मे जे तीनटा अभिलेख भेटल अछि ओहि मे किछु अक्षर शंख लिपिक सेहो अछि**।)

(४)- ब्राह्मी सन एकटा लिपि जे माटिक मोहर सभपर पूर्व भारतक चन्द्रकेतुगढ़ आ तामलुकसँ भेटल;अ अछि।

(५)- खरोष्ठी सन दहिनसँ वाम लिखल जायवला एकटा लिपि जे अफगानिस्तानसँ भेटल अछि।

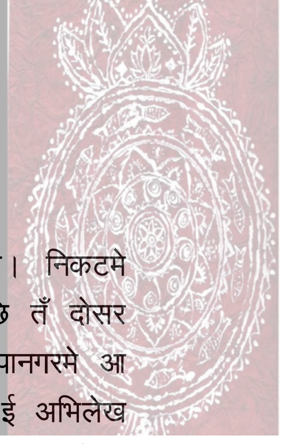
तिरहुताक विकासक अन्तिम चरण

किछु अक्षर पहिने तिरहुताक रूप लऽ लेलक तँ किछु कने बाद। किछु अभिलेखमे किछु अक्षरक प्रयोगे नहि भेल। अनुलग्नक-५ मे तिरहुता रूपक क्रमिक स्थिति देखाओल गेल अछि। कैथी, तिब्बती आ देवनागरी लिपि अही तरहेँ अपन वर्तमान रूपमे आओल जे अनुलग्नकमे देखाओल गेल अछि। किछु विद्वान हर्षवर्द्धनक बादक समयमे ओकर तिरहुतक मंत्री अर्जुन द्वारा कन्नौजक राजा बनब आ तिब्बतक बौद्ध यात्री सभकेँ तंग करबाक चर्चा केने छथि आ प्रत्युत्तरमे तिरहुत पर तिब्बतक कब्जाक चर्चा करैत छथि। आधुनिक विद्वान ओहिपर शंका व्यक्त करैत छथि। तिब्बतक राजनैतिक प्रभुत्वपर तँ शंका अछि मुदा सांस्कृतिक रूपसँ निम्न तथ्य तिब्बतक वज्रयानक मिथिलामे उपस्थिति देखबैत अछि। बौद्ध देवी तारा, वारी, समस्तीपुर, उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा। मुसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊंच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्त्ति, पाइ, बर्त्तनक टुकड़ी आ पजेबाक अवशेष एतए अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली नाहर भगवतीपुर भुवनेश्वरी मन्दिर (मधुबनी) मे सेहो अछि, प्रायः बौद्ध भिक्षु लोकनिक ई तपस्या स्थली होयत। फेर बौद्ध सिद्ध सरहपाद जे लिखै छथि- सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ, मण्ड पिबन्तों बिसरउ एमइउ। ओ सिद्धिरस्तु आ एहि विचार कि माँड़ पीने बुद्धि मन्द होइत अछि दुनूक चर्च करैत छथि जाहिसँ हुनकर बौद्ध धर्मक मैथिल होयबाक प्रमाण भेटैत अछि, हुनकर जे फोटो तिब्बतसँ भेटैत अछि ओहिमे हुनकर फोटोक नीचाँमे तिब्बती लिपिमे वर्णन अछि।

७म शताब्दी आ बादक किछु तिरहुता अभिलेख

अन्धाराठाढी अभिलेख (श्रीधरदासक आंधा-ठाढ़ी अभिलेख), मधुबनी, बुद्धमूर्ति अभिलेख (कोर्थु), विष्णुमूर्ति अभिलेख (लदहो), 19म शतीक ब्रह्मपुरा शिलालेखमे तिरहुताक आदर्श रूप, मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीचक गौरीशंकर स्थान, गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ एहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेख, बिदेश्वर-मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह कएलन्हि, ताहि युगक तिरहुताक अभिलेख। मंदार पर्वत-बांका स्थित स्थलमे तिरहुताक गुप्तवंशीय





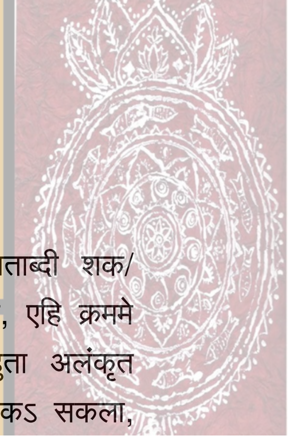
७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। पौराणिक कथामे समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे बौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्त्ति अछि, पैघ मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर सोझाँ दूटा पदचिन्ह अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एतहि भेल छलन्हि। बसैटी अभिलेख- पूणियाँमे श्रीनगर (जिला अररिया) लग तिरहुताक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इद्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि। एकर आधार पर मदनेश्वर मिश्र 'एक छलीह महारानी' उपन्यास सेहो लिखने छथि। बाइसी-बसैटी, अररिया तिरहुता ताम्रपत्र- रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ कएलन्हि केर मिथिलाक्षर अभिलेख एतए एकटा मन्दिरक ऊपरमे ताम्र-पत्रपर कीलित अछि, जे कारी रंग सँ पेंट कऽ देल गेल अछि आ शिलालेख सन लगैत अछि।

जलज कुमार तिवारी आ एस. कृष्णामूर्ति २०१९ ई.मे प्रकाशित अपन आलेखमे निम्न तिरहुता अभिलेख सभक वर्णन दैत छथि जे अखन धरि कोनो पोथीमे नहि आयल छल। चेचर गाम (वैशाली) मे बुद्ध मूर्तिपर अभिलेख भेटल अछि जे तिरहुता लिपि आ संस्कृतमे अछि (९अम शताब्दी)। तारा मूर्ति, जगतपुर बरुआरी (सुपौल) जे सहरसा म्यूजियममे राखल अछि, तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषाक अभिलेख एततसँ भेटल अछि (१० म शताब्दीक)। तारा मूर्ति, दभैछा (वैशाली) मे तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषाक अभिलेख भेटल अछि (१० म शताब्दीक)। पिपरौलिया विष्णु आकृति (मूर्ति), दरभंगा, तिरहुता लिपि. संस्कृत भाषा (१०म शताब्दी)। गाम- भच्छी (बहेरी लगक जिला दरभंगा, मधुबनीक भच्छीसँ भिन्न), तिरहुता लिपि, संस्कृत भाषा (१०म-११म शताब्दी)। कण्दाहा (सहरसा) क पाथर अभिलेख, ओइनवार कालक राजा नरसिम्हदेवक आदेशसँ वंशधर ब्राह्मण द्वारा (तिरहुता १५मशताब्दी, भाषा संस्कृत)। मनसा आकृति (भैरवस्थान, मुजफ्फरपुर)- तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषामे लिखल अभिलेख (१५ म शताब्दी)। बुद्ध मूर्ति, कोर्थु दरभंगा, तिरहुता लिपि, संस्कृत भाषा (१०म शताब्दी)। एकर अतिरिक्त ओ पहिल शताब्दीक एकटा ब्राह्मी अभिलेखक चर्च सेहो करैत छथि [गाम पखौली जिला वैशाली (स्तम्भ अभिलेख) (ब्राह्मी लिपि, पहिल शताब्दी)]। तीनटा अशोक स्तम्भपर, जे कोल्हुआ (मुजफ्फरपुर)मे भेटल अछि, बादमे कियो अभिलेख खचित केने छथि। ओहिमे दूटा अभिलेख ७म शताब्दीक अछि जे नागरी लिपि आ संस्कृत भाषामे अछि आ तेसर ५म शताब्दीक अछि जे संस्कृत भाषामे आ ब्राह्मी लिपिमे अछि। कोल्हुआ, मुजफ्फरपुरक अशोक स्तम्भ (बसाढ़ स्तम्भ) मे जे तीनटा अभिलेख भेटल अछि ओहि मे किछु अक्षर शंख लिपिक सेहो अछि, जे अखन धरि नहि पढ़ल जा सकल अछि। (*जलज कुमार तिवारी, एस. कृष्णामूर्ति, मिथिला भारती, भाग-६, अंक १-४, २०१९ ई.*)

मान्दा अभिलेख, कमौली दानपत्र (विद्यादेव कमौली प्रशस्ति), गदाधर मन्दिर अभिलेख (गदाधर मठ गया), गंजम ताम्रपत्र, लोकनाथक दानपत्र, भागलपुर, मुंगेर आ नालन्दाक दानपत्र, बादल स्तम्भ अभिलेख, विश्वरूप सेनक मदनपाद दानपत्र, अशोकाचलक बोधगया अभिलेख, वल्लालसेनक नैहाटी अभिलेख, ढाका अभिलेख (ढाका मूर्ति अभिलेख), देवपारा प्रशस्ति, अनुलिया आ साहित्य परिषद दानपत्र, भुवनेश्वर, सुन्दरवन, वेलवा आ बोधगया अभिलेख क्रमसँ देवनागरी आ तिरहुताक बीचमे फाँक आनि देलक।

उपसंहार





तेसर शताब्दी ई.पू. मौर्य, दोसर आ पहिल शताब्दी ई. पू. शुंग, पहिल सँ तेसर शताब्दी शक/ कुषाण, चारिमसँ छअम शताब्दी- गुप्त, सातमसँ ९अम शताब्दी सिद्धमातृका आ तकर बाद तिरहुता, एहि क्रममे तिरहुताक विकास हम देखि सकैत छी। तंत्रक योगदानसँ आ तिब्बती लिपिक प्रभावसँ तिरहुता अलंकृत भेल। मिथिलाक्षरक उद्भव आ विकास मे राजेश्वर झा जी किछु पुरातन तथ्यसँ अपनाकेँ दूर नहि कऽ सकला, जेना ओ नहि फरिछा सकला जे ब्रह्मी पूर्व पाणिनी व्याकरणाचार्य लोकनि द्वारा प्रयुक्त होइत छल आ पाणिनीक व्याकरणमे ओ अशुद्ध भऽ गेल आ तखनसँ एकर नाम ब्राह्मी भऽ गेल। ओ ब्राह्मण लोकनि द्वारा प्रयुक्त हेबाक कारणे ब्रह्मी नाम भेलपर जिदियायल छथि। हुनकर अवधारणा जे वैदेही लिपिसँ ब्राह्मी (जकरा ओ ब्रह्मी लिखै छथि) बहरायल सेहो भ्रामक अछि। मिथिलामे शंख लिपिमे सेहो छोट-छीन अभिलेख भेटल अछि, जकर वर्णन ऊपर कयल गेल अछि, जे हड़प्पा लिपि जेकाँ पढ़ल नहि जा सकल अछि आ ब्राह्मीमे सेहो अभिलेख भेटल अछि, से हुनकर कथन जे सोझे हड़प्पासँ लोक विदेह आयल विदेघ माथवक संग (शतपथ ब्राह्मण) आ एतऽ वैदेही लिपि शुरू कऽ देलक, से मान्य नहि अछि। से सगर भारतमे जे परम्परा छल जे ब्राह्मीमे पैघ अभिलेख लिखल जाइत छल आ नाम आ हस्ताक्षर लेल शंख लिपिक प्रयोग कएल जाइत छल से मिथिलोमे भेटल अछि। राजेश्वर झा तंत्र-सिद्धांत आ एकर तिरहुता लिपिपर प्रभावक सेहो जरूरति सँ बेशी प्रभाव देखेने छथि, जखन कि ओकर प्रभाव किछु सोझे आ किछु तिब्बती लिपिक माध्यमसँ पड़ल मुदा ओ ओहिसँ अलंकृत मात्र भेल। हुनकर ई कथन जे शब्दकल्पद्रुममे देल लिखबाक पद्धतिसँ बांग्ला लिपि नहि वरन् मात्र मिथिलाक्षर (तिरहुता) लिखल जा सकैत अछि, सेहो भ्रामक अछि। बांग्ला वा मिथिलाक्षर वा तिब्बती वा देवनागरी सभ ब्राह्मीपर आधारित अछि आ ई एहि तरहेँ बूझल सा सकैत अछि जे रोमन लिपिमे एकसँ एक फॉण्ट छै जे कखनो अहाँकेँ अरबी सन बुझायत कखनो लटपटौआ, आ सभ एक दोसरामे परिवर्तनीय अछि। शब्दकल्पद्रुममे देल विधि तिरहुते नहि बांग्लो लेल उपयुक्त छल, छापाखाना एलाक बाद जेना रोमन पूर्ण रूपसँ संयुक्ताक्षर खतम कऽ लेलक तहिना बांग्ला बहुत रास संयुक्ताक्षरकेँ खतम कऽ लेलक। आ ओहि नवका रूपकेँ राजेश्वर झा जी शब्दकल्पद्रुमसँ जोड़बाक गलती केलन्हि। राजेश्वर झाकेँ खरोष्ठी लिपिक सम्बन्धमे सेहो भ्रम छन्हि। खरोष्ठी दहिनसँ वाम दिस लिखल जाइत अछि मुदा ई पूर्ण रूपसँ भारतीय लिपि छल, वएह स्वर व्यंजन (कचटतप)। ब्राह्मीसँ किछु चेन्ह कम भेलाक कारण, जखन अभिलेख प्राकृतसँ संस्कृतमे लिखल जाय लागल, खरोष्ठी संस्कृतक समासयुक्त अभिलेखक लेखन लेल अनुपयुक्त भऽ गेल आ खतम भऽ गेल आ कोनो भारतीय लिप एहिसँ बहार नहि भऽ सकल।

आधुनिक तिरहुताक रूपक विकास नारायणपालक भागलपुर दानपत्र, श्रीचन्द्र रामपालक दानपत्र, महिपाल प्रथमक वनगढ़ दानपत्र, भोजवर्मनक वेलवा दानपत्र, लक्ष्मणसेनक तर्पण निधि दानपत्र सँ विकसित होइत पक्षधर मिश्र कृत विष्णुपुराण आ १३२६ ई. सँ प्राप्त मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक पञ्जीमे आबि कऽ समाप्त भऽ जाइत अछि। जे किछु छोट-मोट परिवर्तन लेखकक व्यक्तिगत लेखनीक कारण छल से छापाखाना एलाक बाद खतम भेल। तकरा बाद कम्प्यूटर फॉण्टमे एकरूपता आबि गेल आ से सम्भव भेल देवनागरी यूनीकोड (मंगल), बांग्ला यूनीकोड (वृन्दा) आ तखन तिरहुता यूनीकोडकेँ आधार बनेलासँ। छापाखानामे दिक्कति रहै, जे किछु रूपकेँ ओतय छोड़य पड़ैत छलै, आ घोंघाउज होइत छल जे एहि तिरहुताकेँ सीखि कऽ पाण्डुलिपि नहि पढ़ल जा सकैए। कम्प्यूटरमे एक्के आधारपर विभिन्न फॉण्टक निर्माण






भेलासँ विभिन्न फॉण्ट विभिन्न तरहक लेखन रूपकेँ अंकित करैत अछि आ ओ सभ आपसमे परिवर्तनीय होइत अछि। से सभ १३२६ ई. क बादक सभ तरहक परिवर्तन (संयुक्ताक्षर सहित), जे परिवर्तन नहि वरन् लेखनक विभिन्न स्टाइल छल, क समावेश आब सम्भव भऽ गेल अछि।

अनुलग्नक १: कैथी लिपिमे मैथिलीक किछु उदाहरण (साभार जीनोम मैपिंग आ जीनियोलोजिकल मैपिंग, मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध भाग-१ आ २ , श्रुति प्रकाशन, २००८, २००९)

अनुलग्नक २: मिथिलाक कर्ण कायस्थक तिरहुता लिपिमे लिखल किछु पात (साभार मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण- मेजर विनोद बिहारी वर्मा, १९७३)

अनुलग्नक ३: लर्न मिथिलाक्षर- गजेन्द्र ठाकुर

अनुलग्नक ४: देवनागरी: तिब्बती: तिरहुता

अनुलग्नक ५: ब्राह्मीसँ तिरहुता धरि लिपिक विकास

[अनुलग्नक एहि क्रममे देल अछि, अनुलग्नक-४ (एक पन्ना) फेर अनुलग्नक-५ आ तकरा बाद अनुलग्नक- १-२-३]



देवनागरी	तिब्बती	तिरहुता
क	ཀ	𑒏
ख	ཁ	𑒐
ग	ག	𑒑
ङ	ང	𑒓
च	ཅ	𑒔
छ	ཆ	𑒕
ज	ཇ	𑒖
त	ཏ	𑒞
थ	ཐ	𑒟
द	ད	𑒠
न	ན	𑒢
प	པ	𑒣
फ	ཕ	𑒤
ब	བ	𑒥
म	མ	𑒧
य	ཡ	𑒨
र	ར	𑒩

देवनागरी	तिब्बती	तिरहुता
ल	ལ	𑒪
श	ཤ	𑒬
ष	ཥ	𑒭
ह	ཧ	𑒯
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9

क कि कु के को कं(न) कं(म) कृ

का की कू कै कौ कः कॄ

अ - ○ रिक्त
आ - ○ा
इ - ○ि
ई - ○ी
उ - ○ु
ऊ - ○ू
ए - ○े
ऐ - ○ै
ओ - ○ो
औ - ○ौ

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ ऋ ॠ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ऌ ॡ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल ळ व

श ष स ह

अं (न)
अं (म)
अः

ब्राह्मी एवं तिरहुता (1)

क्रमिक विकास

अ -

क -

ग -

त -

थ -

ध -

प -

ब -

य -

व -

ब्राह्मीक विकास (२) ब्राह्मी सँ तिरहुता

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह

5ई.पू. — रिक्त रिक्त

4ई.पू. — रिक्त रिक्त रिक्त

3ई.पू.

2ई. — रिक्त

5ई. — रिक्त

7ई. — रिक्त रिक्त रिक्त रिक्त Blank Blank Blank Blank Blank रिक्त

9ई.

11ई.

मैथिली

संयुक्ताक्षर

कैथी लिपि

वर्णमाला



अ आ इ उ ए ऐ

क

कँ खँ गँ घ

च

चँ च छँ जँ झँ झा

ट

टँ ठँ ठँ ड डे ढ ढ़ णँ ण णँ ण

त

त थ द दँ धँ थँ

प

प फ. ब ब भ म म म म

य

यँ र ल व क्षा

श्र ह ह

कुनजन झा बौकु झा

खे ठीठर

गाँ आत्माराम

गाँ कृश्नदत

जा

जे

बे शाख मूलनेश्वरीदत्त मीश्र शात

है

ढी ढी टुँ शालेमठुर पाँजि

ति ते ताराना थ ठाकुर

श्यामनाथ श्री प्रीत नाथ दि

थी हीरवी केश

प पा पै पु पो भैं मा भा

रां

मर्यादा ला लि गुँजँ पँनीँ ले ले पंद्रमणी ठाकुर

शु

स से सी सौं

श्री ठाकुरक बालक ठाकुरक बालक ह

(3)

कमलादेत

शात्य श्रीठो ग्रा कु कु मोटन

के डेउढी झींगुर हीदए

लूचाइ कल्यान रामदेव

रशाद परम

ब-व नीजुत्त (नियुक्त) रैआशत बन्देली मध्य

च्य न्त हूँ खु म्प

जीवपती

रूद्रपतीआ नन्द जल्दी पीताम्ब्र (पीताम्बर) मुबशीह राए

श्रीजैमोहन द्रैयामुआ ड्यो

म्हाराजरुद्रशीहक बाबुरैमापतशींघ

अँछि मरा सतँ (शतँ) मोकाँम सिंह तीशौंत

रघुबरै आकबालक कीशौरआकबालकै दुर्गानाथ

रौधानाथआक दौहीत्र पतीआकबालकै कीद्र्यानाथआ

लछमीदैतआ श्रीभीखरआक बालकै ग्राम रआम = ग्राँमें लोहना

महाराजछत्रशीहक दौहीत्र धरमरमआक गोशाइँ ग्राँम शबै श्रीमा

मैहैरबरठाकुरैक बालकै शाँनठाकुरक बालकै श्री शौरीनंदैन

[illegible]

१३३४|—

शोइती शकल गुणागार मरजादाक प्रा-
बार श्री जुत श्री पंजीकार श्री मीरखीआ-
झा शमनौ म्हाशऐरवु उतह- अजबलाल
शय मिशयकार शतंग - कुशल चमुमए
मे शतं आगा शुरती जे हम(र) कन्या फार
शा डागी दीशक नकर कपा श्री शामा -
नाथ झाक बालक शौ नीशचे मेल अधऽ(अधि)
ताही शौ अपने के लीखल अहए जे
अधीकार ताकी के शीधान्त लीखके देब-
न - हम खुद जेतो मग्र(मग) आज ४।१०।दीन
शे जइ भौ रहल अहए ताही शो गाए नही
मेल - जादा - नाइयका ता-१ माह जेठ
१३३४|—
शाल

[illegible]

1-. कन्याक परिचै

2-- कन्या - उदेकान्त झाक - जैनगर - मुल शतलखे शतौल —

3 पौत्री लाल झाक बीचाड़ी दौभीत्री पन्चौ झाक - ऐक

4 हडे़ वोड़ा - शीमरबनी - दोभीत्री पौत्री नीआ —

5 लाल झाक - जागुर - कमनगामा - पैन चोभे करमौं -

6 ल (प्रह्लोलि) - चीन्तामणि झा -- अड़ेवारु उशरौली

[illegible]



7

श्री

कोहबरा
तारीख : 3 माह माघ
शन ·१३४२ शाल
मुल्की

श्वस्ति - शकल - गुणागार - मस्ना - दाक पारावार - श्री - युक्त पंजीकार - जी शँ . इतः दुर्गा नाथश्च . नमशाकाराः शतम् = शतं - कुशलंच - स्तेका - कुशल नीक जानब - जाए - अपने लोकनीक - कुशला दी - प्रतिपल - अपेक्षीत. - शमाचार - जे अपनेक वो ए ठाम - कईएक दीन - आदमी - पठावल - मुदा अपने शँ भेटनहीं - भेल - पता लागल - जे - अपने शुलतानपुर - मे - छी - तै दुआरे कारीन्दा पठावल - अछी - जे - कृपआ - अपने शामील करी - दाक आबी . वा जदीचेत नही आबी तं इ लीखल - जाए जे - बलदेव झाक कान्या में - हमर अधीकार - हो की नहीं - आर - जदीचेत हो - ते - वो - हमरा - शँ - कतबा पाबी शके = छथी बीशेशतः - ते - अपने - अवश्य आबी - शमए नहीं - अछी - माघेक - शुघमे हमरा शुध करतव्य - अछी - वो - हमरा शं मोवलग - २००) मांगै - छथी = हम अपनेक आशा पर - नीरभर - छी - शाब हालत - अपने खोलाशा - लीखी, - कार्ज - जरुरी - अछी - आर - बीशेश की लीखू = कुशलादी लीखी शुखी कैल जाए _ शमए थोड़ रहल छै —

दुर्गानाथ

(8)

स्वशिति । शकल गुणागार मर्यादाक शागर श्री जुत(युत) पन्जीकार श्रीखौआ ओ का

नमशकार आगाँ आहाँके पीता हरखीझा पन्जीकार ग्राम रशाढ़ बौशी-हमर डेउढी

शाधुऔली बौ- डेउढी आ दुआ नगर ? रामनगर ओ डेउदी चम्पा नगर राज रेआशत

बन्देतली गौतेर मध्य - बराबरि रहि कार्य अपन अधिकार मालो ओ शीध्यान्त करै छलाह

आब अहू बसुबी पाँति पद्री आ पन्जीकारक मध्य मीजुग मेलहू तैंय आहाँके

परती(प्रति) रत पत्र लीखी देल जाइ अछि जे आहाँ बराबरि बदेरतुर शाबीक जेको आहाँक

पीता कार्य शीध्यान्तक गैरह छलाह अहू बराबरि बदरतुर शाबीक केल आब और

जे अहाँक पीता शरकार शा मेरे छलैन्ह शे मोता बीक अहू के बराबरि मेरलकरत

रहैं ? ताँरमे पत्र बैतरीका शनद देल जाइ अछि रे ती- बैशा रव कृरन शप्रमी रबि

मोताबीक तारी रव १८ बेशारव १३१८ शाल मुल्की

(८३)

श्री राजा पद्मा नन्द सिंह
बहादुर



स्वशिति (स्वस्ति) शकल (सकल) गुणागारेखु (षु) श्री युत (युत) मीरखीआ झा महाशएखु (षु)
श्री मन मोहनक नमस्कार आगाँ हशम्हरत हो आ अहाँक महेश झा
श्री श्री शरकार में इतलाऐ देलथीन- शरकार शौं हुकुम मेल जे शबहा (सभा)
बास्तु - करथी - शबहा बास्तु-क- जे - अहाँके - रुपैआ भेटै अछ शे तहबील मे-रुपैआ
औछ शौं पठाऐ देल जाऐत- वो शरकार हुकुम देलैन जे शुन्दर बाबुक- अधीकार
माला शबा हा शौं पुर्व तैंयार कै हाशील करथी तें इशबुल हुकुम श्री श्री
शरकार लीखल अछ जे-शबहा शौ पुर्व - अधीकार माला तैं आर कै ऐकदीनक
बो- आश्ते (वास्ते) अहाँ खुद आबी के हाजील कै दीऔन्ह - शे नीक जे का जबाब
लीखब शरकार मे इतलाऐ दीऔन्ह. हर्म. ता० २२ फु० १८११ ई०

(10)

536

1 मुल करमहे अनलपुर श्री रुदरमनी झाक बालक + पौत्र - चनी झा + परपौत्र
2 श्याम झा + दोभीत्र - भाइनाथ झा - ऐकहरे बोड़ा खतुरी - दोभीत्री पुत्र -
3 देबन झा नरौने शुल्हनी - देबन झा कॉं बीवाह - नबटोल पल्लीवाड़ पाली —
परुद्रमनी झा दोभीत्र पभूनाथ झा पगुलवाड़ बढ़ीआम + ॥ ═══ ॥ ═══ ॥





(11)

कन्याँ

वीर ठाकुर पाजी —
भीखारी झा पाजी —
रामदेव मीशर पाजी —
शुरगन(ण) पाजी =
मोती झा पाजी —
पीताम्ब्र(र) झा पाजी =
रुद्रपती झा पाजी =
हेमांगत राए पाजी =

गुणाकर झा

(A) [illegible]

[illegible] — 1

12

[illegible] — 2

[illegible]

[illegible] — [illegible] — 3

[illegible] — [illegible] — 4

[illegible] — [illegible] — 5

[illegible] — [illegible] — 6

[illegible] — [illegible] — 7

[illegible] — 8

[illegible] — [illegible] — 9

[illegible] — [illegible] — 10

[illegible] — 11

[illegible] — [illegible] — 12

[illegible] — [illegible] — 13

[illegible] — [illegible] — 14

[illegible] — [illegible] — 15

[illegible] — [illegible] — 16

[illegible] — [illegible] — 17

[illegible] — 18

1 [illegible] — [illegible] — 19

2 [illegible] — [illegible] — 20

3 [illegible] — [illegible] — 21

4 [illegible] — [illegible] — 22

[illegible] — 23

1 [illegible] — [illegible] — 24

2 [illegible] — [illegible] — 25

3 [illegible] — [illegible] — 26

4 [illegible] — [illegible] — 27

5 [illegible] — [illegible] — 28

6 [illegible] — [illegible] — 29

7 [illegible] — [illegible] — 30

8 [illegible] — [illegible] — 31

(मि) श्री दुर्गा माधव गणेशाः श्री राम जी शहाय - 1 (13)

श्री श्री श्री महाराज पदमा नंद शींह बाहादुरके कन्याबदन झाक दौमौत्रीक अधिकार माला - 2

ग्राम - बेहट — तीशौत - पाजी (पाँजि) - 3

गदापानी झाक बालक — परवीया झाक दौमौत्र = तीशौत पाजी - 4

जगतबन्धु झा-क बालक - बीदयानाथ झाक दौहीत्र = मोलन झा - 5

गोपीनाथ झा क - बालक - गंगाधर झाक दौहीत्र : रोहाड़ - 6

लक्ष्मन झा क बालक - शाधु ठाकुरक दौहीत्र = रूद्रपतीझा - 7

ग्राम बहुरी - 8

श्री प्रीतनाथ मिश्रक बालक - श्री श्रीरीनाथ झाक दौहीत्र : - शंकर राए - 9

(मानन्द मिश्रक बालक - श्री श्रीरीनाथ झाक दौहीत्र शंकर राए - पाजी - 10

ग्राम नवटोल - 11 — भुवन्धर मीश्रक दौहीत्र रोहाड़ - 3 - 12

श्री पुरन्दर झाक बालक - — शंकर राए पाजी = 13

री(की)शोर मीश्रक बालक - जोगानन्द झाक दौहीत्र मीरवारी झा पाजी = 14

बद्रीनाथ झाक बालक जीवधी झाक दौहीत्र मनजन झा पाजी = 15

पं गशीमीशरक बालक हीदनाथ झाक दौहीत्र

श्री फुद्दे झाक बालक - भुवन्धर मीश्रक दौहीत्र शुबन्धु झा पाजी - 16

झींगुर मीश्रक बालक बेणी झाक दौहीत्र शीधँवाड़ झा पाँजी - 17

ग्राम भटपुरा - ~~18~~ 18 — फलाही झाक दौहीत्र रूद्रपती झा पाजी 19

आत्माराम झाक बालक - कुमदी झाक दौहीत्र जगदीश मीशा पाजी ~~20~~ ~~19~~ 20

श्री सत्यनाराएन मीशरक बालक - तोताई झाक दौहीत्र - जीवनाथ झा पाजी - 21

धनानन्द मीशाक बालक कुनजी झाक बालक - कनटू झाक दौहीत्र वीरठाकुर पाजी 22

ग्राम मंगरौली - 23

श्री जनार्दन झाक बालक - कनट झा क दौहीत्र = वीर ठाकुर पाजी 24

श्री जादव झाक बालक चुमन झा क दौहीत्र मीरवारी झा पाजी - 25

श्री खगपैनी झाक बालक वीश्वनाथ झा क दौहीत्र = रामदेव मीशा - पाजी 26

श्री शुलपैनी झाक बालक आत्माराम झाक दौहीत्र : शुरगन झा पाजी - 27

श्री ठीठर झाक बालक बौकु झा क दौहीत्र मोती झा पाजी - 28

श्री कलाह(ध)र झा क बालक मीत्रनाथ झाक दौहीत्र पीताम्बर झा पाजी - 29

श्री कुलाह-(ध)र झाक बालक - पुहपी झाक दौहीत्र रूद्रपती झा पाजी - 30

श्री गदापानी झाक बालक हीदएमन झाक दौहीत्र हेमीगत(द)राए पाजी 31

[illegible] — 1

[illegible] — 2

[illegible] — 3

[illegible] — 4

[illegible] — 5

[illegible] — (5)

[illegible] = 6

[illegible] = 7

[illegible] = 8

[illegible] — 9

[illegible] = 10

[illegible] = 11

[illegible] — 12

[illegible] — 13

[illegible] — 14

[illegible] — 15

[illegible] — 16

[illegible] = 17

[illegible] — 18

[illegible] — 19

[illegible] — 20

[illegible] = 21

[illegible] — 22

[illegible] — 23

[illegible] — 24

[illegible] — 25

[illegible] = 26

[illegible] — 27

[illegible] — 28

(B)

ग्राम - चनौर - 1 15

श्री झलना झाक बालक = गोपाल मीशरक दौहीत्र - मनजन झा - पाँजी - 2

गुण शीर झाक बालक = ~~कुरुण~~ कृशनदत्त मीशरक दौहीत्र मनजन झा पाजी — 3

रूपनारायन रायक बालक शयाम नाथ ठाकुरक दौहीत्र शुरगन शाखा - 4

वेद नारायन रायक बालक श्री जा(धा)र झाक दौहीत्र शुरगण(ड़) पाजी 5

टूमनी झाक बालक धीरनाथ मीशरक दौहीत्र मंजन झा पाजी — (क)

ग्राम शरीशब = 6

अमृतकर झाक बालक = जै नारायन झाक दौहीत्र दशाध मीशा पाँजी 7

अमृतका झाक बालक = मुलीधर झाक दौहीत्र दशाध मीशा पाजी 8

जीवधर मीशरक बालक = हरखमैनी मीशरक दौहीत्र - वीर ठाकुर = 9

देवधर मीशरक बालक = बाला मीश्रक दौहीत्र भीखारी झा पाजी = 10

भुवनधर मीशरक बालक = महीनाथ मीश्रक दौहीत्र - भीखारी झा पाजी = 11

धर्मनाथ झाक बालक = परशमैन झाक दौहीत्र रुद्रपती झा पाजी = 12

गुणा(ड़)पति झाक बालक = मनपति झाक दौहीत्र रोहाड़ पाजी = 13

मोदनाथ झाक बालक = भीखीआ झाक दौहीत्र शंकर राए पाजी = 14

झोटन झाक बालक = मीननाथ झाक दौहीत्र वीर ठाकुर पाजी = 15

कल्यान का झाक बालक = जालपा दत्त झाक दौहीत्र दशाध मीशा पाजी = 16

श्री मनमोहन झाक बालक = महराजकुमार बाबु बासुदेव श्रीहंस दौहीत्र रुद्रपती झा पाजी = 17

श्री तेना मीशरक बालक = पवीआ झाक दौहीत्र वीर ठाकुर पाजी = 18

गोपीनाथ झाक बालक = लक्ष्मीदत्त झाक दौहीत्र भीखारी झा पाजी = 19

कारी झाक बालक = गंगाधर झाक दौहीत्र शुबनधु झाक पाजी = 20

ग्राम पाही टोल = 21

चन्द्रमणी ठाकुरक बालक = मतीनाथ झाक दौहीत्र गुणाकर झा पाजी - 22

हेमपति झाक बालक = ठेंगनी झाक दौहीत्र शंकर राए पाँजी - 23

श्री लूपाई मीशरक बालक = गोपाल झाक दौहीत्र रोहाड़ पाजी - 24

केशी लाल मीशरक = गोवीनद झाक दौहीत्र रोहाड़ पाजी - 25

ग्राम - 26

कमलादत झाक बालक = ~~धनानन्द झाक दौहीत्र रामदेव मीशा पजी~~ =
गोविन्द झाक दौहीत्र शंकर राए - पाजी 27

धरानाथ झाक बालक धनानन्द झाक दौहीत्र रामदेव मीशा - पजी 28

(C) 16

[illegible] — 1

[illegible] — [illegible]
[illegible] — [illegible] — 2
[illegible] — [illegible] — 3
[illegible] — [illegible] — 4
[illegible] — [illegible] — 5
[illegible] — 6
[illegible] — [illegible] — 7
[illegible] — [illegible] — 8
[illegible] — [illegible] — 9

[illegible] — 10

[illegible] — [illegible] — 11
[illegible] — [illegible] — 12
[illegible] — [illegible] — 13

[illegible] — 14

[illegible] — [illegible] — 15
[illegible] — [illegible] — 16
[illegible] — [illegible] — 17

[illegible] — 18

[illegible] — [illegible] — 19
[illegible] — [illegible] — 20
[illegible] — [illegible] — 21
[illegible] — [illegible] — 22
[illegible] — [illegible] — 23
[illegible] — [illegible] — 24
[illegible] — [illegible] — 25
[illegible] — [illegible] — 26
[illegible] — [illegible] — 27
[illegible] — [illegible] — 28
[illegible] — [illegible] — 29

ग्राम - ईशहपुर - 1

रघुवंर झाक बालक = गंगानाथ झाक दौहित्र माधवझा पाजी 2

किशोर झाक बालक = हीरा मीशक दौहीत्र = पीताम्बर(र) - पाजी 3

नयन झाक बालक = बंगाली मीशक दौहीत्र - मनजन झा पाजी - 4

दामोदर झाक बालक = दामोदर झाक दौहित्र - हेमांगत राए - 5

~~मनमोहन झाक बालक~~ : 6

~~मोती झाक बालक~~ = महाराज छत्र सिंह शींहक दौहीत्र - रुद्रपती झा - 7

गती झाक बालक भोलानंद मीश्रक दौहीत्र - मोती झा पाँजी - 8

प्रीत मोहन झाक बालक कुधीकर झाक दौहीत्र - माधवमीशर पाजी - 9

ग्राम - हटार(रु) - 10

गणपती झाक बालक = बीदयानाथ झाक दौहीत्र = भोलन झा पाजी - 11

धर्मानन्द झाक बालक = पाशमनी झाक दौहीत्र - रुद्रपती झा पाजी - 12

श्री कृशन दत्त झाक बालक = बाबु श्री गणेश दत्त शींहक दौहीत्र = मोती झा पाजी - 13

ग्राम - रैआम - 14

श्री आदीनाथ झाक बालक = लोकनाथ मीश्रक दौहीत्र मोती झा पाजी - 15

रवगन झाक बालक = भोलानाथ झाक दौहीत्र रुद्रपती झा पाजी - 16

लुलाई झाक बालक = लक्ष्मी दत्त झाक दौहीत्र - जीवनाथ झा पाजी - 17

ग्राम - लोहना - 18

घतानन्द झाक बालक = बाबु रमादत्त शींहक दौहीत्र - रामदेव मीशा पाजी - 19

श्री फेकु झाक बालक = महाराज रुद्र शींहक दौहीत्र शंकर राए पाजी - 20

भोलानन्द झाक बालक = मोहनलाल झाक दौहीत्र जीवनाथ झा पाजी - 21

श्री मनमान झाक बालक = भवापती झाक दौहीत्र शंकर राए पाँजी - 22

टीकानन्द झाक बालक = हीदरमन झाक दौहीत्र हेमांगत राए पाजी - 23

मनपती झाक बालक = गोबीनद झाक दौहीत्र रोहार पाजी - 24

रघुपती झाक बालक = खमान झाक दौहीत्र रोहार पाजी - 25

जोगपती झाक बालक = परदीआ झाक दौहीत्र रोहार 26

बबुजन झाक बालक = भागीथ झाक दौहीत्र दशाघ मीश्र - 27

बबुजन झाक बालक = बाबु प्रजापत शींह दौहीत्र शुरगण पजी - 28

लोकानंद झाक बालक = मनमान झाक दौहीत्र शुरगण पाजी - 29

[illegible] — 1

[illegible] — [illegible] 2

[illegible] — [illegible] 3

~~[illegible]~~

~~[illegible]~~

~~[illegible]~~

[illegible] — [illegible] 4

[illegible] — 5

[illegible] [illegible] 6

[illegible] — 7

[illegible] [illegible]

~~[illegible]~~

[illegible] [illegible] 9

[illegible] [illegible] 10

[illegible] [illegible] 11

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] 16

[illegible] [redacted] [illegible]

~~[illegible]~~

[illegible] — सोनपुर

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] 17

[illegible] [illegible] 18

19

[illegible] — 20

[illegible] [illegible] 21

[illegible] [illegible] 22

~~[illegible]~~ [illegible] [illegible]

~~[illegible]~~ [illegible] [illegible]

ग्राम - कोलगंज -1 (D) (19)

दुर्गानाथ मिश्रक बालक = दुखीआ झाक दौहीत्र - पाजी जीवनाथ झा - 2

~~पाजी जीवनाथ झा - 2~~

श्रीनाथ मीश्रक बालक = दुखीआ झाक दौहीत्र पाजी - जीवनाथ झा - 3

रघुवीर मीश्रक बालक = लोकनाथ मीश्रक दौहीत्र पाजी - मोती झा - 4

ग्राम - उजान शारदापुर - 5

श्री मैबी (मैं) झाक बालक - छकन झाक दौहीत्र पाजी - मोलन झा - 6

ग्राम - उजान - 7

उमापती झाक बालक - हरखी ठाकुर दौहीत्र पाजी मीकाली झा - 8

भवानंद झाक बालक = जीवपती झाक दौहीत्र पाजी मीकाली झा - 9

वीरन झाक बालक = अभए मीश्रक दौहीत्र - पाजी मोती झा - 10

बौम्म झाक बालक = बधान झाक दौहीत्र पाजी मीकाली झा - 11

लक्ष्मीदत्त झाक बालक = परबीआ झाक दौहीत्र - पाजी मीकाली झा 12

रजनीदत्त झाक बालक जीधर मीश्रक दौहीत्र - पाजी मीकाली झा - 13

श्री दामोदर झाक बालक - गोशाँइ मीश्रक दौहीत्र - पाजी - मीकाली झा - 14

श्री दामोदर झाक बालक - श्री बाबू गणेशदत्त शींहक दौहीत्र पाजी मोती झा - 15

श्री बबे झाक बालक कारी मीश्रक दौहीत्र - पाजी रुद्रपती झा - 16

शीनपुर 0

श्री तारानाथ ठाकुर बालक - गदापाणी झाक दौहीत्र मीकाली झा पाजी - उजान - धर्म पुर - 17

श्री रघुनाथ झाक बालक बाबू श्री डोलपती शींहक दौहीत्र - पाजी लोचो पाठक - 18

श्री मीरा झाक बालक कीशो झाक दौहीत्र - पाजी शुकन्धु झा - 19

ग्राम - शर्वशीमा वो शीनपुर - 20

शोभ ठाकुर बालक - बली झाक दौहीत्र तीशौत - पाजी - 21

महेश्वर ठाकुर बालक श्यामु झाक दौहीत्र मीकाली झा पाजी - 22

श्री रघुनंदन ठाकुर बालक ऋषीकेश ठाकुर दौहीत्र - मीकाली झा पाजी - 23

श्री श्रीनंदन ठाकुर बालक = लोकनाथ मीश्रक दौहीत्र - पाजी मोती झा - 24

1 श्री दुर्गा श्री मातृक श्री गणेशाः पान्तु ॥

3 प्रत अपेक्षित ~~~

4 कें श्री पद्मा नेन्द्र सिंह - क नमस्कारसंतं

5 आगाँ हमरा - अपन - कुरसीनामाक ~~~

6 ~~~ अहाँ सौं ~~~

7 लोकलत अविरजे क्रिया पूर्वक अहाँ

8 पोथी लेलैं जतेक जरुरी · मैं सुकै रहि मोकाम

9 ड्योढी रामनग्र(?) शुभागमन - पूर्वक हमरा सौं

10 भेंट कै जाउ विसेरव कुसलादि लिखैत रहब·

11 इति रवौ

चित्र सं०–२

Learn Mithilakshara













Learn Mithilakshara





GAJENDRA THAKUR



श्रुति प्रकाशन

दिल्ली






Ist edition 2009 of **Learn Mithilakshara**

author Gajendra Thakur

published by SHRUTI PUBLICATION
21/8, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: (011) 25889656-58 Fax: 011-25889657

ISBN : 978-93-80538-55-6

Price: Rs. 5/- (INR)

SHRUTI PUBLICATION
Website: http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
M/S AJAY ARTS
4393/4-A, Ist Floor, Ansari Road,
Darya Ganj, New Delhi-110002
(O) 011-23288341, 9968170107



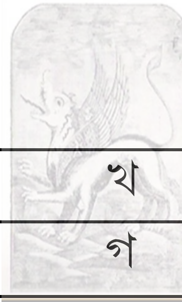


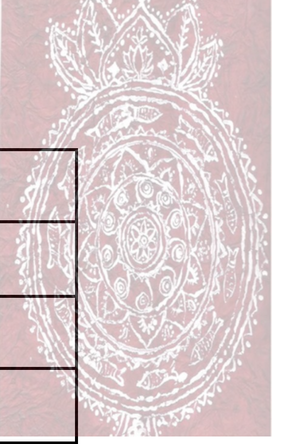
Mithilakshara

The following alphabets exist in MithilakShara (devanagari followed by MithilakShara)

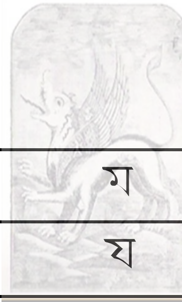
Vowels

Devanagari	MithilakShara
अ	অ
आ	আ
इ	ই
ई	ঈ
उ	উ
ऊ	ঊ
ए	এ
ऐ	ঐ
ओ	ও
औ	ঔ
अं	অং
अः	অঃ
अँ	অঁ
ऋ	ঋ
ॐ	ওঁ
Consonants	
क	ক

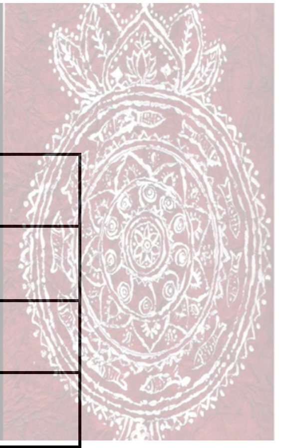


ख	খ
ग	গ
घ	ঘ
ङ	ঙ
च	চ
छ	ছ
ज	জ
झ	ঝ
ञ	ঞ
ट	ট
ठ	ঠ
ड	ড
ढ	ঢ
ण	ণ
त	ত
थ	থ
द	দ
ध	ধ
न	ন
प	প
फ	ফ
ब	রঁ
भ	ভ







म	𑒧
य	𑒨
र	𑒩
ल	𑒪
व	𑒫
श	𑒬
ष	𑒭
स	𑒮
ह	𑒯
क्ष	𑒏𑓂𑒭
त्र	𑒞𑓂𑒩
ज्ञ	𑒖𑓂𑒘
Nukta Consonants	
य़	**𑒨𑓃**
ड़	𑒛𑓃
ढ़	𑒜𑓃
Consonants with Matra	
क	𑒏
का	𑒏𑒰

कि	কি
की	কী
कु	কু
कू	কূ
के	কে
कै	কৈ
को	কো
कौ	কৌ
कं	কं
कः	কঃ
कँ	কঁ
कॉ	কॉ
कॅ	কॅ
कृ	কৃ
क्र	ক্র

SOME COMPLEX ALPHABETS in MithilakShara

Devanagari	Mithilakshara
क्त्य	ক্ত্য
क्त्र	ক্ত্র
त्क	ত্ক
न्य	ন্য
ल्व	ল্ব





श्च	𑒬𑓂𑒔
क्र	𑒏𑓂𑒩
श्र	𑒬𑓂𑒩
प्र	𑒣𑓂𑒩
ल्व	𑒪𑓂𑒫
र्क	𑒩𑓂𑒏
त्	𑒞𑓂
त्य	𑒞𑓂𑒨
त्त्य	𑒞𑓂𑒞𑓂𑒨
ङ्क्य	𑒓𑓂𑒏𑓂𑒨
त्त्व	𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫
सु	𑒮𑒳
यु	𑒨𑒳
र्ग	𑒩𑓂𑒑
र्क	𑒩𑓂𑒏
ष्ट	𑒭𑓂𑒙
मु	𑒧𑒳 (𑒧𑒳)
हु	𑒯𑒳 (𑒯𑒳)
खु	𑒐𑒳
घु	𑒒𑒳
चु	𑒔𑒳
छु	𑒕𑒳
टु	𑒙𑒳





ठु	𑒚𑒳
थु	𑒟𑒳
बु	𑒥𑒳
भु	𑒦𑒳
गु	𑒑𑒳
जु	𑒖𑒳
दु	𑒠𑒳
नु	𑒢𑒳
पु	𑒣𑒳
भु	𑒦𑒳
यु	𑒨𑒳
लु	𑒪𑒳
शु	𑒬𑒳
सु	𑒮𑒳
कु	𑒏𑒳
णु	𑒝𑒳
तु	𑒞𑒳
धु	𑒡𑒳
रु	𑒩𑒳
षु	𑒭𑒳
हु	𑒯𑒳 (𑒯𑒳)
त्रु	𑒞𑓂𑒩𑒳
कृ	𑒏𑒵





चॄ	চৄ
जॄ	জৄ
दॄ	দৄ
तॄ	তৄ
धॄ	ধৄ
भॄ	ভৄ
हॄ	হৄ
खृ	খৃ
गृ	গৃ
जृ	জৃ
पृ	পৃ
सृ	সৃ
कृ	কৃ
तृ	তৃ
दृ	দৃ
बृ	ব়ঁৃ
भृ	ভৃ
हृ	হৃ
र	ব
र	**ৰ**
ब	ব়ঁ
य	য
य़	**য়**





क्क	ক্ক
क्ख	ক্খ
क्त	ক্ত
क्न	ক্ন
क्म	ক্ম
क्य	ক্য
क्र	ক্র
क्ल	ক্ল
क्व	ক্ব
क्स	ক্স
ख्त	খ্ত
ख्य	খ্য
ख्र	খ্র
ख्व	খ্ব
ग्ग	গ্গ
ग्द	গ্দ
ग्ध	গ্ধ
ग्न	গ্ন
ग्व	গ্ব
ग्र	গ্র
ग्ल	গ্ল
ग्य	গ্য
घ्घ	ঘ্ঘ





घ्न	𑒒𑓂𑒢
घ्र	𑒒𑓂𑒩
घ्य	𑒒𑓂𑒨
ङ्क	𑒓𑓂𑒏
ङ्ख	𑒓𑓂𑒐
ङ्ग	𑒓𑓂𑒑
ङ्घ	𑒓𑓂𑒒
च्च	𑒔𑓂𑒔
च्छ	𑒔𑓂𑒕
च्य	𑒔𑓂𑒨
च्छ्र	𑒔𑓂𑒕𑓂𑒩
च्छृ	𑒔𑓂𑒕𑒵
च्छ्व	𑒔𑓂𑒕𑓂𑒫
ज्ज	𑒖𑓂𑒖
ज्झ	𑒖𑓂𑒗
ज्र	𑒖𑓂𑒩
ज्य	𑒖𑓂𑒨
ज्व	𑒖𑓂𑒫
ञ्च	𑒘𑓂𑒔
ञ्छ	𑒘𑓂𑒕
ञ्ज	𑒘𑓂𑒖
ञ्झ	𑒘𑓂𑒗
ट्ट	𑒙𑓂𑒙





ट्य	𑒙𑓂𑒨
ट्र	𑒙𑓂𑒩
ठ्ठ	𑒚𑓂𑒚
ठ्य	𑒚𑓂𑒨
ड्ग	𑒛𑓂𑒑
ड्ड	𑒛𑓂𑒛
ड्र	𑒛𑓂𑒩
ढ्य	𑒜𑓂𑒨
ण्ट	𑒝𑓂𑒙
ण्ठ	𑒝𑓂𑒚
ण्ड	𑒝𑓂𑒛
ण्ण	𑒝𑓂𑒝
ण्य	𑒝𑓂𑒨
ण्व	𑒝𑓂𑒫
त्क	𑒞𑓂𑒏
त्ख	𑒞𑓂𑒐
त्न	𑒞𑓂𑒢
त्प	𑒞𑓂𑒣
त्म	𑒞𑓂𑒧
त्स	𑒞𑓂𑒮
त्त	𑒞𑓂𑒞
त्य	𑒞𑓂𑒨
त्र	𑒞𑓂𑒩



त्व	ত্ব
थ्र	থ্র
थ्य	থ্য
थ्व	থ্ব
द्ग	দ্গ
द्द	দ্দ
द्ध	দ্ধ
द्भ	দ্ভ
द्म	দ্ম
द्य	দ্য
द्र	দ্র
द्व	দ্ব
ध्य	ধ্য
ध्र	ধ্র
ध्व	ধ্ব
न्त	ন্ত
न्द	ন্দ
न्ध	ন্ধ
न्न	ন্ন
न्य	ন্য
न्व	ন্ব
प्त	প্ত
प्न	প্ন





प्प	𑒣𑓂𑒣
प्य	𑒣𑓂𑒨
प्र	𑒣𑓂𑒩
प्ल	𑒣𑓂𑒪
प्व	𑒣𑓂𑒫
प्स	𑒣𑓂𑒮
फ्र	𑒤𑓂𑒩
फ्ल	𑒤𑓂𑒪
ब्ज	𑒥𑓂𑒖
ब्द	𑒥𑓂𑒠
ब्ध	𑒥𑓂𑒡
ब्य	𑒥𑓂𑒨
ब्र	𑒥𑓂𑒩
भ्य	𑒦𑓂𑒨
भ्र	𑒦𑓂𑒩
भ्व	𑒦𑓂𑒫
म्न	𑒧𑓂𑒢
म्प	𑒧𑓂𑒣
म्फ	𑒧𑓂𑒤
म्ब	𑒧𑓂𑒥
म्भ	𑒧𑓂𑒦
म्म	𑒧𑓂𑒧
म्य	𑒧𑓂𑒨







म्र	ম্র
म्ल	ম্ল
म्व	ম্ব
य्य	য্য
य्व	য্ব
र्क	র্ক
र्ग	র্গ
ल्य	ল্য
ल्व	ল্ব
ल्क	ল্ক
ल्प	ল্প
व्य	ব্য
व्र	ব্র
व्व	ব্ব
व्ल	ব্ল
श्च	শ্চ
श्छ	শ্ছ
श्न	শ্ন
श्म	শ্ম
श्य	শ্য
श्र	শ্র
श्ल	শ্ল
श्व	শ্ব







श्श	𑒬𑓂𑒬
ष्क	𑒭𑓂𑒏
ष्ट	𑒭𑓂𑒙
ष्ठ	𑒭𑓂𑒚
ष्ण	𑒭𑓂𑒝
ष्प	𑒭𑓂𑒣
ष्म	𑒭𑓂𑒧
ष्य	𑒭𑓂𑒨
ष्व	𑒭𑓂𑒫
स्क	𑒮𑓂𑒏
स्ख	𑒮𑓂𑒐
स्त	𑒮𑓂𑒞
स्थ	𑒮𑓂𑒟
स्य	𑒮𑓂𑒨
स्ल	𑒮𑓂𑒪
ह्न	𑒯𑓂𑒢
ह्म	𑒯𑓂𑒧
ह्य	𑒯𑓂𑒨
ह्र	𑒯𑓂𑒩
ह्ल	𑒯𑓂𑒪
ह्व	𑒯𑓂𑒫
क्त्य	𑒏𑓂𑒞𑓂𑒨
क्त्र	𑒏𑓂𑒞𑓂𑒩





त्क	ত্ক
त्र्य	ত্র্য
त्क्र	ত্ক্র
ङ्क्र	ঙ্ক্র
ङ्क्त्र	ঙ্ক্ত্র
ङ्त्र	ঙ্ত্র
ङ्क्य	ঙ্ক্য
ङ्ख्य	ঙ্খ্য
ङ्ग्य	ঙ্গ্য
ङ्ग्र	ঙ্গ্র
ङ्घ्र	ঙ্ঘ্র
ङ्घ्य	ঙ্ঘ্য
च्छ्य	চ্ছ্য
च्छ्र	চ্ছ্র
च्छ्व	চ্ছ্ব
ण्ड्र	ণ্ড্র
ण्ड्य	ণ্ড্য
ण्ड्व	ণ্ড্ব
त्म्य	ত্ম্য
त्र्य	ত্র্য
त्त्य	ত্ত্য
द्ध्य	দ্ধ্য
द्ध्र	দ্ধ্র





द्भ्य	দ্ভ্য
द्‌भ	দ্‌ভ্র
न्त्र	ন্ত্র
न्त्य	ন্ত্য
न्त्व	ন্ত্ব
न्द्‌य	ন্দ্য
न्ध्य	ন্ধ্য
ब्ध्य	ব্ধ্য
ब्ध्व	র্ব্ধ্ব
म्भ्य	ম্ভ্য
र्त्य	র্ত্য
स्त्य	স্ত্য
त्स्य	ত্স্য
स्त्र	স্ত্র
त्स्न	ত্স্ন
स्थ्य	স্থ্য
कत्र्य	কত্রয
र्द्ध्व	র্দ্ধ্ব
म्र्य	ম্র্য
क्ष्ण	ক্ষ্ণ
क्ष्म	ক্ষ্ম
क्ष्य	ক্ষ্য
क्ष्व	ক্ষ্ব





श्च्य	শ্চ্য
ष्प्र	ষ্প্র
ष्ट्र	ষ্ট্র
ष्ठ्यू	ষ্ঠ্যূ
मु	ম্ব (হ্ম)
हु	হ্ম (হু)
ड़	ড়
ड़ि	ড়ি
ड़ी	ড়ী
ड़ै	ড়ৈ
ढ़	ঢ়
ढ़ि	ঢ়ি
ढ़ी	ঢ়ী
ढ़ै	ঢ়ৈ
कॉ	ক◌ॉ
डॉ	ড◌ॉ
ऋ	ঋ
ॠ	ৠ
ऌ	ঌ
ॡ	ৡ
क़	ক়
ख़	খ়

ग़	ग़
ज़	ज़
फ़	फ़









Conjuncts	
द + halant + द द्द	দ + halant + দ দ্দ
द + halant + ध द्ध	দ + halant + ধ দ্ধ
द + halant + व द्व	দ + halant + র দ্র
द + halant + म द्म	দ + halant + ম দ্ম
द + halant + य द्य	দ + halant + য




	𑒛𑓂𑒨
द + halant + ब द्ब	𑒠 + hal ant + 𑒥 𑒠𑓂𑒥
द + halant + न द्न	𑒠 + hal ant + 𑒢 𑒠𑓂𑒢
द + halant + ग द्ग	𑒠 + hal ant + 𑒑 𑒠𑓂𑒑
द + halant + घ द्घ	𑒠 + hal ant + 𑒒 𑒠𑓂𑒒
ह + halant + म ह्म	𑒯 + hal ant + 𑒧 𑒯𑓂𑒧
ह + halant + ल ह्ल	𑒯 + hal ant + 𑒪 𑒯𑓂𑒪
ह + halant + व ह्व	𑒯 + hal ant + 𑒫 𑒯𑓂𑒫
ह + halant + न ह्न	𑒯 + hal ant + 𑒢 𑒯𑓂𑒢





ह + halant + य ह्य	হ + hal ant + য হ্য
ष + halant + ट ष्ट	ষ + hal ant + ট ষ্ট
ष + halant + ठ ष्ठ	ষ + hal ant + ঠ ষ্ঠ
त + halant + त त्त	ত + hal ant + ত ত্ত
क + halant + त क्त	ক + hal ant + ত ক্ত
श + halant + च श्च	শ + hal ant + চ শ্চ
श + halant + व श्व	শ + hal ant + র শ্ব
श + halant + र श्र	শ + hal ant + ব শ্র

ऽ (*avagraha*) **ॐ**	ঽ (*avagraha*) ওঁ

Punctuation/ Quotation Marks:
The English symbols [ ] { } ( ) - + * / = । ; : . , " ? ! % \ ~ _ ` '

translate into the same symbols Marks.

PRACTISE AGAIN AND AGAIN:

Vowel :

Devanagari followed by MithilakShara:-

अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ऋ , ॠ , ऌ , ॡ , ए , ऐ , ओ , औ

অ , আ , ই , ঈ , উ , ঊ , ঋ , ৠ , ঌ , ৡ , এ , ঐ , ও , ঔ

Consonants: Devanagari followed by MithilakShara:-

क , ख , ग , घ , ङ

ক , খ , গ , ঘ , ঙ









च , छ, ज, झ, ञ

𑒔 , 𑒕, 𑒖, 𑒗, 𑒘

ट , ठ, ड, ढ, ण

𑒙 , 𑒚, 𑒛, 𑒜, 𑒝

त , थ, द, ध , न

𑒞 , 𑒟, 𑒠, 𑒡 , 𑒢

प , फ , ब , भ , म

𑒣 , 𑒤 , 𑒥 , 𑒦 , 𑒧

य , र, ल , व , श , ष , स , ह

𑒨 , 𑒩, 𑒪 , 𑒫 , 𑒬 , 𑒭 , 𑒮 , 𑒯

क का कि की कु कू कृ कॄ क्लृ क्लॄकॅ के कॆ कै

कॉ को कॊ कौ कं कः

ক কা কি কী কু কূ কৃ কৄ কৢ কৣ কॅ কে কॆ কৈ

কॉ কো কॊ কৌ কং কঃ

◌॒ *(anudatta)*

◌॑ *(udatta)*

◌॓ *(swarita)*

ँ (chandrabindu)

ं (anusvara)

ঃ (visarga)

ঽ (avagraha) ॐ (aum)

শ্রী (shree) ◌় (nukta)

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः अँ आँ ऋ ॠ ऌ

ष स ह क्ष ज्ञ ड़

অ আ ই ঈ উ ঊ এ ঐ ও ঔ অং অঃ অঁ আঁ ঋ, ৠ, ঌ, ৡ

ষ স হ ক্ষ জ্ঞ ড়

म् म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः म्र ऱ्म र्म मॅ






मॅ मँ माँ मृ मॄ मॢ मॣ म॑ म॒ मे॓ मे॔ म़
ळ

ম্ ম মা মি মী ম্ব(ম্ব) মূ মে মৈ মো মৌ মং মঃ ম্র ক্ম র্ম
মॅ মাॅ মঁ মাঁ মৃ মৄ মৢ মৣ ম॑ ম॒ ম॓ ম॔ ম়
ळ

(udaatta): ॒ (anudaatta): ॓ (grave): ॔
(accute): ़ (nukta) ॐ : শ্রী
অঽ : ~ (avagraha) ॰ : (abreviation)
। : (ardhacharana,khada danda)
॥ : (poornacharan)
১২৩৪৫৬৭৮৯০ 1234567890

REVISE:-

स्वर

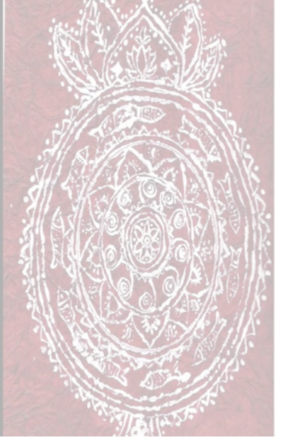
अ: अ। आ। इ। ई। उ। ऊ। ए। ऐ।

ओ। औ। अं। अः। ऋ। ॠ। ऌ। ॡ।

स्वर

অ: অ । আ । ই । ঈ | উ | ঊ | এ | ঐ |
ও | ঔ | অং | অঃ | ঋ । ৠ । ঌ । ৡ



व्यंजन

ব্যঁজন

क: क। का। कि। की। कु। कू। के।

कै। को। कौ। कं। कः

ক: ক । কা । কি । কী । কু । কূ । কে ।
কৈ । কো । কৌ । কং । কঃ

ख: ख। खा। खि। खी। खु। खू। खे।

खै। खो। खौ। खं। खः

খ: খ । খা । খি । খী । খু । খূ । খে ।
খৈ । খো । খৌ । খং । খঃ

ग: ग। गा। गि। गी। गु। गू। गे। गै।

गो। गौ। गं। गः

গ: গ । গা । গি । গী । গু । গূ । গে । গৈ
। গো । গৌ । গং । গঃ

घ: घ। घा। घि। घी। घु। घू। घे। घै।

घो। घौ। घं। घः

ঘ: ঘ । ঘা । ঘি । ঘী । ঘু । ঘূ । ঘে । ঘৈ
। ঘো । ঘৌ । ঘং । ঘঃ

ङ: ङ। ङा। ङि। ङी। ङु। ङू। ङे। ङै।

ङो। ङौ। ङं। ङः

ঙ: ঙ । ঙা । ঙি । ঙী । ঙু । ঙূ | ঙে | ঙৈ | ঙো | ঙৌ | ঙং | ঙঃ

च: च । चा । चि । ची । चु । चू। चे। चै।

चो। चौ। चं। चः

চ: চ । চা । চি । চী । চু । চূ | চে | চৈ | চো | চৌ | চং | চঃ

छ: छ । छा । छि । छी । छु । छू। छे। छै।

छो। छौ। छं। छः

ছ: ছ । ছা । ছি । ছী । ছু । ছূ | ছে | ছৈ | ছো | ছৌ | ছং | ছঃ

ज: ज । जा । जि । जी । जु । जू। जे। जै।

जो। जौ। जं। जः

জ: জ । জা । জি । জী । জু । জূ | জে | জৈ | জো | জৌ | জং | জঃ

झ: झ । झा । झि । झी । झु । झू। झे।

झै। झो। झौ। झं। झः

ঝ: ঝ । ঝা । ঝি । ঝী । ঝু । ঝূ | ঝে | ঝৈ | ঝো | ঝৌ | ঝং | ঝঃ

ञ: ञ । ञा । ञि । ञी । ञु । ञू। ञे।

ञै। ञो। ञौ। ञं। ञः

𑒖: 𑒖 । 𑒖𑒰 । 𑒖𑒱 । 𑒖𑒲 । 𑒖𑒳 । 𑒖𑒴 | 𑒖𑒹 |
𑒖𑒻 | 𑒖𑒼 | 𑒖𑒾 | 𑒖𑓀 | 𑒖𑓁

ट: ट । टा । टि । टी । टु । टू | टे | टै |

टो | टौ | टं | टः

𑒗: 𑒗 । 𑒗𑒰 । 𑒗𑒱 । 𑒗𑒲 । 𑒗𑒳 । 𑒗𑒴 | 𑒗𑒹 | 𑒗𑒻
| 𑒗𑒼 | 𑒗𑒾 | 𑒗𑓀 | 𑒗𑓁

ठ: ठ । ठा । ठि । ठी । ठु । ठू | ठे | ठै |

ठो | ठौ | ठं | ठः

𑒘: 𑒘 । 𑒘𑒰 । 𑒘𑒱 । 𑒘𑒲 । 𑒘𑒳 । 𑒘𑒴 | 𑒘𑒹 | 𑒘𑒻
| 𑒘𑒼 | 𑒘𑒾 | 𑒘𑓀 | 𑒘𑓁

ड: ड । डा । डि । डी । डु । डू | डे | डै |

डो | डौ | डं | डः

𑒙: 𑒙 । 𑒙𑒰 । 𑒙𑒱 । 𑒙𑒲 । 𑒙𑒳 । 𑒙𑒴 | 𑒙𑒹 | 𑒙𑒻
| 𑒙𑒼 | 𑒙𑒾 | 𑒙𑓀 | 𑒙𑓁

ढ: ढ । ढा । ढि । ढी । ढु । ढू | ढे | ढै |

ढो | ढौ | ढं | ढः

𑒚: 𑒚 । 𑒚𑒰 । 𑒚𑒱 । 𑒚𑒲 । 𑒚𑒳 । 𑒚𑒴 | 𑒚𑒹 | 𑒚𑒻
| 𑒚𑒼 | 𑒚𑒾 | 𑒚𑓀 | 𑒚𑓁

ण: ण । णा । णि । णी । णु । णू | णे | णै |

णो। णौ। णं। णः

ণ: ণ । ণা । ণি । ণী । ণু । ণূ | ণে | ণৈ | ণো | ণৌ | ণং | ণঃ

तः त । ता । ति । ती । तु । तू। ते। तै। तो। तौ। तं। तः

ত: ত । তা । তি । তী । তু । তূ | তে | তৈ | তো | তৌ | তং | তঃ

थः थ । था । थि । थी । थु । थू। थे। थै। थो। थौ। थं। थः

থ: থ । থা । থি । থী । থু । থূ | থে | থৈ | থো | থৌ | থং | থঃ

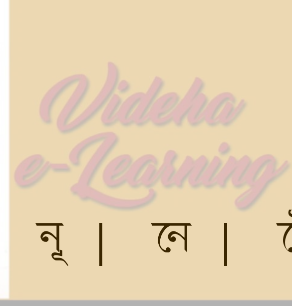
दः द । दा । दि । दी । दु । दू। दे। दै। दो। दौ। दं। दः

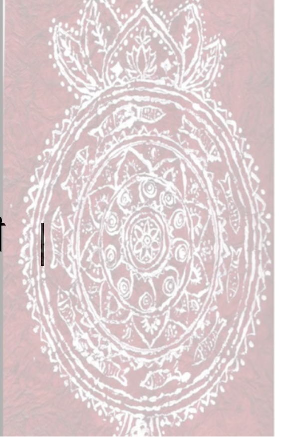
দ: দ । দা । দি । দী । দু । দূ | দে | দৈ | দো | দৌ | দং | দঃ

धः ध । धा । धि । धी । धु । धू। धे। धै। धो। धौ। धं। धः

ধ: ধ । ধা । ধি । ধী । ধু । ধূ | ধে | ধৈ | ধো | ধৌ | ধং | ধঃ

नः न । ना । नि । नी । नु । नू। ने। नै। नो। नौ। नं। नः



ন: ন । না । নি । নী । নু । নূ | নে | নৈ |
নো | নৌ | নং | নঃ

प: **प । पा । पि । पी । पु । पू। पे। पै।**
पो। पौ। पं। पः
প: প । পা । পি । পী । পু । পূ | পে | পৈ
| পো | পৌ | পং | পঃ

फ: **फ । फा । फि । फी । फु । फू। फे।**
फै। फो। फौ। फं। फः
ফ: ফ । ফা । ফি । ফী । ফু । ফূ | ফে |
ফৈ | ফো | ফৌ | ফং | ফঃ

ब: **ब । बा । बि । बी । बु । बू। बे। बै।**
बो। बौ। बं। बः
ৰ: ৰ । ৰা । ৰি । ৰী । ৰু । ৰূ | ৰে | ৰৈ
| ৰো | ৰৌ | ৰং | ৰঃ

भ: **भ । भा । भि । भी । भु । भू। भे।**
भै। भो। भौ। भं। भः
ভ: ভ । ভা । ভি । ভী । ভু । ভূ | ভে |
ভৈ | ভো | ভৌ | ভং | ভঃ

म: **म । मा । मि । मी । मु । मू। मे। मै।**
मो। मौ। मं। मः

ম: ম । মা । মি । মী । ম্ব (ঝ) । মূ | মে |
মৈ | মো | মৌ | মং | মঃ

य: य । या । यि । यी । यु । यू। ये। यै।

यो। यौ। यं। यः

য: য । যা । যি । যী । য্ব । যূ | যে | যৈ
| যো | যৌ | যং | যঃ

र: र । रा । रि । री । रु । रू। रे। रै।

रो। रौ। रं। रः

ব: ব । বা । বি । বী । রু । রূ | বে | বৈ
| বো | বৌ | বং | বঃ

ल: ल । ला । लि । ली । लु । लू। ले। लै।

लो। लौ। लं। लः

ন: ন । না । নি । নী । ন্ব । নূ | নে | নৈ
| নো | নৌ | নং | নঃ

व: व । वा । वि । वी । वु । वू। वे। वै।

वो। वौ। वं। वः

র: র । রা । রি । রী । র্ । রূ | রে | রৈ |
রো | রৌ | রং | রঃ

स: स । सा । सि । सी । सु । सू। से।

सै। सो। सौ। सं। सः

স: স । সা । সি । সী । স্ব । সূ | সে | সৈ
| সো | সৌ | সং | সঃ

षः षा । षा । षि । षी । षु । षू। षे।
षै। षो। षौ। षं। षः
ষ: ষ । ষা । ষি । ষী । ষ্ব । ষূ | ষে | ষৈ
| ষো | ষৌ | ষং | ষঃ

शः श । शा । शि । शी । शु । शू। शे। शै।
शो। शौ। शं। शः
শ: শ । শা । শি । শী । শ্ব । শূ | শে | শৈ
| শো | শৌ | শং | শঃ

हः ह । हा । हि । ही । हु । हू। हे। है।
हो। हौ। हं। हः
হ: হ । হা । হি । হী । হু (হ্) । হূ | হে |
হৈ | হো | হৌ | হং | হঃ

क्षः क्ष । क्षा । क्षि । क्षी । क्षु । क्षू। क्षे।
क्षै। क्षो। क्षौ। क्षं। क्षः
ক্ষ: ক্ষ । ক্ষা । ক্ষি । ক্ষী । ক্ষু । ক্ষূ | ক্ষে |
ক্ষৈ | ক্ষো | ক্ষৌ | ক্ষং | ক্ষঃ

त्रः त्र । त्रा । त्रि । त्री । त्रु । त्रू। त्रे। त्रै।

त्रो। त्रौ। त्रं। त्रः

ত্র: ত্র । ত্রা । ত্রি । ত্রী । ত্রু । ত্রূ | ত্রে | ত্রৈ
ত্রো| ত্রৌ |ত্রং | ত্রঃ

ज्ञ: ज्ञ।ज्ञा।ज्ञि।ज्ञी।ज्ञु।ज्ञू| ज्ञे| ज्ञै| ज्ञो| ज्ञौ| ज्ञं| ज्ञः

জ্ঞ: জ্ঞ । জ্ঞা । জ্ঞি । জ্ঞী । জ্ঞু । জ্ঞূ | জ্ঞে

| জ্ঞৈ | জ্ঞো | জ্ঞৌ | জ্ঞং | জ্ঞঃ

**सांख्य ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
९**

সাংখ্য
০ । ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । ৭ | ৮ |
৯

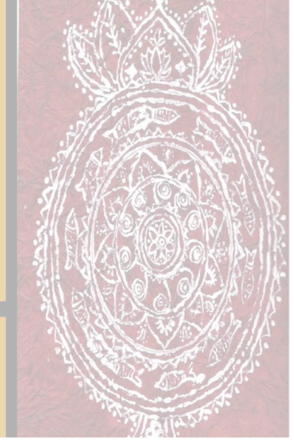
क का कि की कु कू कृ कॄ क्लृ क्लॄ कॅ **के कॆ कै
कॉ को कॊ कौ कं कः**

ক কা কি কী কু কূ কৃ কৄ কৢ কৣ ক◌ॅ কে ক◌ॆ কৈ
ক◌ॉ কো ক◌ॊ কৌ কং কঃ

সিদ্ধিরস্তু







Learn Braille through Mithilakshara







Learn Braille through Mithilakshara





GAJENDRA THAKUR



श्रुति प्रकाशन

दिल्ली







Ist edition 2009 of **Learn Braille through Mithilakshara**

author Gajendra Thakur

published by SHRUTI PUBLICATION
21/8, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: (011) 25889656-58 Fax: 011-25889657
ISBN : 978-93-80538-56-3

Price: Rs. 5/- (INR)

SHRUTI PUBLICATION
Website: http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
M/S AJAY ARTS
4393/4-A, Ist Floor, Ansari Road,
Darya Ganj, New Delhi-110002
(O) 011-23288341, 9968170107





Devanagari, Mithilakshara and Braille

देवनागरी, मिथिलाक्षर आ ब्रेल लिपि

দেরনাগরী, মিথিনাক্ষর শ্বা ব্রেন নিপি

फ्रांसक लुइस ब्रेल -अठारह सए नौ ई. मे जन्म आ अठारह सए बावन ई.मे मृत्यु- जे अपने आन्हर छलाह पन्द्रह बर्खक अवस्थामे ब्रेल लिपिक आविष्कार आँखिसँ विहीन लोकक लेल कएने रहथि। एहि लिपिमे कागजपर विशेष प्रिंटरसँ उठल-उठल बिन्दुक माध्यमसँ -जकरा हाथक स्पर्शसँ अनुभव कएल जा सकए- भाषाक संप्रेषण होइत अछि। एकरा दुनू हाथक स्पर्शसँ पढ़ल जाइत अछि। दहिना हाथ संदेशकेँ रूपान्तरित कए संप्रेषित करैत अछि आ वाम हाथ अगिला पंक्तिक प्रारम्भक अनुभव करैत अछि। एहि लिपिकेँ सामान्यतः डेढ़ सए शब्द प्रति मिनटक गतिसँ पढ़ल जा सकैत अछि जे आँखि द्वारा पढ़ल जाएबला सामान्य शब्द संख्या तीन सए शब्द प्रति मिनटक अदहा अछि।

एहि लिपिक आधारकेँ सेल कहल जाइत अछि। एकटा सेलक निर्माण छह टा बिन्दुक संयोजनसँ होइत अछि। एहिसँ तिरसठि प्रकारक विभिन्न वर्णक अक्षर-संख्या आ विराम-अर्द्धविराम आदि चेन्ह- निर्माण होइत अछि।

ফ্রাংসক ন্বওস ব্রেন -শ্বঠাবহ সএ নৌ ঙ. মে জন্ম শ্বা শ্বঠাবহ সএ রাবন ঙ.মে মৃত্যু- জে শ্বপনে শ্বান্হব ছনাহ পন্দ্রহ বর্খক শ্বরস্থামে ব্রেন নিপিক শ্বারিষ্কাব শ্বাঁখিসঁ রিহীন নোকক নেন কএনে বহথি। এহি নিপিমে কাগজপব রিশেষ প্রিংটবসঁ উঠন-উঠন রিন্দুক মাধ্যমসঁ -জকবা হাথক স্পর্শসঁ শ্বনুভর কএন জা সকএ- ভাষাক সংপ্রেষণ হোওত শ্বছি। একবা দুনূ হাথক স্পর্শসঁ পঢ়ন জাওত শ্বছি। দহিনা হাথ সংদেশকেঁ রূপান্তবিত কএ সংপ্রেষিত কবৈত শ্বছি শ্বা রাম হাথ শ্বগিনা পংক্তিক প্রাবম্ভক শ্বনুভর কবৈত শ্বছি। এহি নিপিকেঁ সামান্যতঃ ডেঢ় সএ শব্দ প্রতি মিনটক গতিসঁ পঢ়ন জা সকৈত শ্বছি জে শ্বাঁখি দ্বাবা পঢ়ন জাএরনা সামান্য শব্দ সংখ্যা তীন সএ শব্দ প্রতি মিনটক শ্বদহা শ্বছি।

এহি নিপিক শ্বাধাবকেঁ সেন কহন জাওত শ্বছি। একটা সেনক নির্মাণ ছহ টা রিন্দুক সংযোজনসঁ হোওত শ্বছি। এহিসঁ তিবসঠি প্রকাবক রিভিন্ন রর্ণক -শ্বক্ষব-সংখ্যা শ্বা রিবাম-শ্বর্দ্ধরিবাম শ্বাদি চেন্হ- নির্মাণ হোওত শ্বছি।

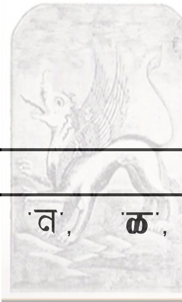






[illegible]

Devanagari	MithilakShara	Braille
'अ','आ', 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ'	'অ','আ', 'ই', 'ঈ', 'উ', 'ঊ'	'⠁','⠜', '⠊', '⠔', '⠥', '⠳'
'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ', 'ऋ'	'এ', 'ঐ', 'ও', 'ঔ', 'ঋ'	'⠑', '⠌', '⠕', '⠪', '⠐⠗'
one byte nukta varnas **"क़","ख़","ग़","ज़",** **"ड़","ढ़","फ़","य़"**	one-byte nukta varnas **"ক়","খ়","গ়","জ়",** **"ড়","ঢ়","ফ়","য়"**	one-byte nukta varnas '⠄', '⠅', '⠇', '⠉', '⠊', '⠔', '⠋', '⠄'
two-byte nukta varnas **"क़", "ख़", "ग़", "ज़", "फ़"**	two-byte nukta varnas **"ক়", "খ়", "গ়",** **"জ়", "ফ়"**	two-byte nukta varnas "⠅", "⠭", "⠐⠣", "⠷", "⠐⠖"
'क', 'ख', 'ग', 'घ', 'ङ'	'ক', 'খ', 'গ', 'ঘ', 'ঙ'	'⠅', '⠨', '⠛', '⠣', '⠬'
'च', 'छ', 'ज', 'झ', 'ञ'	'চ', 'ছ', 'জ', 'ঝ', 'ঞ'	'⠉', '⠡', '⠚', '⠴', '⠒'
'ट', 'ठ', 'ड़', 'ड', 'ढ़', 'ढ', 'ण'	'ট', 'ঠ', 'ড়', 'ড', 'ঢ়', 'ঢ', 'ণ'	'⠾', '⠺', '⠻', '⠫', '⠐⠿', '⠿', '⠼'
'त', 'थ', 'द', 'ध', 'न'	'ত', 'থ', 'দ', 'ধ', 'ন'	'⠞', '⠹', '⠙', '⠮', '⠝'
'प', 'फ', 'ब', 'भ', 'म'	'প', 'ফ', 'ব', 'ভ', 'ম'	'⠏', '⠖', '⠃', '⠘', '⠍'





'य', 'र', 'ल', 'ळ', 'व'	'য', 'ব', 'ল', 'ळ', 'র'	'⠽', '⠗', '⠇', '⠸', '⠧'
'श', 'ष', 'स', 'ह'	'শ', 'ষ', 'স', 'হ'	'⠩', '⠯', '⠎', '⠓'
'क्ष', 'ज्ञ'	'ক্ষ', 'জ্ঞ'	'⠟', '⠱'
'ऽ', '्', 'ा', 'ॉ', 'ि', 'ी', 'ु', 'ू', 'े', 'ै', 'ो', 'ौ', 'ं', 'ँ', 'ृ', 'ः', '.', '।'	'ঽ', '্', 'া', 'ॉ', 'ি', 'ী', 'ু', 'ূ', 'ে', 'ৈ', 'ো', 'ৌ', 'ং', 'ঁ', 'ৃ', 'ঃ', '.', '।'	'⠄', '⠈', '⠜', '⠹', '⠊', '⠔', '⠥', '⠳', '⠑', '⠌', '⠕', '⠪', '⠰', '⠄⠰', '⠐⠗', '⠠'
० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९	০ ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ ৭ ৮ ৯	0 1 2 3 4 5 6 7 8 9





Learn International Phonetic Alphabet through Mithilakshara

Videha e-Learning

Gajendra Thakur





Learn International Phonetic Alphabet through Mithilakshara





GAJENDRA THAKUR



श्रुति प्रकाशन

दिल्ली






Ist edition 2009 of **Learn International Phonetic Alphabet through Mithilakshara** author Gajendra Thakur

published by SHRUTI PUBLICATION
21/8, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: (011) 25889656-58 Fax: 011-25889657
ISBN : 978-93-80538-57-0

Price: Rs. 5/- (INR)

SHRUTI PUBLICATION
Website: http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

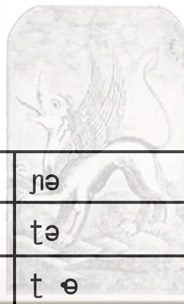
Distributor :
M/S AJAY ARTS
4393/4-A, Ist Floor, Ansari Road,
Darya Ganj, New Delhi-110002
(O) 011-23288341, 9968170107





Devanagari, Mithilakshara and International Phonetic Alphabet

Devanagari	**Mithilakshara**	**International Phonetic Alphabet**
अ	অ	ə
आ	আ	ɑ ː
इ	ই	i
ई	ঈ	i ː
उ	উ	u
ऊ	ঊ	u ː
ए	এ	e ː
ऐ	ঐ	a ː i
ओ	ও	o ː
औ	ঔ	a ː u
ऋ	ঋ	ɹ̩
ॠ	ৠ	ɹ̩ ː
ऌ	ঌ	l̩
ॡ	ৡ	l̩ ː
अं	অং	^{n}
अः	অঃ	h
क	ক	kə
क़	ক়	qə
ख	খ	k ə
ख़	খ়	xə
ग	গ	gə
ग़	গ়	ɣə
घ	ঘ	g ə
ङ	ঙ	ŋə
च	চ	cə
छ	ছ	c ə
ज	জ	ɟə
ज़	জ়	zə
झ	ঝ	ɟ ə





ञ	এঙ	ɲə
ट	ট	ʈə
ठ	ঠ	ʈ ə
ड	ড়	ɖə
ड़	ড়	ɽə
ढ	ঢ	ɖ ə
ढ़	ঢ়	ɽ ə
ण	ণ	ɳə
त	ত	t̪ə
थ	থ	t̪ ə
द	দ	d̪ə
ध	ধ	d̪ ə
न	ন	nə
प	প	pə
फ	ফ	p ə
फ़	ফ়	fə
ब	ব	bə
भ	ভ	b ə
म	ম	mə
य	য	jə
र	ব	rə
ल	ল	lə
व	ৱ	və
श	শ	ɕə
ष	ষ	ʂə
स	স	sə
ह	হ	ɦə
क्ष	ক্ষ	kʃə
त्र	ত্র	t̪rə
ज्ञ	জ্ঞ	gjə
श्र	শ্র	ɕcə
्	্	◌̥
ा	া	ɑ ː






ि	𑒱	i
ी	𑒲	i ː
ु	𑒳	u
ू	𑒴	u ː
ृ	𑒵	ɹ
े	𑒺	e ː
ै	𑒻	a ː i
ो	𑒼	o ː
ौ	𑒾	a ː u
ं	𑓀	n
ँ	𑒿	n
ं	𑓀	n
ँ	𑒿	n
ः	𑓁	h






महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435

विद्यापति ठक्कुरः 1350-1435 विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। **विद्यापति**(१३५०-१४५०)विद्यापतिक जन्म १३७० ई.क लगातिमे बिस्फी गाममे भेलन्हि। हिनकर परवर्ती सभ आइ-काल्हि सौराठ गाममे रहैत छथि। एकर प्रमाण निम्न गप सभसँ लगैत अछि। १३९४-९६ क बीच कएल पदक समर्पण गियासौद्दीन आजमशाह आ नसरत शाहकेँ कएल गेल अछि। देव सिंहक आदेश सँ १४०० ई.क लगातिमे ई ‘‘भू-परिक्रमा लिखलन्हि। १४०२-०४ क बीच कीर्तिलताक रचना कीर्ति सिंहक राज्यकालमे कएलन्हि। १४०९-१४१५ ई.क बीच कीर्तिपताकाक रचना। पूर्वार्ध १४०९ क लगातिमे मे हरि केलि अर्जुन सिंहक कीर्तिगाथासँ सम्बन्धित अछि आ उत्तरार्ध १४१५ क लगातिमे शिवसिंहक युद्ध आ तिरोधानसँ सम्बद्ध अछि। विद्यापति जीक आदेशसँ १४१० ई. मे ‘‘काव्य प्रकाश विवेक’’क प्रतिलिपि बनाओल गेल। १४१० ई.मे शिवसिंहक राज्यारोहण भेल आ एहि उपक्ष्यमे विद्यापतिकेँ बिसपीक दानपत्र प्रदान कएल गेल। शिवसिंहक राज्यकाल १४१०-१४ ई. धरि रहल आ एहि अवधिमे गोरक्ष विजय नाटक आ पुरुष-परीक्षा अधिकांश भागक रचना भेल। १४१६ ई. क लगाति पुरादित्यक आदेशसँ लिखनावलीक निर्माण भेल। १४२८ ई. मे भागवत पुराणक विद्यापति लिखित प्रतिलिपि पूर्ण भेल। १४२७-१४३९ ई. मे पद्म सिंहक महारानी विश्वास देवी क आदेशसँ शैव सर्वस्वसार, शैव सर्वस्वसार प्रमाण भूत संग्रह आ गंगा वाक्यावलीक रचना, १४५३-६० ई.क लगाति राजा नरसिंह दर्पनारायण आ रानी धीरिमतिक समयमे विभागसार, व्याडिभक्ति तरंगिणी आ दानवाक्यावलीक रचना भेल। १४५५ ई. क लगाति भैरव सिंहक अनुज्ञासँ ‘‘दुर्गाभक्ति तरंगिणी’’क रचना भेल आ १४६१ ई. मे श्री रूपधर हिनकासँ छात्र रूपमे अध्ययन कएलन्हि। १४६५ ई.क आसपास हिनकर मृत्यु भेल होएतन्हि, जनश्रुति अछि जे ई दीर्घायु भेल छलाह आ सए बरखक आयु प्राप्त कएने छलाह। हिनकर रचनामे एक बेर जगज्जननी सीताक चरचा एहि रूपमे आएल अछि-

I.

इन्द्रस्येव शची समुज्जवलगुणा गौरीव गौरीपतेः कामस्येव रतिः स्वभावमधुरा सीतेव रामस्य या। विष्णोः श्रीरिव पद्मसिंहनृपतेरेषा परा प्रेयसी विश्वख्यातनया द्विजेन्द्रतनया जागर्ति भूमण्डले॥9॥

उपर्युक्त पद्य विद्यापतिकृत शैवसर्वस्वसारक प्रारम्भक नवम श्लोक छी। एकर अर्थ अछि- उत्कृष्ट गुणवती, मधुर स्वभाववाली, ब्राह्मण-वंशजा, नीति-कौशलमे विश्वविख्यातओ’ महारानी विश्वासदेवी सम्प्रति संसारमे सुशोभित छथि, जे पृथ्वी-पति पद्मसिंहकेँ तहिना प्रिय छलीह जहिना इन्द्रकेँ शची, शिवकेँ गौरी, कामकेँ रति , रामकेँ सीता ओ’ विष्णुकेँ लक्ष्मी॥9॥

चन्दा झा (१८३१-१९०७), मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिएर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता केनिहार।
कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।






रामलोचन शरण 1889-1971, सीतामढ़ीमे जन्म आ दरभंगामे मृत्यु। "मैथिली रामचिरत मानस" सहित तुलसीदासक समस्त रचनाक मैथिलीमे लेखन। मिथिलाक्षरमे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ केनिहार। प्रकाशन-संस्था "पुस्तक भण्डार", लहेरियासराय, पटनाक संथापक।

महाकवि लालदास 1856-1921

हिनक जन्म खड़ौआ ग्राममे १८५६ ई. मे तथा मृत्यु १९२१ ई. मे भेलन्हि । हिनक अनेक रचना उपलब्ध होइत अछि, यथा–रमेश्वर चरित रामायाण,' स्त्री शिक्षा,' 'सावित्री-सत्यवान,' 'चण्डी चरित,' 'विरुदावली,' 'दुर्गा सप्तशती,' तन्त्रोक्त मिथिला माहात्म्य' आदि । मैथिलीक अतिरिक्त ई संस्कृत, हिन्दी तथा फारसीक ज्ञाता छलाह । कविताक अतिरिक्त गद्यमे सेहो ई रचना कएल । रमेश्वर चरित रामायण हिनक सभसँ विशिष्ट ग्रन्थ अछि । राम-कथाक उल्लेखमे सीताक महिमाक महत्त्व दए मिथिला तथा मैथिलीक प्रति ई अपन श्रद्धा तथा भक्तिकेँ व्यक्त कएल अछि ।

म. म. परमेश्वर झा 1856-1924

जन्म 1856 ई. मे तरौनी ग्राम (दरभंगा) जिलामे भेल छलन्हि तथा निधन 1924 ई. मे । संस्कृत व्याकरणक ई दिग्गज विद्वान् छलाह तथा 'वैयाकरण केशरी' क उपाधिसँ विभूषित छलाह । मैथिली साहित्यमे अपन कृति 'मिथिलातत्त्व विमर्श' तथा 'सीमंतिनी आख्यायिका'क कारणे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत छथि । ई महाराज रमेश्वर सिंहक दरवारमे राज-पंडितक पदपर अनेको वर्ष धरि सुप्रतिष्ठित छलाह ।

मुकुन्द झा ''बख्शी'' 1869-1936

जन्म हरिपुर बख्शी टोल ग्राम (मधुबनी जिला) मे 1869 ई. मे भेल तथा हिनक निधन काशीमे 1937 ई. मे भेलन्हि । हिनक लिखल संस्कृत मे अनेक ग्रंथ अछि । मैथिलीमे हिनक महत्त्वपूर्ण कृति अछि 'मिथिला भाषामय इतिहास' । एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक स्फुट निबन्ध सभ सेहो प्रकाशित भेल । मिथिलाक ऐतिहासिक वर्णन सभसँ पहिने हिनके प्रकाशित भेल । एहि इतिहासमे मिथिलाक सर्वतोमुखी परिचय प्रस्तुत कएल गेल अछि ।

डॉ. सर गंगानाथ झा 1871-1941

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसब-पाही ग्राममे 1871 ई. मे भेल तथा निधन प्रयागमे 1941 ई. मे । ई अपना समयक संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान म. म. चित्रधर मिश्र, म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. शिवकुमार शास्त्रीसँ मीमांसा एवं दर्शनक अध्ययन कएलन्हि तथा दर्शनक विभित्र दुरूह ग्रंथक अङरेजीमे अनुवाद कए पाश्चात्य संसारक ध्यान आकृष्ट कएलन्हि । ई गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज बनारसमे 1917 सँ 1923 धरि प्रिसिपल छलाह तथा एलाहाबाद विश्वविद्यालयक 1923 सँ 1932 पर्यन्त कुलपति रहलाह । मैथिलीमे हिनक सम्पादित चन्दा झाक 'महेशवाणी संग्रह' तथा 'गणनाथ-विन्ध्यनाथ पदावली' प्रकाशित अछि । मैथिली साहित्य परिषद्






द्वारा प्रकाशित हिनक 'वेदान्त दीपक' (दर्शन) विषयक अपूर्व ग्रंथ अछि । एहिसँ भिन्न हिनक निबंध सभ सामयिक मैथिली पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि ।

बलदेव मिश्र 1890-1975

हिनक जन्म सहरसा जिलाक वनगाँव ग्राममे 1890 ई. मे एवं निधन फरवरी, 1975मे भेलन्हि । प्रारम्भमे पं. गेनालाल चौधरीसँ ज्यौतिष पढ़ि ई काशीमे पं. सुधाकर द्विवेदीजीक शिष्य भेलाह । बहुत वर्ष धरि सरस्वती भवन (वाराणसी) मे हस्तलिखित विभागमे कार्य कएल । पश्चात् पटनाक काशीप्रसाद जयसवाल रिसर्च संस्थानमे अनेक प्राचीन तिब्बती हस्तलिपिकेँ देवनारीमे लिप्यन्तरित कएल। 'मिथिलामोद' प्रकाशन एवं म.म. मुरलीधर झाक प्रोत्साहनसँ ज्यौतिषीजी १९१० ई.सँ 'मोद'मे लिखए लगलाह। हिनक प्रकाशित रचना अछि–'रामायण शिक्षा', 'चन्दा झा', 'संस्कृति', 'भारत शिक्षा', 'गप्प-सप्प विवेक', 'समाज' आदि । पण्डितजी यावत् धरि पटना रहलाह बराबरि 'मिहिर'मे लिखैत रहलाह ।

सीताराम झा 1891-1975

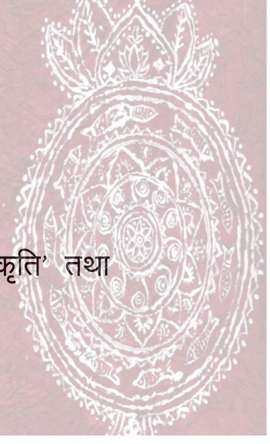
जन्म चौगामा ग्राममे १८९१ ई.मे तथा निधन १९७५ ई. मे भेलन्हि । संस्कृतमे ज्योतिष शास्त्रक अनेक रचनाक .अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक 'अम्ब चरित' (महाकाव्य), 'सूक्ति सुधा,' लोक लक्षण,' 'पद्धुआचरित,' 'पूर्वापर व्यवहार,' उनटा बसात,' 'अलंकार दर्पण', 'भूकम्प वर्णन', 'काव्य षट-रस', 'मैथिली काव्योपवन', आदि ग्रन्थ उपलब्ध अछि । हिनक गीताक मैथिली अनुवाद सेहो उपलब्ध अछि । मिथिला मोदक सम्पादन १९२० ई.सँ १९२७ ई. धरि ई कएल ।

बद्रीनाथ झा 1893-1973

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसव ग्राममे १८९३ ई. मे भेलन्हि तथा १९१४ ई. मे ई काशी लाभ कएलिन्ह । बहुत दिन धरि ई मुजफ्फरपुरक धर्म्म समाज संस्कृत कॉलेजमे साहित्यक अध्यापक छलाह । मैथिलीक विख्यात कवि लोकनि यथा सुमनजी, मधुपजी, मोहनजी आदि हिनक शिष्य छथिन्ह । संस्कृत साहित्यमे हिनक अनेक रचना अछि । जाहिमे राधा परिणय' (महाकाव्य) क स्थान विशिष्ट अछि । मैथिलीमे हिनक 'एकावली परिणय' (महाकाव्य) एक नवीन कीर्तिमान स्थापित कएलक। कोनो अलंकारक दृष्टान्त तकबाक हेतु 'एकावली परिणय' पर्याप्त अछि ।

उमेश मिश्र 1895-1967

जन्म मधुबनी जिलाक गजहरा ग्राममे 1895 ई. मे भेल छलन्हि । ई एकहतरि वर्षक आयुमे १९६७ ई. मे प्रयागमे स्वर्गवासी भेलाह । ई अपन स्वनाम-धन्य पिता म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. डा. गंगानाथ झाक सान्निध्यमे विद्यार्जन कएल। १९२३ सँ १९५९ धरि मिश्रजी एलाहाबाद विश्वविद्यालयमे संस्कृतक प्राध्यापक छलाह । दरभंगा 'मिथिला शोध संस्थान'क निदेशक पदपर किछु समय कार्य कए १९६२ सँ ६५ धरि कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति रहलाह ।म. म. मुरलीधर झासँ प्रभावित भए 'मिथिलामोद'मे ई लिखब प्रारम्भ कएलन्हि तथा अपन विविध प्रकारक रचनासँ मैथिलीक गद्यकेँ समृद्ध कएलन्हि । मैथिलीमे

हिनक प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि–’कमला’ (शेक्सपीयरक ’टेम्पेस्ट’क भावानुवाद), ’नलोपाख्यान’, ‘मैथिली-संस्कृति’ तथा अनेक वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक निबन्ध; मनबोधक कृष्णजन्मक सम्पादन, विद्यापतिक कीर्तिलता, कीर्तिपताका, गोरक्ष विजय आदिक अनुवाद-सम्पादन सेहो कएल।

अमरनाथ झा 1897-1955

सरिसब पाहीटोल ग्रामने १८९७ ई. मे भेल । हिनक निधन पटनामे जखन ई बिहार लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष छलाह, १९५५ मे भेलन्हि । ई एलाहाबाद विश्वविद्यालयक नओ वर्ष धरि कुलपति रहि पश्चात् हिन्दू विश्वविद्यालयक सेहो कुलपतिक पदकेँ सुशोभित कएलन्हि । ई अंगरेजीक प्रकाण्ड विद्वान् छलाह, ताहि संग हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बङ्ला एवं मैथिलीक सेहो अद्भुत विद्वान् छलाह ।मैथिलीमे हिनका द्वारा सम्पादित ‘हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली’ तथा ‘गोविन्ददासक श्रृग्ङारभजन’ महत्त्वपूर्ण अछि । एहिसँ भिन्न हिनक मैथिली साहित्य परिषदक अध्यक्षीय भाषण तथा अन्य लेख प्रकाशित अछि ।

भोलालाल दास 1897-1977

हिनक जन्म दरभंगा जिलाक कसरौर मे भेलन्हि । साहित्य सर्जनाक अतिरिक्त अपन संगठन क्षमता तथा मैथिली साहित्यक सर्वतोमुखी विकासक हेतु सतत तत्पर रहबाक कारणेँ भोला बाबू मैथिली संसारक एक स्तम्भक रूपमे रहलाह । हिनक निधन 1977 ई. मे भेल ।

मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे ई अपन जीवन समपित कएने छलाह। पाठ्यक्रममे मैथिलीकेँ स्थान हो ताहि हेतु ई बीड़ा उठओलन्हि । विद्यालय स्तरक अनेक पोथीक निर्माण कएल । मैथिली साहित्य परिषदक ई संस्थापक मण्डलक सदस्य छलाह । 1931 सँ 1940 ई. पर्यन्त ओकर प्रधान मन्त्री रहलाह । हिनक मन्त्रित्वकालमे ’भारती’ नामक मासिक पत्रक प्रकाशन भेल । एहिसँ पूर्व (१९२९-३१) कुशेश्वर कुमरजीक संग संयुक्त सम्पादनमे ’मिथिला’ नामक पत्र चलाओल ।

ई नवीन एवं प्रगतिशील विचारक लोक छलाह । ननव लेखककेँ प्रोत्साहित करब, शैलीमे एकरूपता आनब, नव प्रकाशनसँ मैथिलीक साहित्य भंडारक पूर्त्ति करब हिनक कर्त्तव्य बनि गेल छल ।

हिनक लिखल ‘मैथिली व्याकरण’ तथा हिनकहि द्वारा सम्पादित ‘गद्यकुसुमांजलि बहुत दिन धरि विद्यालयमे पढ़ाओल जाइत रहल । हिनक लिखल अनेक निबन्ध समालोचना, कविता, संस्मरण, जीवनी-साहित्य मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल अछि ।

कुमार गंगानन्द सिंह 1898-1971

जन्म–बनैली राजपरिवारमे 24-9-1898, मृत्यु:-श्रीनगर पूर्णिञा 17-1-1970 । भूतपूर्व शिक्षामंत्री, बिहार एबं कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय ।रचना–अगिलही (उपन्यास) तथा अनेक कथा एवं एकांकी । साहित्यकारक रूपमे अगिलही लएकेँ विशेष रव्याति । युगक अनुरूप सामाजिक कुरीति आदिकेँ आधार बनाए सुधारवादी दृष्टिएँ कथा सभहिक रचना|






रमानाथ झा 1906-1971

जन्म दरभंगा जिलाक उजान (धर्मपुर) ग्राममे 1906 ई. मे एवं हिनक निधन दरभंगामे १९७१ ई. मे भेलन्हि । 1930 ई. मे अङरेजीमे एम. ए. कएलाक बाद ई कतोक वर्ष धरि मधेपुर उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापक छलाह, तकरा बाद दरभग्ङा-राज-लाइब्रेरीक पुस्तकालयाध्यक्षक रूपमे 1936 सँ अन्तिम समय धरि रहलाह । 1952 सँ 62 चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे प्रो. झा अङरेजीक प्राध्यापक रूपँ काजka पश्चात् ओही कॉलेजमे मैथिली विभागाध्यक्ष बनाओल गेलाह । 1965 मे रमानाथ बाबू साहित्य अकादमीक मैथिलीक प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह जाहि पद पर ओ जीवनक अन्त समय तक रहलाह ।

हिनक रचनाक क्षेत्र बहुत व्यापक छल । हिनक अनुसंधानात्मक निबंक दू गोट संग्रह 'निबन्धमाला' तथा 'प्रबंध संग्रह' प्रकाशित अछि । संकलित सम्पादित पुस्तक सभमे 'मैथिली पद्य-संग्रह', 'मैथिली गद्य-संग्रह', 'प्राचीन गीत', 'कथा काव्य', 'नवीन गीत', 'कविता कुसुम', 'कथा संग्रह' आदि अछि । 'कथासरित्सागर'क आधार पर प्राञ्जल गद्य शैलीमे हिनक 'उदयन-कथा' तथा 'बररुचि-कथा' बेश ख्याति पओलक । व्याकरणक 'मिथिला भाषा प्रकाश', 'अलक्ङारप्रवेश' आदि अनेक ग्रन्थ प्रकाशित अछि । 'मैथिली साहित्य पत्र' त्रैमासिक पत्रिकाक संपादक।

काशीकान्त मिश्र ''मधुप'' 1906-1987

'राधाविरह' (महाकाव्य) पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक प्रशस्त कवि आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक समर्पित कार्यकर्ता 'झंकार' कवितासँ क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि । प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि । 'घसल अठन्नी कविताक लेल कथ्य आ शिल्प-संवेदना–दुहू स्तर पर चरम लोकप्रियता भेटलनि।

कांञ्चीनाथ झा ''किरण'' 1906-1988

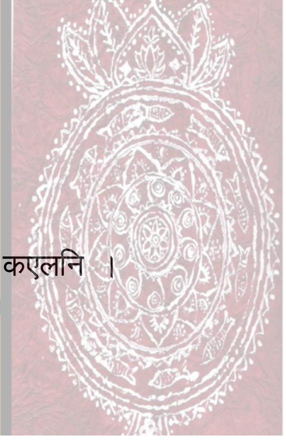
जन्म स्थान-धर्मपुर,लोहना रोड, दरभंगा बिहार । मैथिली भाषा आंदोलनमे महत्वपूर्ण भूमिका। 'पराशर' महाकाव्य लेल साहित्य अकादमी ओ 'कथा किरण' लेल वैदेही पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: चंद्रग्रहण (उपन्यास), वीर-प्रसून (बालकथा), जय जन्मभूमि (एकांकी), विजेता विद्यापति (नाटक), कथा-किरण (कथा-संग्रह), किरण-कवितावली, कतेक दिनक बाद (कविता-संग्रह), पराशर (महाकाव्य) ओ किरण-निबंधावली (निबंध-संग्रह) आदि।

ईशनाथ झा 1907-1965

बहुमुखी प्रतिभाक कवि । प्राचीन आ नवीन पद्धतिक काव्य-रचनाक विलक्षण संयोग हिनकर कवितामे भेटैत अछि । दलित वर्ग, शोषणक समस्या, स्वदेश प्रेमक यथार्थवादी रचनाक संग संग व्यक्तिनिष्ठ कल्पनाक अनेक विशिष्ट कविता मैथिलीमे लिखलनि ।

भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' 1907-1944



अपन खाढ़ीक बहुमुखी प्रतिभाक कवि । प्राचीन आ नवीन रीतिक कविताक रचना विपुल संख्यामे कएलनि । ’भुवन भारती’ कविता संकलन प्रकाशनसँ मैथिली ओज आ नव चेतनाक शंख फुकलनि।

तंत्रनाथ झा 1909-1984

जन्म १९०९ ई मे दरभंगा जिलाक धर्मपुर ग्राममे भेलन्हि मुत्यु ४-५-’८४,चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे अर्थशास्त्रक प्राध्यापक छलाह । अवकाश ग्रहण क काव्य साधनामे लागल रहलाह । महाकाव्य, मुक्तक, एकांकी सभ विधामे ई सिद्ध हस्त छलाह । हिनक ’कीचक वंध’ महाकाव्य अङरेजीक ‘ब्लैक्ङ भर्स’ (अमित्राक्षर छन्द) म लिखल अछि । मैथिलीमे ’सौनेट’ एवं ब्लैक्ङ भर्स’क ई प्रथम प्रयोक्ता थिकाह । संस्कृत परम्परामे काव्य रचना करितहुँ पाश्चात्य शैलीक नवीनता हिनका रचनामे भेल । हिनक ’कीचक वध’ ओ ’कृष्ण चरित’ महाकाव्य–‘मङ्गल-पञ्चाशिका’ एवं ‘नमस्या’ मैथिली साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान रखैछ । तकर अतिरिक्त मुक्तक काव्यमे विषय वस्तुक व्यापकता एवं शिल्प शैलिक प्रचुरता अबैत अछि । एक दिश यदि प्राचीन ढंगक ईश्बर वन्दनाक रचना कएलन्हि तँ दोसर दिस ‘सौनेट’ (चतुर्दशपदी) ‘बैलेड’ आदि लिखबामे पूर्ण सफलता प्राप्त कएलन्हि ।‘कृष्ण चरित’ महाकाव्य पर हिनका 1979 ई क साहित्यक अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि । 1980 ई. मे हिनका अभिनन्दन ग्रन्थसमर्पित कएल गेलन्हि ।

सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ 1910-2002

जन्म: ग्राम : बल्लीपुर, जिला-समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: प्रतिपदा, अर्चना,साओन-भादव,अंकावली, अन्तर्नाद, पयस्विनी, उत्तरा आदि तीससँ अधिक मौलिक कविता-पुस्तक;पुरुष-परीक्षा, अनुगीतांजलि, ऋतु श्रृंगार तथा वर्णरत्नाकर, पारिजात-हरण, कृष्णजन्म, आनन्द-विजय आदि कतिपय ग्रन्थक अनुवाद-संपादन; ’मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव’ नामक समीक्षा-ग्रंथ। ’पयस्विनी’ लेल १९७१ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा ’उत्तरा’ पर १९१८ मे मैथिली अकादेमीक विद्यापति पुरस्कार प्राप्त । मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र ’स्वदेश’क लब्धप्रतिष्ठ सम्पादक।

उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’ 1913-1980

जन्म १९१३ ई. मे दरभंगा जिलाक चतरिया ग्राममे भेलन्हि । मृत्यु २४-५-१९८० । संस्कृत शिक्षामे साहित्याचार्य ओ बड़ौदा राजक विद्वत्-परीक्षासँ ‘साहित्य-रत्न’क उपाधिसँ विभूषित भेलाह । दैनिक आर्यावर्तमे आदिअहिसँ, पश्चात् १९६० सँ मिथिला मिहिरक उप-सम्पादक एवं सह-सम्पादक रूपैँ कार्य करैत १९७७ मे सेवा निवृत भेलाह ।मोहनजी करीब पचास वर्ष साहित्य साधनामे लागल रहलाह । विजयानन्द, कुंजरंजन, सुदर्शन, पुण्डरीक, शास्त्री, बामन आदि छद्म नामसँ पत्र-पत्रिकामे विविध विषयपर हिनक लेख सभ प्रकाशित भेल अछि ।मोहन जीक ‘बाजि उठल मुरली’मे १०१ गोट कविताक संकलन अछि जाहिमे हिनक सुदीर्घ काव्य-आराधनाक विभित्र विचारधाराक ओ विभित्र अनुभूतिक सामग्री उपलब्ध अछि । एहि पुस्तकपर मोहन’जीकेँ १९७८ मे साहित्य अकादम् पुरस्कार भेटलन्हि। एहिसँ बहुत पूर्व हिनक ’फुलडाली’ नामक कविता संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छल |






उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' 1917-2002

जन्म स्थान-हरिपुर वकशीटोल, मधुबनी, बिहार । 'दू-पत्र' लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कार प्राप्त । प्रकाशित कृति: कुमार, दू पत्र (उपन्यास), विडंबना, भजना भजले (कथा-संग्रह), पतन संन्यासी, प्रतीक (काव्य), महाभारत (पहिल दू पर्व) आदि।

ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' 1918-1986

जन्म स्थान-बहेड़ा, दरभंगा बिहार । नैका बनिजार (उपन्यास) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । उपन्यासकार, कथाकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: कोब्रागर्ल, कनकी, अर्द्धनारीश्वर, लोरिक विजय, नैका-बनिजारा, लवहरि-कुशहरि, राय रणपाल, आदिम गुलाम आदि उपन्यास ओ कंठहार (नाटक) आदि।

बुद्धिधारी सिंह रमाकर 1919-1991

जन्म मधुबनीमे 1919 ई. मे भेल । अपन पिता स्व. क्षेमधारी सिंहसँ विभित्र विषयक शिक्षा ग्रहण कएलन्हि । ई रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीक मैथिली विभागाध्यक्ष छलाह । जतएसँ अवकाश प्राप्त कएलन्हि । बाल्या-वस्थहिसँ ई कविकार्यमे लागल रहलाह अछि । संस्कृत तथा मैथिली दुनू भाषामे हिनक रचना प्रकाशित अछि । यथा–मैथिलीमे 'प्रयास' (कथा-संग्रह), 'मधुमती', 'अमरबापू' (कविता-संग्रह), 'शरशय्या' (खंड-काव्य) 'स्मृति साहस्त्री' (महाकाव्य) आदि ।

गोविन्द झा 1923-

जन्मस्थान-इसहपुर, सनकोर्थु सरिसब पाही, मधुबनी, बिहार । प्रसिद्धकथाहार,उपन्यासकार, नाटककार, भाषा वैज्ञानिक ओ अनुवादक। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित। बिहार सरकारसँ कामिल बुल्के पुरस्कार, ग्रियर्सन पुरस्कार आदिसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: उपन्यास, नाटक, कथा, कविता, भाषा विज्ञान आदि विभिन्न विधामे अड़तीस टा पोथी प्रकाशित । प्रकाशन: सामाक पौती,नेपाली साहित्यक इतिहास (अनु) आदि । प्रबोध सम्मान 2006 सँ सम्मानित।

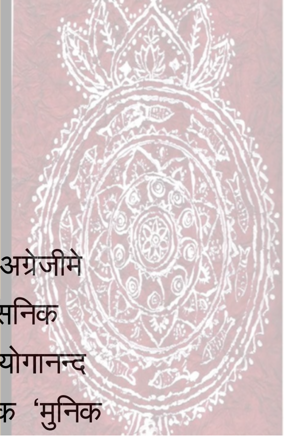
सुधांशु शेखर चौधरी 1922-1990

जन्म दरभंगाक मिश्रटोलामे 1922 ई. मे भेलन्हि तथा मृत्यु 1990 ई. मे भेलन्हि । किछु दिन विभिन्न जीविकामे रहि पश्चात् साहित्यकारक जीवन प्रारम्भ कएल । किछु दिन 'बैदेही'क सम्पादन श्री सुमनजी एवं श्री कृष्णकान्त मिश्रजीक संग कएल तत्पश्चात् 1060 ई. सँ 1982 ई. धरि पटनामे 'मिथिला मिहिर''क सफल सम्पादन कएल ।हिनक दू गोट नाट्यकृति-'भफाइत चाहक जिनगी', लेटाइत आँचर', तथा 'पहिल साँझ' हिनक नाटकक नीक व्यावहारिक अनुभवक परिचायक अछि ।छद्मनामसँ हिनक दू गोट उपन्यास मिहिर' मे प्रकाशित भेल अछि । हिनक उपन्यास ई वतहा संसार' जे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल आ जाहि पर 1980 क साहित्य अकादमीक पुरस्कार देल गेल |

योगानन्द झा 1923-1986







हिनक जन्म मधुबनी जिलाक कोइलख ग्राममे 1923 ई. मे भेलन्हि । मृत्यु 1986 मे भेलनि । अग्रेजीमे एम. ए. कएलाक पश्चात् ई किछु दिन चन्द्रधरी मिथिला कॉलेजमे प्राध्यापक रहलाह । बिहार प्रशासनिक सेवामे 1981 धरि विभिन्न पदपर कार्य कएल । तत्पश्चात्मैथिली अकादमीक निदेशक '84 धरि ।योगानन्द झाजी मैथिली साहित्यमे अपन उपन्यास 'भलमानुस' एवं 'पवित्रा'क हेतु ख्यात छथि । हिनक नाटक 'मुनिक मतिभ्रम' एवं कथा संग्रह 'उड़ैत वंशी' यथेष्ट प्रतिष्ठा प्राप्त कएने अछि । एकर अतिरिक्त ई महात्मा गान्धीक आत्मकथाक अनुवाद एवं 'आमक जलखरी' नामक एक कथा संग्रहक सम्पादन सेहो कएने छथि |

रामकृष्ण झा 'किसुन' 1923-1970

आधुनिक धाराक विशिष्ट कवि, कथाकार, चिन्तक । प्रकाशित कृति: आत्मनेपद (कविता संग्रह), मैथिली नवकविता (सम्पादन)। मृतयुपरान्त 'किसुन रचनावली' तीन खण्डमे प्रकाशित ।

उमानाथ झा 1923-

जन्म:-1-1-1923: महरैल, भधुबनी ।भूतपूर्व अङरेजी विभागाध्यक्ष एवं प्रति-कुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा । रचना:-रेखाचित्र, अतीत (कथा संग्रह); मैथिली नवीन साहित्य, इन्द्र धनुष, विद्यापति गीतशती (सम्पादन)।

प्रबोध नारायण सिंह 1924-2005

हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, पाली एवं फारसीक विद्वान्। मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक ई अनन्य भक्त छथि । कलकत्ता रहि मिथिला दर्शन', मैथिली कविता', मैथिली रंगमंच' आदि पत्रिकाक प्रकाशनक माध्यमसँ श्री प्रबोधजी मैथिलीक जे सेवा कएल अछि तकर वर्णन थोड़मे सम्भव नहि । अनेक बङला कृतिक ई अनुवाद सेहो कएल अछि ।हिन्दीमे सेहो हिनक 'कविता संग्रह' प्रकाशित अछि ।कलकत्ता विश्वविद्यालयमे हिन्दीक पूर्व अध्यक्ष।

चन्द्रनाथ मिश्र अमर 1925-

जन्म: खोजपुर, मधुबनी । वरिष्ठ कवि, कथाकार-उपन्यासकार । हास्य-व्यंग्यक कवितामे बेजोड़। मैथिलीक लेल समर्पित व्यक्तित्व । पांच दर्जनसं बेसी कथा आ विदागरी, वीरकन्या (उपन्यास) जल समाधि (कथा संग्रह) प्रकाशित । 'पत्रकारिताक इतिहास' लेल साहित्य अकादमीसं सम्मानित। एम. एल. एकेडमी, लहेरिरियासरायसं शिक्षकक रूपमे अवकाश प्राप्त। आशा दिशा, गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल आदि कविता संग्रह प्रकाशित।

जयधारी सिंह 1929-2007

समीक्षक, कवि । प्रकाशन: बौद्धगानमे तांत्रिक सिद्धांत, समीक्षा शास्त्रा अदि । रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीमै मैथिली विभागक पूर्व अध्यक्ष






गोपालजी झा 'गोपेश' 1931-2008

जन्म मधुबनी जिलाक मेहथ गाममे १९३१ ई.मे भेलन्हि।हिनकर रचित ''सोन दाइक चिट्ठी'', ''गुम भेल ठाढ़ छी'', ''एलबम'' ''आब कहू मन केहन लगैए'', ''मखानक पात'' प्रकाशित भेल जाहिमे सोनदाइक चिट्ठी बेश लोकप्रिय भेल

ललित 1932-1983

जन्म स्थान बसैठ चानपुरा मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार ओ उपन्यासकार । प्रकाशित कृति: प्रतिनिधि, (कथा संग्रह), पृथ्वी-पुत्र (उपन्यास) आदि।

धूमकेतु 1932-2000

जन्म स्थान कोइलख, मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार ओ कवि । प्रकाशित कृति : दू टा कथा संग्रह ओ एक टा उपन्यास ।

राजमोहन झा 1934-

जन्म स्थान कुमरबाजितपुर, वैशाली, बिहार । प्रख्यात कथाकार ओ संपादक । आइ काल्हि परसू (कथा-संग्रह) लेल साहित्य अकादेमीसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति : एक आदि एकांत, झूठ साँच, एकटा तेसर, अनुलग्नक, आइ काल्हि परसू (कथा संग्रह), गलतीनामा, भनहि विद्यापति, टीप्पणीत्यादि (आलोचना)। 'आरम्भ' पत्रिकाक संपादन।प्रबोध सम्मान 2009 सँ सम्मानित।

डॉ. धीरेन्द्र 1934-2004

जन्म स्थान लोहन, सरिसब पाही, मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार,उपन्यासकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: कुहेस आ किरण, पझाइत घूरक आगि, शतरूपा ओ मनु अपन मन्दिर (कथासंग्रह) हैंगरमे टाँगल कोट, काल्हि ओ आइ (कविता संग्रह) सहित कैक विधामे विभिन्न पोथी।

सोमदेव 1934-

उपन्यासकार ओ कवि । साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: चानोदाइ, होटल अनारकली (उपन्यास), काल ध्वनि (कविता संग्रह), चरैवेति (गीति नाट्य) सोम सतसइ (दोहा)।

रमानन्द रेणु 1934-

जन्म स्थान उसमामठ, दरभंगा, बिहार । वरिष्ठ कवि, कथाकार ओ उपन्यासकार। साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: कचोट, त्रिकोण, अंतहीन आकाश (कथा-संग्रह), दूधफूल (उपन्यास), अंतत:, ओकरे नाम (कविता-संग्रह)






रामभद्र, धनुषा, नेपाल १९३५-२०२०

साहित्य तथा अन्यान्य क्षेत्रक कतोक सफल व्यक्तिसभ अपन प्रेरणास्त्रोत आ पथ-प्रदर्शक मानैत छथि । मैथिली साहित्य-क्षेत्रमे हिनक परिचयक मादे एतबाए कहब पर्याप्त होएत जे मैथिलीक मूर्द्धन्य साहित्यकार डा. धीरेन्द्र हिनका मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कथाकार मानैत छथि ।हिनक कथामे प्रतीकात्मकताक अदभुत प्रयोगहिटा नहि, अपितु एकटा आदर्श कथाक समस्त वैशिष्टसभविद्यमान रहैत अछि । कथाकारक अतिरिक्त ई उत्कृष्ट समालोचक, नाटककार आ कवि सेहो छथि । नेपालमे मैथिलीक पहिल मोनोड्रामा लिखबाक श्रेय सेहो हिनका जाइत छनि ।सामाजिक कुरीतिसभकँ कुशलतासँ चित्रण करबामे, चिन्तनीय बनएबामे आ मन-मस्तिष्कपर अमिट छाप छोड़बामे रामभद्र सिद्धहस्त छथि । धनुषा जिलाक कुर्था गाममे जनमल रामभद्रक पूर्ण नाम रामभद्र कर्ण छनि । अग्ङरेजी विषयक अवकाशप्राप्त शिक्षक रामभद्र व्याकरण, पाठयपुस्तक आ सहायक पुस्तकसभ लिखबाक काजमे निरन्तर सक्रिय छथि।

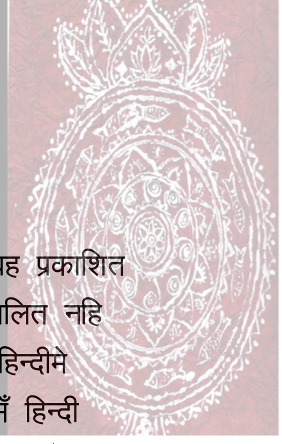
केदारनाथ चौधरी 1936-

जन्म 3 जनवरी 1936 ई नेहरा, जिला दरभंगामे। 1958 ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, 1959 ई.मे लॉ। 1969 ई.मे कैलिफोर्निया वि.वि.सँ अर्थस्थास्त्र मे स्नातकोत्तर, 1971 ई.मे सानफ्रांसिस्को वि.वि.सँ एम.बी.ए., 1978मे भारत आगमन। 1981-86क बीच तेहरान आ प्रैंकफुर्तमे। फेर बम्बई, पुणे होइत 2000 सँ लहेरियासरायमे निवास। मैथिली फिल्म 'ममता गाबय गीत'क मदनमोहन दास आ उदयभानु सिंहक संग सह निर्माता। तीन टा उपन्यास 2004 मे चमेली रानी, 2006 मे करार, 2008 मे माहुर।

स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४)

जन्म १८ सितम्बर १९०८ ई. ग्राम+पो.- कुमर बाजितपुर , जिला- वैशाली, बिहार, भारत। पिता- स्वर्गीय पं. जनार्दन झा ''जनसीदन'' मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ द्विवेदीयुगीन कवि-साहित्यकार। शिक्षा-दर्शनशास्त्रमे एम.ए.- १९३२, बिहार-उड़ीसामे सर्वोच्च स्थान लेल स्वर्णपदक प्राप्त। सन् १९३३ सँ बी.एन.कॉलेज पटनामे व्याख्याता, पटना कॉलेजमे १९४८ ई.सँ प्राध्यापक, सन् १९५३ सँ पटना विश्वविद्यालयमे प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष आऽ सन् १९७० सँ १९७५ धरि यू.जी.सी. रिसर्च प्रोफेसर रहलाह। हिनकर मैथिली कृति १९३३ मे ''कन्यादान'' (उपन्यास), १९४३ मे ''द्विरागमन''(उपन्यास), १९४५ मे ''प्रणम्य देवता'' (कथा-संग्रह), १९४९ मे ''रंगशाला''(कथा-संग्रह), १९६० मे ''चर्चरी''(कथा-संग्रह) आऽ १९४८ ई. मे ''खट्टर ककाक तरंग'' (व्यंग्य) अछि। ''एकादशी'' (कथा-संग्रह)क दोसर संस्करण १९८७ ए. मे आयल जाहिमे ग्रेजुअट पुतोहुक बदलाने ''द्वादश निदान'' सम्मिलित कएल गेल जे पहिने ''मिथिला मिहिर''मे छपल छल मुदा पहिलुका कोनो संग्रहमे नहि आएल छल।श्री रमानथ झाक अनुरोधपर लिखल गेल ''बाबाक संस्कार'' सेहो एहि संग्रहमे अछि। आऽ हुनकर ''खट्टर काका'' हिन्दीमे सेहो १९७१ ई. मे पुस्तकाकार आएल। एकर अतिरिक्त हिनकक स्फुट प्रकाशित-लिखित पद्यक संग्रक ''हरिमोहन झा रचनावली खण्ड ४ (कविता)'' एहि नामसँ १९९९ ई.मे छपल आऽ हिनकर आत्मचरित ''जीवन-यात्रा'' १९८४ ई.मे छपल। हरिमोहन बाबूक ''जीवन यात्रा'' एकमात्र पोथी छल जे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल छल आऽ एहि ग्रंथपर हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कार १९८५ ई. मे मृत्योपरान्त देल गेलन्हि। साहित्य अकादमीसँ १९९९ ई. मे ''बीछल





कथा'' नामसँ श्री राजमोहन झा आऽ श्री सुभाष चन्द्र यादव द्वारा चयनित हिनकर कथा सभक संग्रह प्रकाशित कएल गेल, एहि संग्रहमे किछु कथा एहनो अछि जे हिनकर एखन धरिक कोनो पुरान संग्रहमे सम्मिलित नहि छल। हिनकर अनेक रचना हिन्दी, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तेलुगु आदि भाषामे अनुवादित भेल। हिन्दीमे ''न्याय दर्शन'', ''वैशेषिक दर्शन'', ''तर्कशास्त्र''(निगमन), दत्त-चटर्जीक ''भारतीय दर्शनक'' अंग्रेजीसँ हिन्दी अनुवादक संग हिनकर सम्पादित ''दार्शनिक विवेचनाएँ'' आदि ग्रन्थ प्रकाशित अछि। अंग्रेजीमे हिनकर शोध ग्रंथ अछि- ''ट्रेन्ड्स ऑफ लिंग्विस्टिक एनेलिसिस इन इंडियन फिलोसोफी''।
प्राचीन युगमे विद्यापति मैथिली काव्यकेँ उत्कर्षक जाहि उच्च शिखरपर आसीन कएलनि, हरिमोहन झा आधुनिक मैथिली गद्यकेँ ताहि स्थानपर पहुँचा देलनि। हास्य व्यंग्यपूर्णशैलीमे सामाजिक-धार्मिक रूढ़ि, अंधविश्वास आऽ पाखण्डपर चोट हिनकर लेखनक अन्यतम वैशिष्ट्य रहलनि। मैथिलीमे आइयो सर्वाधिक कीनल आऽ पढ़ल जायबला पीथी सभ हिनकहि छनि।
हरिमोहन झा समग्र

हरिमोहन झा जीक समग्र रचनाक एक बेर सिंहावलोकन कएल जाए।
कथा-एकांकी
१. १.अयाची मिश्र (एकाङ्की) २. मंडन मिश्र (एकाङ्की) ३. महाराज विजय (एकाङ्की)४. बौआक दाम (एकाङ्की)५.रेलक झगड़ा (एकाङ्की) ६. संगठनक समस्या- पत्र शैली ७. ''रसमयी''क ग्राहक पत्र-शैली ८.पाँच पत्र पत्र-शैली ९. दलानपरक गप्प१०.घूरपरक गप्प११.पोखड़िपरक गप्प १२. चौपाड़िपरक गप्प १३.धर्मशास्त्राचार्य १४.ज्योतिषाचार्य १५.पंडितजी
१६.कविजी १७.परिवर्तन १८.युगक धर्म १९.महारानीक रहस्य २०.सात रंगक देवी २१.नौ लाखक गप्प २२.रंगशाला २३.अँचारक पातिल २४.चिकित्साक चक्र २५.रेशमी दोलाइ २६.धोखा २७.प्रेसक लीला २८.देवीजीक संस्कार २९.एहि बाटे अबै छथि सुरसरि धार ३०. कन्याक जीवन ३१. रेलक अनुभव ३२. ग्रामसेविका ३३. मर्यादाक भंग ३४. तिरहुताम ३५.टोटमा ३६.तीर्थयात्रा ३७.अलंकार-शिक्षा ३८.बाबाक संस्कार ३९.द्वादश निदान ४०.ग्रेजुएट पुतोहु ४१.ब्रह्माक शाप ४२.आदर्श भोजन ४३.सासुरक चिन्ह ४४.कालीबाड़ीक चोर ४५.कालाजारक उपचार४६.विनिमय ४७.दरोगाजीक मोंछ ४८.शास्त्रार्थ ४९.विकट पाहुन ५०.आदर्श कुटुम्ब ५१.साझी आश्रम ५२.घरजमाय५३.भदेशक नमूना ५४.बीमाक एजेन्ट ५५.अंगरेजिया बाबू
पद्य
१.सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक २.कन्याक नीलामी डाक ३.मिथिलाक मिहिर सँ ४.ढाला झा ५.टी. पार्टी ६.बुचकुन झा ७.पंडित लोकनि सँ ८.निरसन मामा ९.आगि १०.अङरेजिया लड़कीक समदाउनि ११.गरीबनीक बारहमासा १२.श्री यात्रीजीक प्रति : मैथिलीक उक्ति १३.सौराठ १४.अलगी १५.अशोक-वाटिकामे
१६.पटना-स्तोत्र १७.श्रद्धेय अमरनाथ झाक प्रति श्रद्धांजलि
१८.हिन्दी ओ मैथिली १९.बुचकुन बाबाक चिट्ठी
२०.जगमग-जगमग दीप जराऊ २१.कलकत्ता गेला उत्तर
२२.अकाल २३.कलकत्ता हमरा बड़ पसन्द २४.सलगमक खण्ड २५.बूढ़ानाथ २६.नवकी पीढ़ीसँ २७.पंडित ओ

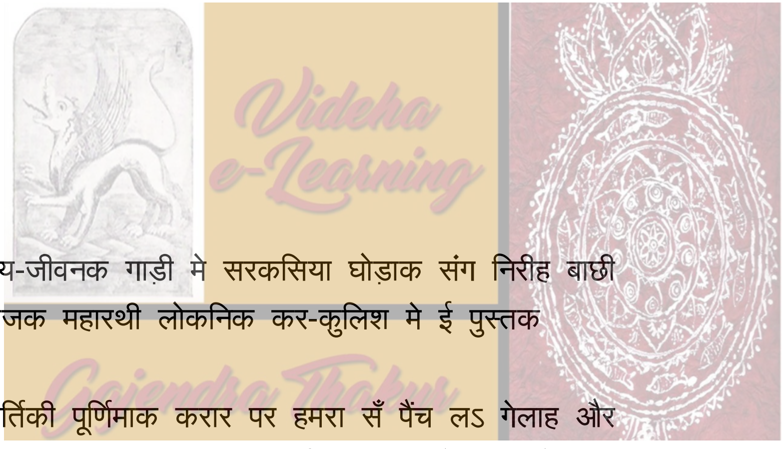





मेम
२८.पंडित-विलाप २९.गंगाक घाटपर ३०.समयक चक्र
३१.महगी-माहात्म्य ३२.रस-निमन्त्रण ३३.अकविताक प्रति : कविताक उक्ति ३४.हम पाहुन छी ३५.अनागत प्रेयसीसँ
३६.मत्स्य-तीर्थ ३७.मिष्टान्न ३८.हे राजकमल ३९.घटक सौं ४०.पंडितजी सौं ४१.कनियाँक समस्या ४२.मुक्तक
४३.गजल ४४.मातृभूमि ४५.नारी-वन्दना ४६.हे दुलही के माय ४७.मात्रृभूमि वन्दना ४८.चन्द्रमाक मृत्यु ४९.मिथिला वन्दना ५०.कवि हे! आब कोदारि धरु ५१.महगी ५२.नव पराती ५३.चालिस आ चौहत्तरि ५४.प्रयोगवादी कविता ५५.स्व. ललित नारायण मिश्रक स्मृतिमे ५६.उद्‌गार ५७.अन्तिम सत्य ५८.मधुर भाषा मैथिली छी ५९.छगुन्ता ६०.विद्यापति पर्व महान हमर
६१.आठ संकल्प ६२.घूटर काका ६३.वनगाम-महिषी स्मृति
६४.मैथिली-वन्दना ६५.हे मातृभूमि केर माटि
६६.कहू की औ बाबू ६७.कश्मीर हमर थीक ६८.मंगल प्रभात ६९.बुचकुन बाबाक स्वप्न ७०.जय विद्यापति ७१.शुभांशसा ७२.पारिचारिका स्तोत्र ७३.मनचन बाबा
७४.एहि बेरक फगुआ ७५.परतारु जुनि ७६.हे मजूर! कष्ट लखि अहाँक (कविजी: प्रणम्य देवता) ७७.हे हे मजूर! (कविजी: प्रणम्य देवता) ७८.अबि! अनन्त कोमल करुणे! (कविजी: प्रणम्य देवता) ७९.हे वीर! हलायुध धर खड्ग(कविजी: प्रणम्य देवता) ८०.अयि! प्रचंड चंडिके! (कविजी: प्रणम्य देवता) ८१.झाँसीक रानी(कविजी: प्रणम्य देवता)
८२.हे प्रगतिशील महिला समाज(कविजी: प्रणम्य देवता)
८३.प्रिये! हम जाइत छी ओहि पार(कविजी: प्रणम्य देवता)
८४.धन्य-धन्य मातृभूमि (अयाची मिश्र : चर्चरी)
८५.धन्य ई मिथिलेशक दरबार(अयाची मिश्र : चर्चरी)
८६.हे डीह! अमर कीर्तिक निधान! (अयाची मिश्र : चर्चरी)
८७.हरिहर जन्म किएक लेल (माछक महत्व : खट्टर ककाक तरंग)
८८.केहन भेल अन्हेर(खट्टर ककाक टटका गप्प : खट्टर ककाक तरंग)

खट्टर ककाक तरंग (कथा-व्यंग्य)
कन्यादान (उपन्यास)
द्विरागमन (उपन्यास)
जीवनयात्रा (आत्मकथा)

कन्यादानक समर्पण- जे समाज कन्या कैं जड़ पदार्थवत् दान कय देबा मे कुंठित नहि होइत छथि, जाहि समाजक सूत्रधार लोकनि बालक कैं पढ़ैबाक पाछाँ हजारक हजार पानि मे बहबैत छथि और कन्याक हेतु चारि कैञ्चाक सिलेटो कीनब आवश्यक नहि बुझैत छथि, जाहि समाजमे बी.ए. पास पतिक जीवन-संगिनी ए



बी पर्यन्त नहि जनैत छथिन्ह, जाहि समाज कैं दाम्पत्य-जीवनक गाड़ी मे सरकसिया घोड़ाक संग निरीह बाछी कैं जोतैत कनेको ममता नहि लगैत छन्हि, ताही समाजक महारथी लोकनिक कर-कुलिश मे ई पुस्तक सविनय, सानुरोध ओ सभय समर्पित।

प्रणम्य देवताक समर्पण- आइ सँ सात वर्ष पूर्व जे कार्तिकी पूर्णिमाक करार पर हमरा सँ पैंच लऽ गेलाह और तहियासँ पुनः कहियो दर्शन देबाक कृपा नहि कैलन्हि, जनिक चिर-स्मरणीय कीर्ति-कलाप प्रथमे कथा मे विशद रूप सँ वर्णित छैन्ह, जे ‘‘प्रणम्य देवता’’ क मध्य सर्वश्रेष्ठ आसन पर अधिकार जमा सकैत छथि, जनिक वन्दनीय बन्धुवर्ग ई पुस्तक देखि विनु मङनहि अपन स्वत्व स्थापित कय लऽ सकैत छथि, तेहन प्रमुख चरित-नायक, विकट पाहुन भीमेन्द्रनाथ क सुदृढ़ विशाल मुष्टिमे ई विचित्र-चरित्र-पूर्ण पोथी विवशतापूर्वक अर्पित छैन्ह!

खट्टर ककाक तरंगक समर्पण- जे भंगक तरंगमे काव्य-शास्त्र-विनोदक धारा बहा दैत छथि; जनिक प्रवाहमे थोड़ेक कालक हेतु वेद-पुराण, धर्मशास्त्र, सभटा भसिया जाइत अछि; जे बात-बातमे अद्भुत रस ओ चमत्कारक चाशनी घोरि दैत छथि; जे मर्मस्पर्षी व्यंग्य द्वारा लोकक अन्तस्तल मे पहुँचि गुदगुदी लगा दैत छथि; तेहन चिर आनन्दमूर्ति, परिहास-प्रिय खट्टर कका कैं- त्व्दीयं वस्तु पितृव्य! तुभ्यमेव समर्पितम्।

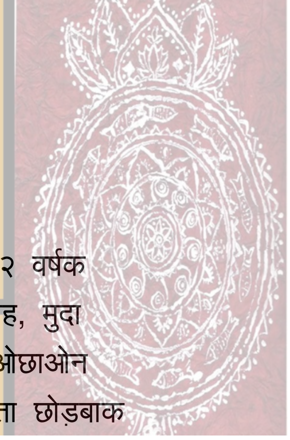
रंगशालाक समर्पण- जे अक्षययौवना नटी एहि अनादि अनन्त रंगशालाक प्रवर्तिका थिकीह, जे मनोहर वीणा-वादिनी सम्पूर्ण चराचर विश्वकैं अपना आंगुरक अग्रभाग पर नचा रहल छथि, जे रहस्यमयी अपन मोहिनी लीलाक झलक देखाय ककरो स्पर्श नहि करय दैत छथिन्ह, जे कल्पनाक रंगीन पाँखि पर आबि कलाकारक कलामे रसक संचार करैत छथिन्ह, तेहन आश्चर्यकारिणी चिरसुन्दरी त्रैलोक्य-विजयिनी माया देवी कैं।

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र ‘‘यात्री’’ (१९११-१९९८)

रचना- चित्रा (कविता संग्रह), पारो, नवतुरिआ, बलचनमा (उपन्यास)

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र ‘‘यात्री’’ केर जन्म १९११ ई. मे अपन मामागाम सतलखामे भेलन्हि, जे हुनकर गाम तरौनीक समीपहिमे अछि। यात्री जी अपन गामक संस्कृत पाठशालामे पढ़ए लगलाह, फेर ओऽ पढ़बाक लेल वाराणसी आऽ कलकत्ता सेहो गेलाह आऽ संस्कृतमे ‘‘साहित्य आचार्य’’ केर उपाधि प्राप्त कएलन्हि। तकर बाद ओऽ कोलम्बो लग कलनिआ स्थान गेलाह पाली आऽ बुद्ध धर्मक अध्ययनक लेल। ओतए ओऽ बुद्धधर्ममे दीक्षित भए गेलाह आऽ हुनकर नाम पड़लन्हि नागार्जुन। यात्रीजी मार्क्सवादसँ प्रभावित छलाह। १९२९ ई. क अन्तिम मासमेमे मैथिली भाषामे पद्य लिखब शुरू कएलन्हि यात्री जी। १९३५ ई.सँ हिन्दीमे सेहो लिखए लगलाह। स्वामी सहजानन्द सरस्वती आऽ राहुल सांकृत्यायनक संग ओऽ किसान आन्दोलनमे संलग्न रहलाह आऽ १९३९ सँ १९४१ धरि एहि क्रममे विभिन्न जेलक यात्रा कएलन्हि। हुनकर बहुत रास रचना जे महात्मा गाँधीक मृत्युक बाद लिखल गेल छल, प्रतिबन्धित कए देल गेल। भारत-चीन युद्धमे कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा चीनकँ देल समर्थनक बाद यात्रीजीक मतभेद कम्युनिस्ट पार्टीसँ भए गेलन्हि। जे.पी. अन्दोलनमे भाग लेबाक कारण आपात्कालमे हिनका जेलमे ठूसि देल गेल। यात्रीजी हिन्दीमे बाल साहित्य सेहो लिखलन्हि। हिन्दी आऽ मैथिलीक अतिरिक्त बांग्ला आऽ संस्कृतमे सेहो हिनकर लेखन आएल। मैथिलीक दोसर साहित्य अकादमी पुरस्कार १९६९ ई. मे यात्रीजीकँ हुनकर कविता संग्रह ‘‘पत्रहीन नग्न गाछ’’पर भेटलन्हि। १९९४ ई.मे



हिनका साहित्य अकादमीक फेलो नियुक्त कएल गेल। यात्रीजी जखन २० वर्षक छलाह तखन १२ वर्षक कान्यासँ हिनकर विवाह भेल। हिनकर पिता गोकुल मिश्र अपन समाजमे अशिक्षितक गिनतीमे छलाह, मुदा चरित्रहीन छलाह। यात्रीजीक बच्चाक स्मृति छन्हि, जे हुनकर पिता कोना हुनकर अस्वस्थ आऽ ओछाओन धेने मायपर कुरहड़ि लए मारबाक लेल उठल छलाह, जखन ओऽ बेचारी हुनकासँ अपन चरित्रहीनता छोड़बाक गुहारि कए रहल छलीह। यात्रीजी मात्र छ वर्षक छलाह जखन हुनकर माए हुनका छोड़ि प्रयाण कए गेलीह। यात्रीजीकेँ अपन पिताक ओऽ चित्र सेहो रहि-रहि सतबैत रहलन्हि जाहिमे हुनकासँ मातृवत प्रेम करएबाली हुनकर विधवा काकीक, हुनकर पिताक अवैध सन्तानक गर्भपातमे, लगभग मृत्यु भए गेल छलन्हि। के एहन पाठक होएत जे यात्रीजीक हिन्दीमे लिखल ‘‘रतिनाथ की चाची’’ पढ़बाक काल बेर-बेर नहि कानल होएताह। पिता-पुत्रक ई घमासान एहन बढ़ल जे पुत्र अपन बाल-पत्नीकेँ पिता लग छोड़ि वाराणसी प्रयाण कए गेलाह।

कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप
हम टा संतति, से हुनक पाप
ई जानि ह्वैन्हि जनु मनस्ताप
अनको बिसरक थिक हमर नाम
माँ मिथिले, ई अंतिम प्रणाम! (काशी/ नवंबर १९३६) काशीसँ श्रीलंका प्रयाण

‘‘कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप’’ ई कहि यात्रीजी अपन पिताक प्रति सभ उद्‌गार बाहर कए दैत छथि। १९४१ ई. मे यात्रीजी पत्नी, अपराजिता, लग आबि गेलथि। १९४१ ई. मे यात्रीजी दू टा मैथिली कविता लिखलन्हि- ‘‘बूढ़ वर’’ आऽ विलाप आऽ एकरा पाम्फलेट रूपमे छपबाए ट्रेनक यात्री लोकनिकेँ बेचलन्हि।जीविकाक ताकिमे सौँसे भारत दुनू प्राणी घुमलाह। पत्नीक जोर देलापर बीच-बीचमे तरौनी सेहो घुमि कए आबथि। आऽ फेर अएल १९४९ ई. अपना संग लेने यात्रीजीक पहिल मैथिली कविता-संग्रह ‘‘चित्रा’’। १९५२ ई. धरि पत्नी संगमे घुमैत रहलथिन्ह, फेर तरौनीमे रहए लगलीह। यात्रीजी बीच- बीचमे आबथि। अपराजितासँ यात्रीजीकेँ छह टा सन्तान भेलन्हि, आऽ सभक सभ भार ओऽ अपना कान्हपर लेने रहलीह। यात्रीजी दमासँ परेशान रहैत छलथि।

हम जखन दरभंगामे पढ़ैत रही तँ यात्रीजी ख्वाजा सरायमे रहैत छलाह। हमरा मोन अछि जे मैथिलीक कोनो कार्यक्रममे यात्रीजी आएल छलाह आऽ कम्युनिस्ट पार्टीबला सभ एजेन्डा छीनि लेने छल। अगिले दिन यात्रीजी अपनाकेँ ओहि धोधा-धोखीमे गेल सभाक कार्यवाहीसँ हटा लेलन्हि। एमर्जेन्सीमे जेल गेलाह तँ आर.एस.एस. केर कार्यकर्ता लोकनिसँ जेलमे भैँट भेलन्हि। आऽ जे.पी.क सम्पूर्ण क्रान्तिक विरुद्ध सेहो जेलसँ बाहर अएलाक बाद लिखलन्हि यात्रीजी। यात्रीजी मैथिलीमे बैद्यनाथ मिश्र ‘‘यात्री’’ आऽ हिन्दीमे नागार्जुन केर नामसँ रचना लिखलन्हि।

‘‘पृथ्वी ते पात्रं’’ १९५४ ई. मे ‘‘वैदेही’’मे प्रकाशित भेल छल, हमरा सभक मैट्रिकक सिलेबसमे छल। यात्रीजी लिखैत छथि-

‘‘आन पाबनि तिहार तँ जे से। मुदा नबान निर्भूमि परिवारकेँ देखार कए दैत छैक। से कातिक अबैत देरी अपराजिता देवीक घोघ लटकि जाइन्हि। कचोटेँ पपनियो नहि उठा होइन्ह ककरो दिश! बेसाहल अन्नसँ कतउ नबान भेलइए’’?



आऽ अन्तमे यात्रीजीक संस्कृत पद्य:-
वासन्ती कनकप्रभा प्रगुणिता
पीतारुर्णेः पल्लवैः
हेमाम्भोजविलासविभ्रमरता
दूरे द्विरेफाः स्ता
यैशसण्डलकेलिकानन कथा
विस्मरिता भूतले
छायाविभ्रमतारतम्यतरलाः
तेऽमी ''चिनार'' द्रुमाः॥
बसंतक स्वर्णिम आभा द्विगुणित भऽ गेल अछि पीयर-लाल कोपड़सँ। स्वर्णकाल भ्रममे भौरा सभ एकरासँ दूर-दूर रहैत अछि। नन्दनवनक विहार जे पृथ्वीपर बिसारि दैत छथि, छाह झिलमिल घटैत-बढ़ैत जिनक डोलब अछि चंचल आ तरल। ओही चिनारकँ हम देखने छी अडिग भेल ठाढ़।

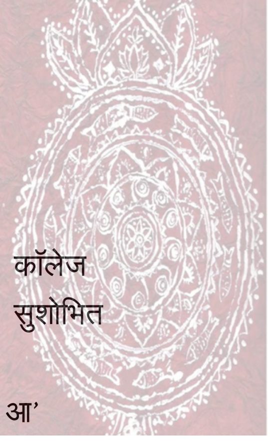
श्री आरसी प्रसाद सिंह (१९११-१९९६), एरौत, समस्तीपुर। मैथिली आऽ हिन्दीक गीतकार। मैथिलीमे माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी प्रकाशित। सूर्यमुखीपर १९८४क साहित्य अकादमी पुरस्कार।

स्व. राजकमल (मणीन्द्र नारायण चौधरी) (१९२९-१९६७), महिषी, सहरसा। रचना:- आदि कथा, आन्दोलन, पाथर फूल (उपन्यास), स्वरगंधा (कविता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन)। हिन्दीमे अनेक उपन्यास, कविताक रचना, चौरङ्गी (बङला उपन्यासक हिन्दी रूपान्तर) अत्यन्त प्रसिद्ध। मिथिलांचलक मध्य वर्गक आर्थिक एवं सामाजिक संघर्षमे बाधक सभ तरहक संस्कार पर प्रहार करब हिनक वैशिष्ट्य रहलन्हि अछि। कथा, कविता, उपन्यास सभ विधामे ई नवीन विचार धाराक छाप छोड़ि गेल छथि।

स्व. श्री गोपालजी झा ''गोपेश'' क जन्म मधुबनी जिलाक मेहथ गाममे १९३१ ई.मे भेलन्हि। गोपेशजी बिहार सरकारक राजभाषा विभागसँ सेवानिवृत्त भेल छलाह। गोपेशजी कविता, एकांकी आऽ लघुकथा लिखबामे अभिरुचि छलन्हि। ई विभिन्न विधामे रचन कए मैथिलीक सेवा कएलन्हि। हिनकर रचित चारि गोट कविता संग्रह ''सोन दाइक चिट्ठी'', ''गुम भेल ठाढ़ छी'', ''एलबम'' आऽ ''आब कहू मन केहन लगैए'' प्रकाशित भेल जाहिमे सोनदाइक चिट्ठी बेश लोकप्रिय भेल। वस्तुस्थितिक यथावत् वर्णन करब हिनक काव्य-रचनाक विशेषता छन्हि।

मायानन्द मिश्रक हिनक जन्म १७ अगस्त १९३४ ई. कँ सुपौल जिलाक बनैनियाँ गाममे भेलनि। तत्कालीन बनैनियाँ कोसीक प्रकोपसँ उजड़ि गेल। फलतः हिनक आरम्भिक शिक्षा अपन मामा स्व. रामकृष्ण झा ''किसुन'' क सान्निध्यमे सुपौलसँ भेलनि। उच्च शिक्षाक हेतु ई दरभंगा चलि गेलाह आऽ ओतएसँ बी.ए. कएल। पश्चात् बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुरसँ हिन्दी एवं मैथिलीमे एम.ए. कएलनि। १९५६ ई. मे आकाशवाणी पटनामे मैथिली कार्यक्रमक लेल नियुक्त भेलाह। एहि अवधिमे मायानन्द बाबू १० गोट रेडियो



नाटक लिखलनि जे अत्यन्त प्रशंसनीय रहल। १९६१ ई.मे ओऽ व्याख्याता, मैथिली विभाग, सहरसा कॉलेज सहरसा, पदपर नियुक्त कएल गेलाह, जतए ई विश्वविद्यालय आचार्य एवं मैथिली विभागाध्यक्षक पदकेँ सुशोभित कएल तथा एक सफल शिक्षकक रूपमे अगस्त १९९४ मे एही विभागसँ अवकाश ग्रहण कएलनि।

पहिने मायानन्द जी कविता लिखलन्हि,पछाति जा कय हिनक प्रतिभा आलोचनात्मक निबंध, उपन्यास आ' कथामे सेहो प्रकट भेलन्हि। भाङ्क लोटा, आगि मोम आ' पाथर आओर चन्द्र-बिन्दु- हिनकर कथा संग्रह सभ छन्हि। बिहाड़ि पात पाथर , मंत्र-पुत्र ,खोता आ' चिडै आ' सूर्यास्त हिनकर उपन्यास सभ अछि॥ दिशांतर हिनकर कविता संग्रह अछि। एकर अतिरिक्त सोने की नैय्या माटी के लोग, प्रथमं शैल पुत्री च,मंत्रपुत्र, पुरोहित आ' स्त्री-धन हिनकर हिन्दीक कृति अछि। मंत्रपुत्र हिन्दी आ' मैथिली दुनू भाषामे प्रकाशित भेल आ' एकर मैथिली संस्करणक हेतु हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित कएल गेलन्हि। श्री मायानन्द मिश्र प्रबोध सम्मानसँ सेहो पुरस्कृत छथि। पहिने मायानन्द जी कोमल पदावलीक रचना करैत छलाह , पाछाँ जा' कय प्रयोगवादी कविता सभ सेहो रचलन्हि।

हुनकर ऐतिहासिक निबन्ध संग्रह ''भारतीय परम्पराक भूमिका'' प्रेसमे अछि।ओऽ अपन योगदान मैथिली पत्रकारितामे मैथिली पत्रिका ''अभिव्यञ्जना'' निकालि आऽ सम्पादित कए देलन्हि। हुनका ''मैथिली मंचक राजकुमार'' आऽ मैथिली मंचक सम्राट''क उपाधि प्राप्त छन्हि। हुनकर मैथिली आन्दोलनपर लिखल पोथी ''अकथ कथा'' प्रकाशित भए रहल अछि।

ओऽ हिन्दीमे उपन्यास आऽ कथा सेहो लिखलन्हि। ''माटी के लोग सोने की नैय्या'' मे ओऽ कोसी क्षेत्रक नाविकक जीवन-संघर्षकेँ चित्रित करैत छथि। ओऽ प्राचीन भारतपर उपन्यासक शृंखला लिखने छथि। ओहि श्रेणीमे प्रथम अछि ''प्रथमं शैलपुत्री च'' जे २०००० ई.पू.सँ १८०० ई.पू. क सभ्यताक सामाजिक, आर्थिक आऽ सांस्कृतिक स्वरूप देखबैत अछि। हुनकर गहन शोधक बाद लिखल किछु ऐतिहासिक निबन्ध ''प्राचीन भारत में पुरुओत्तर'' भारतीय इतिहास परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित कएल जाऽ रहल अछि।

डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' (१९३८-)- ग्राम+पोस्ट- हसनपुर, जिला-समस्तीपुर। पिता स्व. वीरेन्द्र नारायण सिँह, माता स्व. रामकली देवी। जन्मतिथि- २० जनवरी १९३८. एम.ए., डिप.एड., विद्या-वारिधि(डि.लिट)। सेवाक्रम: नेपाल आऽ भारतमे प्राध्यापन। १.म.मो.कॉलेज, विराटनगर, नेपाल, १९६३-७३ ई.। २. प्रधानाचार्य, रा.प्र. सिंह कॉलेज, महनार (वैशाली), १९७३-९१ ई.। ३. महाविद्यालय निरीक्षक, बी.आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, १९९१-९८.

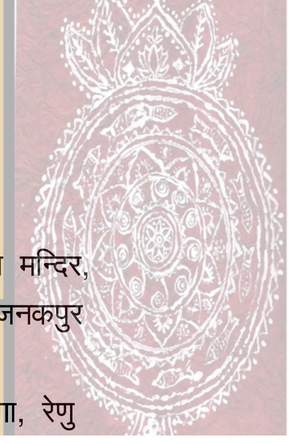
मैथिलीक अतिरिक्त नेपाली अंग्रेजी आऽ हिन्दीक ज्ञाता।

मैथिलीमे १.नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास(विराटनगर,१९७२ई.), २.ब्रह्मग्राम(रिपोर्ताज दरभंगा १९७२ ई.), ३.'मैथिली' त्रैमासिकक सम्पादन (विराटनगर,नेपाल १९७०-७३ई.), ४.मैथिलीक नेनागीत (पटना, १९८८ ई.), ५.नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य (पटना, १९९८ ई.), ६. प्रेमचन्द चयनित कथा, भाग- १ आऽ २ (अनुवाद), ७. वाल्मीकिक देशमे (महनार, २००५ ई.)।

प्रकाशनाधीन: ''विदापत'' (लोकधर्मी नाट्य) एवं ''मिथिलाक लोकसंस्कृति''।

भूमिका लेखन: १. नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत (डॉ रामदेव झा), २.धर्मराज युधिष्ठिर (महाकाव्य प्रो. लक्ष्मण शास्त्री), ३.अनंग कुसुमा (महाकाव्य डॉ मणिपद्म), ४.जट-जटिन/ सामा-चकेबा/ अनिल पतंग), ५.जट-जटिन (रामभरोस कापड़ि भ्रमर)।



अकादमिक अवदान: परामर्शी, साहित्य अकादमी, दिल्ली। कार्यकारिणी सदस्य, भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना। सदस्य, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर। भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली। कार्यकारिणी सदस्य, जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, जनकपुरधाम, नेपाल।

सम्मान: मौन जीकेँ साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार, २००४ ई., मिथिला विभूति सम्मान, दरभंगा, रेणु सम्मान, विराटनगर, नेपाल, मैथिली इतिहास सम्मान, वीरगंज, नेपाल, लोक-संस्कृति सम्मान, जनकपुरधाम,नेपाल, सलहेस शिखर सम्मान, सिरहा नेपाल, पूर्वोत्तर मैथिल सम्मान, गौहाटी, सरहपाद शिखर सम्मान, रानी, बेगूसराय आऽ चेतना समिति, पटनाक सम्मान भेटल छन्हि।

राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठीमे सहभागिता- इम्फाल (मणिपुर), गोहाटी (असम), कोलकाता (प. बंगाल), भोपाल (मध्यप्रदेश), आगरा (उ.प्र.), भागलपुर, हजारीबाग, (झारखण्ड), सहरसा, मधुबनी, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, वैशाली, पटना, काठमाण्डू (नेपाल), जनकपुर (नेपाल)।

मीडिया: भारत एवं नेपालक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे सहस्राधिक रचना प्रकाशित। आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ प्रायः साठ-सत्तर वार्तादि प्रसारित।

अप्रकाशित कृति सभ: १. मिथिलाक लोकसंस्कृति, २. बिहरैत बनजारा मन (रिपोर्ताज), ३.मैथिलीक गाथा-नायक, ४.कथा-लघु-कथा, ५.शोध-बोध (अनुसन्धान परक आलेख)।

व्यक्तित्व-कृतित्व मूल्यांकन: प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन: साधना और साहित्य, सम्पादक डॉ.रामप्रवेश सिंह, डॉ. शेखर शंकर (मुजफ्फरपुर, १९९८ई.)।

चर्चित हिन्दी पुस्तक सभ: थारू लोकगीत (१९६८ ई.), सुनसरी (रिपोर्ताज, १९७७), बिहार के बौद्ध संदर्भ (१९९२), हमारे लोक देवी-देवता (१९९९ ई.), बिहार की जैन संस्कृति (२००४ ई.), मेरे रेडियो नाटक (१९९१ ई.), सम्पादित- बुद्ध, विदेह और मिथिला (१९८५), बुद्ध और विहार (१९८४ ई.), बुद्ध और अम्बपाली (१९८७ ई.), राजा सलहेस: साहित्य और संस्कृति (२००२ ई.), मिथिला की लोक संस्कृति (२००६ ई.)।

वर्तमानमे मौनजी अपन गाममे साहित्य शोध आऽ रचनामे लीन छथि।

डॉ. प्रेमशंकर सिंह (१९४२-) ग्राम+पोस्ट- जोगियारा, थाना- जाले, जिला- दरभंगा। मैथिलीक वरिष्ठ सृजनशील, मननशील आऽ अध्ययनशील प्रतिभाक धनी साहित्य-चिन्तक, दिशा-बोधक, समालोचक, नाटक ओ रंगमंचक निष्णात गवेषक, मैथिली गद्यकेँ नव-स्वरूप देनिहार, कुशल अनुवादक, प्रवीण सम्पादक, मैथिली, हिन्दी, संस्कृत साहित्यक प्रखर विद्वान् तथा बाङला एवं अंग्रेजी साहित्यक अध्ययन-अन्वेषणमे निरत प्रोफेसर डॉ. प्रेमशंकर सिंह (२० जनवरी १९४२)क विलक्षण लेखनीसँ एकपर एक अक्षय कृति भेल अछि निःसृत। हिनक बहुमूल्य गवेषणात्मक, मौलिक, अनूदित आऽ सम्पादित कृति रहल अछि अविरल चर्चित-अर्चित। ओऽ अदम्य उत्साह, धैर्य, लगन आऽ संघर्ष कऽ तन्मयताक संग मैथिलीक बहुमूल्य धरोरादिक अन्वेषण कऽ देलनि पुस्तकाकार रूप। हिनक अन्वेषण पूर्ण ग्रन्थ आऽ प्रबन्धकार आलेखादि व्यापक, चिन्तन, मनन, मैथिल संस्कृतिक आऽ परम्पराक थिक धरोहर। हिनक सृजनशीलतासँ अनुप्राणित भऽ चेतना समिति, पटना मिथिला विभूति सम्मान (ताम्र-पत्र) एवं मिथिला-दर्पण, मुम्बई वरिष्ठ लेखक सम्मानसँ कयलक अछि अलंकृत। सम्प्रति चारि दशक धरि भागलपुर विश्वविद्यालयक प्रोफेसर एवं मैथिली विभागाध्यक्षक गरिमापूर्ण पदसँ अवकाशोपरान्त



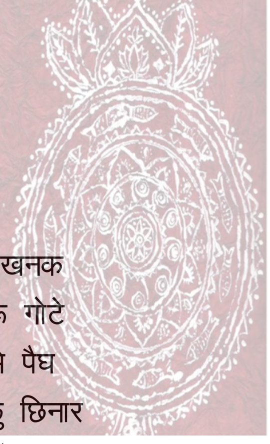



अनवरत मैथिली विभागाध्यक्षक गरिमापूर्ण पदसँ अवकाशोपरान्त अनवरत मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ अभिवर्द्धित करबाक दिशामे संलग्न छथि, स्वतन्त्र सारस्वत-साधनामे।
कृति-
लिप्यान्तरण-१. अङ्कीयानाट, मनोज प्रकाशन, भागलपुर, १९६७।
सम्पादन- १. गद्यवल्लरी, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९६६, २. नव एकांकी, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९६७, ३.पत्र-पुष्प, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९७०, ४.पदलतिका, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९८७, ५. अनमिल आखर, कर्णगोष्ठी, कोलकाता, २००० ६.मणिकण, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ७.हुनकासँ भेट भेल छल, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००४, ८. मैथिली लोकगाथाक इतिहास, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ९. भारतीक बिलाड़ि, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, १०.चित्रा-विचित्रा, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ११. साहित्यकारक दिन, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता, २००७. १२. वुआड़िभक्तितरङ्गिणी, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८, १३.मैथिली लोकोक्ति कोश, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर, २००८, १४.रूपा सोना हीरा, कर्णगोष्ठी, कोलकाता, २००८।
पत्रिका सम्पादन- भूमिजा २००२
मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक ओ रंगमंच,मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ २.मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ३.पुरुषार्थ ओ विद्यापति, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर, १९८६ ४.मिथिलाक विभूति जीवन झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७५.नाट्यान्वाचय, शेखर प्रकाशन, पटना २००२ ६.आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७.प्रपाणिका, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००५, ८.ईक्षण, ऋचा प्रकाशन भागलपुर २००८ ९.युगसंधिक प्रतिमान, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८ १०.चेतना समिति ओ नाट्यमंच, चेतना समिति, पटना २००८
मौलिक हिन्दी: १.विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन, प्रथमखण्ड, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना १९७१ २.विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन, द्वितीय खण्ड, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना १९७२, ३.हिन्दी नाटक कोश, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली १९७६.
अनुवाद: हिन्दी एवं मैथिली- १.श्रीपादकृष्ण कोल्हटकर, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली १९८८, २.अरण्य फसिल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००१ ३.पागल दुनिया, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००१, ४.गोविन्ददास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००७ ५.रक्तानल, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८.

श्री बिलट पासवान ''विहंगम'' जीक जन्म मधुबनी जिलाक एकहत्था ग्राममे १९४० ई. मे भेलन्हि। छात्रावस्थासँ राजनीति एवं साहित्य दुनूमे अभिरुचि रहलन्हि अछि। किछु अवधिक हेतु ई बिहार राज्यक उपमंत्री पदकेँ सेहो सुशोभित कएलन्हि आऽ बिहार विधान सभाक सदस्य रहलाह। गाम घरक चित्रण एवं दलित वर्गक वर्णन हिनक रचनामे सर्वत्र भेटत।

श्री डॉ. गंगेश गुंजन(१९४२-)। जन्म स्थान- पिलखबाड़, मधुबनी। एम.ए. (हिन्दी), रेडियो नाटक पर पी.एच.डी.। कवि, कथाकार, नाटककार आ' उपन्यासकार।१९६४-६५ मे पाँच गोटे कवि-लेखक ''काल पुरुष''(कालपुरुष अर्थात् आब स्वर्गीय प्रभास कुमार चौधरी, श्री गंगेश गुन्जन, श्री साकेतानन्द, आब स्वर्गीय





श्री बालेश्वर तथा गौरीकान्त चौधरीकान्त, आब स्वर्गीय) नामसँ सम्पादित करैत मैथिलीक प्रथम नवलेखनक अनियमितकालीन पत्रिका ‘‘अनामा’’-जकर ई नाम साकेतानन्दजी द्वारा देल गेल छल आऽ बाकी चारू गोटे द्वारा अभिहित भेल छल- छपल छल। ओहि समयमे ई प्रयास ताहि समयक यथास्थितिवादी मैथिलीमे पैघ दुस्साहस मानल गेलैक। फणीश्वरनाथ ‘‘रेणु’’ जी अनामाक लोकार्पण करैत काल कहलन्हि, ‘‘ किछु छिनार छौरा सभक ई साहित्यिक प्रयास अनामा भावी मैथिली लेखनमे युगचेतनाक जरूरी अनुभवक बाट खोलत आऽ आधुनिक बनाओत’’। ‘‘किछु छिनार छौरा सभक’’ रेणुजीक अपन अन्दाज छलन्हि बजबाक, जे हुनकर सन्सर्गमे रहल आऽ सुनने अछि, तकरा एकर व्यञ्जना आऽ रस बूझल हेतैक। ओना ‘‘अनामा’’क कालपुरुष लोकनि कोनो रूपमे साहित्यिक मान्य मर्यादाक प्रति अवहेलना वा तिरस्कार नहि कएने रहथि। एकाध टिप्पणीमे मैथिलीक पुरानपंथी काव्यरुचिक प्रति कतिपय मुखर आविष्कारक स्वर अवश्य रहैक, जे सभ युगमे नव-पीढ़ीक स्वाभाविक व्यवहार होइछ। आओर जे पुरान पीढ़ीक लेखककेँ प्रिय नहि लगैत छनि आऽ सेहो स्वभाविके। मुदा अनामा केर तीन अंक मात्र निकलि सकलैक। सैह अनाम्मा बादमे ‘‘कथादिशा’’क नामसँ स्व.श्री प्रभास कुमार चौधरी आऽ श्री गंगेश गुंजन दू गोटेक सम्पादनमे -तकनीकी-व्यवहारिक कारणसँ-छपैत रहल। कथा-दिशाक ऐतिहासिक कथा विशेषांक लोकक मानसमे एखनो ओहिना छन्हि। श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक बुधिबधियाक लेखक छथि आऽ हिनका उचितवक्ता (कथा संग्रह) क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छन्हि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथ्या परिचय, लोक सुनू (कविता संग्रह), अन्हार- इजोत (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आइ भोर (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलांचल की लोक कथाएँ, मणिपद्मक नैका- बनिजाराक मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद आऽ शब्द तैयार है (कविता संग्रह)।

सुभाष चन्द्र यादव, कथाकार, समीक्षक एवं अनुवादक, जन्म ०५ मार्च १९४८, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान: बलबा-मेनाही, सुपौल- मधुबनी। आरम्भिक शिक्षा दीवानगंज एवं सुपौलमे। पटना कॉलेज, पटनासँ बी.ए.। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्लीसँ हिन्दीमे एम.ए. तथा पी.एह.डी.। १९८२ सँ अध्यापन। सम्प्रति: अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, पश्चिमी परिसर, सहरसा, बिहार। मैथिली, हिन्दी, बंगला, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, स्पेनिश एवं फ्रेंच भाषाक ज्ञान। प्रकाशन: घरदेखिया (मैथिली कथा-संग्रह), मैथिली अकादमी, पटना, १९८३, हाली (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९८८, बीछल कथा (हरिमोहन झाक कथाक चयन एवं भूमिका), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९९९, बिहाड़ि आउ (बंगला सँ मैथिली अनुवाद), किसुन संकल्प लोक, सुपौल, १९९५, भारत-विभाजन और हिन्दी उपन्यास (हिन्दी आलोचना), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, २००१, राजकमल चौधरी का सफर (हिन्दी जीवनी) सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, २००१, मैथिलीमे करीब सत्तरि टा कथा, तीस टा समीक्षा आ हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजी मे अनेक अनुवाद प्रकाशित।बनैत-बिगड़ैत (कथा संग्रह), रमता जोगी (यात्रा-वृत्तान्त)।भूतपूर्व सदस्य: साहित्य अकादमी परामर्श मंडल, मैथिली अकादमी कार्य-समिति, बिहार सरकारक सांस्कृतिक नीति-निर्धारण समिति।






प्रोफेसर उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' जन्म-१९५१ ई. कलकत्तामे।
शिक्षा- बी. ए. (सम्मान) भाषाविज्ञान (प्रथम ईशान स्कॉलर) कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता
एम.ए. भाषाविज्ञान, पी-एचडी. भाषाविज्ञान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
रचना संसार- मैथिली साहित्य मध्य छद्म नाम 'नचितकेता'क नामे, मैथिली आ बंगला साहित्यक कवि आ नाटककारक रूपमे प्रख्यात श्री सिंह एखन धरि चारि कविता संग्रह, एगारह गोट नाटक (मैथिलीमे), छओ साहित्यिक निबंध आ दू टा कविता संग्रह (बांग्लामे), एकर अतिरिक्त एहि दुनू भाषामे आ अंग्रेजीमे कतोक पुस्तकक अनुवाद क' चुकल छथि। १९६६ मे १५ वर्षक उम्रमे पहिल काव्य संग्रह 'कवयो वदन्ति'। १९७१ 'अमृतस्य पुत्राः' (कविता संकलन) आऽ 'नायकक नाम जीवन' (नाटक)| १९७४ मे 'एक छल राजा'/ 'नाटकक लेल' (नाटक)। १९७६-७७ 'प्रत्यावर्त्तन'/ 'रामलीला'(नाटक)। १९७८मे जनक आऽ अन्य एकांकी। १९८१ 'अनुत्तरण'(कविता-संकलन)। १९८८ 'प्रियंवदा' (नाटिका)। १९९७-'रवीन्द्रनाथक बाल-साहित्य'(अनुवाद)। १९९८ 'अनुकृति'- आधुनिक मैथिली कविताक बंगलामे अनुवाद, संगहि बंगलामे दूटा कविता संकलन। १९९९ 'अश्रु ओ परिहास'। २००२ 'खाम खेयाली'। २००६मे 'मध्यमपुरुष एकवचन'(कविता संग्रह। २००८ ई. मे नाटक ''नो एण्ट्री: मा प्रविश'' सम्पूर्ण रूपेँ ''विदेह'' ई- पत्रिकामे धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित भए एकटा कीर्तिमान बनेलक। भाषा-विज्ञानक क्षेत्रमे दसटा पोथी आऽ दू सयसँ बेशी शोध-पत्र प्रकाशित। १४ टा पी.एच.डी. आऽ २९ टा एम.फिल. शोध-कर्मक दिशा निर्देश।
आन साहित्यिक गतिविधि- प्रो. सिंह बांगलादेश, कॅरबियन आयलैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, नेपाल, पाकिस्तान, रूस, सिंगापुर, स्वीडन, थायलैंड आर अमेरिकामे विविध विषय पर अपन व्याख्यान देने छथि।
इंडो-इटैलियन कल्चरल एक्सचेंज फॉर क्रिएटिव रायटर्सक सदस्य(1999), त्रिनिदाद आर टॉबेगो मे कार्यालयी प्रतिनिधिक सदस्य (2002), आ मॉरीशस (2005), फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेलामे आमंत्रित कवि, जतय 'इंडिया गेस्ट ऑफ ऑनर' सँ सम्मानित भेलाह (2006), हालहिमे चीन मे संपन्न एगारह लेखकक सांस्कृतिक प्रतिनिधिक प्रमुखक रूपमे भाग नेने छलाह।
कार्यक्षेत्र- महाराजा सियाजी राव विश्वविद्यालय,बड़ौदा,(1979-81), दक्षिणी गुजरात विश्वविद्यालय (1981-85), दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली (1985-87), हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद,(1987-2000) मे भाषाविज्ञानक प्रोफेसर, ओ अतिथि प्रोफेसरक रूपमे इंडियन इन्स्टीच्यूट ऑफ एडवांस स्टडी, शिमला (1989) मे काज करैत वर्तमानमे केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर मे निदेशकक पद पर आसीन छथि।

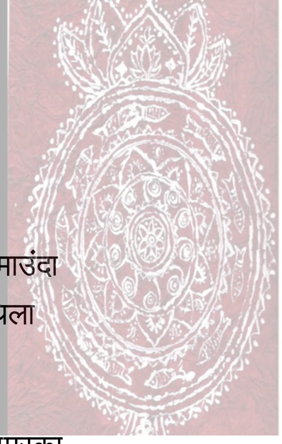
श्री रामभरोस कापड़ि ''भ्रमर'' (१९५१-) जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल)। सम्प्रति-जनकपुरधाम, नेपाल। त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम.ए., पी.एच.डी. (मानद)।

हाल: प्रधान सम्पादक: गामघर साप्ताहिक, जनकपुर एक्सप्रेस दैनिक, आंजुर मासिक, आंगन अर्द्धवार्षिक (प्रकाशक नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी)।

मौलिक कृति: बन्नकोठरी: औनाइत धुँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), तोरा संगे जएबौ रे कुजबा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, १९८४), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, १९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर बसन्त (नाटक),







महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्ततः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सभक संग्रह), बिसरल-बिसरल सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्गस), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान)।

नेपाली कृति: आजको धनुषा, जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरु (आलेख-संग्रह), भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु (अनुवाद)।

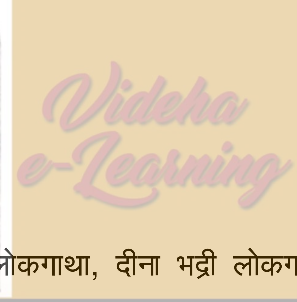
सम्पादन: मैथिली पद्य संग्रह (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान), लाबाक धान (कविता संग्रह), माथुरजीक ‘‘त्रिशुली’’ खण्डकाव्य (कवि स्व. मथुरानन्द चौधरी ‘‘माथुर’’), नेपालमे मैथिली पत्रकारिता, मैथिली लोक नृत्य: भाव, भंगिमा एवं स्वरूप (आलेख संग्रह)। गामघर साप्ताहिकक २६ वर्षसँ सम्पादन-प्रकाशन, ‘‘अर्चना’’ साहित्यिक संग्रहक १५ वर्ष धरि सम्पादन-प्रकाशन। ‘‘आँजुर’’ मैथिली मासिकक सम्पादन प्रकाशन, ‘‘अंजुली’’ नेपाली मासिक/ पाक्षिकक सम्पादन प्रकाशन।

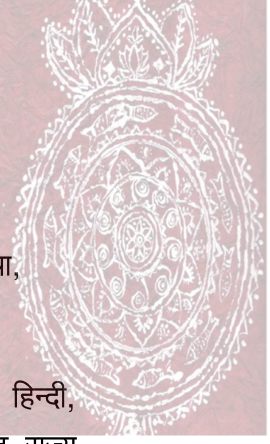
अनुवाद: भयो, अब भयो (‘‘नहि आब नहि’’क मनु ब्राजाकीद्वारा कयल नेपाली अनुवाद)

सम्मान: नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा पहिल बेर १९९५ ई.मे घोषित ५० हजार टाकाक मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कारक पहिल प्राप्तकर्ता। प्रधानमंत्रीद्वारा प्रशस्तिपत्र एवं पुरस्कार प्रदान। विद्यापति सेवा संस्थान दरिभङ्गाद्वारा सम्मानित, मैथिली साहित्य परिषद, वीरगंजद्वारा सम्मानित, ‘‘आकृति’’ जनकपुर द्वारा सम्मानित, दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाद्वारा सम्मानित, जिल्ला विकास समिति धनुषा द्वारा दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल पुरस्कृत एवं सम्मानित, नेपाली मैथिली साहित्य परिषद द्वारा २०५९ सालक अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्वई द्वारा ‘‘मिथिला रत्न’’ द्वारा सम्मानित, शेखर प्रकाशन ‘‘पटना’’ द्वारा ‘‘शेखर सम्मान’’, मधुरिमा नेपाल (काठमाण्डौ) द्वारा २०६३ सालक मधुरिमा सम्मान प्राप्त। काठमाण्डूमे आयोजित सार्कस्तरीय कवि गोष्ठीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधित्व।

सामाजिक सेवा : अध्यक्ष-तराई जनजाति अध्ययन प्रतिष्ठान, जनकपुर, अध्यक्ष- जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, जनकपुर, उपाध्यक्ष- मैथिली प्रज्ञा प्रतिष्ठान, जनकपुर, उपकुलपति- मैथिली अकादमी, नेपाल, उपाध्यक्ष- नेपाल मैथिली थाई सांस्कृतिक परिषद, सचिव- दीनानाथ भगवती समाज कल्याण गुठी, जनकपुर, सदस्य- जिल्ला वाल कल्याण समिति, धनुषा, सदस्य- मैथिली विकास कोष, धनुषा, राष्ट्रीय पार्षद- नेपाल पत्रकार महासंघ, धनुषा।

डॉ महेन्द्र नारायण राम (१९५८-), मैथिलीमे एम.ए. आऽ पी.एच..डी., नीलकमल नाट्य कला परिषद, खुटौनाक संस्थापक, दीपायतनक मास्टर ट्रेनर, सम्पादन-‘‘नव ज्योति’’ पत्रिका, ‘‘लोकशक्ति’’ सामाजिक मुख-पत्रक। लोकवृत्त ताहूमे लोकगाथाक अध्येता। ओऽ अध्यक्ष मैथिली अकादमी, बिहारक संग अनेक संस्थामे विभिन्न पदकेँ सुशोभित कएलनि। हिनका बिहार ग्रंथ अकादमी, पटना, राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, लोक साहित्यिक मंच, पटना, साहित्यकार संसद, समस्तीपुर लोकभाषा साहित्य पुरस्कार सहित विभिन्न संस्थासँ कतिपय साहित्यिक सामाजिक सम्मान प्राप्त छनि। हिनकर प्रकाशनमे मैथिली लोकमहागाथा: कारिख पजियार,



कारिख-गीतावली, कारिख लोकगाथा, जागि गेल छी, गहवर, सहलेस लोकगाथा, दीना भद्री लोकगाथा, रमणजी: ग्रामसभा से विधानसभा तक(हिन्दी) प्रमुख अछि।

भालचन्द्र झा, ए.टी.डी., बी.ए., (अर्थशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटर कलामे डिप्लोमा। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अग्रेजी आऽ गुजरातीमे निष्णात। १९७४ ई.सँ मराठी आऽ हिन्दी थिएटरमे निदेशक। महाराष्ट्र राज्य उपाधि १९८६ आऽ १९९९ मे। थिएटर वर्कशॉप पर अतिथीय भाषण आऽ नामी संस्थानक नाटक प्रतियोगिताक हेतु न्यायाधीश। आइ.एन.टी. केर लेल नाटक ‘‘सीता’’ केर निर्देशन। ‘‘वासुदेव संगति’’ आइ.एन.टी.क लोक कलाक शोध आऽ प्रदर्शनसँ जुड़ल छथि आऽ नाट्यशालासँ जुड़ल छथि विकलांग बाल लेल थिएटरसँ। निम्न टी.वी. मीडियामे रचनात्मक निदेशक रूपेँ कार्य- आभलमया (मराठी दैनिक धारावाहिक ६० एपीसोड), आकाश (हिन्दी, जी.टी.वी.), जीवन संध्या (मराठी), सफलता (रजस्थानी), पोलिसनामा (महाराष्ट्र शासनक लेल), मुन्गी उदाली आकाशी (मराठी), जय गणेश (मराठी), कच्ची-सौन्धी (हिन्दी डी.डी.), यात्रा (मराठी), धनाजी नाना चौधरी (महाराष्ट्र शासनक लेल), श्री पी.के अना पाटिल (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(नशा-सुधारपर), आहट (एड्सपर), बैंगन राजा (बच्चाक लेल कठपुतली शो), मेरा देश महान (बच्चाक लेल कठपुतली शो), झूठा पालतू(बच्चाक लेल कठपुतली शो),

टी.वी. नाटक- बन्दी (लेखक- राजीव जोशी), शतकवली (लेखक- स्व. उत्पल दत्त), चित्रकाठी (लेखक- स्व. मनोहर वाकोडे), हृदयची गोस्ता (लेखक- राजीव जोशी), हद्दापार (लेखक- एह.एम.मराठे), वालन (लेखक- अज्ञात)।

लेखन-

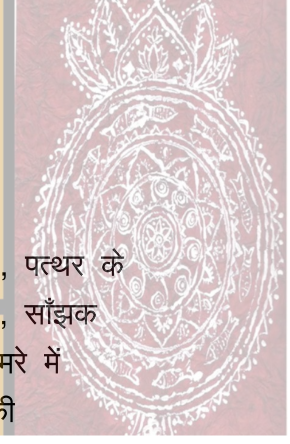
बीछल बेरायल मराठी एकांकी, सिंहावलोकन (मराठी साहित्यक १५० वर्ष), आकाश (जी.टी.वी.क धारावाहिकक ३० एपीसोड), जीवन सन्ध्या(मराठी साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), धनाजी नाना चौधरी (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(हिन्दी), आहट (हिन्दी), यात्रा (मराठी सीरयल), मयूरपन्ख (मराठी बाल-धारावाहिक), हेल्थकेअर इन २०० ए.डी.) (डी.डी.)।

थिएटर वर्कशॉप- कला विभाग, महाराष्ट्र सरकार, अखिल भारतीय मराठी नाट्य परिषद, दक्षिण-मध्य क्षेत्र कला केन्द्र, नागपुर, स्व. गजानन जहागीरदारक प्राध्यापकत्वमे चन्द्राक फिल्मक लेल अभिनय स्कूल, उस्ताद अमजद अली खानक दू टा संगीत प्रदर्शन।

श्री भालचन्द्र झा एखन फ्री-लान्स लेखक-निदेशकक रूपमे कार्यरत छथि।

डॉ. देवशंकर नवीन (१९६२-), ओ ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित हिन्दी-मैथिलीक प्रारम्भिक सर्जना), चानन-काजर (मैथिली कविता संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली, राजकमल चौधरी का रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पहचान (हिन्दी कहानी), अभिधा (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।



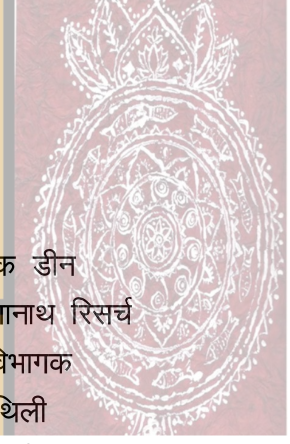
सम्पादन: प्रतिनिधि कहानियाँ: राजकमल चौधरी, अग्निस्नान एवं अन्य उपन्यास (राजकमल चौधरी), पत्थर के नीचे दबे हुए हाथ (राजकमल की कहानियाँ), विचित्रा (राजकमल चौधरी की अप्रकाशित कविताएँ), साँझक गाछ (राजकमल चौधरी की मैथिली कहानियाँ), राजकमल चौधरी की चुनी हुई कहानियाँ, बन्द कमरे में कब्रगाह (राजकमल की कहानियाँ), शवयात्रा के बाद देहशुद्धि, ऑडिट रिपोर्ट (राजकमल चौधरी की कविताएँ), बर्फ और सफेद कब्र पर एक फूल, उत्तर आधुनिकता कुछ विचार, सद्भाव मिशन (पत्रिका)क किछि अंकक सम्पादन, उदाहरण (मैथिली कथा संग्रह संपादन)।
सम्प्रति नेशनल बुक ट्रस्टमे सम्पादक।

तारानन्द वियोगी (१९६६-), महिषी, सहरसामे जन्म। मैथिलीक समर्थ कवि, कथाकार आऽ समालोचक। पिता श्री बद्री महतो, माता श्रीमति बदामी देवी। संस्कृत साहित्यमे आचार्य, एम.ए., पी.एच.डी. आदि कयलाक बाद केन्द्रीय विद्यालयमे अध्यापक भेलाह। सम्प्रति बिहार प्राशासनिक सेवामे छथि। १९७९ ई.मे पहिल रचना ''मिथिला मिहिर''मे प्रकाशित भेलन्हि। ताहिसँ पहिने संगी लोकनि हिनकर एकटा कविता संग्रह छापि चुकल छलाह। पहिल पोथी अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह) १९९१ मे प्रकाशित। अन्य पुस्तक हस्तक्षेप (कविता-संग्रह), अतिक्रमण (कथा-संग्रह), शिलालेख(लघुकथा संग्रह), कर्मधारय। रमेशक संग राजकमल चौधरीक कथाकृति एकटा चंपाकली एकटा विषधर कऽ संपादन कयलनि। स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा संग्रह देसिल बयनाक संपादन। कहियो काल हिन्दीमे लिखैत छथि। अपन हिन्दी कविताक लेल वर्ष १९९५ मे ''मुक्तिबोध पुरस्कार''सँ सम्मानित। मैथिलीक श्रेष्ठ साहित्यकेँ राष्ट्रीय धरातलपर अनूदित-प्रसारित करबामे विशेष रुचि। पं. गोविन्द झाक महत्वपूर्ण उपन्यास भनहि विद्यापति तथा मैथिली की प्रतिनिधि कहानियाँ अनूदित-संपादित। एक संपादित कृति राजकमल चौधरी: सृजन के आयाम। समय-समयपर मैथिली हिन्दीमे कैक गोट पत्रिका/संकलनक संपादन कयलनि। किछु रचना बंगला, तेलुगु, अंग्रेजीमे अनूदित भेलनि अछि।

डॉ कैलास कुमार मिश्र (८ फरबरी १९६७-) दिल्ली विश्वविद्यालयसँ एम.एस.सी., एम.फिल., ''मैथिली फॉकलोर स्ट्रक्चर एण्ड कॉग्निशन ऑफ द फॉकसांग्स ऑफ मिथिला: एन एनेलिटिकल स्टडी ऑफ एन्थ्रोपोलोजी ऑफ म्युजिक'' पर पी.एच.डी.। मानव अधिकार मे स्नातकोत्तर, ४०० सँ बेशी प्रबन्ध -अंग्रेजी-हिन्दी आऽ मैथिली भाषामे- फॉकलोर, एन्थ्रोपोलोजी, कला-इतिहास, यात्रावृत्तांत आऽ साहित्य विषयपर जर्नल, पत्रिका, समाचारपत्र आऽ सम्पादित-ग्रन्थ सभमे प्रकाशित। भारतक लगभग सभ सांस्कृतिक क्षेत्रमे भ्रमण, एखन उत्तर-पूर्वमे मौखिक आऽ लोक संस्कृतिक सर्वांगीन पक्षपर गहन रूपसँ कार्यरत। यूनिवर्सिटी ऑफ नेब्रास्का, यू.एस.ए. केर ''फॉकलोर ऑफ इण्डिया'' विषयक रेफ़ेरी। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालयक पुरस्कारक रेफरी सेहो। सय सँ ऊपर सेमीनार आऽ वर्कशॉपक संचालन, बहु-विषयक राष्ट्रीय आऽ अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीमे सहभागिता। एम.फिल. आऽ पी. एच.डी. छात्रकेँ दिशा-निर्देशक संग कैलाशजी विजिटिंग फैकल्टीक रूपमे विश्वविद्यालय आऽ उच्च-प्रशस्ति प्राप्त संस्थानमे अध्यापन सेहो करैत छथि। मैथिलीक लोक गीत, मैथिलीक डहकन, विद्यापति-गीत, मधुपजीक गीत सभक अंग्रेजीमे अनुवाद।

मैथिलीक पुरोधा जयकान्त मिश्र (1922-2009) -मैथिली साहित्यक एकटा बड़ पैघ विद्वान डॉ. जयकांत मिश्र 1982 ई. मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पद सँ



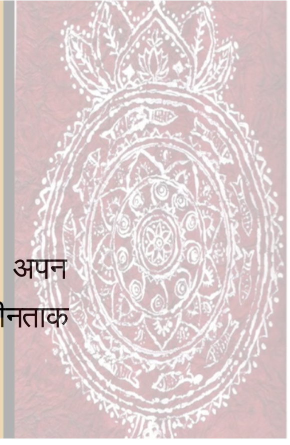



सेवा निवृत्त भेल छलाह। तकरा बाद ओ चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे भाषा आ समाज विज्ञानक डीन रूपमे कार्य कएलन्हि।स्व. मिश्र अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबादक अध्यक्ष, गंगानाथ रिसर्च इंस्टीट्यूट, इलाहाबादक अवैतनिक सचिव आ सम्पादक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागक प्रबन्ध विभागक संयोजक आ साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक मैथिली प्रतिनिधि आ भाषा सम्पादक रहल छलाह।मैथिली साहित्यक इतिहास, फोक लिटेरेचर ऑफ मिथिला, कीर्तनिया ड्रामा सभक क्रिटिकल एडीशन, लेक्चर्स ऑन थॉमस हार्डी, लेक्चर्स ऑन फोर पोएट्स आ द कॉम्प्लेक्स स्टाइल इन एंगलिश पोएट्री हिनक लिखित किछु ग्रंथ अछि।हिनकर वृहत मैथिली शब्द कोष मात्र दू खण्ड प्रकाशित भए सकल, जाहिमे देवनागरीक संग मिथिलाक्षर आ फोनेटिक अंग्रेजीमे सेहो मैथिली शब्दक नाम रहए। ई दुनू खण्ड मैथिली शब्दकोष संकलक लोकनिक लेल सर्वदा प्रेरणास्पद रहत।

ओ 1948 मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृति विषयमे एलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ सनात्तकोत्तर उपाधि कएलाक बाद कतेक बरख धरि बिहार सरकार आ पटना विश्वद्यालयसँ सम्बद्ध रहलाह आ 1957 ई. सँ भारतीय पुरात्तत्व विभागमे काज कएलन्हि आ ओकर शिशुपालगढ़, कौशाम्बी, वैशाली, हस्तिनापुर, कुम्हरार, पाटलिपुत्र, करियन, सोनपुर, बिलावली, नालन्दा, राजगीर, चन्द्रवल्ली, आ हम्पी खुदाइमे विभिना भूमिकामे भाग लेलन्हि। हिनकर लिखल-सम्पादित पोथी सभमे अछि:
1.वैशाली,1950, 2.कुम्हरार एक्सकेवेशंस: 1950-1957, 3.पुरातत्व की दृष्टिमे वैशाली, 4.नागेश भट्टाज पारिभाषेन्दुशेखर, 5.मिथिला आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर (सम्पादित), 6.कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला 7.श्रृंगार भजनावली- एक अध्ययन, 8.क्षेत्र पुरातत्वविज्ञान , 9.पुरातत्व शब्दावली

स्व. अनिलचन्द्र ठाकुर जीक जन्म 13 सितम्बर 1954 ई.कें कटिहार जिलाक समेली गाममे भेलन्हि। 1982 ई.मे हिन्दी साहित्यमे स्नातकोत्तर केलाक बाद नवम्बर ’93 सँ नवम्बर ’94 धरि ‘‘सुबह’’ हस्तलिखित पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन कएलन्हि आ कोशी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकमे अधिकारी रहथि। मैथिली, अंगिका, हिन्दी आ अंग्रेजीमे समानरूपें लेखन।
मृत्युक पूर्व ब्रेन ट्यूमरसँ बीमार चलि रहल छलाह।
प्रकाशित कृति:
आब मानि जाउ(मैथिली उपन्यास)- पहिने भारती-मंडन पत्रिकामे प्रकाशित भेल, फेर मैलोरंग द्वारा पुस्तकाकार प्रकाशित भेल।
कच(अंगिकाक पहिल खण्ड काव्य,1975)
एक और राम (हिन्दी नाटक,1981)
एक घर सड़क पर (हिन्दी उपन्यास, 1982)
द पपेट्स (अंग्रेजी उपन्यास, 1990)
अनत कहाँ सुख पावै (हिन्दी कहानी संग्रह,2007)



आब मानि जाउ(मैथिली उपन्यास)- एहि उपन्यासमे एक एहन युवतीक संघर्ष-गाथा अंकित अछि जे अपन लगनसँ जीवन बदलैत अछि। असंख्य गामक ई कथा, कुलीनताक अधःपतनक कथा, संस्कारविहीनताक उद्घाटन आ भविष्यक पीढ़ीकेँ बचएबाक चेतौनी छी ई कथा।

अणिमा सिंह

(१९२४-)–समीक्षिका, अनुवादिका, सम्पादिका।प्रकाशन: मैथिली लोकगीत, वसवेश्वर (अनु.) आदि। लेडी ब्रेबोर्न कॉलेज, कलकत्तामे पूर्व प्राध्यापिका।

लिली रे

जन्म:२६ जनवरी, १९३३,पिता:भीमनाथ मिश्र,पति:डॉ. एच.एन्.रे, दुर्गागंज, मैथिलीक विशिष्ट कथाकार एवं उपन्यासकार । मरीचिका उपन्यासपर साहित्य अकादेमीक १९८२ ई. मे पुरस्कार।मैथिलीमे लगभग दू सय कथा आ पाँच टा उपन्यास प्रकाशित।विपुल बाल साहित्यक सृजन। अनेक भारतीय भाषामे कथाक अनुवाद-प्रकाशित। प्रबोध सम्मान प्राप्त।

शांति सुमन

जन्म 15 सितम्बर 1942, कासिमपुर, सहरसा, बिहार, प्रकाशित कृति, "ओ प्रतीक्षित, परछाई टूटती, सुलगते पसीने, पसीने के रिश्त, मौसम हुआ कबीर, समय चेतावनी नहीं देता, तप रेहे कचनार, भीतर-भीतर आग, मेघ इन्द्रनील (मैथिली गीत संग्रह), शोध प्रबंध: मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य, उपन्यास: जल झुका हिरन। सम्मान: साहित्य सेवा सम्मान, कवि रत्न सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान। अध्यापन कार्य।

शेफालिका वर्मा

जन्म:९ अगस्त, १९४३,जन्म स्थान : बंगाली टोला, भागलपुर । शिक्षा:एम., पी-एच.डी. (पटना विश्वविद्यालय),सम्प्रति: ए. एन. कालेज मे हिन्दीक प्राध्यापिका ।प्रकाशित रचना:झहरैत नोर, बिजुकैत ठोर । नारी मनक ग्रन्थिकेँ खोलि:करुण रससँ भरल अधिकतर रचना। प्रकाशित कृति :विप्रलब्धा कविता संग्रह,स्मृति रेखा संस्मरण संग्रह,एकटा आकाश कथा संग्रह, यायावरी यात्रावृत्तान्त, भावाञ्जलि काव्यप्रगीत । ठहरे हुए पल हिन्दीसंग्रह ।

इलारानी सिंह

जन्म 1 जुलाई, 1945, निधन : 13 जून, 1993, पिता: प्रो. प्रबोध नारायण सिंह सम्पादिका : मिथिला दर्शन, विशेष अध्ययन: मैथिली, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, भाषा विज्ञान एवं लोक साहित्य। प्रकाशित कृति: सलोमा (आस्कर वाइल्डक फ्रेंच नाटकक अनुवाद 1965), प्रेम एक कविता (1968) बंगला नाटकक






अनुवाद, विषवृक्ष (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विन्दंती (1972), स्वरचित: मैथिली कविता संग्रह (1973), हिन्दी संग्रह।

नीरजा रेणु

जन्म: ११ अक्टूबर १९४५,नाम: कामाख्या देवी,उपनाम:नीरजा रेणु,जन्म स्थान:नवटोल,सरिसबपाही ।शिक्षा: बी.ए. (आनर्स) एम.ए.,पी-एच.डी.,गृहिणी ।प्रकाशित रचना:ओसकण (कविता मि.मि., १९६०) लेखन पर पारिवारिक, सांस्कृतिक परिवेशक प्रभाव।मैथिली कथा धारा साहित्य अकादेमी नई दिल्लीसँ स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक पन्द्रह टा प्रतिनिधि कथाक सम्पादन ।सृजन धार पियासल कथा संग्रह,आगत क्षण ले कविता संग्रह, ऋतम्भरा कथा संग्रह,प्रतिच्छवि हिन्दी कथा संग्रह,१९६० सँ आइधरि सएसँ अधिक कथा, कविता, शोधनिबन्ध, ललितनिबन्ध,आदि अनेक पत्र-पत्रिका तथा अभिनन्दनग्रन्थमे प्रकाशित ।मैथिलीक अतिरिक्त किछु रचना हिन्दी तथा अंग्रेजीमे सेहो।

उषाकिरण खान

जन्म:१४ अक्टूबर १९४५,कथा एवं उपन्यास लेखनमे प्रख्यात।मैथिली तथा हिन्दी दूनू भाषाक चर्चित लेखिका।प्रकाशित कृति:अनुंत्तरित प्रश्न, दूर्वाक्षत, हसीना मंज़िल (उपन्यास), नाटक, उपन्यास।

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

जन्म:१९४८,जन्मस्थान:रहिका,माता:श्रीमती वृन्दा देवी,पिता:पं. दीनानाथ झा,शिक्षा:एम.ए., बी.एड.,प्रसिद्ध अभिनेत्री दू सयसँ बेशी नाटकमे भाग लेलनि ।भंगिमा (नाट्यमंच) क भूतपूर्व उपाध्यक्षा, पत्रिकाक सम्पादन, कथालेखन आदिमे कुशल । 'अरिपन' आदि अनेक संस्था द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित।

आशा मिश्र

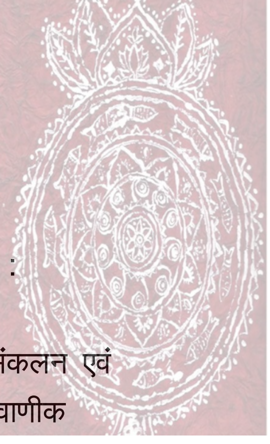
जन्म:६-७-१९५० ई.,प्रकाशित कथा मे मैथिकीक संग हिन्दी मे सेहो । सभसँ पैघ विजय मैथिली कथा संग्रह।

नीता झा

जन्म : २१-०१-१९५३,व्यवसाय:प्राध्यापिका । लेखन पर समाजक परम्परा तथा आधुनिकताक संस्कार सँ होइत विसंगतिक प्रभाव।प्रकाशित कृति : फरिच्छ, कथा संग्रह १९८४, कथानवनीत १९९०,सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य शोध समीक्षा।

ज्योत्स्ना चन्द्रम



मूल नाम: कुमारी ज्योत्स्ना ,उपनाम : ज्योत्स्ना आनन्द ,जन्मतिथि: १५ दिसम्बर, १९६३,जन्मस्थान : मरूआरा, सिंधिया खुर्द, समस्तीपुर,पिता: श्री मार्कण्डेय प्रवासी,माता: श्रीमती सुशीला झा,कार्यक्षेत्र : अध्ययनाध्यापन ।,रचना प्रकाशित : झिझिरकोना (कथा-संग्रह), एसगर-एसगर (नाटक),बीतक संग संकलन एवं सम्पादन।एकर अतिरिक्त दर्जनाधिक कथा ओ कविता विभिन्न पत्र-पत्रिका में प्रकाशित तथा आकाशवाणीक पटना, भागलपुर, दरभंगा केन्द्रसँ प्रसारित।शिक्षा : पटना विश्वविद्यालयसँ हिन्दी साहित्यमे एम.ए,।

सुस्मिता पाठक

जन्म:२५ फरवरी, १९६२,सुपौल, बिहार । परिचिति कविता संग्रह प्रकाशित । कथावाचक, कथासंग्रह प्रकाशनाधीन । राजनीति शास्त्रमे एम.ए.। संगीत, पेंटिंगमे रुचि । मैथिलीक पोथी पत्रिका पर अनेक रेखाचित्र प्रकाशित । समकालीन जीवन, समय, आ तकर स्पंदनक कवयित्री । अनेक भाषामे रचनाक अनुवाद प्रकाशित।

विभा रानी (१९५९-)लेखक- एक्टर- सामाजिक कार्यकर्ता-बहुआयामी प्रतिभाक धनी विभा रानी राष्ट्रीय स्तरक हिन्दी व मैथिलीक लेखिका, अनुवादक, थिएटर एक्टर, पत्रकार छथि, जिनक दर्ज़न भरि से बेसी किताब प्रकाशित छन्हि आ कएकटा रचना हिन्दी आ मैँथिलीक कएकटा किताबमे संकलित छन्हि। मैथिली के 3 साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लेखकक 4 गोट किताब ''कन्यादान'' (हरिमोहन झा), ''राजा पोखरे में कितनी मछलियां'' (प्रभास कुमार चाऊधरी), ''बिल टेलर की डायरी'' व ''पटाक्षेप'' (लिली रे) हिन्दीमे अनूदित छन्हि। समकालीन विषय, फ़िल्म, महिला व बाल विषय पर गंभीर लेखन हिनक प्रकृति छन्हि। रेडियोक स्वीकृत आवाज़क संग ई फ़िल्म्स डिविजन लेल डॉक्यूमेंटरी फ़िल्म, टीवी चैनल्स लेल सीरियल्स लिखल व वॉयस ओवरक काज केलन्हि। मिथिलाक 'लोक' पर गहराई स काज करैत 2 गोट लोककथाक पुस्तक ''मिथिला की लोक कथाएं'' व ''गोनू झा के किस्से'' के प्रकाशनक संगहि संग मिथिलाक रीति-रिवाज, लोक गीत, खान-पान आदिक वृहत खज़ाना हिनका लग अछि। हिन्दीमे हिनक 2 गोट कथा संग्रह ''बन्द कमरे का कोरस'' व ''चल खुसरो घर आपने'' तथा मैथिली में एक गोट कथा संग्रह ''खोह स' निकसइत'' छन्हि। हिनक लिखल नाटक 'दूसरा आदमी, दूसरी औरत' राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह भारंगममे प्रस्तुत कएल जा चुकल अछि। नाटक 'पीर पराई'क मंचन, 'विवेचना', जबलपुर द्वारा देश भरमे भ रहल अछि। अन्य नाटक 'ऐ प्रिये तेरे लिए' के मंचन मुंबई व 'लाइफ़ इज नॉट अ ड्रीम' के मंचन फ़िनलैंडमे भेलाक बाद मुंबई, रायपुरमे कएल गेल अछि। 'आओ तनिक प्रेम करें' के 'मोहन राकेश सम्मान' से सम्मानित तथा मंचन श्रीराम सेंटर, नई दिल्लीमे कएल गेल। ''अगले जनम मोहे बिटिया ना कीजो'' सेहो 'मोहन राकेश सम्मान' से सम्मानित अछि। दुनु नाटक पुस्तक रूप में प्रकाशित सेहो अछि। मैथिलीमे लिखल नाटक ''भाग रौ'' आ ''मदद करू संतोषी माता'' अछि। हिनक नव मैथिली नाटक प्रस्तुति छन्हि- बलचन्दा।

विभा 'दुलारीबाई', 'सावधान पुरुरवा', 'पोस्टर', 'कसाईबाड़ा', सनक नाटक के संग-संग फ़िल्म 'धधक' व टेली -फ़िल्म 'चिट्ठी'मे अभिनय केलन्हि अछि। नाटक 'मि. जिन्ना' व 'लाइफ़ इज नॉट अ ड्रीम' (एकपात्रीय नाटक)





हिनक टटका प्रस्तुति छन्हि।
'एक बेहतर विश्व__कल के लिए' के परिकल्पनाक संगे विभा 'अवितोको' नामक बहुउद्देश्यीय संस्था संग जुड़ल छथि, जिनक अटूट विश्वास 'थिएटर व आर्ट__सभी के लिए' पर अछि। 'रंग जीवन' के दर्शनक साथ कला, रंगमंच, साहित्य व संस्कृति के माध्यम से समाज के 'विशेष' वर्ग, यथा, जेल- बन्दी, वृद्धाश्रम, अनाथालय, 'विशेष' बच्चा सभके बालगृहक संगहि संग समाजक मुख्य धाराल लोकक बीच सार्थक हस्तक्षेप करैत छथि। एतय हिनकर नियमित रूप से थिएटर व आर्ट वर्कशॉप चलति छन्हि। अहि सभक अतिरिक्त कॉर्पोरेट जगत सहित आम जीवनक सभटा लोक आओर लेल कला व रंगमंचक माध्यम से विविध विकासात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम सेहो आयोजित करैत छथि।

श्रीमति विभारानी सम्प्रति मुम्बईमे रहैत छथि।

रूपा धीरू- जन्मस्थान-मयनाकडेरी, सप्तरी, श्रीमती पूनम झा आ श्री अरूणकुमार झाक पुत्री।स्थायी पता- अञ्चल- सगरमाथा, जिल्ला- सिरहा। प्रथम प्रकाशित रचना-कोइली कानए, माटिसँ सिनेह (कविता),भगता बेङक देश-भ्रमण (कनक दीक्षितक पुस्तकक धीरेन्द्र प्रेमर्षिसँग मैथिलीमे सहअनुवाद,सङ्गीतसम्बन्धी कृति- राष्ट्रियगान, भोर, नेहक वएन, चेतना, प्रियतम हमर कमौआ (पहिल मैथिली सीडी), प्रेम भेल तरघुस्कीमे, सुरक्षित मातृत्व गीतमाला, सुखक सनेस। सम्पादन-पल्लव, मैथिली साहित्यिक मासिक पत्रिका, सम्पादन- सहयोग,हमर मैथिली पोथी (कक्षा १, २, ३, ४ आ ५ आ कक्षा 9-10 क ऐच्छिक मैथिली विषय पाठ्यपुस्तकक भाषा सम्पादन), पल्लवमिथिला, मैथिली इन्टरनेट पत्रिका,वि.सं. २०५९ माघ (साहित्यिक), सम्पादन-सहयोग।

डा. रमानन्द झा 'रमण'
जन्म: 02 जनबरी,1949, शिक्षा-एम.ए., पीएच.डी., आजीविका-भारतीय रिजर्व बैंक, पटना (सेवा निवृत्त)। प्रकाशन: मौलिक- समीक्षा 1. नवीन मैथिली कविता,1982, 2. मैथिली नऽव कविता,1993, 3. मैथिली साहित्य ओ राजनीति, 1994, 4. अखियासल, 1995, 5. बेसाहल,2003, 6. भजारल, 2005., 7. निर्यात कैसे शुरू करें? हिन्दी- रिजर्व बैंक, पटनाक प्रकाशन सम्पादित 8. मैथिलीक आरम्भिक कथा, 1978 समीक्षा, 9. श्यामानन्द रचनावली, 1981, 10. जनार्दनझा' जनसीदनकृत निर्दयीसासु (1914) आ पुनर्विवाह (1926), 1984, 11. चेतनाथझाकृत श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा (1910), 1994, 12. तेजनाथ झाकृत सुरराजविजय नाटक (1919), 1994, 13. रासबिहारीलाल दासकृत सुमति (1918), 1996, 14. जीबछ मिश्रकृत रामेश्वर (1916), 1996, 15. भेटघाँट (भेटवार्ता), 1998, 16. रूचय तँ सत्य ने तँ फूसि, 1998, 17. पुण्यानन्द झाकृत मिथिला दर्पण (1925), 2003, 18. यदुवर रचनावली (1888-1934) 2003, 19. श्रीवल्लभ झा (1905-1940) कृत विद्यापति विवरण, 2005, 20. मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज, 2003, 21. पण्डित गोविन्द झाः अर्चा ओ चर्चा, 1997 प्रबन्ध सम्पादक, 22. कवीश्वर चेतना, 2008, चेतना समिति, पटना अनुवाद 23. मौलियरक दू नाटक, 1991, साहित्य अकादमी, 24. छओ बिगहा आठ कटठा, 1999, साहित्य अकादमी, 25. मानवाधिकार घोषणा Universal Declaration of Human Rights २००७(यूनेसको), 26. राजू आ' टाकाक गाछ, 2008 रिजर्व बेंक -वित्तीय शिक्षा





योजना के अन्तर्गत पत्रिका सम्पादन-सह-सम्पादन 1. प्रयोजन, 1993 (मासिक), 2. कोषाक्षर (हिन्दी) 1982, 3. घर बाहर, त्रैमासिक, चेतना समिति, पटना कार्यशाला 1. National Workshop on Literary Translation,- Dec 20.1991 to January 12,02,1992, Sahitya Akademi, New Delhi2.Bonds Beyond the Borders (India-Nepal civil society interaction on Cross Border issues) -Consulate General of India, Birgunj, Nepal and B.P. Koirala India-Nepal Foundation-May 27-28, 20062.Preparation of Intensive Course in Maithili- ERLC, Bhubneswar जूरी 6th Inter National Maithili Drama Festival,1992 - Biratnagar, Nepal पुरस्कार- सम्मान

1. जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार, 1994-95, राजभाषा विभाग,बिहार सरकार, मैथिली नऽव कविता पुस्तक पर, 2. भाषा भारती सम्मान, 2004-05 छओ बिगहा आठ कटठा, (अनुवाद) CIIL, मैसूर।

राजेन्द्र विमल (1949-)।

चामत्कारिक लेखन-प्रतिभाक स्वामी राजेन्द्र विमल नेपालक मैथिली साहित्यक एक स्तम्भ छथि। मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राज्ञ विमल शिक्षाक हकमे विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि। सुललित शब्द चयन एवं भाषामे प्राञ्जलता डा. विमलक लेखनक विशेषता रहलनि अछि। अपन सिद्धहस्त लेखनसँ ई कोनहु पाठकक हृदयमे स्थान बना लैत छथि। कथा आ समालोचनाक सङ्गहि मर्मभेदी गीत गजल लिखबामे प्रवीण डा. विमलक निबन्ध, अनुवाद आदि सेहो विलक्षण होइत छनि। कम्मो लिखिकऽ यथेष्ट यश अरजनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक सङ्गसङ्ग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। खास कऽ मानवीय संवेदनाक अभिव्यक्तिमे हिनक कलम बेजोड़ देखल जाइत अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे प्राध्यापन कएनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाभ छियनि। हिनक जन्म २६ जुलाई १९४९ ई. कऽ भेल अछि। साहित्यकारक नव पीढ़ीकेँ निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणे ई डा.धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरुक रूपमे स्थापित भऽ गेल छथि। जनकपुरधामक देवी चौक स्थित हिनक घर सदति साहित्यक जिज्ञासुसभकअखाड़ाजकाँबनलरहैतअछि।

स्वनामधन्य मिथिला चित्रकार स्व. लक्ष्मीनाथ झा प्रसिद्ध खोखा बाबू, ग्राम-सरिसब, पोस्ट सरिसब-पाही, भाया-मनीगाछी, जिला-मधुबनी (भारत),

काशीकान्त मिश्र "मधुप" (1906-1987)

'राधाविरह' (महाकाव्य) पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक प्रशस्त कवि आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक समर्पित कार्यकर्ता 'झंकार' कवितासँ क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि । प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि । 'घसल अठन्नी कविताक लेल कथ्य आ शिल्प-संवेदना–दुहू स्तर पर चरम लोकप्रियता भेटलनि।

महेन्द्र मलंगिया

मैथिलीक सुपरिचित नाटककार, रंग निर्देशक एवं मैलोरंगक संस्थापक अध्यक्ष । लोक साहित्य पर गंभीर शोध आलेख । मैथिलीमे 13टा नाटक, 19टा एकांकी, 14टा नुक्कड़ आ 10टा रेडियो नाटक प्रकाशित आ आकाशवाणी सँ प्रसारित । सीनियर फेलोशिप (भारत सरकार), इंटरनेशनल थिएटर इंस्टिच्यूट (नेपाल), प्रबोध साहित्य सम्मान आदि सँ सम्मानित । संप्रति ज्योतिरीश्वर लिखित मैथिलीक प्रथम पुस्तक वर्णरत्नाकर पर शोध






कार्य । श्री महेन्द्र मलगियाक जन्म २० जनबरी १९४६ मे मधुबनी जिलाक मलंगिया गाममे भेलन्हि। मलंगियाजी मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली भाषाक जानकार आ थियेटर शिक्षण, पटकथा लेखन आ तत्सम्बन्धी शोधक फ्रीलान्स शिक्षक छथि। सम्मान, उपाधि आ पुरस्कार: २००६(सीनियर फ़ेलो, मानव ससाधन विकास विभाग, भारत सरकार), २००५ ई. मे मैथिली भाषाक सर्वाधिक प्रतिष्ठित प्रबोध सम्मान, उनाप सम्मान, परवाहा (उवा नाट्य परिषद, परवाहा), भानु कला पुरस्कार (कला जानकी संस्थान, जनकपुर), २००४- पाटलिपुत्र पुरस्कार (प्रांगन थिएटर, पटना), इप्टा पुरस्कार (कटिहार इप्टा, कटिहार), २००३- गोपीनाथ आर्यल पुरस्कार (इन्टरनेशनल थिएटर इन्स्टीट्यूट, नेपाल), यात्री चेतना पुरस्कार (चेतना समिति, पटना), बैद्यनाथ सियादेवी पुरस्कार (बी.एस.डी.पी. काठमाण्डू), २०००- चेतना समिति सम्मान (चेतना समिति, पटना), जिला विकास धनुषा साहित्य पुरस्कार (जिला विकास समिति, जनकपुर), १९९९- विद्यापति सेवा संस्थान सम्मान (विद्यापति सेवा संस्थान सम्मान, दरभंगा), १९९८- रंग रत्न उपाधि (अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य परिषद, राँची), १९९७- सर्वोत्तम निर्देशक पुरस्कार (सांस्कृतिक संस्थान, काठमाण्डू), १९९१- भानु कला पुरस्कार, विराटनगर (भानु कला परिषद, बिराटनगर), १९९०- सर्वनाम पुरस्कार (सर्वनाम समिति, काठमाण्डू), १९८५- आरोहण सम्मान, काठमाण्डू, १९८३- वैदेही पुरस्कार (विद्यापति स्मारक समिति, राँची), शोध कार्य: सलहेस: एकटा ऐतिहासिक अध्ययन, विरहा: मिथिलाक एकटा लोकरूप, सामा चकेबा: लोकनाट्यक एक अवलोकन, सलहेसक काल निर्धारण, विद्यापतिक उगना, शिवक गण, मधुबनी एकटा नगर अछि, हम जनकपुर छी, ई जनकपुर अछि।

हिनकर दू टा पोथी ‘‘ओकरा आँगनक बारहमासा’’ आ ‘‘काठक लोक’’ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक मैथिली पाठ्यक्रममे अछि। हिनकर दू टा पोथी त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू केर एम.ए. पाठ्यक्रममे अछि। हिनकर कैकटा आलेख आ किताब सेकेण्डरी आ हायर सेकेण्डरी पाठ्यक्रममे अछि। प्रकाशित पोथी: नाटक: ओकरा आँगनक बारहमासा, जुआयल कंकनी, गाम नञि सुतय, काठक लोक, ओरिजनल काम, राजा सलहेस, कमला कातक राम, लक्ष्मण आ सीता, लक्ष्मण रेखा खण्डित, एक कमल नोरमे, पूष जाड़ कि माघ जाड़, खिच्चड़ि, छुतहा घैल, ओ खाली मुँह देखै छै। ई सभटा कैक बेर आ कैक ठाम खेलाएल गेल अछि। एकाङ्की: टूटल तागक एकटा ओर, लेवराह आन्हरमे एकटा इजोत, गोनूक गबाह, हमरो जे साम्ब भैया, ‘‘बिरजू, बिलटू आओर बाबू’’, मामा सावधान, देहपर कोठी खसा दिअ, नसबन्दी, आलूक बोरी, भूतहा घर, प्रेत चाहे असौच, फोनक करामात, एकटा बताहि आयल छलय, मालिक सभ चल गेलाह, भाषणक दोकान, फगुआ आयोजन आ भाषण, भूत, एक टुकड़ा पाप, मुहक कात, प्राण बचाबह सीता राम, ओ खाली घैल फोड़य छै। ई सभटा मंचित भऽ चुकल अछि। २५ टा चौबटिया नाटक: चक्रव्युह, लटर पटर अहाँ बन्द करू, बाढ़ि फेर औतय, एक घर कानन एक घर गीत, सेर पर सवा सेर, ई गुर खेने कान छेदेने, आब कहू मन केहेन लगैए, नव घर, हमर बौआ स्कूल जेतए, बेचना गेलए बीतमोहना गबए गीत, मोड़ पर, ककर लाल आदि। ई सभटा चौबटिया वीथीपर खेलायल गेल अछि। ११ टा रेडियो नाटक: आलूक बोरी, ई जनम हम व्यर्थ गमाओल, नाकक पूरा, फटफटिया काका आदि। ई सभटा टा पटना, दरभंगा आ नेपालक रेडियो स्टेशनसँ प्रसारित भेल अछि। सम्पादन: मैथिली एकाङ्की (साहित्य अकादमी, नई दिल्ली), विदेहक नगरीसँ (कविता संग्रह), मैथिली भाषा पुस्तक (सेकेण्डरी स्कूल पोथी), लोकवेद (मैथिली पत्रिका)। कथा: प्रह्लाद जड़ि गेल, धार, एक दिनक जिनगी, बनैया सुगा, बालूक भीत, बुलबुल्ला आदि। लघुकथा: डपोरशंख,





मुहचिड़ा आदि। सदस्यता: अध्यक्ष, मैथिली लोक रंग, सदस्य कार्यकारी बोर्ड, मिनाप, जनकपुर, यात्री मधुबनी, मिथिला सांस्कृतिक मंच, मधुबनी। राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार सभमे सहभागिता।

मैथिलीपुत्र प्रदीप

श्री मैथिली पुत्र प्रदीप (१९३६-)। ग्राम- कथवार, दरभंगा। प्रशिक्षित एम.ए., साहित्य रत्न, नवीन शास्त्री, पंचाग्नि साधक। हिनकर रचित ‘‘जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर’ आ ’सभक सुधि अहाँ लए छी हे अम्बे हमरा किए बिसरै छी यै’’ मिथिलामे लेजेंड भए गेलअछि।

अयोध्यानाथ चौधरी

धनुषा, नेपाल 1947-

मूलत: कविक रूपमे परिचित छथि। नेपालक आधुनिक कविताक क्षेत्रमे हिनक नाम उल्लेखनीय अछि। श्री चौधरीक लेखनमे मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओल जाइत अछि। कविताक संग कथा आ निबन्धमे सेहो ई कलम चलबैत छथि। फड़िछाएल लेखन हिनक विशेषता थिकनि।धनुषा जिलाक दुहबी गामक रहनिहार श्री चौधरीक जन्म ६अक्टुबर १९४७कऽ भेल छनि। हिनक क्षितिजक ओहिपार नामसँ एक कविता-संग्रह प्रकाशित छनि।

वृषेश चन्द्र लाल

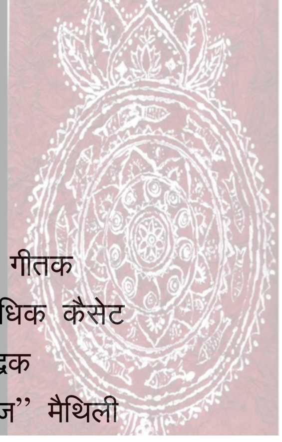
जन्म 29 मार्च 1955 ई. कँ भेलन्हि। पिताः स्व. उदितनारायण लाल,माताः श्रीमती भुवनेश्वरी देव। हिनकर छठिहारक नाम विश्वेश्वर छन्हि। मूलतः राजनीतिककर्मी । नेपालमे लोकतन्त्रलेल निरन्तर संघर्षक क्रममे १७ बेर गिरफ्तार। लगभग ८ वर्ष जेल । सम्प्रति तराई मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष। मैथिलीमे किछु कथा विभिन्न पत्रपत्रिकामे प्रकाशित। आन्दोलन कविता संग्रह आ बी.पीं कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास मोदिआइनक मैथिली रुपान्तरण तथा नेपालीमे संघीय शासनतिर नामक पुस्तक प्रकाशित। ओ विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीति अनुयायी आ नेपालक प्रजातांत्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा छथि। नेपाली राजनीतिपर बरोबरि लिखैत रहैत छथि।

धर्मेन्द्र विह्वल जन्म विक्रम सम्वत २०२३-१२-०४, बस्तीपुर सिरहा,शिक्षा: एम ए (मैथिली/राजनीतिशास्त्र), डिप्लोमा ईन डेभलपमेन्ट जर्नालिज्म, प्रकाशित कृति : एक समयक बात (वि स २०६१ मैथिली हाईकु संग्रह), रस्ता तकैत जिनगी (वि स २०५०/ कविता संग्रह),एक सृष्टि एक कविता (२०५७/दीर्घ कविता),हमर मैथिली पोथी (कक्षा 1 सं ५ धरिक पाठय पुस्तक),सम्प्रति: सभापति, नेपाल पत्रकार महासंघ–

धीरेन्द्र प्रेमर्षि (१९६७-)

मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति आदि विभिन्न क्षेत्रक काजमे समान रूपेँ निरन्तर सक्रिय व्यक्तिक रूपमे चिन्हल जाइत छथि धीरेन्द्र प्रेमर्षि। वि.सं.२०२४ साल भादब १८ गते सिरहा जिलाक गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर गाममे जन्म लेनिहार प्रेमर्षिक पूर्ण नाम धीरेन्द्र झा छियनि। सरल आ सुस्पष्ट भाषा-शैलीमे लिखनिहार प्रेमर्षि कथा, कविताक अतिरिक्त लेख, निबन्ध, अनुवाद आ पत्रकारिताक माध्यमसँ मैथिली आ नेपाली दुनू भाषाक क्षेत्रमे सुपरिचित छथि। नेपालक स्कूली कक्षा १,२,३,४,९ आ १०क ऐच्छिक मैथिली तथा १० कक्षाक ऐच्छिक हिन्दी विषयक पाठ्यपुस्तकक लेखन सेहो कएने छथि। साहित्यिक ग्रन्थमे हिनक एक सम्पादित आ एक अनूदित कृति प्रकाशित छनि। प्रेमर्षि लेखनक अतिरिक्त सङ्गीत, अभिनय आ समाचार-वाचन क्षेत्रसँ सेहो सम्बद्ध छथि। नेपालक पहिल मैथिली टेलिफिल्म मिथिलाक व्यथा आ ऐतिहासिक मैथिली टेलिश्रृङ्खला महाकवि



विद्यापति सहित अनेक नाटकमे अभिनय आ निर्देशन कऽ चुकल प्रेमर्षिकेँ नेपालसँ पहिलबेर मैथिली गीतक कैसेट कलियुगी दुनिया निकालबाक श्रेय सेहो जाइत छनि। हिनक स्वर सङ्गीतमे आधा दर्जनसँ अधिक कैसेट एलबम बाहर भऽ चुकल अछि। कान्तिपुरसँ हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रस्तुत कर्ता जोड़ी रूपा-धीरेन्द्रक धीरेन्द्रक अबाज गामक बच्चा-बच्चा चिन्हैत अछि। ''पल्लव'' मैथिली साहित्यिक पत्रिका आ ''समाज'' मैथिली सामाजिक पत्रिकाक–सम्पारदक

केदारनाथ चौधरी

जन्म 3 जनवरी 1936 ई नेहरा, जिला दरभंगामे। 1958 ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, 1959 ई.मे लॉ। 1969 ई.मे कैलिफोर्निया वि.वि.सँ अर्थस्थास्त्र मे स्नातकोत्तर, 1971 ई.मे सान्फ्रांसिस्को वि.वि.सँ एम.बी.ए., 1978मे भारत आगमन। 1981-86क बीच तेहरान आ प्रैंकफुर्तमे। फेर बम्बई पुने होइत 2000सँ लहेरियासरायमे निवास। मैथिली फिल्म ममता गाबय गीतक मदनमोहन दास आ उदयभानु सिंहक संग सह निर्माता।तीन टा उपन्यास 2004मे चमेली रानी, 2006मे करार, 2008 मे माहुर।

कृष्णमोहन झा (1968-)

जन्म मधेपुरा जिलाक जीतपुर गाममे। ''विजयदेव नारायण साही की काव्यानुभूति की बनावट'' विषयपर जे.एन.यू. सँ एम.फिल आ ओतहिसँ ''निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में प्रेम की परिकल्पना'' विषयपर पी.एच.डी.। हिन्दीमे एकटा कविता सँग्रह ''समय को चीरकर'' आ मैथिलीमे ''एकटा हेरायल दुनिया'' प्रकाशित। हिन्दी कविता लेल ''कन्हैया स्मृति सम्मान''(1998) आ ''हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार'' (2003)। असम विश्वविद्यालय, सिल्चरक हिन्दी विभागमे अध्यापन।

कुमार मनोज कश्यप

जन्म : १९६९ ई मे मधुबनी जिलांतर्गत सलेमपुर गाम मे। स्कूली शिक्षा गाममे आ उच्च शिक्षा मधुबनी मे। बाल्य काले सँ लेखनमे आभरुचि। कैक गोट रचना आकाशवाणी सँ प्रसारित आ विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित। सम्प्रति केंद्रिय सचिवालयमे अनुभाग अधिकारी पद पर पदस्थापित।–

हिमांशु चौधरी

पिता : स्वर्गीय कामेश्वर चौधरी,माताः श्रीमती चन्द्रावती चौधरी,जन्मः वि स २०२०/६/५ लहान, सिरहा,शिक्षाः स्नातकोत्तर(नेपाली),पेशाः पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति),कृति : की भार सांठू ? (मैथिली कविता संग्रह), विगत दू दशकसं नेपाली आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील आ विभिन्न संघ संस्थासं आबद्ध।

श्री आद्याचरण झा (१९२०-)।

मंगरौनी। संस्कृतक महान विद्वान। मैथिलीमे मिहिर, बटुक, वैदेहीमे रचना प्रकाशित।
दरभंगा संस्कृत वि.वि. केर प्रतिकुलपति। राष्ट्रपतिसँ सम्मान प्राप्त।

श्री रामलोचन ठाकुर

जन्म १८ मार्च १९४९ ई.पलिमोहन, मधुबनीमे। वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। भाषाई आन्दोलनमे सक्रिय भागीदारी। प्रकाशित कृति- इतिहासहन्ता, माटिपानिक गीत, देशक नाम छल सोन चिड़ैया, अपूर्वा (कविता संग्रह), बेताल कथा (व्यंग्य), मैथिली लोक कथा (लोककथा), प्रतिध्वनि (अनुदित कविता), जा सकै






छी, किन्तु किए जाउ(अनुदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता), जादूगर (अनुवाद), स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरणात्मक निबन्ध), आंखि मुनने: आंखि खोलने (निबन्ध)।

प्रोफेसर रत्नेश्वर मिश्र (१९४५-)

पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा। अनुवादक, निबन्धकार। प्रकाशन: तमिल साहित्यक इतिहास, भवभूति (दुनू अनुवाद)।

डॉ शंभु कुमार सिंह

जन्म: 18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, 1995] ''मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन'' विषय पर पी-एच.डी. वर्ष 2008, तिलका माँ. भा.विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध आदि समय-समय पर प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-6 मे कार्यरत।

श्याम सुन्दर शशि

जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा-पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ, एम.ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत। बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आ बहुतरास रचना प्रकाशित। सम्प्रति- कान्तिपुर प्रवासक अरब ब्यूरोमे कार्यरत।

श्री बैकुण्ठ झा

पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म-२४-०७-१९५४ (ग्राम-भरवाड़ा, जिला-दरभंगा), शिक्षा-स्नायतकोत्तर (अर्थशास्त्र),पेशा- शिक्षक। मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गीत कऽ रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक ''हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य कहानी कऽ लेखन। अहि के अलावा हिन्दी मे लगभग १५ उपन्यास तथा कहानीक लेखन।

विनीत उत्पल (१९७८-)।

आनंदपुरा, मधेपुरा। प्रारंभिक शिक्षासँ इंटर धरि मुंगेर जिला अंतर्गत रणगांव आऽ तारापुरमे। तिलकामांझी भागलपुर, विश्वविद्यालयसँ गणितमे बीएससी (आनर्स)। गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालयसँ जनसंचारमे मास्टर डिग्री। भारतीय विद्या भवन, नई दिल्लीसँ अंगरेजी पत्रकारितामे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्लीसँ जनसंचार आऽ रचनात्मक लेखनमे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। नेल्सन मंडेला सेंटर फॉर पीस एंड कनफ्लिक्ट रिजोल्यूशन, जामिया मिलिया इस्लामियाक पहिल बैचक छात्र भऽ सर्टिफिकेट प्राप्त। भारतीय विद्या भवनक फ्रेंच कोर्सक छात्र।

आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता पाठ, परिचर्चा आदि प्रसारित। देशक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे विभिन्न विषयपर स्वतंत्र लेखन। पत्रकारिता कैरियर- दैनिक भास्कर, इंदौर, रायपुर, दिल्ली प्रेस, दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली, फरीदाबाद, अकिंचन भारत, आगरा, देशबंधु, दिल्ली मे। एखन राष्ट्रीय सहारा, नोएडा मे वरिष्ट उपसंपादक।–





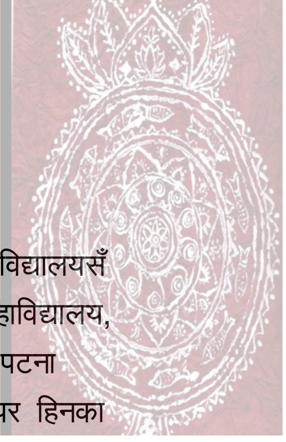

देवांशु वत्स
मैथिली चित्र-श्रृंखला (कॉमिक्स)
जन्म- तुलापट्टी, सुपौल। मास कम्युनिकेशनमे एम.ए। हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-प्रहेलिका इत्यादिक प्रकाशन। विशेष: गुजरात राज्य शाला पाठ्य-पुस्तक मंडल द्वारा आठम कक्षाक लेल विज्ञान कथा "जंग" प्रकाशित (2004 ई.)-

जीवकान्त- पूर्ण नाम- जीवकान्त झा, जन्म स्थान ड़्योढ़, घोघरडीहा, मधुबनी, बिहार । विशिष्ट कथाकार, कवि, उपन्यासकार । 'तकैत अछि चिड़ै' (कविता) हेतु साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे, सूर्य गलि रहल आछि, वस्तु, करमी झील (कथा संग्रह), दू कुहेसक बाट, पीयर गुलाब छल, नहि कतहु नहि पनिपत, अगिनबान (उपन्यास), नाचू हे पृथ्वी, तकैत अछि चिड़ै, खाँड़ो (कवितासंग्रह)।

पिता-गुणानन्द झा, माता-महेश्वरी देवी, जन्म तिथि-२५.०७.१९३६ स्थान अभुआढ़, जिला-सुपौल
शिक्षा-मैट्रिक (१९५५ उ.वि.डेवढ़), आइ.एस.सी. (१९५७ आर.के.कॉलेज, मधुबनी), बी.ए. (१९६४ बिहार वि.वि.स्वतंत्र छात्र), डिप.इन.एड.(१९६९ मिथिला वि.वि.)
नौकरी-उच्च विद्यालयमे सहायक शिक्षक। विज्ञान शिक्षक (उ.वि.खजौली १९५७-८१), हिन्दी शिक्षक (उ.वि.डेओढ़ एवं उ.वि.पोखराम १९८१-९८)
पहिल रचना-इजोड़िया आ टिटही (कविता, जनवरी १९६५ मिथिला मिहिर)
पहिल छपल पोथी- दू कुहेसक बाट (उपन्यास १९६८)
नवीनतम पोथी-खिखिरक बीअरि (२००७ बाल पद्य कथा), अठन्नी खसलइ वनमे (पद्य-कथा संग्रह) आ पंजरि प्रेम प्रकासिया (जीवन-वृत्तक अंश) प्रेसमे
पुरस्कार-साहित्य अकादेमी (दिल्ली १९९८), किरण सम्मान (१९९८), वैदेही सम्मान (१९८५)
प्रकाशित पोथी-
कविता संग्रह:
नाचू हे पृथ्वी (७१), धार नहि होइछ मुक्त (९१), तकैत अछि चिड़ै (९५), खाँड़ो (१९९६), पानिमे जोगने अछि बस्ती (९८), फुनगी नीलाकाशमे (२०००), गाछ झूल-झूल (२००४), छाह सोहाओन (२००६), खिखिरिक बीअरि (२००७)
कथा-संग्रह:
एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे (७२), सूर्य गलि रहल अछि (७५), वस्तु (८३), करमी झील (९८)
उपन्यास:
दू कुहेसक बाट(६८), पनिपत(७७), नहि, कतहु नहि (७६), पीयर गुलाब छल (७१), अगिनबान (८१)
हिन्दी अनुवाद- निशान्त की चिड़िया (हिन्दी अनुवाद-तकैत अछि चिड़ै, साहित्य अकादमी, दिल्ली २००३)

डॉ अमरेश पाठक 1936-





हिनक जन्म सीतामढ़ी जिलाक अन्तर्गत सामारि ग्राममे १९३६ मे भेलन्हि । १९५७ मे पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीक एम. ए. परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथमस्थान पाओल । १९५७ सँ १९६० धरि रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनीमे व्याख्याता रूपेँ तकरा बाद पटना विश्वविद्यालयमे व्याख्याता रूपमे कार्य करए लगलाह । पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली विभागाध्यक्ष रूपेँ । मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन' शोध प्रबन्धपर हिनका बिहार विश्व-विद्यालय द्वारा डि. लिट्क उपाधि भेटलन्हि । ई शोध प्रबन्ध पुस्तकाकार रूपेँ सेहो प्रकाशित भेल अछि बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक विद्यापति ग्रन्थावलीक सम्पादक मण्डलक सदस्य । हिनक अन्य प्रकाशित रचना अछि 'निबन्ध संकलन' । एकरा छोड़ि विभित्र पत्न-पत्निकामे हिनक कतेको निबन्ध प्रकाशित छन्हि । मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहक इहो एक सम्पादक छथि । ई अधिकतर उच्च स्तरीय आलोचनात्मक निबन्ध लिखैत छथि ।

बलराम 1936-2008

जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार । विशिष्ट कथाकार । प्रकाशित कृति : दकचल देबाल (कथा-संग्रह)।

रामदेव झा 1936-

कथाकर, समीक्षक, अनुवादक, ग्रंथ सम्पादक । साहित्य अकादेमीक मूल एवं अनुवाद पुरस्कार प्राप्त कर्त्ता ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगाक मैथिली विभागक पूर्व प्राचार्य । प्रकाशन: पसिझैत पाथर, (अनु.) आदि ।

रवीन्द्र नाथ ठाकुर 1936-

जन्म पूर्णिञा जिलाक धमदाहा ग्राममे 1936 ई. मे भेलन्हि । नेने अवस्थासँ गीत गएबामे एवं कविता लिखबामे विशेष रुचि । कोनो मंच पर ठाढ़ भेला पर ई सहजहि श्रीताकेँ आह्लादित करैत छथि । हिनक सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मिनी महाकाव्य, एक प्रयोगधर्मी काव्य, एक उपन्यास, एक नाटक 'एक राति' एवं एक हिन्दी नाटक, प्रकाशित भेल छन्हि ।

कीर्तिनारायण मिश्र 1937-

जन्म १७ जुलाई १९३७ ई. कँ ग्राम शोकहारा (बरौनी), जिला बेगूसरायमे भेलन्हि। हुनकर प्रकाशित कृति अछि सीमान्त, हम स्तवन नहि लिखब (कविता संग्रह)। आखर पत्रिकाक लब्धप्रतिष्ठ सम्पादक।

कुलानन्द मिश्र 1939-

कुलानन्द मिश्र (१९४०-२०००), जन्म पकड़ी कोठी, सीतामढ़ी, बिहार। सुविख्यात कवि,, संपादक, समालोचक। प्रकाशित कृति- तावत एतबे, भोरक प्रतीक्षामे (कविता संग्रह), भारतक भाषा सर्वेक्षण, पारो, राजकमल चौधरी की ग्यारह कहानियाँ (अनुवाद)।



बिलट पासवान 'विहंगम' 1940-

जन्म मधुबनी जिलाक एकहत्था ग्राममे १९४० ई. मे भेलन्हि।

प्रभास कुमार चौधरी 1941-1998

गाम- पिंडारुछ, जिला- दरभंगा ।प्रख्यात कथाकार ओ उपन्यासकार । प्रभासक कथा (कथा-संग्रह) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति : कथा-प्रभास, प्रभासक कथा, नव घर उठय पुरान घर खसय, दिदवल (कथासंग्रह), अभिशप्त, युगपुरुष, हमरा लग रहब, नवारम्भ, राजा पोखरिमे कतेक मछरी (उपन्यास) । विभिन्न महत्वपूर्ण पत्रिकाक सम्पादन । त्रैमासिक कथा गोष्ठी 'सगर राति दीप जरय' केर प्रारम्भ

साकेतानन्द 1941-

वरिष्ठ कथाकार, गणनायक (कथा-संग्रह) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: गणनायक (कथासंग्रह), सर्वस्वांत (उपन्यास)।

मार्कण्डेय प्रवासी 1942-

जन्म ग्राम: गरुआर, जिला: समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: अगस्त्यायिनी (महाकाव्य); एतदर्थ (कविता संग्रह), अक्षर चेतना (काव्य संग्रह)। अभियान, हम कालिदास (उपन्यास)। 'अगस्त्यायिनी' लेल । १९८१मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त।

मोहन भारद्वाज 1943-

गाम- नवानी, जिला- मधुबनी । मैथिलीक प्रखर समालोचक, प्रबोध सम्मान 2008 सँ सम्मानित

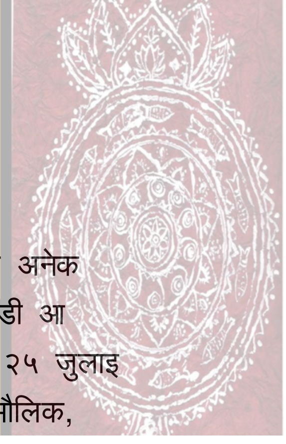
भीमनाथ झा 1945-

जन्म:कोइलख, मधुबनी, बिहार । प्रखर कवि, समालोचक, प्राध्यापक । 'विविधा'पुस्तक लेल सन् १९९२मे सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: त्रिधारा, वीणा, की फुरैए की नहि, नाम तँ थिक ओएह (कविता संकलन), परिचायिका, सीताराम झा, कवि चूड़ामणिक काव्य साधना, विविधा (निबंध, आलोचना) आदि ।

डॉ रामदयाल राकेश, सर्लाही, नेपाल 1942-

मैथिली मातृभाषा, हिन्दीक प्राध्यापक आ नेपालीक लेखक ई तीनू भाषा 'राकेश'क व्यक्तित्वमे एना ने मिझराएल छैक जे कोनहुसँ हिनका भिन्न नहि कएल जा सकैत अछि । ई विशेषत: नेपालीमे लिखैत छथि, मुदा



लेखनक विषय मूलत: मैथिलीए संस्कृति रहैत छनि । ओना मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे सेहो ई अनेक रचना कएने छथि ।नेपालक राजकीय-प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक सदस्य 'राकेश' दिल्ली विश्वविद्यालयसँ पीएचडी आ अमेरिकास्थित इण्डियाना यूनिभर्सिटीसँ पोस्ट डाक्टरल रिसर्च कएने छथि । डा. 'राकेश'क जन्म २५ जुलाइ १९४२ ई. कऽ सर्लाही जिलाक सिसौटियामे भेल छनि । नेपाली, मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे मौलिक, सम्पादित आ अनूदित कऽ करीब दू दर्जन पोथी प्रकाशित , दर्जनभरि देशक भ्रमण सेहो कएने छथि ।

उपेन्द्र दोषी 1943-2001

जन्म स्थान रामपुर-कोरिगामा, दरभंगा । कवि-कथाकार, गीत-गजलकार । प्रकाशित कृति: यंत्रणाक क्षणमे (कविता संग्रह)। हिन्दीमे अनेक पोथी प्रकाशित। ओड़ियासँ मैथिली अनुवाद हेतु मृत्युपरान्त साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत।

उदयचन्द्र झा "विनोद" 1943-

गाम- रहिका, मधुबनी । जन्म-ग्राम- दुलहा, मधुबनी । प्रकाशित कृति: संक्रान्ति, मौसम अयला पर, एहना स्थितिमे, भरि देह गौरा (कविता-संग्रह), धूरी (सहयोगी कविता संग्रह); जांत (कथा संग्रह) 'माटि पानि'क वरेण्य सम्पादक।

मंत्रेश्वर झा 1944-

जन्म ६ जनवरी १९४४ ई.ग्राम-लालगंज, जिला-मधुबनीमे। प्रकाशित कृति: खाधि, अन्चिनहार गाम, बहसल रातिक इजोत (कविता संग्रह); एक बटे दू (कथा संग्रह), ओझा लेखे गाम बताह (ललित निबन्ध)। मैथिली कथा संग्रहक हिन्दी अनुवाद "कुंडली" नामसँ प्रकाशित। दि फूल्स पैराडाइज (अंग्रेजीमे ललित निबन्ध), कतेक डारि पर (आत्मकथा)।

रत्नेश्वर मिश्र 1945-

अनुवादक, निबंधकार । प्रकाशन: तमिल साहित्यक इतिहास,भवभूति (दुनू अनुवाद)।

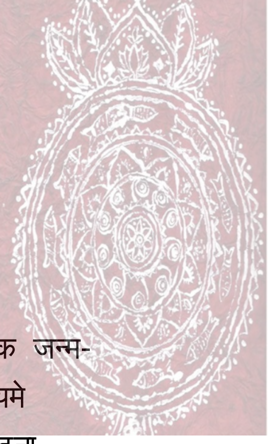
वीरेन्द्र मल्लिक 1945-

कवि, सम्पादक, समीक्षक । आखर, अगनिपत्रक सम्पादन

शैलेन्द्र आनन्द 1955-

जन्म स्थान शिवनगर मधुबनी, दू टा समीक्षा, तीन टा कथा संग्रह, दू टा गीत-गजल संग्रह ओ चारि टा कथा-संग्रह प्रकाशित।



विजयकान्त मिश्र इतिहासकार 1927-1994

डॉ. विजयकांत मिश्रक जन्म १० अगस्त १९२७ मंगरौनी गाम जे नव्य न्याय आ तांत्रिक साधनाक जन्म-स्थली अछि- (जिला मधुबनी) मे भेलन्हि। ओ 1948 मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृति विषयमे एलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ सनात्तकोत्तर उपाधि कएलाक बाद कतेक बरख धरि बिहार सरकार आ पटना विश्वद्यालयसँ सम्बद्ध रहलाह आ 1957 ई. सँ भारतीय पुरात्तत्व विभागमे काज कएलन्हि आ ओकर शिशुपालगढ़, कौशाम्बी, वैशाली, हस्तिनापुर, कुम्हरार, पाटलिपुत्र, करियन, सोनपुर, बिलावली, नालन्दा, राजगीर, चन्द्रवल्ली, आ हम्पी खुदाइमे विभिना भूमिकामे भाग लेलन्हि।हिनकर लिखल-सम्पादित पोथी सभमे अछि: 1.वैशाली,1950 2.कुम्हरार एक्सकेवेशंस: 1950-1957 3.पुरातत्व की दृष्टिमे वैशाली 4.नागेश भट्टाज पारिभाषेन्दुशेखर 5.मिथिला आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर (सम्पादित) 6.कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला 7.श्रृंगार भजनावली- एक अध्ययन 8.क्षेत्र पुरातत्वविज्ञान- 9.पुरातत्व शब्दावली

विनोद बिहारी लाल 1953-

जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार ।चर्चित कथाकार । सयसँ ऊपर कथा प्रकाशित

श्याम दरिहरे 1954-

जन्म स्थान बरहा, बेनीपट्टी मधुबनी, बिहार । कवि, कथाकार । प्रकाशित कृति : सरिसोमे भूत (कथा संग्रह) अनूदित कृति : कनिप्रिया (धर्मवीर भारती

प्रोफेसर महेन्द्र 1947-

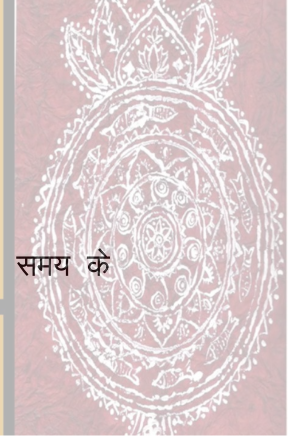
जन्म: भेलाही, सुपौल, बिहार । प्रसिद्ध कवि, कथाकार, आलोचक । वृत्ति: भू.ना. विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर केन्द्र, सहरसामे मैथिली विभागाध्यक्ष। प्रकाशित कृति साहित्य अकादेमीसँ प्राकाशित मोनोग्राफ शैलेन्द्र मोहन झा । सहयोगी संकलन-संकल्प । 'राजकमल जयन्ती प्रसंगक संपादन

बैकुण्ठ झा 1954-

श्री बैकुण्ठ झा,पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म-२४ ०७ १९५४ (ग्राम-भरवाड़ा, जिला-दरभंगा),शिक्षा-स्नात्कोत्तर (अर्थशास्त्र),पेशा- शिक्षक। मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गीत कऽ रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक ''हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य कहानी कऽ लेखन। अहि के अलावा हिन्दी मे लगभग १५ उपन्यास तथा कहानी के लेखन।

महाप्रकाश 1946-




जन्म: बनगांव, सहरसा, बिहार । वरिष्ट कवि ओ कथाकार। प्रकाशित कृति: कविता संभवा, संग समय के (कविता संग्रह)।

अयोध्यानाथ चौधरी, धनुषा, नेपाल 1947-

मूलत: कविक रूपमे परिचित छथि । नेपालक आधुनिक कविताक क्षेत्रमे हिनक नाम उल्लेखनीय अछि । श्री चौधरीक लेखनमे मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओल जाइत अछि । कविताक संग कथा आ निबन्धमे सेहो ई कलम चलबैत छथि । फड़िछाएल लेखन हिनक विशेषता थिकनि ।धनुषा जिलाक दुहबी गामक रहनिहार श्री चौधरीक जन्म ६अक्टुबर १९४७कऽ भेल छनि । हिनक क्षितिजक ओहिपार नामसँ एक कविता-सग्ङग्रह प्रकाशित छनि

सियाराम झा ''सरस'' 1948-

जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी बिहार । प्रसिद्ध गीतकार, बादमे कथा लेखन प्रारम्भ केलनि । प्रकाशित कृति आंजुर भरि सिंगरहार, शोणिताएल उगैत सूर्यक धम्मक (कथा संग्रह)।

अग्निपुष्प 1948-

जन्म: तरौनी, दरभंगा। मूलनाम : महेन्द्र झा । मैथिलीमे सहस्त्रबाहु कविता संग्रह प्रकाशित । मुक्ति प्रसंगक अनुवाद प्रकाशित । वामपंथी आन्दोलनमे सक्रिय। शिक्षा, सम्वाद आदि पत्रिकाक सम्पादन । वामपंथी विचारधाराक सशक्त कवि।

रामलोचन ठाकुर 1949-

श्री रामलचन ठाकुर, जन्म १८ मार्च १९४९ ई.पलिमोहन, मधुबनीमे। वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। भाषाई आन्दोलनमे सक्रिय भागीदारी। प्रकाशित कृति- इतिहासहन्ता, माटिपानिक गीत, देशक नाम छल सोन चिड़ैया, अपूर्वा (कविता संग्रह), बेताल कथा (व्यंग्य), मैथिली लोक कथा (लोककथा), प्रतिध्वनि (अनुदित कविता), जा सकै छी, किन्तु किए जाउ(अनुदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता), जादूगर (अनुवाद), स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरणात्मक निबन्ध), आंखि मुनने: आंखि खोलने (निबन्ध)।

राजेन्द्र विमल, जनकपुर, नेपाल 1949-

राजेन्द्र विमल (1949-)। मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राज्ञ विमल शिक्षाक हकमे विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि।कम्मो लिखिकऽ यथेष्ट यश अरजनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक सङ्गसङ्ग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे प्राध्यापन कएनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाभ छियनि। हिनक जन्म



२६ जुलाई १९४९ ई. कऽ भेल अछि। साहित्यकारक नव पीढ़ीकेँ निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणे ई डा.धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरुक रूपमे स्थापित भऽ गेल छथि।

हरेकृष्ण झा 1950-

जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- कोइलखमे। अभियंत्रणक अध्ययण छोड़ि मार्क्सवादी राजनीतिमे सक्रिय। अनेक कविता आ आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित। अनुवाद एवं विकास विषयक शोध कार्यमे रुचि। स्वतंत्र लेखन। प्रकृति एवं जीवनक तादात्म्य बोधक अग्रणी कवि। ‘‘एना त’ नहि जे’’ (कविता संग्रह)।

शिवेन्द्रलाल कर्ण, धनुषा, नेपाल 1951-

लेखकसँ अधिक शिक्षकक रूपमे परिचित आ प्रतिष्ठित छथि । त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गतरा. रा. ब. कैम्पस, जनकपुर-धामक सह-प्राध्यापक श्री कर्णक ऐतिहासिक विषय-वस्तुपर लिखल कतोक लेख मैथिली, हिन्दी आ अग्ङरेजी भाषामे प्रकाशित अछि । स्वान्त-सुखाय ई कहियो कालकऽ कविता-कथा सेहो लिखि लैत छथि । हिनक लेखन ज्ञानवर्द्धक, जानकारीमूलक एवं सोझारएल रहैत अछि । देखलापर बुझना जाइत अछि जे ई हिनक गम्भीर अध्ययनक परिणति थिक ।सामाजिक तथा साहित्यिक सङ्घ-संस्थासभमे सेहो सक्रिय प्राध्यापक कर्णक जन्म धनुषा जिलाक देवडीहा गाममे २ जनवरी १९५१ ई. कऽ भेल छनि ।

शैलेन्द्र कुमार झा 1952-

जन्म स्थान हरिपुर, वकशी टोल, मधुबनी बिहार। प्रकाशित कृति: आरोह अवरोह, दशम खुट्टी (कथा संग्रह), इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ मिथिला (अंग्रेजी) ।

शिवशंकर श्रीनिवास 1953-

जन्म स्थान लोहना मधुबनी, बिहार । चर्चित कथाकार ओ आलोचक । गीत ओ कविता सेहो कहियो काल लिखैत छथि । प्रकाशित कृति : त्रिकोण, अदहन, गाछ-पात, गामक लोक (कथा संग्रह)।

अशोक 1953-

जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, कवि ओ सम्पादक । प्रकाशित कृति : चक्रव्यूह (कविता संग्रह) त्रिकोण (सहयोगी कथा संग्रह), ओहि रातिक भोर (कथा-संग्रह), मातवर (कथा संग्रह)।

विभूति आनन्द 1953-

जन्म: शिवनगर, मधुबनी, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार, संपादक । प्रकाशित कृति टूटा उपन्यास टूटा समीक्षा, तीन टा कथ संग्रह, टूटा गीत-गजल संग्रह ओ चारिटा कथा-संग्रह प्रकाशित।





डॉ. शशिनाथ झा 1954-

गाम-दीप, जिला- मधुबनी। मैथिली, बांग्ला, नेवारी आ देवनागरी पांडुलिपिक विशेषज्ञ।

लल्लन प्रसाद ठाकुर 1951-1995

जन्म ५ फरबरी १९५१ मुंगेर मे श्रीमती सुभद्रा देवी आ श्री हीरानंद ठाकुरक द्वितीय बालक । हिनक ग्राम-समौल,जिला-मधुबनी। सिविल इंजीनियर, टाटा स्टीलमे चाकरी। प्रकाश झाक फ़िल्म ‘‘कथा माधोपुर की’’ मे मुख्य भुमिका। नाटककार आ मंच अभिनेता। हुनक लिखल किछु प्रसिद्ध मैथिली नाटक छन्हि :बडका साहेब,मिस्टर निलो काका, लोंगिया मिरचाई,बकलेल आदि वा अंत।

सुकांत सोम 1950-

जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे 1950 ई. मे भेलन्हि । बी. ए. पास कए ई पटनाक दैनिक ‘जनशक्ति’क सहायक सम्पादक छलाह । फेर नव भारत टाइम्स, पटनामे।बाल्यवस्थासँ अपन पैतृक (पिता यात्रीजी) गुण कविता करबाक तथा कथा लिखबामे सेहो यश अर्जन कएलन्हि अछि । वर्त्तमान राजनीति सामाजिक विषयसँ सम्बद्ध व्यंग्यात्मक, सरल भाषामे लिखल नव कविता हिनक विशेषता छन्हि । गामघरक परिवेश तदनुकूल शब्द एवं बिम्ब रचनामे क्रमहि सिद्ध छथि ।

पशुपतिनाथ झा, महोत्तरी, नेपाल 1954-

हिनक लेखन विवरणात्मक होइत अछि आ सम्बद्ध विषयमे नीकजकाँ जानकारी दैत अछि । विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक लेख-रचना बरोबरि देखबामे अबैत रहैछ ।रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे मैथिली विषयक प्राध्यापनमे संलग्न श्री झा मैथिलीसम्बन्धी सग्ङठनात्मक गतिविधिसँ सेहो जुड़ल छथि । मैथिली भाषाक लोपोन्मुख अवस्थामे रहल अपन लिपि तिरहुतामे विशेषज्ञता रखनिहार श्री झा एकर संरक्षण-सम्बर्द्धनक दिशामे सेहो क्रियाशील छथि ।प्रध्यापक झा मैथिली महाकाव्यमे रस निरूपण विषयपर विद्यावारिधि कएने छथि आ शिक्षा तथा कानून विषयमे सेहो स्नातक छथि । महोत्तरी जिलाक एकरहिया रहनिहार श्री झाक जन्म ४ दिसम्बर १९५४ कऽ भेलछनि ।

वृखेश चन्द्र लाल, नेपाल 1955-

जन्म 29 मार्च 1955 ई. कँ भेलन्हि। पिताः स्व. उदितनारायण लाल,माताः श्रीमती भुवनेश्वरी देव। हिनकर छठिहारक नाम विश्वेश्वर छन्हि। मूलतः राजनीतिककर्मी । नेपालमे लोकतन्त्रलेल निरन्तर संघर्षक क्रममे १७ बेर गिरफ्तार । लगभग ८ वर्ष जेल ।सम्प्रति तराई मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष । मैथिलीमे किछु कथा विभिन्न पत्रपत्रिकामे प्रकाशित । आन्दोलन कविता संग्रह आ बी.पीं कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास मोदिआइनक मैथिली रुपान्तरण तथा नेपालीमे संघीय शासनतिर नामक पुस्तक प्रकाशित । ओ






विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीति अनुयायी आ नेपालक प्रजातांत्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा छथि। नेपाली राजनीतिपर बरोबरि लिखैत रहैत छथि।

नारायणजी 1956-

जन्म: घोघरडीहा (मधुबनी)। मैथिली भाषा-साहित्यमे एम. ए., पी-एच. डी. कामेश्वर लता संस्कृत विद्यालय, घोघरडीहामे अध्यापन । प्रकाशित कृति: 'घरि घुरि रहल छी' (काव्य-संग्रह)।

केदार कानन 1959-

जन्म स्थान सुपौल, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार ओ संपादक। प्रकाशित कृति : आकार लैत शब्द (कविता संग्रह), अनूदित कृति राजा राम मोहन राय, प्रायश्चित। सम्पादन संकल्प, भारती मंडन (पत्रिका)।

मानेश्वर मनुज 1958-

जन्म गम्हरिया (मानपौर, मधुबनी)मे, 1978सँ 1992 धरि नौसेनामे विभिन्न जहाजपर कार्यरत, फेर यात्री रेलमे। सम्बन्ध (कथा संग्रह) प्रकाशित।

महेन्द्र नारायण राम 1958-

सम्पादन-"नव ज्योति" पत्रिका, "लोकशक्ति" सामाजिक मुख-पत्रक। लोकवृत्त ताहूमे लोकगाथाक अध्येता।

तारानन्द वियोगी 1966-

महिषी, सहरसामे जन्म।पहिल पोथी अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह) १९९१ मे प्रकाशित। अन्य पुस्तक हस्तक्षेप (कविता-संग्रह), अतिक्रमण (कथा-संग्रह), शिलालेख(लघुकथा संग्रह), कर्मधारय।राजकमल चौधरीक कथाकृति एकटा चंपाकली एकटा विषधर संकलन-सपादन।

भालचन्द्र झा

मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अग्रेजी आऽ गुजरातीमे निष्णात। १९७४ ई.सँ मराठी आऽ हिन्दी थिएटरमे निदेशक।बीछल बेरायल मराठी एकांकीक मैथिली अनुवाद।

रमेश 1961-

जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: समांग, समानांतर (कथा संग्रह), नागफेनी (गजल संग्रह), संगोर, समवेत स्वरक आगू, कोसी धारक सभ्यता, पाथर पर दूभि (काव्य संग्रह), प्रतिक्रिया (आलोचनात्मक निबंध)।






प्रदीप बिहारी 1963-

जन्म स्थान कन्हौली मल्लिक टोल, खजौली, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, उपन्यासकार ओ रंगकर्मी । प्रकाशित कृति: गुमकी ओ बिहाड़ि, विसूवियस (उपन्यास), औतीह कमला जयतीह कमला, खण्ड-खण्ड जिनगी, सरोकार (कथा संग्रह)।

फूलचन्द्र झा ‘‘प्रवीण’’ 1961-

गाम तुमौल दरभंगा, आयल नवल प्रभात, पांगल गाछक छाहरि, हमरा मोनक खजन चिड़ैया, बसंतक बजनिञा (कविता संग्रह), भूत होइत भविष्य़ (कथा संग्रह)।

विद्यानन्द झा 1965-

बुद्धपूर्णिमा, १९६५कें कैथिनियाँ, झंझारपुर मुधुबनीमे जन्म। पराती जकाँ (कविता संग्रह) प्रकाशित । मूलतः कवि, थोड़ कथा लिखलनि, जे अपन मार्मिक अभिव्यक्तिक कारण बेस चर्चित भेल । विडम्बनापूर्ण परिस्थितिक पाछू जिम्मेवार समाजार्थिक कारणक खोज हिनकर मूल सृजन प्रेरणा थिक

रमेश रंजन, परवाहा, नेपाल 1966-

परवाहा, नेपालमे जन्म । नेपालीय कथा-जगतक नवीन मुदा सम्मानित नाम । जनपक्षधर कथा-दृष्टि आ मोहक शिल्प । थोड़ लिखलनि, मुदा बेर-बेर चर्चित रहलाह ।

धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सिरहा, नेपाल 1967-

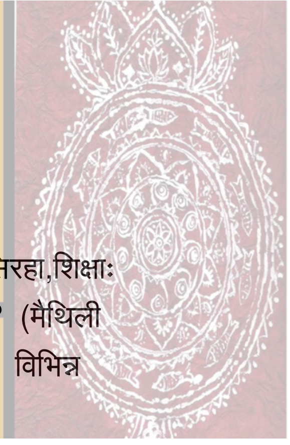
वि.सं.२०२४ साल भादब १८ गते सिरहा जिलाक गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर गाममे जन्म लेनिहार प्रेमर्षिक पूर्ण नाम धीरेन्द्र झा छियनि।कान्तिपुरसँ हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रस्तुत कर्ता जोड़ी रूपा-धीरेन्द्रक धीरेन्द्रक अबाज गामक बच्चा-बच्चा चिन्हैत अछि। ‘‘पल्लव’’ मैथिली साहित्यिक पत्रिका आ ‘‘समाज’’ मैथिली सामाजिक पत्रिकाक सम्पादन।

श्याम सुन्दर शशि, नेपाल

श्याम सुन्दर शशि, जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा-पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ,एम.ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत। बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आऽ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आऽ बहुतरास रचना प्रकाशित। सम्प्रति-कान्तिपुर प्रवासक अरब ब्यूरोमे कार्यरत।

हिमांशु चौधरी, नेपाल



पिता : स्वर्गीय कामेश्र्वर चौधरी,माताः श्रीमती चन्द्रावती चौधरी,जन्मः वि स २०२०/६/५ लहान, सिरहा,शिक्षाः स्नातकोत्तर(नेपाली),पेशाः पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति),कृति : की भार सांठू ? (मैथिली कविता संग्रह),विगत दू दशकसं नेपाली आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील आ विभिन्न संघ संस्थासं आबद्ध ।

कृष्ण मोहन झा 1968-

जन्म मधेपुरा जिलाक जीतपुर गाममे। ‘‘विजयदेव नारायण साही की काव्यानुभूति की बनावट’’ विषयपर जे.एन.यू. सँ एम.फिल आ ओतहिसँ ‘‘निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में प्रेम की परिकल्पना’’ विषयपर पी.एच.डी.। हिन्दीमे एकटा कविता सँग्रह ‘‘समय को चीरकर’’ आ मैथिलीमे ‘‘एकटा हेरायल दुनिया’’ प्रकाशित। हिन्दी कविता लेल ‘‘कन्हैया स्मृति सम्मान’’(1998) आ ‘‘हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार’’(2003)। असम विश्वविद्यालय, सिल्चरक हिन्दी विभागमे अध्यापन।

सुनील कुमार मल्लिक, गायक, जनकपुर, नेपाल 1968-

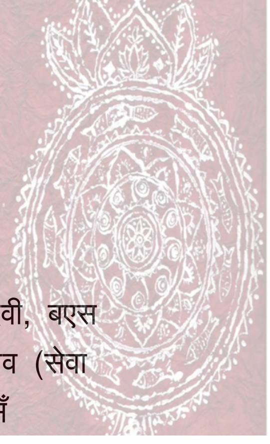
मैथिलीक गायक-सग्डीतकारक रूपमे प्रसिद्ध छथि । मैथिली भाषाक गीतसभमे मौलिक तथा सार्थक सग्डीतक सृजनमे हिनक सक्रियता प्रशंसनीय छनि । सुनीलक गायन तथा सग्डीतमे कैसेट एलबमसभ सेहो बाहर भेल अछि ।लेखनदिस हिनक सक्रियता परिमाणात्मक रूपमे कम रहितहुँ गुणात्मक दृष्टिएँ हृदयस्पर्शी मानल जाइत अछि ।पेशासँ विज्ञान-शिक्षक छथि ।

नीरज कर्ण, धनुषा, नेपाल 1970-

समाजशास्त्रक छात्र आ गणित तथा विज्ञानक शिक्षक छथि, मुदा मैथिली साहित्य आ संगठनक क्षेत्रमे सेहो निरन्तर सक्रिय छथि । भाषा, व्याकरण आदिक मेंही पक्षसभपर सेहो ई पूर्ण अधिकार रखैत छथि । जन्म धनुषा जिलाक कुर्था गाममे भेल छनि । विभिन्न पत्रपत्रिकामे हिनक कथा, कविता, लेख-रचनासभ मैथिली, नेपाली आ अग्ङरेजी भाषामे प्रकाशित होइत रहैत छनि । अनुवादक क्षेत्रमे सेहो हिनक नीक अधिकार छनि ।

राजेश्वर झा (१९२३-१९७७)
जन्म- सहरसा जिलाक रसुआर गाम (आब सुपौल जिला)।
कृति- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास, अवहट्ठ: उद्भव ओ विकास, मैथिली साहित्यक आदिकाल, विद्यापतिक संगीतमे वर्णित नायक-नायिका भेद एवं राग-रागिनी वर्गीकरण।
महाकवि विद्यापति नाटक, शास्त्रार्थ नाटक, कन्दर्पीघाट नाटक, एकादशी, विद्याधर-कथा, उर्वशी, धर्मव्याध-कथा, मेनका।



रबीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी, बएस : ६६ बर्ख, पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह, मातृक : सिन्धिआ ड्योढ़ी, वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवा निवृत्त)/ स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवा निवृत्त), शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

प्रकाशित कृति : मैथिलीमे:-१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध),
३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग), ४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. 'नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास)१२.स्वप्नलोक(उपन्यास)१३.शंखनाद(उपन्यास)१४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

क्रम	नाम (उपनाम)
1	अनंत बिहारी दास इंदु
2	आद्यानाथ झा निरंकुश
3	ईशनाथ झा सरस कवि
4	उदय नारायण सिंह नचिकेता
5	उदयचंद्र झा विनोद
6	उपेन्द्र ठाकुर मोहन
7	उपेन्द्रनाथ झा व्यास
8	उपेन्द्रलाल दास दोषी
9	काञ्चीनाथ झा किरण
10	कपिलदेव ठाकुर स्नेहलता
11	कमल नारायण झा कमलेश
12	काशीकांत मिश्र मधुप
13	कुलानन्द झा कुलेश
14	क्षेमधारी सिंह श्रीकर
15	गंगाधर झा जीबू
16	गोपालजी झा गोपेश
17	गौरीकान्त चौधरी कांत
18	गौरीशंकर सोमदेव
19	चन्द्रनाथ मिश्र अमर
20	छेदी झा द्विजवर
21	जगदीप नारायण दीपक
22	जटेश्वर झा जटिल
23	जनार्दन झा जनसीदन




24	जय नारायण झा विनीत
25	जयधारी सिंह प्रभाकर
26	जयप्रकाश लाल महाप्रकाश
27	तारानंद महतो वियोगी
28	दिनेश्वर लाल आनंद
29	दीनानाथ पाठक बंधु
30	दुर्गानाथ झा श्रीश
31	धीरेश्वर झा धीरेन्द्र
32	धीरेन्द्र नारायण झा धीर
33	परमानंद दत्त परमार्थी
34	प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन
35	प्रभु नारायण झा मैथिली पुत्र प्रदीप
36	फ़जलुर्रहमान हाशमी
37	बालगोविंद झा व्यथित
38	बुद्धिधारी सिंह रमाकर
39	वैद्यनाथ मल्लिक विधु
40	वैद्यनाथ मिश्र यात्री
41	ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
42	भुवनेश्वर पाथेय
43	भुवनेश्वर सिंह भुवन
44	मंत्रनाथ झा हंसराज
45	मथुरानन्द चौधरी माथुर
46	मणीन्द्र नारायण चौधरी प्रसिद्ध फूल बाबू प्रसिद्ध राजकमल चौधरी
47	महावीर झा वीर
48	महेंद्र झा मलंगिया
49	मार्कण्डेय झा प्रवासी
50	यदुनाथ झा यदुवर
51	रमानंद रेणु
52	रमानाथ मिश्र मिहिर
53	रविकांत झा नीरज
54	राजेन्द्र झा स्वतंत्र
55	राधाकृष्ण झा बहेड़






56	राम कृपाल चौधरी राकेश
57	रामकिशोर झा विभाकर
58	रामकृष्ण झा किसून
59	रामचरित्र पांडे अणु
60	रामभरोस कापड़ि भ्रमर
61	रूपनारायण झा राकेश
62	लक्ष्मण चौधरी ललित
63	ललितेश मिश्र ललित
64	विजय नारायण मिश्र प्रवासी साहित्यालंकार
65	विद्यानाथ झा विदित
66	विश्वनाथ झा विषपायी
67	शिवशंकर झा कान्त
68	सीतानाथ झा अनिल
69	सुधांशु शेखर चौधरी शेखर
70	सुरेन्द्र झा सुमन
71	सुरेन्द्र सिंह स्नेही
72	सूर्यकांत विमल
73	हरिनंदन ठाकुर सरोज
74	हरिश्चंद्र झा हरीश



एन.टी.ए. यू. जी.सी. नेट २०२० आ आगाँ लेल टेस्ट सीरीज-१

वस्तुनिष्ठ

(१) 'कर्पूरमन्जरी' विभाजित अछि
(क) कल्लोलमे
(ख) जबनिकामे
(ग) आननमे
(घ) पल्लवमे
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(२) शचीकेँ परामर्श देलनि
(क) लक्ष्मी
(ख) काली
(ग) सरस्वती
(घ) दुर्गा
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(३) 'रवि सम दीप्त अनल सम दाहक पवि सम कठिन कठोर' कहल गेल अछि
(क) सुभद्राहरणमे
(ख) चाणक्यमे
(ग) एकावलीपरिणयमे
(घ) कृष्णचरितमे
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(४) 'उत्तरामे द्रौपदीक गुप्त नाम अछि
(क) सुलक्षण
(ख) विचक्षणा
(ग) विभ्रमलेखा
(घ) सैरन्ध्री
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(५) 'नोर'क प्रकाशक अछि
(क) साहित्य अकादेमी
(ख) चेतना समिति
(ग) मैथिली अकादमी
(घ) नेशनल बुक ट्रस्ट
(ङ) पल्लवी प्रकाशन, निरमली



(६) 'श्मशान' शीर्षक कविता संगृहीत अछि
(क) अन्तर्नादमे
(ख) कथायूथिकामे
(ग) प्रतिपदामे
(घ) अंकावलीमे
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(७) 'पहिल साँझ' नाटक अछि
(क) सामाजिक
(ख) धार्मिक
(ग) ऐतिहासिक
(घ) पौराणिक
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(८) 'बुच्ची दाइ' पात्र छथि
(क) मधुश्रावणीमे
(ख) पुनर्विवाहमे
(ग) कन्यादानमे
(घ) निर्दयीसासुमे
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(९) 'मरीचिका' प्रकाशित अछि
(क) एक भागमे
(ख) दू भागमे
(ग) तीन भागमे
(घ) चारि भागमे
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(१०) 'कचोट' कथाक लेखक छथि
(क) मायानन्द मिश्र
(ख) रमानन्द रेणु
(ग) नीरजा रेणु
(घ) राजमोहन झा
(ङ) कपिलेश्वर राउत



(११) 'कोन महल नाम राखबै एकर' रचना छियनि

(क) मणिपद्म जीक

(ख) किरणजीक

(ग) किसुनजीक

(घ) गोपेशजीक

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(१२) 'शिशुगीत'क संकलयिता छथि

(क) बालगोविन्द झा 'व्यथित'

(ख) सीता मिश्र

(ग) सुनीति झा

(घ) प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(१३) विद्यापतिक आयुक अवसान भेलनि

(क) साओनमे

(ख) भादवमे

(ग) आसिनमे

(घ) कार्तिकमे

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(१४) 'रमणीयार्थ: प्रतिपादक: शब्द: काव्यम्' उक्ति छी

(क) विश्वनाथक

(ख) भर

(ग) मम्मटक

(घ) जगन्नाथक

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(१५) 'प्राचीन जीर्ण जगतीक बीनमे बाजि रहल अछि युग नवीन' ई पद्यांश लिखने छथि

(क) ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म'

(ख) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

(ग) तन्त्रनाथ झा

(घ) सुरेन्द्र झा 'सुमन'

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि



(१६) अनुकरण सिद्धान्तक प्रवर्त्तक छथि :

(क) अरस्तू

(ख) अभिनव गुप्त

(ग) भट्ट लोल्लट

(घ) शंकुक

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(१७) 'वाचस्पति'पात्र छथि :

(क) नवतुरिआमे

(ख) युगपुरुषमे

(ग) बलचनमामे

(घ) दूधफूलमे

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(१८) 'विमल' पात्र छथि:

(क) फुटपाथमे

(ख) नवारम्भमे

(ग) कुमारमे

(घ) पनिपतमे

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(१९) 'उत्तरा'मे कीचकक वध केलनि

(क) कंक

(ख) ग्रंथिक

(ग) तंतिक

(घ) बल्लव

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(२०) 'नहि पतन एक दिन ककर हैत, पृथ्वीक कोरमे के नहि जैत कहने छथि

(क) यात्री

(ख) अमर

(ग) किरण

(घ) मधुप

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि






(२१) 'रघुवंश'मे सिंहदिलीपक संवाद अछि
(क) प्रथम सर्गमे
(ख) द्वितीय सर्गमे
(ग) तृतीय सर्गमे
(घ) चतुर्थ सर्गमे
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(२२) 'पुरुषपरीक्षा'मे 'दानवीर कथा' उल्लिखित अछि
(क) प्रथम परिच्छेदमे
(ख) द्वितीय परिच्छेदमे
(ग) तृतीय परिच्छेदमे
(घ) चतुर्थ परिच्छेदमे
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(२३) 'दुष्यन्त'क चरित्र वर्णित भेल अछि
(क) 'गंगा'मे
(ख) 'शकुन्ताला'मे
(ग) 'उत्सर्ग'मे
(घ) 'लखिमारानी'मे
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(२४) इन्द्रक पलायनक पश्चात् देवताक राजा भेला
(क) बृहस्पति
(ख) अगस्त्य
(ग) विश्वामित्र
(घ) नहुष
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(२५) 'उत्तरा'मे सर्गक संख्या अछि
(क) छओ
(ख) सात
(ग) आठ
(घ) नओ
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि






(२६) 'लोक लक्षण' लिखने छथि
(क) सीताराम झा
(ख) भोलालाल दास
(ग) रघुनन्दन दास
(घ) भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'
(ङ) राजदेव मण्डल

(२७) 'कोसीकातक राम लक्ष्मण आ सीता'क प्रणेता छथि
(क) महेन्द्र नारारण राम
(ख) वीरेन्द्र झा
(ग) महेन्द्र मलंगिया
(घ) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'
(ङ) नन्द विलास राय

(२८) नेपालीय नाटक छी
(क) पार्वती परिणय
(ख) मुद्राराक्षस
(ग) शकुन्तला
(घ) हर गौरी विवाह
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(२९) 'कार्तिक धवल त्रयोदशी' संगृहीत अछि
(क) 'वीणा'मे
(ख) 'नाम तँ थिक वैह'मे
(ग) 'धूरी'मे
(घ) 'की फूरेए की ने'मे
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(३०) 'गल्तीनामा'क लेखक छथि
(क) राजमोहन झा
(ख) नरेन्द्र झा
(ग) मोहन भारद्वाज
(घ) ताराकान्त झा
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि






(३१) सुधाकर झा 'शास्त्री'पर विनिबन्ध लिखने छथि
(क) अमरनाथ झा
(ख) किशोर नाथ झा
(ग) देवेन्द्र झा
(घ) जयधारी सिंह
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(३२) 'प्रवास जीवन' अछि
(क) साक्षात्कार
(ख) यात्रा वृत्तान्त
(ग) आत्मकथा
(घ) ललित निबन्ध
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(३३) मैथिली उपन्यास साहित्यपर आलोचनात्मक पोथी प्रकाशित छन्हि
(क) लोखनाथ मिश्रक
(ख) अमरेश पाठकक
(ग) आनन्द मिश्रक
(घ) नवीनचन्द्र मिश्रक
(ङ) दुर्गानन्द मण्डल

(३४) 'निबन्धपाठ'क लेखक छथि
(क) प्रेमशंकरसिंह
(ख) शशिबोध मिश्र 'शशि'
(ग) केष्कर ठाकुर
(घ) इन्द्रकान्त झा
(ङ) जगदीश प्रसाद मण्डल

(३५) 'मोहन भारद्वाज'क पत्रपत्रिकापर पोथी प्रकाशित छन्हि
(क) एन.बी.टी.सँ
(ख) मैथिली अकादमीसँ
(ग) साहित्य अकादेमीसँ
(घ) चेतना समितिसँ
(ङ) नवारम्भसँ







(३६) यात्रासाहित्यपर पोथी लिखने छथि

(क) रामलोचन ठाकुर

(ख) सत्यानन्द पाठक

(ग) बासुकीनाथ झा

(घ) जगदीश चन्द्र झा

(ङ) बेचन ठाकुर

(३७) 'अनुभव'क अनुवादक छथि

(क) गोविन्द झा

(ख) प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

(ग) देवेन्द्र झा

(घ) मुरारि मधुसूदन ठाकुर

(ङ) उमेश मण्डल

(३८) 'ओ जे कहलनि' लिखने छथि

(क) व्यथित

(ख) हंसराज

(ग) वियोगी

(घ) धूमकेतु

(ङ) डॉ शिव कुमार प्रसाद

(३९) 'नारिकेरफल सम्मित' काव्य कहल गेल अछि

(क) लोचनक

(ख) गोविन्ददासक

(ग) मनबोधक

(घ) हर्षनाथक

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(४०) 'काव्यस्यात्माध्वनि:' कहने छथि

(क) भरत

(ख) कुन्तक

(ग) आनन्दवर्द्धन

(घ) वामन

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि






(४१) 'झिटुकीसँ फुटि जाइछ घैल' कहने छथि
(क) लालदास
(ख) भोलालाल दास
(ग) साहेब रामदास
(घ) चन्दा झा
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(४२) 'कवि पण्डित मुख्य' कहल जाइत अछि
(क) उमापति
(ख) रमापति
(ग) नन्दीपति
(घ) लक्ष्मीपति
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(४३) 'तरौनीक तालपत्र' छी
(क) पदावलीक आकर स्त्रोत
(ख) बिस्फी गामक दानपत्र
(ग) विद्यापतिक वंशावली
(घ) विद्यापतिक ग्रंथसूची
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(४४) 'दान वाक्यावली' लिखने छथि
(क) राजशेखर
(ख) विद्यपति
(ग) कालिदास
(घ) उमापति
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(४५) 'अश्रुकण'रचना छियनि
(क) रमानन्द रेणुक
(ख) मनमोहन झाक
(ग) हंसराजक
(घ) रामदेव झाक
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि






(४६) 'मैथिली पत्रकारिता : दशा ओ दिशा'क सम्पादक छथि
(क) वीरेन्द्र झा
(ख) योगानन्द झा
(ग) शरदिन्दु चौधरी
(घ) महेन्द्र झा
(ङ) नवेन्दु कुमार झा

(४७) 'प्रवासजीवन' लिखने छथि
(क) सुभद्र झा
(ख) वीरेन्द्र मल्लिक
(ग) उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'
(घ) देवशंकर नवीन
(ङ) उमेश पासवान

(४८) 'हुनकासँ भेँट भेल छल' लिखने छथि
(क) मणिपद्म
(ख) अमर
(ग) सुमन
(घ) मधुप
(ङ) आशीष अनचिन्हार

(४९) सिद्ध लोकनिक संख्या छल
(क) एकासी
(ख) बिरासी
(ग) तिरासी
(घ) चौरासी
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(५०) शब्दक विन्यासी कहल गेल अछि
(क) रामदासकेँ
(ख) गोविन्ददासकेँ
(ग) भोलालाल दासकेँ
(घ) जटाशंकर दासकेँ
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि



(५१) 'भुजंगप्रयात' की छी
(क) दोष
(ख) ध्वनि
(ग) रीति
(घ) छन्द
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(५२) 'की दिव्य भूमि मिथिला हम आबि गेलौं' लिखने छथि
(क) बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर'
(ख) चन्दा झा
(ग) लक्ष्मीनाथ गोसाँइ
(घ) रघुनन्दन दास
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(५३) 'प्रभाकर' उपनाम छियनि
(क) बुद्धिधारी सिंहक
(ख) जयधारी सिंहक
(ग) माहेश्वरी सिंहक
(घ) उदय नारायण सिंहक
(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(५४) 'नायकक नाम जीवन'क नाटककार छथि
(क) लक्ष्मीपति सिंह
(ख) इलारानी सिंह
(ग) प्रबोध नारायण सिंह
(घ) उदय नारायण सिंह
(ङ) बेचन ठाकुर

(५५) 'तामस'क मैथिली अनुवादक छथि
(क) रामदेव झा
(ख) रामलोचन ठाकुर
(ग) अमरेश पाठक
(घ) खुशीलाल झा
(ङ) मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)






(५६) रीतिवादक प्रवर्तक छथि

(क) क्षेमेन्द्र

(ख) कुन्तक

(ग) विश्वनाथ

(घ) वामन

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(५७) 'यमक' कथी छी

(क) अर्थालंकार

(ख) शब्दालंकार

(ग) उभयालंकार

(घ) उक्त कोनो अलंकार नै

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

(५८) 'काव्य माधुरी'क सम्पादन केने छथि

(क) म.म. बलदेव मिश्र

(ख) मयानन्द मिश्र

(ग) सुभद्र झा

(घ) रमानाथ झा

(ङ) ऊपरमेसँ कोनो नहि

विषयनिष्ठ

(१) 'पुरुष परीक्षा'मे दानवीरक कथा कोन परिच्छेदमे उल्लिखित अछि?

(२) 'मोहन भारद्वाज'क पत्र?पत्रिकापर प्रकाशित पोथीक नाओं की अछि?

(३) 'पुरुष परीक्षा'मे कएक गोट परिच्छेद अछि?

(४) 'नोर' क लेखक के छथि?

(५) मैथिली अकादमीक स्थापना कहिया भेल?

(६) 'नोर' कोन विधाक पोथी अछि?

(७) अन्तर्नाद, कथा?यूथिका, अंकावली ऐ तीनू पोथीक विधा आ रचनाकारक की नाओं अछि?

(८) 'रमाकर' उपनाम किनक छियनि?

(९) 'प्रवास जीवन' लेखक के छथि?

(१०) 'पहिल साँझ' पोथीक नाटककार के छथि?

(११) मधुश्रावणी, पुनर्विवाह, कन्यादान तथा निर्दयीसासु पोथीक रचयिता तथा चारू पोथीक विधा तथा सम्भव हो तँ सबहक नायक एवं नायिकाक नाओं सेहो बताएब?

(१२) 'पुरुषपरीक्षा'क मैथिली अनुवाद के केने छथि?

क्रम	नाम (उपनाम)
1	अनंत बिहारी दास इंदु
2	आद्यानाथ झा निरंकुश
3	ईशनाथ झा सरस कवि
4	उदय नारायण सिंह नचिकेता
5	उदयचंद्र झा विनोद
6	उपेन्द्र ठाकुर मोहन
7	उपेन्द्रनाथ झा व्यास
8	उपेन्द्रलाल दास दोषी
9	काञ्चीनाथ झा किरण
10	कपिलदेव ठाकुर स्नेहलता
11	कमल नारायण झा कमलेश
12	काशीकांत मिश्र मधुप
13	कुलानन्द झा कुलेश
14	क्षेमधारी सिंह श्रीकर
15	गंगाधर झा जीबू
16	गोपालजी झा गोपेश
17	गौरीकान्त चौधरी कांत
18	गौरीशंकर सोमदेव
19	चन्द्रनाथ मिश्र अमर
20	छेदी झा द्विजवर
21	जगदीप नारायण दीपक
22	जटेश्वर झा जटिल
23	जनार्दन झा जनसीदन
24	जय नारायण झा विनीत
25	जयधारी सिंह प्रभाकर
26	जयप्रकाश लाल महाप्रकाश
27	तारानंद महतो वियोगी
28	दिनेश्वर लाल आनंद
29	दीनानाथ पाठक बंधु
30	दुर्गानाथ झा श्रीश
31	धीरेश्वर झा धीरेन्द्र
32	धीरेन्द्र नारायण झा धीर
33	परमानंद दत्त परमार्थी
34	प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन
35	प्रभु नारायण झा मैथिली पुत्र प्रदीप
36	फ़जलुर्रहमान हाशमी
37	बालगोविंद झा व्यथित
38	बुद्धिधारी सिंह रमाकर

39	वैद्यनाथ मल्लिक विधु
40	वैद्यनाथ मिश्र यात्री
41	ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
42	भुवनेश्वर पाथेय
43	भुवनेश्वर सिंह भुवन
44	मंत्रनाथ झा हंसराज
45	मथुरानन्द चौधरी माथुर
46	मणीन्द्र नारायण चौधरी प्रसिद्ध फूल बाबू प्रसिद्ध राजकमल चौधरी
47	महावीर झा वीर
48	महेंद्र झा मलंगिया
49	मार्कण्डेय झा प्रवासी
50	यदुनाथ झा यदुवर
51	रमानंद रेणु
52	रमानाथ मिश्र मिहिर
53	रविकांत झा नीरज
54	राजेन्द्र झा स्वतंत्र
55	राधाकृष्ण झा बहेड़
56	राम कृपाल चौधरी राकेश
57	रामकिशोर झा विभाकर
58	रामकृष्ण झा किसून
59	रामचरित्र पांडे अणु
60	रामभरोस कापड़ि भ्रमर
61	रूपनारायण झा राकेश
62	लक्ष्मण चौधरी ललित
63	ललितेश मिश्र ललित
64	विजय नारायण मिश्र प्रवासी साहित्यालंकार
65	विद्यानाथ झा विदित
66	विश्वनाथ झा विषपायी
67	शिवशंकर झा कान्त
68	सीतानाथ झा अनिल
69	सुधांशु शेखर चौधरी शेखर
70	सुरेन्द्र झा सुमन
71	सुरेन्द्र सिंह स्नेही
72	सूर्यकांत विमल
73	हरिनंदन ठाकुर सरोज
74	हरिश्चंद्र झा हरीश

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मानदीक माझी, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

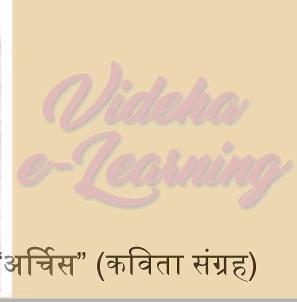
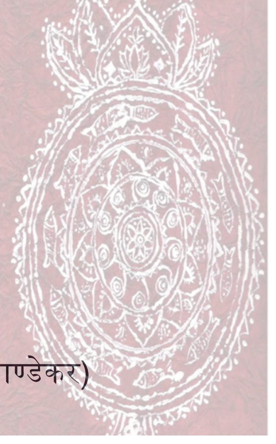
1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल कैँ “तरेगन” बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकैँ "अम्बरा" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक “अर्चिस” (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार – श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- “देवीजी” (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "बेटीक अपमान आ छीनरदेवी" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ “निश्तुकी” (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ “मोहनदास” (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (सखारी पेटारी- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (नै धारैए- बाल उपन्यास)

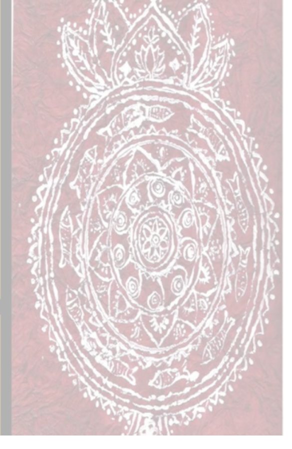
२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (अनचिन्हार आखर- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (पाखलो - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,



सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

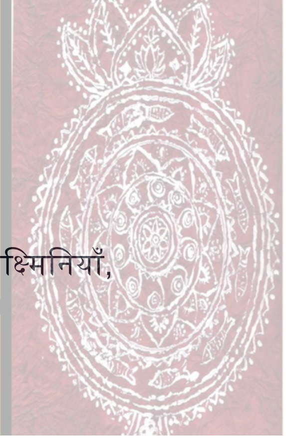
(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया-

तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईषा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी

(बिहार)





(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य–अभिनय-

(1) श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टाॅसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

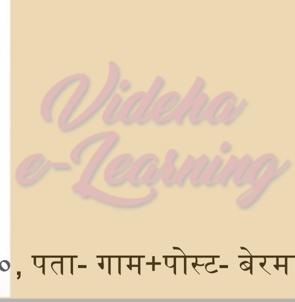
चित्रकला-

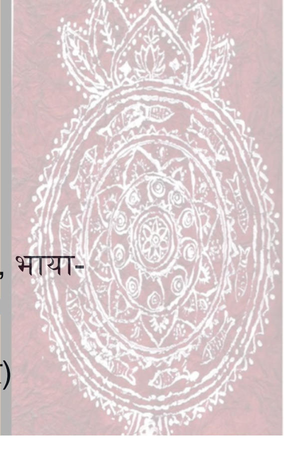
(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट– बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)



(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व.   , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

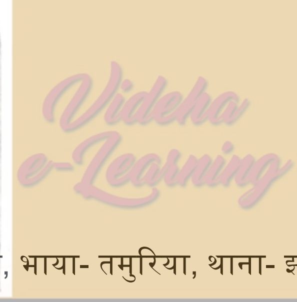
(1) **वासुदेव राम** सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- िनर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) **श्री बौकू मल्लिक** सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री राम विलास धरिकार** सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मृर्तिकार कला-



(1) **घूरन पंडित सुपुत्र-** श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट– बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- िनर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट– बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना-

झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना-

झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- िनर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- िनर्मली,

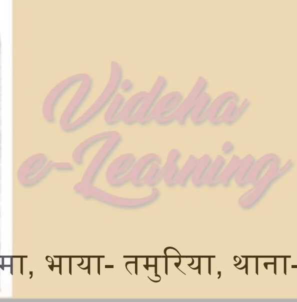
थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस.

शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-







(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

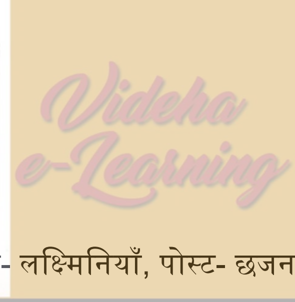
(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

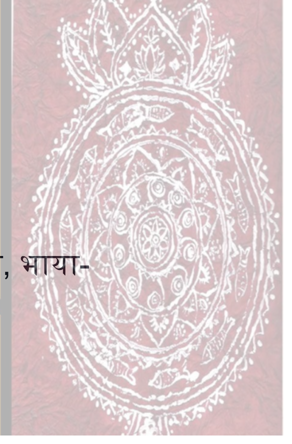
गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-



(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

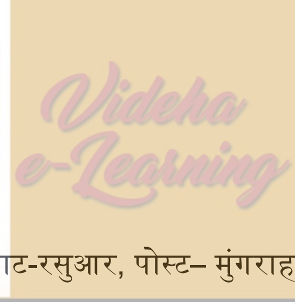
बेन्जू वादक-

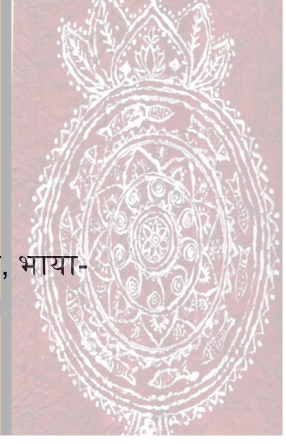
(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- िनर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- िनर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)



(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट– मुंगराहा, भाया- िनर्मली, िजला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट-– मुंगराहा, भाया- िनर्मली, िजला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट-– मुंगराहा, भाया- िनर्मली, िजला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

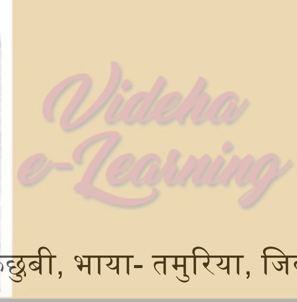
(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।

पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)



श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

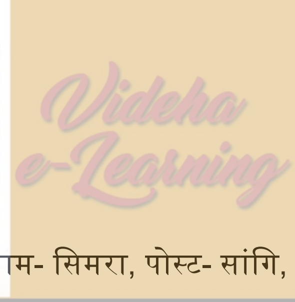
श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- िनर्मली, िजला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तानपुरा सह भाव संगीत



(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा/ तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

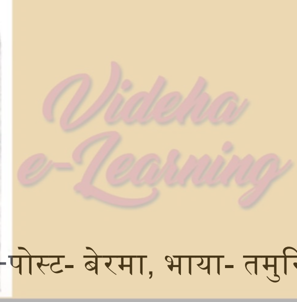
रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- िनर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा

श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुिमयाँ बजबै छथि।



श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका/ ढोल वादक

श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- िनर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)

श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नङेरा/ डिगरी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)